मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – ९

पहली बार : २०००

दिसम्बर, १९५१

साढ़े तीन रुपये

आगामी कलका महाखंड

[गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावनासे अुद्धृत]

पुस्तक लिखनेका आज तक मैंने कभी प्रयत्न नहीं किया, अिसलिअे अुसे लिखते समय कैसी अुत्तेजना, कैसा अुत्साह मालूम होता है, अिसका मुझे अनुभव नहीं है। लेकिन प्रस्तावना लिखनेके अिस प्रयत्नके कारण मुझे कितनी ही रातें जागकर काटनी पड़ी हैं!

* * *

मेरे लिअे तो यह अेक अनोखा मान है, अेक विशेष अधिकार है। साथ ही, मेरे लिअे यह अेक अद्वितीय अवसर भी है ।

* * *

अेक बार अफ्रीकाका परिचय हो जानेके बाद अिस खंड और अिसके लोगोंके बारेमें बात करनेका कोअी भी मौका हाथसे जाने ही नहीं दिया जा सकता। और समर्थनके लिअे काकासाहब पासमें हों और कहनेका मौका मिले, यह तो अेक बड़ा लाभ ही माना जायगा।

अफ्रीकाके कुछ भागमें काकासाहबके साथ प्रवास करनेका सौभाग्य मुझे मिला था — मैं अुन्हें सब जगह घुमाकर यह प्रदेश 'दिखानेका' प्रयत्न करता था! और जैसा कि हमेशा होता है, अिस सौदेसे अुलटा मुझे ही लाभ हुआ। अिस 'आगामी कलके खंडकी' भूमि पर जिस मानव-समूहका विशाल नाटक खेला जा रहा है, अुसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म और गहरेसे गहरे रहस्योंका तेजीसे और अत्यन्त बुद्धिमत्तासे काकासाहबको आकलन करते देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया।

वहुत कम लोगोंको, अिस वातका पता होगा कि सहाराके दक्षिणमें और दक्षिण अफ्रीकाके अुत्तरमें स्थित अफ्रीका खंडका प्रदेश युरोपसे लगभग तीन गुना वड़ा है और वहां अपार सम्पत्ति सुप्त अवस्थामें पड़ी हुअी है। वहुत थोड़े लोग जानते हैं कि अिस भूभागमें करीव दस करोड़ मनुष्य अैसे हैं, जो आजके प्रगतिशील युग तक अपनी प्रागैतिहासिक सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक प्राचीन परम्परामें ही रहते आये हैं और वाहरके संघर्षके फलस्वरूप अभी अभी ही अुससे वाहर निकलनेके लिअे थोड़े छटपटाने लगे हैं।

किसी भी प्रजाके लिअे ठेठ प्रागैतिहासिक कालसे अेकदम अणु-युग तककी हनुमान-छलांग मारना वड़ा कठिन काम है। अिसलिअे हम सवका यह कर्तव्य है कि हम अिस काममें अफ्रीकाके मूल निवासियोंकी मदद करें—वह भी अैसी मदद करें कि अफ्रीका और अुसके वतनी संसारके अितिहासके प्रवाहमें आकर अुसे अधिक शांति और सुलहवाला, प्रगतिशील और (सवसे अधिक महत्त्वकी वात तो यह कि) मानवतापूर्ण वना सकें।

जैसा कि काकासाहव कहते हैं, अफ्रीकाके वतनी असाधारण प्राण-वान मनुष्य हैं। अिस विषयमें मुझे जरा भी शक नहीं कि मानव-जीवनके हर क्षेत्रमें पुरुषार्थ करके संसारकी प्रगति और स्थिरतामें वड़ा असरकारक हिस्सा लेनेकी योग्यता अुनमें है। पूर्व और पश्चिमके हम लोग अुन्हें यह हिस्सा लेने देंगे या स्वार्थी और संकुचित दृष्टिसे नअी कठिनाअियां और झगड़े खड़े करके दुनियामें फैली हुअी अन्धाधुन्धीको और वढ़ायेंगे, यही अेक वड़ा प्रश्न है।

हम हिन्दुस्तानियोंको अफ्रीकामें वड़ी जिम्मेदारी और कर्तव्य पूरा करना है। यह अीश्वरका ही संकेत है। मेरा खयाल है कि काकासाहव जैसे 'द्रष्टाओं' की मुलाकातों और सम्पर्कसे हमें अिस खंड और अुसके निवासियोंके प्रति रही अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्योंका भान होगा और हम अुन्हें पूरा करना सीखेंगे।

यह पुस्तक बहुत लोग पढ़ेंगे, अिसमें मुझे कोअी शक नहीं है। मुझे अैसी भी आशा है कि वह कुछको प्रेरणा देकर कार्यपरायण भी बनायेगी। क्योंकि अिस दीवानी दुनियामें योग्य विचारसे प्रेरित योग्य आचार द्वारा ही हम शांति और सन्तोष प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे आशा है कि अिस पुस्तकका हिन्दीमें अनुवाद होगा और सारा भारत अुसे पढ़ेगा। यह जरूरी है कि हमारे अिन 'पासके किनारेके पड़ोसियों' से हम भलीभांति परिचित हों। अब हम बहुत छोटी दुनियामें रहते हैं; और दुनियाके दूसरे भागमें—खास करके निकटवर्ती भविष्यके अिस महाखंडमें अर्थात् अफ्रीकामें जो कुछ होगा, अुसके अच्छे या बुरे परिणाम हमें पूरी तरह भोगने होंगे।

आप्पा पंत

नया मिशन

हमारी मुसाफिरीके शुरूमें ही अगर कोअी चीज मुझे अखरी हो, तो वह थी अुस कंपनीका नाम, जिसके जहाजमें हमने यात्रा की। हिन्दुस्तानके स्वतंत्र हो जानेके बाद भी यह कंपनी अपना नाम 'ब्रिटिश अिंडिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी' क्यों रखे? नाममें थोड़ासा परिवर्तन कर दे तो भी बन हैं। 'ब्रिटेन-अिंडिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी' कहे, तो हमें कोअी अेतराज नहीं। लेकिन अब हम अपनी खुदकी अिन्डो-अफ्रीकन स्टीम नेवीगेशन कंपनी क्यों न खड़ी करें? पुरानी कंपनीके साथ अमुक सालका करार किया हो, तो कमसे कम अितना तो करना ही चाहिये कि अुस कंपनीके अधिकारी हमारे लोगोंके साथ घमंड और तिरस्कारका बरताव न करें। अगर करारका पालन ठीक ठीक न किया जाय, तो करार रद्द कर देना चाहिये।

बम्बअी और मार्मागोवाका किनारा छोड़नेके बाद आठ दिन तक न तो जमीनका कोअी टुकड़ा दिखाअी दिया, न कोअी पहाड़की चोटी। हम सीधे मोम्बासा पहुंच गये। तुरंत मनमें यह विचार आया कि यहांके लोग हमारे अुस पारके पड़ोसी ही हैं। यहांकी लहरें वहां टकराती हैं और वहांकी लहरें यहांके किनारेसे आकर टकराती हैं। तुरंत अुनसे आत्मीयताका संबंध बंध गया। और यह खयाल आया कि यह आत्मीयता कोअी आजकी नहीं; अिस जमानेकी नहीं; हमारा पड़ोस हजारों सालका पुराना है। अफ्रीकामें मैंने जो कुछ देखा, जो कुछ विचारा और जो कुछ कहा, वह सब अिस पड़ोसी-धर्मसे प्रेरित होकर ही।

पूर्व अफ्रीका में गया तो 'देश देखने' के कुतूहलसे और गांधी-स्मारक कॉलिजके बारेमें सलाह देनेके लिअे। लेकिन वहांसे लौटा पड़ोसी-धर्मसे बंधकर। अफ्रीकी लोगोंके साथका पड़ोसी-धर्म, अफ्रीकामें बसे हुअे हिन्दुस्तानियोंके साथकी आत्मीयता और वहांके अंग्रेजोंके साथका कॉमनवेल्थका संबंध — तीनों मनमें मजबूत हो गये हैं। 'हम आजाद हो गये, अब अंग्रेजोंसे हमारा क्या संबंध है', अिस तरहकी जो वृत्ति मनमें पैदा हुअी थी, वह अफ्रीका जाकर मिट गअी। दो जातियोंका हमारा संबंध अभी टूटा नहीं है। हमारा अेक-दूसरेके साथ अवश्य संबंध है और देनापावना भी है, अिसका विश्वास हुआ।

अंग्रेज लोग — बल्कि युरोपके सारे राष्ट्र अेक समय सारी दुनियामें मिशनरी भेजकर अीसाअी धर्मका प्रचार करते थे। यह प्रवृत्ति आज भी बंद नहीं हुअी है, धीमी जरूर पड़ी है। अीसाअी संस्कृतिकी अेकता कभीकी मिट चुकी है। पश्चिमके राष्ट्र अब अेक-दूसरेसे अलग पड़ गये हैं। अिसलिअे अंग्रेज आज तक जैसा काम धर्मके नाम पर मिशनरियोंके जरिये करते थे, वैसा ही काम वे अपनी संस्कृतिकी भूमिका पर ब्रिटेनके साहित्य, संगीत, कला वगैराके प्रचार द्वारा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसके लिअे अुन लोगोंने 'ब्रिटिश कौन्सिल' नामकी अेक जबरदस्त संस्था कायम की है और अुसे अपार धन भी दिया है। विधान या नियमोंकी सख्ती भी अुसमें नहीं है। अुसके कार्यकर्ताओंको जैसा सूझे वैसा काम वे कर सकते हैं। अिस संस्थाका मुख्य अुद्देश्य यह है कि अनेक देशोंके नौजवानोंके बीच और प्रतिष्ठित, संस्कारी और प्रभावशाली लोगोंके बीच काम करके अुन देशोंके लोगोंके मन और दिल ब्रिटिश संस्कृतिके लिअे अनुकूल बनाये जायं और ब्रिटेन तथा अुन देशोंके बीच सद्भाव कायम किया जाय। पश्चिमके अनेक देशोंने अब अैसी संस्थायें कायम की हैं। अैसी संस्थाओंको अुन अुन देशोंकी सरकारोंकी मदद होने पर भी वे संस्थायें सरकारी नहीं होतीं। अुनके कार्यके फलस्वरूप विभिन्न देशोंके बीच राजनैतिक मिठास भी पैदा

होती है, फिर भी वे संस्थायें राजनैतिक नहीं होतीं। धर्मप्रचारका अुद्देश्य तो अुनका होता ही नहीं।

अिस तरहकी अेक संस्था हमारे देशकी तरफसे भी कायम हुअी है। अुसका नाम है Indian Council of Cultural Relations—(I.C.C.R.) हमारे सारे विश्वविद्यालयोंके और सांस्कृतिक काम करनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधि अुसमें हैं। अिस समय अुस संस्थाने अफगानिस्तान, अीरान, टर्की, मिस्र वगैरा देशोंमें अपना काम शुरू किया है। अरबी भाषामें हम अेक सामयिक पत्र भी निकालते हैं। अिन सारे देशोंके कुछ विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोंमें, हमारी छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन करते हैं। हमारे देशकी संस्कृति, हमारा राजनैतिक दृष्टिकोण और दूसरे राष्ट्रोंके बारेमें हमारी दिलचस्पी समझानेके लिअे कितने ही नेता अुन अुन देशोंमें घूम आते हैं।

दक्षिण पूर्वकी ओरके ब्रह्मदेश, स्याम, थाअीलैण्ड, अिंडोनेशिया वगैरा देशोंके लिअे भी अेक विभाग खोलनेकी तैयारी चल रही है।

मुझे लगा कि अफ्रीकाके लिअे भी हमें अेक अैसा ही विभाग खोलना चाहिये। अिस दिशामें मेरे प्रयत्न चल रहे हैं और अुनका अच्छा स्वागत भी हुआ है*। दुनियाकी परिस्थितिको जाननेवाले और हमारी संस्कृतिको सामने रख सकनेवाले लोग अफ्रीका जायं, अफ्रीकी लोगोंके नेता हमारे यहां आकर हमारे मेहमान बनें और हमारा रहन-सहन अपनी आंखोंसे देखें, अुनके प्रति हमारे मनमें रहे सद्भावके वे साक्षी बनें—अिसके लिअे प्रयत्न शुरू हो गये हैं। हिन्दुस्तानके कमिश्नरके नाते श्री अप्पासाहब पंतने वहां अिस तरहका बड़ा अच्छा काम किया है।

---

* यह कहते खुशी होती है कि मेरा सुझाव I. C. C. R. को पसंद आया और अुसने अपनी कौंसिलका अफ्रीकी विभाग कुछ दिन हुअे खोल दिया है। —का. का.

पोरबंदरवाले सेठ श्री नानजीभाअी कालिदासने मुझे अफ्रीका भेजकर वहांकी स्थिति समझनेका और सेवा करनेका मौका दिया, असलिये अब यह अेक जिम्मेदारी मुझ पर आ गअी है।

अफ्रीकाके अुत्साही युवक और विद्यार्थी भी जब हमारे देशमें आवें, तब यह जरूरी है कि छुट्टीके दिनोंमें या त्योहारोंके मौके पर हम अुन्हें मेहमानके तौर पर अपने घरोंमें बुलावें और अुन्हें यह अनुभव करावें कि हमारे दिलोंमें रंगभेद या धर्मद्वेष नहीं है। अुन लोगोंका दृष्टिकोण, अुनकी संस्कृति और अुनकी आकांक्षायें सहानुभूतिपूर्वक समझनेका मौका हमें घर बैठे मिले, तो हमें अुस लाभको खोना नहीं चाहिये। अुनके जीवन और रहन-सहनसे परिचित होने पर हमें जो सर्वसमाजिता और अुदारता अपनेमें बढ़ानी पड़ेगी, वह लाभ भी कोअी छोटा-मोटा नहीं कहा जा सकता। स्वतंत्र देशकी संस्कारी और समर्थ प्रजा किसी भी देशकी प्रजासे अलग रह ही नहीं सकती।

काका कालेलकर

हिन्दी पाठकोंके लिअे

पूर्व अफ्रीकाकी ढाअी महीनेकी मुसाफिरीमें मैंने देखा कि वहां पर जो दो लाख भारतीय रहते हैं, अुनमें से करीब ८० फीसदी गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छके हिन्दू-मुसलमान हैं। वे सब घरमें गुजराती भाषा बोलते हैं। अिसलिअे अुनके लिअे और अुनके भारतवासी स्नेही-संबंधियों के लिअे मैंने यह पुस्तक गुजरातीमें लिखी। किन्तु पूर्व अफ्रीकाका सवाल सारे भारतवर्षका सवाल है। अिसलिअे यह हिन्दी अनुवाद शाया किया गया है। थोड़े ही दिनोंमें अिसकी अंग्रेजी आवृत्ति भी संक्षिप्त रूपमें प्रकाशित होगी।

१-१२-१९५१ काका कालेलकर

अनुक्रमणिका

अपने मीठे और आत्मीय सत्कारसे
हमारी यात्राको आनन्दपूर्ण बनानेवाले
पूर्व अफ्रीकाके
तीनों रंगके
असंख्य भाअी-बहनोंको
कृतज्ञतापूर्वक समर्पित

हमारे

अुस पारके पड़ोसी

१

अफ्रीकाका महत्त्व

पृथ्वीकी भूमध्य रेखा पर अधिकांश समुद्र ही समुद्र है। अेशिया, युरोप और अुत्तर अमेरिकाके विशाल भूखंड अुत्तर गोलार्धमें फैले हुअे हैं। आस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिकाका बड़ा हिस्सा दक्षिण गोलार्धमें है। अिनमें अेक अफ्रीका ही अैसा भूखंड है, जो पृथ्वीकी मध्यरेखाके दोनों तरफ समानान्तर फैला हुआ है। यह भूमध्य रेखा थोड़ी दक्षिण अमेरिकामें और अुससे थोड़ी ज्यादा अफ्रीकामें आती है। (सुमात्रा, बोर्नियो, वगैरा द्वीप भूमध्य रेखा पर हैं जरूर, लेकिन वे बिलकुल छोटे हैं। अुनकी गिनती न करें, तो चल सकता है।) भूमध्य रेखाके आसपासकी अफ्रीकाकी भूमिमें ब्रिटिश ओस्ट अफ्रीका और बेल्जियन कांगो नामक दो प्रदेश पाये जाते हैं। जलवायुकी दृष्टिसे, मानव संस्कृतिके विकासकी दृष्टिसे और भारतके प्राचीन, आधुनिक और भावी अितिहासकी दृष्टिसे भी अफ्रीकाका यह प्रदेश बहुत बड़ा महत्त्व रखता है।

सारे ब्रिटिश ओस्ट अफ्रीकामें अेक या दूसरे रूपमें अंग्रेजोंका ही राज्य चलता है। भारत परका अपना अधिकार छोड़ देनेके कारण ही अंग्रेज अब ओस्ट अफ्रीकामें अपने राज्यको ज्यादा मजबूत बनाना चाहते हैं। अिसलिअे वे अफ्रीकी प्रजा और वहां बसनेवाली हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रश्न पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। हमारे लोगोंने पूर्व अफ्रीकामें काफी अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। और अफ्रीकी प्रजा तो अब जाग्रत होकर अधिक शिक्षण और अधिक अधिकारोंकी मांग करने लगी है।

अिस प्रदेशके दक्षिणमें सुदूर दक्षिण अफ्रीकामें गोरी और रंगीन प्रजाका प्रश्न ज्यों-ज्यों कठिन और पेचीदा होता जाता है, त्यों-त्यों अुसका असर पूर्व अफ्रीका पर भी पड़ने लगा है।

अिसके साथ सारी दुनियाकी राजनीतिका सम्बन्ध अधिकाधिक बढ़ते जानेके कारण संयुक्त-राष्ट्र-संघ भी अफ्रीकाके विविध प्रश्नों पर ज्यादा-ज्यादा ध्यान देने लगा है।

हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद ब्रिटिश प्रजाने अुसे अपने कामन-वेल्थमें दाखिल होनेका निमंत्रण दिया और हिन्दुस्तानने अुसे स्वीकार कर लिया। दुनियाकी राजनीतिमें यह कदम बहुत बड़ा महत्त्व रखता है। हिन्दुस्तान और पूर्व अफ्रीका दोनों देश कामनवेल्थके सदस्य हैं, अिसलिअे वहांके प्रश्नोंका हल अेक खास ढंगसे ही होनेकी संभावना पैदा हुअी है।

अैसी हालतमें अफ्रीका, युरोप और अेशियाकी तीनों महा प्रजाओंका जो विशाल और असीम सहकार पूर्व अफ्रीकामें चल रहा है, वह मानव-जातिके भविष्यकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वका है। पूर्व अफ्रीकामें दो-ढ़ाअी महीने रहनेका जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, अुस बीच किये हुअे प्रवासकी झलकमात्र करानेवाला वर्णन यहां देनेका विचार है। हिन्दुस्तानके हितका व्यापक विचार करते हुअे अफ्रीकाके बारेमें हमारी भाषाओंमें सैकड़ों पुस्तकें लिखी जानी चाहियें। अिसके पीछे ठोस अध्ययन, मानव-हितकी विशाल दृष्टि, अर्थरचना और राजनीतिकी सच्ची समझ और मानववंशके विज्ञानमें (अेन्थ्रोपॉलॉजी) गहरी दिल-चस्पीके साथ-साथ पृथ्वीके स्तरकी रचनाको समझानेवाले भूस्तर-शास्त्रका ठोस ज्ञान भी होना चाहिये। अफ्रीकाके साथका हमारा सम्बन्ध हम जानते हैं, अुससे ज्यादा प्राचीन, ज्यादा गहरा और ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। हिन्दुस्तानने आजका आकार ग्रहण किया, अुसे लाखों वर्ष हो गये। अुसके पहले आजका अरब सागर नहीं था। आजका गुजरात, राजस्थान, गंगा-यमुनाका प्रदेश, बिहार और बंगालका सारा भूप्रदेश समुद्रके गर्भमें था। आजके लकद्वीप और मालद्वीप बड़े-बड़े पहाड़ोंके शिखर होंगे। और आजका दक्षिण हिन्दुस्तान अिस प्रदेशके जरिये अफ्रीकाके किनारे स्थित मेडागास्कर द्वीपके साथ जुड़ा हुआ था। जिन प्राचीन जानवरोंकी हड्डियां अफ्रीकामें मिलती हैं, अुन्हींकी हड्डियां दक्षिण हिन्दुस्तानमें भी पाअी

जाती हैं। कुछ विशेषज्ञोंका यह अनुमान है कि अफ्रीकाकी कितनी ही जातियां दक्षिण हिन्दुस्तानसे ही वहां गअी होनी चाहियें। आजके हिन्दुस्तान और अफ्रीकाकी रचनाके बाद वैदिक और पौराणिक कालमें हमारे देशवासी मिस्र होकर नील नदीके अुद्‌गम तक और वहांके चंद्रगिरि नामके पहाड़ तक पहुंचे थे, अैसे अुल्लेख हमारे प्राचीन पुराणोंमें मिलते हैं। मिस्र देशकी अति प्राचीन संस्कृति, ग्रीसकी युनानी संस्कृति, सिन्धु नदीके किनारे विकसित सिन्धवी संस्कृति और अिन तीनोंके बीच खिली हुअी अनेक शाखाओंवाली खाल्डियन संस्कृति — अिन सबका परस्पर परिचय और सम्बन्ध था। यद्यपि अुस समयका अितिहास अुपलब्ध नहीं है, फिर भी प्राचीन अवशेषोंके आधार पर अत्यन्त प्राचीन समयके अितिहासको शृंखलाबद्ध करनेके प्रयत्न सफल होते जाते हैं। और अिस तरह प्राचीनतम अितिहासका प्रकाश मनुष्यके स्वभाव और रहन-सहन पर पड़ता जाता है।

यह सारा ज्ञान अभी तक केवल कुतूहलका ही विषय था, किन्तु अब मानव-जातिको विनाशसे बचाकर अेक विश्वपरिवारकी स्थापना करनेके महाप्रयत्नमें अिस ज्ञानका बहुत बड़ा अुपयोग किया जा सकता है। अिसलिअे अिस प्राचीन अितिहासका सारे देशोंके जनसाधारण तक पहुंचना बहुत जरूरी हो गया है। दुनियाके अितिहासकार और मानव-हितचिन्तक अिस नअी दृष्टिका विकास करते जा रहे हैं। हमारी प्रजाका अिस दिशामें पिछड़ा रहना अुसे महंगा पड़ जायगा।

मेरे अिस संक्षिप्त प्रवास-वर्णनमें यह सब नहीं आ सकता। दो महीनोंमें मैंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और सोचा, अुसीको यहां थोड़ेमें पेश करनेका खयाल है। अिसमें किसी पाठकको रस आवे और वह ज्यादा गहरा अध्ययन करनेके लिअे प्रेरित हो, तो मुझे संतोष होगा। कमसे कम प्रवास-वर्णन लिखनेका अुत्साह ही लोगोंमें बढ़े और भाषामें अिस प्रकारका साहित्य खिले, तो भी मुझे पूर्ण संतोष होगा। हमारे देशवासियोंने अभी तक कोअी कम प्रवास नहीं किये हैं।

अुन्हें जानने, सीखने और विचार करनेके काफी मौके मिले हैं और आगे तो ये मौके बढ़ते ही जायंगे। अिनका लाभ सारी प्रजाको अवश्य मिलना चाहिये। बात अितनी ही है कि आदत न होनेके कारण अभी तक हमारे लोगोंको अिस विषयमें कुछ लिखनेका सूझा ही नहीं। अेक बार यह दृष्टि पैदा हो और लिखनेका रस बढ़े, फिर तो स्वभावतः विशाल, विविध और कीमती साहित्य तैयार होने लगेगा। अैसा साहित्य भारतकी किस भाषामें तैयार होगा, यह प्रश्न गौण है। भारतकी किसी अेक भाषामें कोअी अच्छी व ठोस पुस्तक तैयार हुअी कि दूसरी भाषाओंमें अुसके अनुवाद आसानीसे किये जा सकेंगे। खास प्रश्न तो विशाल और व्यापक रसका है। वह जब पैदा होता है, तब प्रजा जागे बिना रह ही नहीं सकती। और जगी हुअी प्रजा अपने मिशनको पहचान कर अुसे सिद्ध करनेका प्रयत्न करती ही है। भारतके भविष्यके अैसे स्वप्न मुझे आनन्द देते हैं।

अफ्रीकाका प्रवास करनेके पीछे मेरा क्या अुद्देश्य था, अैसा प्रश्न कअी व्यक्तियों द्वारा मुझसे पूछा गया है। यात्राके लिअे निकलनेसे पहले, यात्राके दिनोंमें और यात्राके अन्तमें भी अिस प्रश्नका अुत्तर मुझे देना ही पड़ा है।

कथनकी सत्यताकी रक्षाके लिअे मैंने हमेशा कहा है कि मेरा पहला अुद्देश्य — भले वह मुख्य न हो — केवल देश-दर्शनका ही है। जिस तरह पुराने भावुक लोग श्रद्धा और भक्तिसे मन्दिरोंमें देव-दर्शनके लिअे जाते हैं, अुसी तरह और अुसी श्रद्धा-भक्तिसे मैं देश-दर्शनके लिअे जाता हूं। जब तक मैं केवल भारत-भूमिको ही पुण्यभूमि मानता था, तब तक अीश्वरने मुझे परदेश जानेका सुअवसर नहीं दिया। जब मनोवृत्ति कुछ अुदार बनी, मानवताका खयाल पैदा हुआ और बुद्ध भगवानके अुपदेशके प्रति मनमें भक्ति जागी, अुसके बाद ही मुझे ब्रह्मदेश जानेका मौका मिला। और पूज्य गांधीजीके साथ जब सिलोन

(लंका) गया था, तब भी बौद्धधर्मका आकर्षण होनेके कारण सिलोन कोअी पराया देश-सा महसूस ही नहीं हुआ।

हिन्दू संस्कृतिका सच्चा रहस्य समझनेके बाद और संसारके सारे धर्मोंके प्रति समता और आदरका भाव पैदा होनेके बाद अब जैसे सारे धर्म मुझे सच्चे, अच्छे और अपने ही लगते हैं, वैसे ही संसारके सारे देश मुझे भारत-भूमिके जैसे ही पवित्र और पूज्य मालूम होते हैं। अतः जिस भक्तिभावसे मैं सेतुबन्ध रामेश्वरसे लेकर हिमाचल तककी यात्रा कर सका, अुसी भक्तिभावसे अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। दुनियाकी सारी नदियां मेरे ही सगे-सम्बन्धियोंकी लोकमातायें हैं; हरअेक सरोवर मानस सरोवर जितना ही पवित्र है; हरअेक पर्वत हिमालय जितना ही देवतात्मा है; हरअेक नदीका अुद्‌गम अीश्वरके आशीर्वाद जैसा ही शुभ और श्रेयस्कर है; अैसी दृढ़ भावना लेकर ही मैं अफ्रीका देखनेके लिअे निकला।

जापान और आसाममें भूकंप होता है, ज्वालामुखी फटते हैं, वगैरा बातें जाननेके बाद भूकंपशास्त्रमें — सिसमोग्राफीमें रस पैदा हुआ। अुससे संबन्धित तरह-तरहके यंत्र अलीबागकी वेधशालामें देखे, तबसे यह जाननेका कुतूहल जगा कि अफ्रीका खंडकी भूमि कैसे बनी होगी।

गुलामोंके व्यापारके कारण बदनाम लेकिन लौंगकी पैदाअिशसे सुगंधित बना हुआ झांझीबार हमारे कच्छ-काठियावाड़के हिन्दू-मुसलमानोंकी पुरुषार्थ भूमि है, यह जाननेके कारण भी झांझीबारकी यात्राका संकल्प मनमें अुठा था।

पूर्व अफ्रीकाके खारे और मीठे तालाबोंकी विशेषतायें भी मुझे अपनी ओर खींच रही थीं। अुत्तरकी तरफ बहनेवाली सरो-जा (सरोवरसे पैदा होनेवाली) नील नदीका अुद्‌गम स्थान देखनेकी अिच्छा गंगोत्रीके दर्शनों जितनी ही अुत्कट थी और अिसीलिअे अुस स्थानको मैंने गंगोत्रीकी तरह नीलोत्रीका नाम दिया।

राजरत्न श्री नानजी कालीदाससे अुनके और अफ्रीकामें रहनेवाले हमारे दूसरे लोगोंके पुरुषार्थ और पराक्रमकी बातें सुनकर यह कुतूहल बढ़ा था कि वह देश कैसा होगा और अुसकी शकल बदलनेमें हमारे लोगोंने कैसा हिस्सा लिया होगा।

अफ्रीकाके मूल निवासी अपनी खोअी हुअी आजादी पुनः प्राप्त करनेके लिअे कैसी कोशिश करते हैं, गोरे लोग अुन पर कैसे राज्य करते हैं, रंगभेदके आधार पर प्रदेशभेद पैदा करनेकी लीला वहां कैसी चलती है, यह सब अखबारों और यात्रियों द्वारा जाननेको मिला था। अिसलिअे मनमें यह विचार अुठा कि मानव-व्यापारकी यह विशाल रंगभूमि अेक बार देखनी ही चाहिये।

दस-बारह वर्ष पहले श्री शिवाभाअी अमीन पूर्व अफ्रीकासे आये थे। अुन्होंने अफ्रीकी लोगोंके प्रति हिन्दुस्तानके कर्तव्यके बारेमें महत्त्वपूर्ण बातें की थीं, 'फेसिंग माअुन्ट केनिया' नामक पुस्तक पढ़नेके लिअे भेजी थी और अेक बार पूर्व अफ्रीका देख जानेकी सिफारिश की थी। यद्यपि अुस समय मैंने अुनकी बात नहीं मानी, लेकिन मनमें संस्कार तो जमे हुअे थे ही। अिन सब कारणोंसे दक्षिण अफ्रीका जानेके मौकेसे लाभ अुठाकर पूर्व अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। अिसके अलावा, श्री अप्पासाहब पंत और श्री नानजी कालीदासने अफ्रीकामें गांधी स्मारकके रूपमें अेक कालेज कायम करनेकी और अुसे अफ्रीकाके काले, युरोपके गोरे और अेशियाके गेहुंवे रंगके सभी विद्यार्थियोंके लिअे खुला रखनेकी योजना मुझे समझाअी और कहा: "अिस कल्पनाको पक्का रूप देने और लोगोंको समझानेके लिअे आपकी मदद जरूरी है।" अिस योजनाके लिअे जरूरी पैसा अिकट्ठा करनेकी जिम्मेदारी स्वभावतः मेरी नहीं थी। लेकिन लोकहितकी दृष्टिसे तथा शिक्षाके विकासकी दृष्टिसे योजनाको जांचकर अुसके बारेमें अपना मत देनेका और लोगोंको अिस योजनाके अनुकूल बनानेका काम मैं कर सकता था। मैं जानता था कि यह काम सार्वजनिक भाषणोंके बनिस्बत

खानगी बातचीत और चर्चाके जरिये ज्यादा अच्छा हो सकता है। अिसलिअे मैंने अैसा ही करनेका सोचा और पूर्व अफ्रीकाकी अनेक शिक्षा-संस्थायें देख लेनेका निश्चय किया। भारत सरकारने अिसी विषयमें सलाह देनेके लिअे दो विशेषज्ञ वहां भेजे थे। अुनकी रिपोर्ट भी मंगा कर मैंने पढ़ी थी।

हमारे देशके कुछ धर्मोपदेशक कभी-कभी पूर्व अफ्रीका जाते हैं। अुनके प्रचारके फलस्वरूप हिन्दुस्तानी लोगोंकी नैतिक-सामाजिक स्थिति कितनी सुधरी है, यह देखनेकी भी अिच्छा थी। क्योंकि कुछ लोगोंके मुंहसे अुनकी स्थितिके बारेमें मैंने चिन्ताजनक बातें सुनी थीं।

अैसे अनेक कारणोंसे अफ्रीकाकी यात्रा करनेका मैंने निश्चय किया। तीन महीनोंके अन्तमें आज कह सकता हूं कि अिन तीनों महीनोंमें मुझे बहुत देखनेको मिला, अुससे भी अधिक जाननेको मिला। मैं गांधीजीकी दृष्टिसे अफ्रीकाकी स्थितिकी जांच कर सका। और मुझे लगता है कि अिससे दुनियाकी आजकी स्थिति समझनेकी मेरी शक्ति बहुत बढ़ी है। साधारण तौर पर की हुअी दो-तीन महीनेकी यात्रामें जितना अनुभव और जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अुससे भी ज्यादा मैं प्राप्त कर सका हूं। क्योंकि अिस यात्रामें मुझे अनेक लोगोंसे अनेक प्रकारका जितना सहकार मिला, अुतना शायद ही किसीको मिल सकता है। आज तक मैंने गुजराती भाषाकी जो भी थोड़ी बहुत सेवा की होगी, अुसके फलस्वरूप मुझे पूर्व अफ्रीकाके असंख्य गुजराती हिन्दू-मुस्लिम घरोंमें प्रेमका स्थान मिला। अफ्रीकामें मैं गुजराती भाषाकी सांस्कृतिक शक्तिका विशेष दर्शन कर सका।

२

तैयारी

पूर्व अफ्रीका देखनेका अवसर बड़े विचित्र ढंगसे मुझे मिला। नअी दिल्लीमें गांधी-स्मारक-संग्रह (म्यूजियम) तैयार कर देनेकी जिम्मेदारी स्मारक-निधिने मुझे सौंपी। अिसलिअे महात्मा गांधीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुअें, अुनके जीवन-प्रसंगके बयान, वगैरा अिकट्ठे करनेका काम मेरे सिर आया। यह सारी सामग्री कालक्रमके हिसाबसे अिकट्ठी करनेके लिअे पहले सौराष्ट्रका और बादमें दक्षिण अफ्रीकाका प्रवास करना स्वाभाविक था। मुझे लगा कि पूर्व अफ्रीका होकर दक्षिण अफ्रीका जानेमें सुविधा रहेगी। विश्वशांति परिषदके कारण भारत आये हुअे श्री मणिलाल गांधीके साथ अिस सारे प्रवासकी योजना सोच ली। अुन्होंने मेरा यह विचार भारत सरकारके कमिश्नर और मेरे पुराने मित्र श्री अप्पासाहब पंतके सामने नैरोबीमें जाहिर किया। अुन्होंने अुसका हार्दिक स्वागत किया, क्योंकि वे अेक मानवहितोंकी चिन्ता रखनेवाले राजनीतिज्ञकी योग्यता और कुशलतासे पूर्व अफ्रीकाके सवालोंका हल खोज रहे थे और अिस सम्बन्धमें अनेक योजनायें तैयार कर रहे थे। अिसलिअे न सिर्फ अुन्होंने मेरे विचारका ही स्वागत किया, बल्कि अैसा आग्रह शुरू किया कि दक्षिण अफ्रीका जब जाना होगा तब होगा, लेकिन पूर्व अफ्रीका तो आपको तुरन्त आ ही जाना चाहिये।

पूर्व अफ्रीकामें ५० वर्षसे भी ज्यादा रहकर केवल अपनी कार्यकुशलतासे करोड़पति बने हुअे और सार्वजनिक कामोंके लिअे अनेक दान देनेवाले श्री नानजीभाअी कालीदाससे अप्पासाहबने मेरे संकल्पके बारेमें बात की होगी। अुन्होंने हिन्दुस्तान पहुंचते ही मुझे

पूर्व अफ्रीका आनेका आमंत्रण दिया और आर्थिक दृष्टिसे मुझे निश्चिन्त कर दिया।

अपने अनेक कामोंके कारण मैं अिस आमंत्रणको आगे ही आगे ढकेलता गया। लेकिन जब गांधीजीके जन्मस्थान पोरबंदरमें नानजीभाअी द्वारा स्थापित कीर्ति-मंदिर देखने मैं वहां गया, तब अुन्होंने परमिटके लिअे कागजात तैयार कराकर हमारी सहियां लीं और हमें — मुझे और चि० कुमारी सरोजिनी नानावटीको — पूर्व अफ्रीका भेज ही दिया!

शान्तिनिकेतन और सेवाग्राममें हो रही विश्वशांति परिषदमें दिसम्बरका महीना बीता। जनवरीका महीना बिहारके प्रवासमें बिताना पड़ा। २६ जनवरीके स्वातंत्र्य-दिवसके अुत्सवके लिअे दिल्लीमें न रहकर मध्यप्रदेशके ५० हजार आदिवासियोंके अेक विराट संमेलनमें हाजिर रहा। और फरवरीका महीना हिन्दुस्तानकी अीशान्य सीमा पर नदियाके आसपास वहांके आबोर, मिशमी वगैरा वनप्रदेशके लोगोंके बीच घूमनेमें पूरा किया। अितना सब करनेके बाद ही मैं पोरबन्दर जा सका था। वहां पूर्व अफ्रीका जानेका निश्चय कर लेने पर भी अप्रैलमें राष्ट्रीय सप्ताहके दिनोंमें अनुगुल (अुड़ीसा) में जो अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन होनेवाला था, अुसे भला कैसे टाला जाता? वह काम अप्रैलमें पूरा करनेके बाद ही प्रवासकी तैयारी शुरू की।

आजकल जिस किसी देशमें जाना हो, वहांके लोगोंको निर्भय करनेके लिअे कुछ खास रोगोंके अिंजेक्शन लेने होते हैं। और वहांसे लौटते समय भी वहांके कोअी रोग हम साथ न ले आवें अिस हेतु, यानी अपने देशके लोगोंको विदेशके रोगोंसे बचानेके लिअे भी कुछ खास अिंजेक्शन लेने पड़ते हैं। अिस तरह हमने कालरा, शीतला और यलो फीवर — अिन तीनों रोगोंके अिंजेक्शनोंकी मुसीबत भुगत ली। भारतमें अब हमारी सरकार हो जानेसे पासपोर्ट पानेमें कोअी कठिनाअी नहीं हुअी।

निश्चित कब निकल सकेंगे, यह समय पर तय नहीं हो सका। अिसलिअे 'कंपाला' बोटमें हमें दूसरे दर्जेकी सुविधाओंसे ही संतोष

करना पड़ा। ये सुविधायें हर तरहसे अच्छी थीं और पैसे भी बच गये। ८ मअी १९५० को हमने हिन्दुस्तान छोड़ा — नहीं, ८ मअीको स्टीमरमें बैठे, लेकिन स्वदेश छोड़ा तभी कहा जायगा, जब हमने ९ मअीको मुरगांव (मार्मागोवा) का बन्दरगाह छोड़ा।

अैसा नहीं कि अिससे पहले मैंने कभी समुद्रयात्रा की ही नहीं थी। स्वदेश कभी छोड़ा नहीं था, अैसा भी नहीं कह सकता। कलकत्तासे तीन दिनकी यात्रा करके रंगून पहुंचा था और अुसी रास्ते लौटा भी था। अेक बार बम्बअीसे कराची और कराचीसे बंबअी भी जहाजसे ही गया था। और अेक बार तो बंबअीसे कोलम्बोकी समुद्रयात्रा भी पूज्य गांधीजीके साथ की थी। लेकिन किसी वक्त यह भावना मनमें नहीं आअी थी कि स्वदेश छोड़कर दूर जा रहा हूं। क्योंकि यह भावना बचपनसे ही बंधी हुअी थी कि ब्रह्मदेश क्या और लंका क्या, दोनों हमारे ही देशके दो सुन्दर अंग हैं। अिसलिअे वहांके लोगोंकी रहन-सहनमें बहुत ज्यादा फर्क होते हुअे भी अुस समय यह विचार नहीं आया कि मैं परदेश जाता हूं या गया हूं।

अिस वक्त हमारे यहांका पासपोर्ट वगैरा लेना और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारसे परमिट लेना जरूरी होनेसे यह भावना मन पर जबरन बैठा दी गअी कि मैं परदेश जा रहा हूं।

महेता ब्रदर्सके कर्मचारियों द्वारा हमारी सुख-सुविधाका पूरा ध्यान रखा गया था, अिसलिअे हमें तो सिर्फ स्टीमरमें जाकर बैठ ही जाना था।

कपड़ोंका सवाल परेशानी पैदा करनेवाला था। श्री नानजीभाअीने कहा कि जैसे कपड़े आप यहां पहनते हैं, वैसे ही वहां भी पहनेंगे तो चलेगा। चि० बालने बड़े आग्रहसे कहा कि धोती वगैरा कपड़े परदेशमें बिलकुल काम नहीं देंगे। वहां आपको पायजामा, पेन्ट वगैरा पहनने ही चाहियें। चि० सतीशने अुसका समर्थन किया। श्री देवदास गांधीने कहा कि हमारी धोती परदेशमें नहीं चलेगी, क्योंकि वहां पांवोंकी पिंडलियोंका

खुला रहना असभ्य माना जाता है। धोतीके बदले मद्रासी ढंगसे लुंगी पहनें, तो हमारी विशिष्टता भी रह जायगी और परदेशके शिष्टाचारका भी पालन होगा। मेरी यह परेशानी देखकर हमारी पार्लमेन्टके स्पीकर श्री दादासाहब मावलंकरने यह फैसला दिया कि जहां केवल हिन्दुस्तानी ही अिकट्ठे हुअे हों या खानगीमें मिलना-जुलना हो, वहां धोतीसे काम चलाया जाय। परन्तु जब परदेशके लोगोंसे मिलना हो या किसी महत्त्वपूर्ण सभा अथवा पार्टीमें जाना हो, तब हमारी सर्वमान्य हो चली राष्ट्रीय पोशाक ही पहननी चाहिये — और वह पोशाक है चूड़ीदार पायजामा, बन्द कॉलरवाली अचकन और सिर पर गांधी-टोपी।

दादासाहबकी यह सूचना मुझे हर तरहसे अुचित मालूम हुअी। हमारे बीचका मतभेद दूर हुआ और देखते-देखते में चूड़ीदार पायजामा पहननेकी कलामें पारंगत हो गया!

भोजनके बारेमें मैंने तय किया कि परदेश जानेके बाद शक्कर न खानेका अपना बरसोंका आग्रह मुझे छोड़ देना चाहिये। वहां दूध तो गायका ही मिलता है, अिसलिअे दूधका सवाल ही नहीं अुठता। फिर भी मनमें तय कर लिया कि परदेशमें दूध-घी वगैरा जैसा मिले वैसा ही लिया जाय। शामको सात बजेके बाद न खानेका नियम भी मैंने छोड़ दिया। सिर्फ अेक निश्चय स्वभावतः कायम रखा कि परदेशमें होते हुअे भी मांस, मुर्गा, मछली, अंडे, वगैरा कुछ नहीं लूंगा। शराबका तो सवाल ही नहीं अुठ सकता था। अिस तरह मद्यमांससे सुरक्षित रहूं, तो काफी है। बाकी नियमोंका आग्रह परदेशमें न रखा जाय।

३

समुद्रके सहवासमें

वम्बअीसे मार्मागोवा जाने तक हिन्दुस्तानका पश्चिमी किनारा बाअीं ओर दिखाअी देता था। जिस तरह बच्चेको मां आंखोंसे ओझल नहीं होती तब तक यह विश्वास रहता है कि मैं मांके साथ ही हूं, अुसी तरह किनारा दिखता रहा तब तक अैसा नहीं लगा कि हिन्दुस्तान छोड़ दिया है। मार्मागोवा छोड़ देने पर हमारे स्टीमर 'कंपाला' ने स्वदेशसे समकोण बनाते हुअे सीधे विशाल समुद्रमें प्रवेश किया। देखते-देखते हिन्दुस्तानका किनारा आंखोंसे ओझल हो गया और चारों तरफ केवल पानी ही पानी फैला दिखाअी देने लगा। रात हुअी और आकाशकी ज्योतिर्मयी आबादी बढ़ी। अुससे अकेलापन बहुत कम हो गया। लेकिन जैसे-जैसे भूमध्य रेखाकी तरफ बढ़ने लगे, वैसे-वैसे हवा और बादलोंकी चंचलता बढ़ने लगी। मौसम अच्छा होनेसे समुद्र शान्त था। लहरें थोड़ा-थोड़ा हंसकर बैठ जाती थीं। कुछ लहरें कच्ची छींककी भांति अुठते-अुठते ही शान्त हो जाती थीं। किसी वक्त समुद्रका रंग आसमानी स्याही जितना आसमानी हो जाता; किसी वक्त काला स्याह। और जहाज पानी काटता हुआ आगे बढ़ता, तब दोनों ओर अुसका जो सफेद फेन फैलता, वह अुस पर बने हुअे जरी बेलबूटों-सा शोभा पाता। आसमानी पानी पर अुसकी शोभा अेक तरहकी दिखाअी देती, काले पर दूसरी तरह की। पहले-पहले समुद्रके चेहरे पर लहरोंके अलावा चमड़े पर पड़ी हुअी झुर्रियोंकी-सी स्पष्ट छाप दिखाअी देती। कभी ये सारी झुर्रियां गायब हो जातीं और पानी चमकते हुअे बरतनोंकी तरह सुन्दर दिखाअी देता था। जहाज धीरे-धीरे डोलता चल रहा था। जहाज जब कदमें छोटे होते हैं, तब ज्यादा डोलते हैं। बड़े जहाज आसानीसे अपनी धीरी

गतिको छोड़ते नहीं। सामनेसे लहरें आती हैं, तब जहाज डोलनेके अलावा घुड़सवारकी तरह आगे-पीछे हिलता है, जिसे अंग्रेजीमें 'पिचिंग' कहते हैं। यह पिचिंग लम्बे समय तक जारी रहे, तो आदमीको अच्छा नहीं लगता। लेकिन अुसे रोका कैसे जाय? झूले झूलकर अुकता गये हों, तो झूला बन्द करके अुस परसे अुतरा जा सकता है। लेकिन यहां तो अेक बार जहाज पर बैठे कि आठ दिन तक अुसके हिलने-डुलनेको स्वीकार किये सिवा कोअी चारा ही नहीं। कभी-कभी शंका होती थी कि दोनों गतियोंके मिश्रणसे कहीं चक्कर तो नहीं आने लगेंगे? मनमें यह भी डर घर कर लेता कि चक्करकी शंका पैदा हुअी, अिसीलिअे चक्कर आयंगे। खाते समय स्वाद लेकर रसपूर्वक खाते हों, तो भी यह शंका बनी रहती कि खाया हुआ पेटमें टिकेगा या नहीं? अिस शंकाको मिटाना आसान नहीं था। जो भी हो, हमने तो अपने आठों दिन खूब आनन्दमें बिताये। लोगोंने डरा दिया था कि आखिरी चार दिन कठिन जायेंगे। लेकिन हमें तो अैसा कुछ मालूम नहीं हुआ। जिस दिन हमने भूमध्य रेखा पार की, अुस दिन कुछ समय तक हवा खूब तेज चली। लेकिन अुससे हम अुदास, गमगीन नहीं हुअे।

अपनी चारों तरफ जब पानी फैला दिखता है, तब कुछ समय तक मजा आता है। बादमें सारा वातावरण गंभीर बन जाता है। लेकिन जब यह गंभीरता कम हो जाती है, तो आंखें घबराने लगती हैं। हमारी पूरी सृष्टि अुस जहाजमें ही समा गयी! विशाल समुद्रकी तुलनामें वह कितनी छोटी और तुच्छ मालूम होती थी! वह भी समुद्रकी दया पर जीनेवाली। और अुस सृष्टिको छोड़कर बाकी सब पानी ही पानी। अितने पानीका आखिर अुद्देश्य क्या है? जमीनका पट चाहे जितना विशाल हो, तो भी अैसा नहीं लगता कि अितनी जमीन किस लिअे बनाअी गअी होगी? विशाल, व्यापक और अनन्त आकाश देखकर भी अैसा नहीं लगता कि अितने बड़े आकाशका निर्माण किस लिअे हुआ होगा? लेकिन समुद्रका पानी देखकर यह विचार

अुठे विना नहीं रहता। जमीनसे परिचित आंखोंको जव अपने चारों ओर पानीका अखंड विस्तार देखना पड़ता है, तव वे घवरा जाती हैं और अन्तमें अूवकर क्षितिज पर छाये हुअे वादलोंको देखकर आराम पाती हैं। लेकिन कअी वार ये वादल विना आकारके और अर्थहीन होते हैं। आकाश जव मेघाच्छन्न हो जाता है, तव तो अुनकी अुदासी असह्य हो अुठती है। अीश्वरकी कृपा है कि आखिरकार अिस घवराहटका भी अन्त आता है और खुली आंखें भी अन्तर्मुख होकर गहरे विचारमें तल्लीन हो जाती हैं।

रातमें और खास कर वड़े तड़के तारे देखनेमें मजा आता था। लेकिन 'पूरा आसमान तो हरगिज न देखने देंगे', अैसा कहकर बच्चोंकी तरह वादल आसमानके मुंह पर अपने हाथ घुमाते रहते थे। अुनकी दयासे जिस समय आकाशका जितना हिस्सा दीखता, अुसीको पढ़ लेनेका हमारा काम रहता।

गुरुवारका प्रातःकाल होगा। जहाज सीधा चल रहा था और अुसके मुख्य स्तंभके विलकुल पीछे शर्मिष्ठा चमक रही थी। स्तंभकी आड़में भाद्रपदाकी चौरस आकृति किसी तरह जम गअी थी। नीचे अुतरते हुअे ध्रुव तारेके पास देवायानीका अुदय हो रहा था। पौने पांच वजे और श्रवण सिर पर दिखाअी देनेवाले मंगलके स्थान पर लटकने लगा। हंस, अभिजित और पारिजात तीनों मिलकर अेक सुन्दर चंदोवा वना रहे थे। वाअीं तरफ गुरु, चन्द्र और शुक्र अेक कतारमें आ गये थे। चन्द्रकी चांदनी अितनी मंद थी कि अुसे छांछकी अुपमा भी नहीं दी जा सकती। सामने देखने पर वाअीं ओर वृश्चिक अपने तीनों नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा और मूलके साथ लटक रहा था। जव कि दाअीं ओर स्वाति अस्त हो रही थी। वेचारा ध्रुवमत्स्य (ध्रुव और अुसके पासके छः तारोंका समूह) लगभग क्षितिजसे मिल गया था।

दूसरे दिन चन्द्रका पक्षपात शुक्रकी तरफ हो गया। रातमें सप्तर्षिके दर्शन करके हम सोये, अुस समय पुनर्वसुकी छोटीसी नावको हमारे साथ

दक्षिणकी यात्रा पर रवाना हुअी देखकर वड़ा आनन्द होता था। पुनर्वसुकी नौकामें वैठनेकी चित्राकी तमन्ना अभी पूरी नहीं हुअी है। शायद मघा नक्षत्रकी अीर्ष्या अिसमें रुकावट डालती होगी ! शनिवारके दिन चन्द्र और शुक्रका जोड़ा शोभा पाता था। आखिर आखिरमें अिन दोनोंने नीला रंग धारण कर लिया। भाद्रपदाकी चौड़ी नाली यहां खूब अूंची चढ़ी हुअी दीखती थी। ध्रुव् कलसे ही लुप्त हुआ है।

सवेरे जव अुषा स्वागत करनेके लिअे मंद हास्य करती है, तव सारे क्षितिज पर चांदी जैसी चमकती किनारी वन जाती है। अुसके वाद समुद्र प्रसन्न मुद्रामें हंसने लगता है और अुषाको प्रगट होनेका मौका देता है।

शनिवारको सामनेसे आता हुआ अेक जहाज दिखाअी दिया। अुसने अपने दीयेका प्रकाश चमकाकर हमारे जहाजके साथ शिष्टाचार दिखाया। हमारे जहाजने भी अुसका अुत्तर दिया ही होगा। दोनों जहाज वहुत समीप आ जाते, तो दोनों सीटी वजाते; लेकिन जहां सीटीकी आवाज नहीं पहुंचती, वहां प्रकाश दिखाकर काम चलाना पड़ता है। पूरे चार दिनके वाद हमारे जहाजके जैसी ही दूसरी अेक सृष्टिको जीवन-पट पर विहार करते देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ। हमारे जहाजके लोग अफ्रीकाके सपने देख रहे थे। सामनेवाले जहाजके मुसाफिर मातृभूमि हिन्दुस्तानके सपने देख रहे होंगे। हर जहाजके मुसाफिरोंके मनमें चल रहे संकल्प-विकल्पोंका अेकन्दर हिसाव लगाया जाय तो कैसा मजा आये !

जहाज पर यात्रियोंकी तीन जातियां होती हैं। प्रतिष्ठाकी अस्पृश्यता भोगनेवाले होते हैं पहले दर्जेके यात्री। अुन्हें ज्यादा सुविधायें मिलें तो कोअी चिन्ता नहीं, लेकिन अुनका वड़प्पन अिस वातमें है कि अुनके राज्यमें दूसरा कोअी प्रवेश भी नहीं कर सकता। अूपरी डेकका वहुत वड़ा भाग अुनके आराम और खेलकूदके लिअे 'रिजर्व' होता है। दूसरे दर्जेके यात्री भी काफी अच्छी सुविधा भोगते हैं। लेकिन तीसरे

दर्जेके यात्रियोंकी गिनती तो मनुष्योंमें होती ही नहीं। अुनके झुंडके झुंड पशुओंकी तरह चाहे जहां ठूंस दिये जाते हैं। आठ दिन तक मनुष्यको पशुजीवन विताना पड़े, यह कोअी मामूली मुसीवत नहीं है।

और अव दूसरे और तीसरेके वीचमें ड्योढ़ा दर्जा निकाला गया है। वह पशु और मनुष्यके वीचका वानर वर्ग कहा जा सकता है। अुसमें भीड़ तो खूव होती है, लेकिन यही गनीमत है कि यात्री मनुष्यकी तरह सो सकते हैं।

हम जहाज पर हैं, अैसा कुछ लोगोंको मालूम हुआ, तो वे हमसे वातें करने आने लगे। अुसमें भी हमारे सुवह-शाम प्रार्थना करनेके समाचार जव जहाजके खलासियों तक पहुंचे, तो अुन्होंने हमें नीचेके डेक पर शामको प्रार्थना करनेके लिअे वुलाया। लगभग सारे खलासी सूरत जिलेके थे। भजनके पूरे रसिया। वे अनेक भजन जानते और स्वर-तालके साथ गा सकते हैं। अुनकी भजन-मंडली जव जमती, तव वे सारे दिनकी थकान और जीवनकी सारी चिन्तायें भूल जाते। आसमानी रंगकी पोशाक पहन कर सारे दिन यंत्रकी तरह काम करनेवाले यही लोग हैं, अैसा जानते हुअे भी यह सच नहीं लगता। अुनके समक्ष मैंने अनेक प्रवचन किये। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि जमीन पर ही दीवालें चुनी जा सकती हैं। समुद्र पर नहीं। अिस-लिअे खलासियोंके यहां जात-पांतकी दीवारें नहीं रहनी चाहियें। दरिया पर तो अुन्हें दरियादिल वनना चाहिये।

हम लोग जिस तरह प्रार्थना और भजनमें तल्लीन रहते थे, अुसी वीच जहाजके वहुतसे गोवानी लोगोंने अेक रातको स्त्री-पुरुषोंके नाचका आयोजन किया। अिसके लिअे अुन्होंने जो चंदा किया, अुसमें हमें भी शरीक किया। अिसलिअे हम हकदार दर्शक वने!

गोवाके अीसाअियोंमें युरेशियन शायद ही देखनेको मिलेंगे। धर्मसे अीसाअी लेकिन खूनसे शुद्ध भारतीय अैसे लोगोंने पश्चिमके जो

संस्कार अपनाये हैं, अुनका असर देखने लायक होता है। कितने ही युगल संयमपूर्वक नृत्यकलाका आनन्द ले रहे थे। कुछ जोड़े अैसे गंभीर, अलिप्त और यांत्रिक ढंगसे नाच रहे थे, मानो कोअी सामाजिक विधि पूरी कर रहे हों। जब कि दूसरी कुछ जोड़ियां नृत्यके नियमोंके अनुसार बन सके अुतनी छूट लेकर नृत्यमें और अेक-दूसरेमें लीन दीखाअी देती थीं। अेक दो जोड़ियोंकी अुमर और अूंचाअी अितनी विषम थी कि मनमें यही विचार आता था कि अितनी बड़ी विडम्बनाका भोग अुन्हींको कैसे बनना पड़ा। संकरी जगहमें अितने सारे लोगोंका नाच जैसे तैसे पूरा हुआ। अन्त तक जागनेकी अिच्छा न होनेसे ११ बजनेसे पहले ही हम लोग सो गये।

हमारा जहाज पश्चिमकी ओर यानी पृथ्वीकी गतिसे अुलटी दिशामें चलता था, अिसलिअे हमें लगभग रोज ही घड़ीके कांटे घुमाने पड़ते थे। जहाजकी तरफसे सूचना मिलती कि 'मध्यरात्रीमें आधा घंटा कम करो' या 'अेक घंटा कम करो'। सृष्टिके नियमको समझकर हम अितना नुकसान अुठानेको तैयार थे! अफ्रीका पहुंचने तक हमने ढाअी घंटे खोये। (बेल्जियन कांगो जाने पर अेक और घंटा खोना पड़ा, अिसका वर्णन यथास्थान आयेगा।)

भूगोलके तथ्य विस्तारसे न जाननेवाले पाठकोंके लिअे अितना कह देना जरूरी है कि रेखांशकी हर १५ डिग्री पर अेक घंटा घटाना या बढ़ाना पड़ता है। प्रशांत महासागरमें जब जहाज अेशिया और अमेरिकाके बीच १८० रेखांश पर होते हैं, तब अुन्हें आते या जाते अेक पूरा दिन बढ़ाना या घटाना पड़ता है। अिस रेखांशको अंग्रेजीमें 'डेट लाअिन' कहते हैं। जिस तरह हमारे यहां अधिक मास आता है, अुसी तरह 'डेट लाअिन' पर जाते हुअे अेक अधिक दिन आता है और आते हुअे अेक दिनका क्षय होता है।

आठ दिनसे न तो कोअी अखबार, न डाक, न मुलाकाती और न कोअी शहर या गांव देखनेको मिला — यहां तक कि पहाड़ या

द्वीप भी सपनेकी संपत हो गये थे। अैसी हालतमें जब घंटेके घंटे और दिनके दिन चुपचाप बीत जाते हैं, तब वार और तारीखका भी ठिकाना नहीं रहता। हमारे जहाजकी अूंचाअीका हिसाब करते हुअे जब मैंने अिस बातकी जांच की कि हमारे आसपास क्षितिज तक कितना समुद्र फैला हुआ है, तो जहाजवालोंसे पता चला कि हमारी आंखें अेक बारमें चारों तरफ २५० वर्ग मीलमें फैला हुआ समुद्र देख या पी सकती थीं। कितनी बड़ी शांति! और वह भी डोलती, झूलती, बहती और फिर भी स्थिर। आकाशके आशीर्वादके नीचे शांतिका साम्राज्य फैला था। Swelling and rolling peace — abiding and abounding.

कौन जाने किस तरह अिस शांतिके अनुभवके साथ मुझमें मानव-प्रेम अुमड़ रहा था और सारी मानव-जातिसे 'स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति' कह रहा था। मानव-जातिका अितिहास आज भी अेकंदर सुन्दर नहीं बन पाया है। अिसी समुद्रने कितने ही अन्याय और अत्याचार देखे होंगे; कितने ही गुलामोंकी ठंडी आहें यहांकी हवामें मिली होंगी; और कितनी ही प्रार्थनायें सूर्य, चन्द्र और तारों तक पहुंच कर भी व्यर्थ गअी होंगी। लेकिन अितना होते हुअे भी अगर मनुष्यके बहे हुअे खूनसे समुद्रमें लाली नहीं आअी, दुःखियोंकी आहोंसे यहांकी हवा कलुषित नहीं हुअी और लोगोंकी निराशासे आकाशके नक्षत्रों और तारागणोंकी ज्योति मंद नहीं पड़ी, तो मनुष्य-जातिका थोड़ासा अितिहास पढ़कर मेरा मानव-प्रेम किस लिअे संकुचित या कम हो? यदि मैं अपने असंख्य दोषोंको भूलकर अपने पर प्रेम कर सकता हूं और अपने विषयमें अनेक आशायें बांध सकता हूं, तो मेरे ही अनंत प्रतिबिम्बरूप मानव-जातिको मेरा पूरा प्रेम क्यों न मिले?

अैसी भावनाके साथ अफ्रीकाकी भूमि पर मनुष्य-जातिके चल रहे त्रिखंड (अेशिया, युरोप और अफ्रीका) सहकारको देखनेके लिअे मैं मोम्बासा पहुंचा।

अिन आठ दिनोंमें खूब पढ़ने और लिखनेकी जो आशा रखी थी, वह पूरी नहीं हुअी। लेकिन ये आठ दिन जीवनके दर्शन, चिन्तन और मननसे भरपूर थे।

४

प्रवेशद्वार

मैंने माना था कि मोम्बासा अुतर कर सीधे नैरोबी जाना होगा। मोम्बासामें चार-पांच दिन रहनेका श्री अप्पा साहबने किस लिअे तय किया होगा, यह मेरे खयालमें नहीं आया था। मोम्बासाके बारेमें मेरी अितनी ही कल्पना थी कि वह पूर्व अफ्रीकाका अेक मुख्य बन्दरगाह और व्यापारका केन्द्र है। अिसलिअे जब ११ मअीके सुन्दर प्रभातमें हम मोम्बासा पहुंचे और अुसका हराभरा आकर्षक किनारा देखा, तो हमारे आश्चर्यका पार न रहा। हम कुल आठ जन थे। मेरे साथ चि० सरोजका आना पहलेसे ही तय हो चुका था। आखिर-आखिरमें श्री शरद पंड्याने साथ आनेकी अिच्छा बताअी। पासपोर्ट, परमिट वगैराकी व्यवस्था भी तारसे हो सकी। अिस तरह हम तीन हो गये। श्री अप्पा-साहबके आमंत्रण और भारत सरकारकी अनुमतिसे श्री कमलनयन बजाज भी पूर्व अफ्रीका देखनेके लिअे रवाना हुअे थे। अुन्होंने जहाजमें हमारे साथ रहनेके लिअे अपना कार्यक्रम बदला और कुछ असुविधा अुठाकर भी हमारे स्टीमरमें ही जगह प्राप्त की। अपने बच्चोंको देशाटनसे मिलनेवाली शिक्षाका महत्त्व पूरी तरह समझनेके कारण श्री कमलनयनने चि० राहुल और छोटी बच्ची सुमनको भी साथ लिया। अिसके अलावा, खाने-पीनेमें सुविधा रहे, अिस खयालसे अुन्होंने दो नौकर भी साथ ले लिये थे। अिस तरह हमारा आठ आदमियोंका काफिला अफ्रीकाकी भूमि पर अुतरनेके लिअे अक्षरशः अुत्कंठ हो गया था। हम तो क्या, लगभग सारे ही मुसाफिर अफ्रीकाके जिराफकी तरह

अफ्रीकाके दर्शनके लिअे अुत्-कंठ होकर (गर्दन अूंची अुठाकर) जहाजके कठघरेके पास अिकट्ठे हो गये थे। आखिर-आखिरमें अेक विघ्न पैदा हुआ। जहाज पर किसी बच्चेको छोटी माता निकली थी। अिसलिअे जहाजको क्वारेन्टाअिनमें रखनेकी बात चली। पहले और दूसरे दर्जेके यात्री हर बातमें सुरक्षित होते हैं, और हम ठहरे भारत सरकारके कमिश्नरके मेहमान! हमें सारी सुविधायें समय पर आसानीसे मिल सकीं। हमें जो रुकना पड़ा, वह दूसरोंकी तुलनामें कुछ भी नहीं था। अुतनेमें नहा-धोकर हमने नाश्ता भी कर लिया। श्री अप्पासाहबकी तरफसे अुनके प्राअिवेट सेक्रेटरी श्री तात्यासाहब अिनामदार सवेरे ही बन्दरगाह पर आ पहुंचे थे। अुतरनेका समय हुआ कि खुद अप्पासाहब पंत भी जहाज पर आ पहुंचे और प्रेमसे मिले। दूसरे लोगोंको जहाज पर चढ़नेकी अिजाजत मिले, अिसके पहले ही अेक पत्र-प्रतिनिधि बन्दरगाहके डॉक्टरके साथ जहाज पर आ गये और अपने धर्मके प्रति वफादारी बताकर अुन्होंने मुझसे अेक सन्देश मांगा। मैंने अुन्हें नीचेका सन्देश लिख दिया, जिसे अुन्होंने अुसी दिन कअी अखबारोंमें छपा दिया था:

> "मैं अफ्रीकाके किनारे पर आज पहली ही बार पांव रख रहा हूं। मैं अिस भूमिको हिन्दुस्तान जितनी ही पवित्र मानता हूं। अिस अफ्रीकामें ही दुनियाको महात्मा गांधीका पहला परिचय मिला। अिस अफ्रीका खंडमें दुनियाके तीन खंडोंके मानव परस्पर सहकारके लिअे आकर अिकट्ठा हुअे हैं और अुस विश्वबन्धुत्वको सिद्ध करनेका प्रयत्न कर रहे हैं, जो मानव-जातिका अन्तिम भविष्य है। अैसी भूमि पर पैर रखते हुअे मैं अुन अफ्रीकन लोगोंको प्रणाम करता हूं, जिनकी यह मातृभूमि है।"

अुतरते ही हम श्री नानजीभाअीके सुन्दर और विशाल भवनमें जा पहुंचे। अुस दिन हमें पूरा आराम लेने दिया गया। शामको मोटरकी मददसे सारा शहर देख डाला — खास करके बन्दरका भाग, किलेका भाग, और बाजार वगैरा। समुद्र किनारे चलते-चलते दीप-स्तंभ देखा, सरकारी

मकान देखे, प्रवालके कीड़ों द्वारा वनाये हुअे पोले पत्थर देखे। और दूसरे दिनसे शुरू होनेवाले भरेपूरे कार्यक्रमके लिअे तैयार हो गये।

पहली ही वार देखकर में समझ गया कि मोम्वासा जैसे युरोपियनोंका है, वैसे भारतीयोंका भी है। अुन्होंने यहां काफी चमकीले सार्वजनिक जीवनका विकास किया है। और अुनके आश्रयमें यहांके मूल निवासी अफीकन लोग नये संस्कार ग्रहण करके नअी सभ्यताके अच्छे-वुरे सव तत्त्व ग्रहण कर रहे हैं।

मोम्वासा अेक टापू ही कहा जायगा। अुसके दोनों तरफ जो दो खाड़ियां हैं अुनमें से अुत्तर दिशाकी खाड़ीमें अरवस्तान और हिन्दुस्तानसे आनेवाले छोटे जहाज लंगर डालते हैं। अिन जहाजोंको यहां 'ढाऊ' कहते हैं। अिन जहाजोंकी दक्षिण दिशाकी खाड़ीमें वड़े-वड़े स्टीमर आकर ठहरते हैं। अिस तरफके वन्दरका नाम किलिन्डिनी है। चाहे जिस ओरसे देखिये, समुद्रकी शोभा फीकी पड़ती ही नहीं। शहर नये और पुरानेका मिश्रण है।

मोम्वासा वहुत पुराना वन्दरगाह है। लगभग दो हजार वर्ष पहले लोगोंने यह खोज निकाला था कि सालके अमुक महीनोंमें हवा अीशान्य कोणसे नैऋत्य कोणकी तरफ वहती है और अुस मौसमके खतम होने वाद दूसरे कुछ खास महीनोंमें अिससे अुलटी हवा चलती है। अितनी शोध हो जानेसे अरवस्तान और हिन्दुस्तानके वहादुर नाविक दिसम्वरसे अप्रैल तकके महीनोंमें अपने-अपने देशसे सीधे अफ्रीकाके किनारे आने लगे, और यहांका व्यापार पूरा करके अगस्तके आसपास वे लौट जाते। अिस तरह यातायात शुरू होनेसे यहांका व्यापार खूव चमका। अिससे चीजों और संस्कारोंके लेन-देनका अुत्तम साधन अुत्पन्न हुआ और दुनियाका अितिहास वदला। जहाजोंके लिअे मोम्वासा अुत्तम वन्दरगाह है, अिसलिअे अुस पर अधिकार करनेके लिअे अरव और पुर्तगाली लोगोंके वीच सदियों तक खूव झगड़ा चला। पुर्तगालवालोंने सन् १६०० से पहले यहां अेक किला वनवाया और अुसका नाम फोर्ट जीसस रखा। अपना नाम अेक लड़ाअीमें काम आनेवाले किलेको

दिया गया जानकर शान्तिके पैगम्बर अीसाको कैसा लगा होगा ? आजकल अिस किलेसे जेलका काम लिया जाता है और झांझीवारके सुलतानका झंडा आज भी अुस पर फहराता रहता है।

यहांके बहुतेरे मकान प्रवालके कीड़ों द्वारा बनाये हुअे पत्थरोंके होते हैं। प्रथम विश्वयुद्धके दिनोंमें अेक बार भारतसे कुछ जहाज यहां आये थे। अुनके पास काफी माल नहीं था, अिसलिअे जहाजोंके लिअे जरूरी बोझके (बेलास्टके) रूपमें पत्थर भरकर लाये गये थे। अुन पत्थरोंसे अेक मुहल्लेके अनेक मकानोंकी नींव चुनी गयी थी। अिस तरह भारतके पत्थरों पर खड़े मकान अफ्रीकामें देखकर मेरे मनमें अनेक विचार पैदा हुअे और चले गये। यदि सौ-अेक साल तक दुनियामें शान्ति बनी रही, तो मोम्बासाका बन्दरगाह भी हमारे बम्बअी जैसा ही विकास करेगा।

मोम्बासामें हम लोग ६ दिन रहे। अिस बीच हमारा खास काम वहांकी शिक्षण-संस्थायें देखनेका था। सारे अफ्रीकामें तीन प्रकारकी शिक्षण-संस्थायें तो हैं ही। गोरे अलग पढ़ते हैं, अफ्रीकन लोग अलग पढ़ते हैं और हिन्दुस्तानी अलग पढ़ते हैं। हिन्दुस्तानियोंमें धर्मभेद और जातिभेद तो होंगे ही, होते हैं। मुसलमानोंमें भी आगाखानी (अिस्माअिली), अिशनासरी, वगैरा भेद हैं। फिर, हिन्दुओंमें लुहाणा, वीसा, ओसवाल, जैन, पाटीदार, वगैरा भेद होने ही चाहियें। यह हुअी गुजरातियोंकी बात। अिसके अलावा, पंजाबियोंकी सिक्ख शालायें भी हैं। अिन लोगोंमें भी यों ही पड़े हुअे दो पन्थ पाये जाते हैं।

और गोवाके किरिस्तांव लोग खुदको अलग मानकर अलग संस्था चलाते हैं, सो अलग। लड़कियोंको शिक्षा देनेवाली संस्थायें कम हैं, लेकिन हैं जरूर। और अुनमें भी जात-पांतके भेद तो हैं ही। अिन संस्थाओंमें जाति या धर्मके नाते शिक्षाका कोअी भेद नहीं है। प्रार्थना या धर्मोपदेशोंमें अमुक आग्रह पाये जाते हैं। अिससे धार्मिकता बढ़नेके बजाय पंथाभिमान और साम्प्रदायिकता ही बढ़ी हुअी देखनेमें आती है।

'वे लोग जिस तरह मानते हैं, हम अुस तरह नहीं मानते; हमारी मान्यतायें और विश्वास अुनसे अलग हैं, अिसलिअे हम अुनसे अलग हैं'— अितना बच्चोंके मन पर बैठा दिया कि धर्मकी रक्षा हो गअी! अुस पर भी खूबी यह कि ये सब विश्वास पालनेके लिअे नहीं, माननेके लिअे ही होते हैं।

अैसी दलीलें की जाती हैं कि दूसरी जातिके लड़के हमारी जातिके बच्चोंके साथ पढ़ें, तो हमारी जातिके बच्चोंके संस्कार बिगड़ जायंगे और वे भ्रष्ट हो जायंगे। लेकिन वे संस्कार कौनसे हैं, यह कोअी निश्चित नहीं कह सकता। रहन-सहन तो सबकी अेकसी ही होती है। सच पूछा जाय तो ये सारे पंथ, अुनकी जातियां और अुपजातियां अलग-अलग कुटुम्ब-समूह ही हैं। और संकुचित दृष्टि रख कर अपने-अपने समूहके स्वार्थ सिद्ध करनेके लिअे ही अुत्सुक रहते हैं। जो लोग आपसमें शादी-ब्याह कर सकते हैं, अुनकी अेक जाति होती है। अुस जातिके धनी लोग अिस बातका ध्यान रखते हैं कि अपने दान-धर्मका लाभ अपनी जातिवालोंको ही मिले और अिसके लिअे धर्म, संस्कृति और अध्यात्मवादकी बातें सामने रखते हैं।

अिस जात-पांतके भेदोंके कारण वहां निरा हिन्दू जैसा कोअी रहा ही नहीं। केवल अनेक और भिन्न समाजोंकी अेक खास संख्याको हिन्दू नामसे पुकारा जाता है। हम अभिमानके साथ यह कहते हैं कि विविधतामें अेकता हिन्दू धर्मका लक्षण है, लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहारमें विविधता पर ही सारा ज़ोर लगाया जाता है। अगर कोअी अेकता टिकी रही हो, तो वह अेकसी अज्ञानता, अदूरदृष्टि और झक्कीपनमें ही दिखाअी देती है!

कुछ लोग जात-पांतके बन्धनोंको तोड़कर केवल चार वर्ण रखनेकी हिमायत करते हैं। आज ये चार वर्ण नाममात्रके ही हैं — वे नाम नहीं, केवल विशेषण ही रह गये हैं। वर्णोंकी आजकी कल्पना पर विचार करते हुअे अुनका अुपयोग केवल मनुष्यके जीवनको अेकांगी बनानेके लिअे ही है। जब तक हम जाति और वर्ण दोनोंको खतम

नहीं कर देते, तब तक हमारी मनुष्यता पूर्ण रूपसे प्रकट नहीं हो सकेगी। अनेक जगह मैंने लोगोंसे कहा कि हमारे धर्मशास्त्रोंके अनुसार सतयुगकी स्थिति अुत्तम होती है। अुस युगमें अेक ही अीश्वर और अेक ही वर्ण हो सकता है, अैसा हमारे धर्मशास्त्रोंमें कहा गया है। लोग बिगड़े, युगका ह्रास हुआ, अिसलिअे लाचार होकर अनेक वर्णों और जात-पांतके भेद पैदा करने पड़े। लोगोंके सामने में राजा भर्तृहरिका यह वचन भी अुद्धृत करता था—'ज्ञातिश्चेद् अनलेन किम्?'—जाति हो तो आगकी भला क्या जरूरत? यदि आपके पास जातिके झगड़े हों, तो समाजको जलाकर खाक कर डालनेके लिअे दूसरी कोअी आग लानेकी जरूरत नहीं।

और अफ्रीका जैसे दूरके देशमें रहन-सहनके बारेमें जात-पांतके बन्धन कोअी पालता भी नहीं। घर-घर अफ्रीकन नौकर रखे जाते हैं, जो कपड़े धोते हैं, पानी भरते हैं, खाना बनाते हैं और बच्चोंको संभालते हैं। अूंचे वर्गके यानी खर्चीली रहन-सहनवाले लोगोंके यहां कम ज्यादा मात्रामें अंडों, मांस और मदिराका व्यवहार होता है। अिसमें अपवाद भी है। लेकिन अपवादकी संख्याका पता न लगानेमें ही बुद्धिमानी है। यहां मेरा अुद्देश्य सामाजिक जीवन पर टीका करनेका नहीं, बल्कि यह शंका अुठानेका ही है कि अैसा जीवन जीनेवाले लोग जात-पांतके भेदों और अुनके अलग संस्कारोंकी बात कैसे करते होंगे।

अलग-अलग शिक्षण-संस्थाअें होनेसे पैसा व्यर्थ बरबाद होता है और शिक्षाका अुद्देश्य पूरा नहीं होता। शिक्षित लोगोंमें शिक्षाके संस्कार कोअी देख नहीं सकता, लेकिन बड़े-बड़े सुन्दर मकान आसानीसे देखे जा सकते हैं। दानशूर लोग मकान बनवानेके लिअे खुले हाथों पैसा देते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अनेक विद्यालयोंकी अिमारतें देखकर अीर्ष्या-सी होती है। लेकिन अुन सुन्दर अिमारतोंमें मिलनेवाली शिक्षाकी दीन दशा देखकर दुःख हुअे बिना नहीं रहता। कुछ संस्थाओंका प्रबन्ध

अच्छा है, लेकिन सब जगह अेक ही शिकायत सुननेमें आती है कि शिक्षक नहीं मिलते। और मिले हुअे टिकते नहीं। शिक्षकोंका कहना है कि माता-पिता और संस्थाके व्यवस्थापक अितना ज्यादा हस्तक्षेप करते हैं कि बालकोंमें किसी तरहका अनुशासन या लगन पैदा की ही नहीं जा सकती।

जहां-जहां अच्छे शिक्षक हैं, वहां शिक्षाका वातावरण तुरन्त मालूम होता है। लेकिन कुल मिलाकर यही कहना पड़ेगा कि पूर्व अफ्रीकामें हमारे लोगोंकी शिक्षा अच्छी हालतमें नहीं है।

सच कहा जाय तो हमारे लोगोंको सारे पूर्व अफ्रीकाके लिअे अेक स्वतंत्र शिक्षा-मंडल कायम करना चाहिये। अुसमें अुत्तम शिक्षाशास्त्री, अनुभवी समाजनेता और दूरंदेशीसे सलाह देनेवाले राष्ट्रपुरुष ही हों। जात-पांत या धर्मके भेदभावोंको छोड़कर सारी शिक्षण-संस्थायें अैसे शिक्षा-मंडलके हाथमें सौंप दी जानी चाहियें। हर संस्थाका बजट भले अलग रहे। किसी संस्थाका कुछ खास बातोंके लिअे आग्रह हो, तो अुनकी रक्षा करनेका वचन भी अैसा मंडल दे दे। लेकिन सारी संस्थाअें अेक मंडलके मातहत काम करें, तो ही शिक्षाकी दशा सुधर सकती है। अैसे मंडलकी प्रेरणा मिले, तो शिक्षक भी तेजस्वी बनेंगे और शिक्षा स्वावलम्बी होगी।

अेक बात देखकर मुझे विशेष संतोष हुआ। यहांकी हिन्दू और मुसलमान दोनों शिक्षा-संस्थाओंमें शिक्षा गुजरातीके जरिये ही दी जाती है। सच पूछा जाय तो कच्छ, काठियावाड़ और गुजरातसे आनेवाले हिन्दू और मुसलमानोंका अेक ही समाज है। व्यापारमें तो वे अेक दूसरेके साथ जुड़े हुअे हैं ही। सामाजिक दृष्टिसे भी कुछ हिन्दू-मुस्लिम परिवारोंमें अैसा मीठा सम्बन्ध है, मानो वे अेक ही हों। हिन्दुस्तानके टुकड़े हुअे अिसलिअे हमें भी यहां अपने संमिश्र जीवनके टुकड़े करने ही चाहियें, अैसा समझकर अनेक स्थानोंमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच वैरभाव पैदा किया गया है। अुसकी शुरुआत किसने की और किसने

वादमें जवाव दिया, अिस सवालको लेकर भी मतभेद और झगड़े चलते हैं। क्योंकि दोनों पक्ष यह मानते हैं कि अैसा भेद पैदा करनेकी दरअसल कोअी जरूरत नहीं थी और अैसे भेदसे दोनोंको वेहद नुकसान भी हो रहा है।

मैंने अुन लोगोंको कअी जगह कहा कि मैं भारतसे आया, तव मुझे कअी रोगोंके अिंजेक्शन लेने पड़े थे। सचमुच हमारे लोग हिन्दुस्तानसे जव यहां आयें, तो अुन्हें वहांके हिन्दू-मुसलमान झगड़ारूपी रोगका अिंजेक्शन लेकर ही यहां आना चाहिये। कुछ जगहों पर जैसे सारा सामान धुअेंकी कोठरीमें रखकर 'डिसअिन्फेक्ट' किया जाता है, वैसे ही हिन्दुस्तानसे आनेवाले अखवार भी डिसअिन्फेक्ट करके ही पढ़ने चाहियें। तभी हम अिस जहरसे वच सकेंगे।

हमारे लोगोंने पूर्व अफ़्रीकामें अपने राजनीतिक अधिकारोंकी रक्षा करनेके लिअे जगह-जगह अिण्डियन अेसोसियेशनोंकी स्थापना की। अव कुछ लोगोंको अिस 'अिण्डियन' शव्दसे अेतराज होता है। यह अंधापन अिस हद तक पहुंच गया है कि पक्षाभिमानी लोगोंकी जिद है कि जिस तरह हिन्दुस्तानके टुकड़े पड़े, अुसी तरह अिण्डियन अेसोसियेशनोंके भी टुकड़े होने चाहियें और अुनके फंडका वंटवारा होना चाहिये।

जिन शिक्षण-संस्थाओंमें हिन्दू-मुस्लिम वच्चे अेक साथ पढ़ते हैं, वहां कहीं-कहीं अिस वात पर जोर दिया जाता है कि शिक्षकोंकी नियुक्तिमें हिन्दू-मुस्लिम अनुपातका ध्यान रखना चाहिये! व्यवस्था-मंडलमें भी जातीय अनुपातका सवाल पैदा होता ही है। हर जगह दोनों समाजोंके नेता निश्चित रूपसे यह वात कहते हैं कि "हमारे मनमें अभी तक अैसा भेदभाव था ही नहीं। सामनेवाले पक्षकी नियत विगड़ी, अिसलिअे आत्मरक्षाकी खातिर हमें सावधान होना पड़ा और कड़े अुपाय काममें लेने पड़े।"

भाषाके वारेमें गुजरातीके कारण जो अेकता कायम है, वहां भी मुट्ठीभर पंजावी लोग राष्ट्रभाषाको आगे करके झगड़ा पैदा कर रहे हैं।

पंजावी मुसलमान अुर्दूके हामी हैं, जव कि पंजावके सिक्ख हिन्दीका आग्रह रखते हैं। सिक्ख लोगोंने शिक्षा-विभागके साथ वातचीत करके गुरुमुखीको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करवाया है।

पूर्व अफ्रीकामें महाराष्ट्री लोग अितने कम हैं कि वे भाषाके झगड़ेमें भाग नहीं ले सकते। वे सव अपने वच्चोंको गुजराती स्कूलोंमें भेजते हैं। अुन्हें गुजरातीके जरिये शिक्षा दी जाती है। और अिससे अुन्हें कोअी नुकसान नहीं हुआ है। मराठी भाषाके संस्कार कायम रखनेका काम वे घरोंमें आसानीसे कर सकते हैं। पंजावी लोग भी यदि अैसी नीति पर चलें, तो यहांकी शिक्षाका सवाल आसानीसे हल हो जाय। यहांके लगभग ९० प्रतिशत हिन्दुस्तानी लोग गुजराती जानते ही हैं। अगर हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, पाकिस्तानकी अुर्दू है, तो पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी लोगोंकी सुभीतेकी भाषा गुजराती है। धर्मके नाम पर जिस तरह हमारे झगड़े चलते हैं, अुसी तरह अगर हम भाषाके नाम पर भी अंधे वनकर झगड़े चलायेंगे, तो हमारा हिन्दुस्तानी समाज हर तरहसे छिन्नभिन्न हो जायगा।

प्रवास-वर्णनके आरंभमें ही दो महीनोंके अपने अनुभवोंका निचोड़ मैंने दे दिया है, क्योंकि हर जगह अुसकी थोड़ी-थोड़ी चर्चा करनेमें असुविधा होगी।

डॉ० कर्वे मोम्वासामें खास ध्यान खींचनेवाले सज्जन हैं। वे महर्षि अण्णासाहव कर्वेके सुपुत्र हैं। वातें करते समय वे पूरे व्यवहार-वादी दिखाओ देते हैं, लेकिन वरसोंसे वे पंड्या क्लिनिक नामक अक अच्छेसे अच्छा अस्पताल नितान्त सेवाभावसे चला रहे हैं। पंड्या परिवार समाज-सेवा और दानके लिअे मशहूर है। अुनके अुदार दानके कारण ही अिस अस्पतालको 'पंड्या क्लिनिक' नाम दिया गया है। डॉ० कर्वे अिस संस्थाके सव कुछ हैं। महायुद्धके दिनोंमें खलासियोंके आरामगाहके लिअे वनाओ गओ अेक वड़ी अिमारत भाड़े लेकर अुसमें यह अस्पताल चलाया जाता है। डॉ० कर्वेने वड़े प्रेमसे पूरी संस्था हमें

तफसीलवार दिखाअी। अुनके मुंहसे अुनके पिताके अनेक जीवन प्रसंग सुननेमें मुझे बड़ा आनन्द आया। अण्णासाहबके जीवनकी कुछ विशेषतायें मैं डॉ॰ कर्वेसे ही जान सका। अण्णासाहब अेक बार यहां आये थे और बहुत दिनों तक अुन्होंने यहां आराम लिया था।

दूसरे अेक जानने जैसे डॉक्टर हैं डॉ॰ शेठ। अुनकी पत्नी मेरे बहुत पुराने मित्र और प्रकाशक काशीनाथ रघुनाथ मित्रकी पुत्री हैं।

श्री अप्पासाहब पंतके मिलनसार स्वभावके कारण और अुनके अधिकारके कारण पूर्व अफ्रीकाके सभी हिन्दुस्तानी अुनकी ओर आकर्षित हुअे हैं। हमारा सारा कार्यक्रम अुन्हींके द्वारा बनाया होनेके कारण हर जगहके सारे प्रतिष्ठित लोग हमारे स्वागतमें भाग लेते थे। अच्छे-अच्छे स्थानीय कार्यकर्ता कौन हैं, यह हमें खोजना नहीं पड़ता था। कुछ लोगोंसे मैंने सुना कि "अप्पासाहब पंत हिन्दू हैं, अुनसे हम किस लिअे मिलें ?" अैसी भावना रखकर अिस देशके बहुतसे मुसलमान नेता शुरूमें अुनसे दूर-दूर रहते थे। बादमें जब अुन्हें मालूम हुआ कि अप्पासाहबके मनमें हिन्दू-मुस्लिमका कोअी भेद ही नहीं है, वे सबके हैं, सबको अपना समझते हैं, सभीकी सेवा करनेके लिअे तैयार रहते हैं और गांधीजी तथा जवाहरलाल नेहरूकी अुदार नीति अपनानेवाले अूंचे दर्जेके राष्ट्रवादी हैं, तब वे धीरे-धीरे अप्पासाहबके प्रति आकर्षित होने लगे। आज वे जितने हिन्दुओंको प्रिय हैं, अुतने ही मुसलमानोंको भी प्रिय हैं। अुन्हें अपने यहां मेहमानके तौर पर बुलानेमें हर आदमी बड़े गौरवका अनुभव करता है। वे जब मुसाफिरीके लिअे निकलते हैं, तब कितने ही लोग अपनी-अपनी मोटरें लेकर अुनके साथ जाते हैं, ताकि अुनके थोड़े सहवासका मौका मिले।

अिसका अेक मनोरंजक अुदाहरण यहां देने जैसा है। अेक बार अप्पासाहब युगान्डामें मुसाफिरी कर रहे थे। अुस समय अुनके साथ अैसी ११ मोटरें अिकट्ठी हो गअी थीं। यह देखकर वहांके अफ्रीकन लोग कहने लगे "युगान्डाके हमारे 'कबाका' (राजा) की जब सवारी

निकलती है, तब अुनके साथ चार-पांच मोटरें होती हैं। ये हिन्दुस्तानके कवाका बहुत बड़े होने चाहियें। देखो, अिनकी सवारी ११ मोटरोंमें निकलती है।"

अप्पासाहब जैसे मीठे बोलनेवाले हैं, वैसे ही स्पष्ट बोलनेवाले भी हैं। और अिसलिअे पूर्व अफ्रीकाके तमाम गोरे लोगों पर अुनकी अच्छी छाप पड़ी हुअी है। हर चीज किस ढंगसे रखनेसे लोगोंको अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अिसकी कला अुनके पास है। अिसलिअे वे किसी भी आदमीसे सच्ची बात निकलवा लेनेमें सफल हो जाते हैं। अेक आदमीने अेक वाक्यमें अुनका शब्दचित्र दिया था — It is impossible for anyone to be mean in his presence.*

अप्पासाहब यानी अखंड प्रवृत्तिके अवतार। यहां आये अुन्हें तीनेक साल हुअे होंगे। अितने अरसेमें अुन्होंने ४० हजार मीलकी मुसाफिरी कर डाली है। अिस देशके छोटे बड़े सभीको वे पहचानते हैं। अंग्रेज अुनसे बड़े खुश हैं। अफ्रीकन लोग अुनके प्रति आदरसे और बड़ी आशासे देखते हैं। और हिन्दुस्तानी लोग तो यह कहते थकते ही नहीं कि "अप्पासाहब आये और अिस देशमें हमारी अिज्जत बढ़ी। अुन्होंने हमें नअी दृष्टि प्रदान की है। अब यहांके लोग हिन्दुस्तानकी प्रतिष्ठा और महत्त्वको समझने लगे हैं। हमें अेक ही चिन्ता है कि जब हिन्दुस्तानकी सरकार अिन्हें यहांसे कोअी बड़े काम पर भेज देगी, तब हमारा क्या होगा!" अप्पासाहबको अपनी प्रतिष्ठाका जरा भी खयाल नहीं है। अुनकी नम्रता, अुनका मानव प्रेम और हरअेक आदमीकी खामियोंको दरगुजर करनेकी अुनकी अुदारता अुन्हें लोगोंके हृदयमें स्थायी स्थान दिलाती है। पुस्तकें पढ़कर जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, अुससे अधिक और गहरा ज्ञान वे अनेक तरहके अधिकारी पुरुषोंके परिचयसे प्राप्त करते हैं। अुनकी दृष्टि तुरन्त मिलनेवाले

---

* अुनके सामने कोअी भी व्यक्ति नीचता कर ही नहीं सकता।

लाभ पर नहीं रहती। लेकिन मानवहितके शुभ कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी कैसा असर करते रहते हैं, अिसका अुन्हें अच्छी तरह खयाल है। अिसलिअे कुशल और दूरदर्शी किसानकी तरह वे भांति-भांतिके महावृक्षोंके बीज बोते जाते हैं और सावधानीसे अुन्हें सींचते भी हैं।

मोम्बासाकी अेक बहुत छोटी और मामूली-सी मालूम होनेवाली शिक्षण-संस्थाकी तरफ मेरा खास ध्यान गया। पूर्व अफ्रीकामें अिस समय शिक्षाकी अितनी कमी है कि अुसका रेशनिंग चलता है। स्कूलोंमें हफ्तेमें तीन दिन अमुक विद्यार्थी पढ़ते हैं और दूसरे तीन दिन दूसरे विद्यार्थी पढ़ते हैं। सुबह अमुक विद्यार्थियोंके वर्ग चलते हैं और शामको दूसरे विद्यार्थियोंकी बारी आती है। अैसा कअी जगह करना पड़ता है। अैसी हालतमें जो विद्यार्थी लगातार दो बार नापास हो जायं, अुन्हें स्कूलसे निकाल दिया जाय, तो अिसमें आश्चर्यकी क्या बात है?

अैसे अभागे विद्यार्थियोंको अिकट्ठे करके अुन्हें जितनी बने अुतनी शिक्षा देनेके लिअे डॉ० शेठके प्रयत्नसे अेक संस्था खोली गअी है। अिसमें हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंके साथ तीन अफ्रीकन विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। पिछड़े हुअे, जड़ और पस्त-हिम्मत बने विद्यार्थियोंमें भी शिक्षा ग्रहण करनेका अुत्साह और तेज होता है। साधारण शिक्षण-संस्थाओंमें अुन्हें सफलता नहीं मिलती, अिसका दोष बहुत बार अुनका नहीं, बल्कि परिस्थिति और शिक्षा-पद्धतिका होता है। सब कोअी जानते हैं कि अिटलीके अैसे ही लड़के लड़कियोंको पढ़ाते-पढ़ाते श्रीमती मॉन्टेसोरीने अपनी विश्व-विख्यात शिक्षा-पद्धतिका विकास किया था। मोम्बासाका यह 'अिंडियन रिपब्लिक स्कूल' समाजके सामने यह सिद्ध करके दिखा सकता है कि समाज द्वारा परित्यक्त मानवोंमें भी अुत्तम तत्त्व हो सकते हैं।

क्लिनिकवाले डॉ० कर्वेने दूसरी अेक स्वावलम्बी सहकारी प्रवृत्ति शुरू की है। गरीब हिन्दुस्तानियोंके लिअे अच्छे-अच्छे मकान बनवाने और सस्ते किराये पर देनेकी वह प्रवृत्ति है। अिस तरह कितने ही गरीब परिवार

स्वच्छ और अिज्जतकी जिन्दगी विता सके हैं। हमने वे मकान देखे हैं। जो स्वच्छता और प्रसन्नता मकानोंके कमरोंमें दिखाअी देती थी, वही कमरोंमें रहनेवाली वहनों और वच्चोंके चेहरों पर भी हमें दिखाअी दी। स्वच्छ और सुन्दर मकान आत्मगौरव और स्वाभिमानका वातावरण पैदा करते हैं। नीरोग शरीरमें नीरोग मन रहता है, अिस कहावतको व्यापक वनाकर हम कह सकते हैं कि सुन्दर मकान हो, तो भीतर रहनेवाले मनुष्योंके मन और जीवन भी वहुत हद तक सुन्दर वन सकते हैं।

मोम्वासामें दो-तीन लायब्रेरियां भी हमें पसन्द आने जैसी थीं। अेक पुस्तकालयमें पारसियोंकी अवेस्तागाथा पर हालमें ही लिखी हुअी कवि खवरदारकी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक भी देखनेको मिली।

नम्रभावसे सात्विक वातावरण पैदा करनेवाले और गांधीजीके विचारोंका थियोसाफीके साथ समन्वय करके लोगोंके सामने रखनेवाले श्री मास्टरका व्यक्तित्व मोम्वासामें सहज ही लोगोंको आकर्पित करता है। अुनके धार्मिक वर्गोंका असर आसपासके समाज पर अच्छा पड़ा है।

जात-पांत आदि किसी प्रकारका भेद रखे विना समाजकी सेवा करनेवाली सोशियल सर्विस लीग यहांकी पुरानी संस्था है। मोम्वासाके अेक धनी अरवी व्यापारीने संस्थाकी मदद करके अुसे अपने रहनेका मकान दे दिया है।

मोम्वासा पहुंचते ही यहांकी जिस दूसरी प्रवृत्तिकी तरफ मेरा ध्यान गया, वह है वालमन्दिरोंकी स्थापना। मैंने सुना है कि स्व० गिजुभाअी वधेकाके लगभग ४० विद्यार्थी अफ्रीकामें जगह-जगह वालशिक्षाका महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं। जिन लोगोंको शायद यह पता न हो कि स्व० गिजुभाअीने अपना शिक्षाका मिशन पहचाना, अुसके पहले वे पूर्व अफ्रीकामें वकालत करने आये थे और स्वाहिली भापा

भी सीखे थे। यहीं अुन्हें समझमें आया कि बालकोंको पढ़ाने और अुनके स्वातंत्र्यकी वकालत करनेमें ही अपने जीवनकी सार्थकता है।

गूजरात विद्यापीठके अेक पुराने विद्यार्थी कवि सोमाभाअी भावसार और अुनकी पत्नी मोम्बासाकी बाल-शिक्षामें ओतप्रोत हो गये हैं। गिजुभाअीकी शैलीमें अुन्होंने 'अमर गांधी' नामक अेक छोटीसी पुस्तिका लिखी है। अिस पुस्तिकाका स्वाहिली और लुगान्डी भाषामें अनुवाद हो जानेसे वह अमर हो गअी है।

आगाखानी बालमन्दिर भी बड़े सुन्दर ढंगसे चलता है। वहांके बालकोंकी टीपटाप और प्रसन्नता खास तौर पर ध्यान खींचनेवाली है। आगाखानी प्रवृत्ति पर मुझे आगे चलकर लिखना है, अिसलिअे यहांके टेकनिकल कालेज जैसी महत्त्वकी शिक्षण-संस्थाका भी यहां अुल्लेख नहीं करूंगा।

मुसलमान कार्यकर्ताओंमें विशेष आकर्षक थे श्री कादरभाअी। अनेक तरहके कामोंमें भाग लेते-लेते वे बूढ़े हो गये हैं। अेक समय अुन्हें श्री आगाखानकी बड़ी मदद थी। संस्था चलानेकी कलामें कादरभाअी अपना सानी नहीं रखते। अुनका अुत्साह आज भी बूढ़ा नहीं हुआ है।

अफ्रीकन लोगोंसे मिलनेके लिअे मैं पहलेसे ही बड़ा अुत्सुक था, लेकिन वे कहीं दिखाअी नहीं पड़ते थे। युनाअिटेड केनिया क्लबमें अुन्हें देखनेका मौका मिला। वहां गोरे भी आये थे और अफ्रीकन लोग भी थे। और बातोंके साथ-साथ मैंने अुनसे वंशव्यवस्थाके प्रश्न — 'रेशियल अेडजस्टमेन्ट' — के बारेमें दो शब्द कहे, जिसका अुन पर बहुत अच्छा असर पड़ा।

मैंने कहा : "आर्य, अनार्य, द्राविड़, आदिवासी, शक, हूण, चीनी, पारसी, पठान, मुगल, पोर्तुगीज, फ्रेन्च, यहूदी, अंग्रेज, वगैरा अनेक जातियां भारतमें आकर बसी हैं। मानो सारे मानववंशोंको भारतमें अिकट्ठे करनेकी अीश्वरकी योजना ही हो। ये सब लोग आपसमें

मिलकर सहयोगसे कैसे रहें, अिसके अनेक प्रयोग हमने हजारों वर्षोंसे अपने देशमें किये हैं। अिस सम्बन्धमें हमने कुछ गंभीर भूलें भी की हैं, जिनके लिअे हमें कुछ कम नुकसान नहीं अुठाना पड़ा। हमने ढेड़-भंगियोंके मोहल्ले खड़े किये। अूंच-नीचका भाव पैदा किया और बढ़ाया। बहिष्कारका शस्त्र आजमाया और अंतमें देखा कि कभी-कभी मूल रोगसे भी आजमाया हुआ अिलाज ही अधिक घातक सिद्ध होता है। परंतु हमारे ऋषि-मुनियोंने शुरूमें हमें अेक संजीवन मंत्र दिया था कि कितने ही प्रयोग करो, परन्तु हिंसाका आश्रय न लो। हमारी आस्तिकताने सर्प-सत्र जैसे घातक प्रयोग तुरन्त रोक दिये। आज हमारे यहां चमड़ीके भेदके कारण अलग जातियां कायम नहीं की जातीं। स्वतंत्र होते ही हमने अस्पृश्यताको दफना दिया। हरिजनोंके लिअे हमारे कुअें और भोजनालय, हमारी पाठशालाअें और हमारे मंदिर पूरी तरह खुल गये हैं। हमारे अिस अनुभवसे अफ्रीकामें बसनेवाले तीनों महाद्वीपोंके लोग बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

गोवाके अीसाअी लोग सबसे अलग रहते हैं। अुनके यहां जाकर भी मैंने अुन्हें समझाया कि 'आप अपनी मातृभाषा कोंकणीकी अुपेक्षा करते हैं, यह शाप आपको सता रहा है। आपको तमाम हिन्दुस्तानियोंके साथ मिल जाना चाहिये।' गोवाका राजनैतिक सवाल मैंने जानबूझकर नहीं छेड़ा। क्योंकि मैं जानता था कि अुन लोगोंमें तीव्र मतभेद है। कुछ लोग पुर्तगालका जुआ अुतार फेंककर भारतीय संघमें मिलना चाहते हैं और कुछ लोग पुर्तगालके साथका सम्बन्ध कायम रखना चाहते हैं और अपनी संस्कृति अलग होनेका दावा करते हैं।

विदेशोंमें रहनेवाली हमारी बहनें संगठित होकर काम न करें, तो वह अेक आश्चर्य ही माना जायगा। क्योंकि अिन दिनों स्वदेशमें भी बहनोंने जात-पांत और धर्मका भेद मिटाकर शुद्ध राष्ट्रीय वृत्ति और मानवताकी दृष्टिसे अनेक संगठन करके दिखा दिये हैं। अधिकारोंके बंटवारेके लोभमें फंसकर जब हिन्दू-मुसलमान

अेक दूसरेके दुश्मन बननेको तैयार हो गये थे, तब भी दोनों जातियोंकी बहनोंने बड़ी अिन्सानियत दिखाअी थी। मोम्बासामें स्त्रियोंकी अेक अच्छीसी संस्था चल रही है और श्रीमती सोंधी अुसका सुन्दर नेतृत्व कर रही हैं। यहांकी बहनोंके सामने मैंने अपना संदेश पहले पहल सुनाया कि बहनोंको मानवताके विकासकी दृष्टिसे अफ्रीकी स्त्रियों और बच्चोंको अपनाना चाहिये और अुनकी भी सेवा करनी चाहिये। अैसे नये कदम अुठानेमें बहनोंको पहले पहले संकोच होना स्वाभाविक है। परन्तु बहनोंके प्रधानतया हृदयधर्मी होनेके कारण वे अैसे कदम स्वाभाविक तौर पर बर्दाश्त कर सकती हैं और अिस कामको आगे बढ़ानेमें अुन्हें कठिनाअी नहीं आती। जो बहनें शादी होते ही पतिके घरके अनजान लोगोंको अपना सकती हैं, अुनके लिअे अिस देशकी स्त्रियों और बच्चोंको अपनानेकी बात मुश्किल न होनी चाहिये।

अिस तरह मोम्बासामें जो दिन बीते बड़े कीमती निकले।

थोड़ेमें कहा जा सकता है कि पूर्वी अफ्रीकाके अिस प्रवेशद्वारमें ही यहांके ज्यादातर सवालों और अुनके पीछे काम करनेवाली शक्तियोंका दर्शन हो गया और अिसीलिअे खुली आंखों और जागरूक मनके साथ हम सारी यात्रा कर सके।

५

नैरोबी

नैरोबी केवल केनियाकी ही नहीं, बल्कि अेक तरहसे सारी ब्रिटिश पूर्व अफ्रीकाकी राजधानी मानी जाती है।

मोम्बासा, टांगा, झांझीबार, दारेसलाम और लिंडी वग़ैरा स्थान समुद्रके किनारे होनेके कारण वहांकी हवा कुछ गरम रहती है। गोरे लोगोंको यह माफिक नहीं आती। हमारे यहांके लोग भी ठंडे प्रदेशमें थके बिना जितना काम कर सकते हैं, अुतना गरम प्रदेशमें नहीं कर सकते। अफ्रीकामें जहां-जहां अच्छी ठंडी हवा है, वहीं गोरे लोगोंने कैसे भी अुपाय करके अुसे जमीनको अपने कब्जेमें कर लिया है। हिन्दुस्तानमें भी महाबलेश्लर, शिलांग, शिमला, दार्जिलिंग और चेरापूंजी, वग़ैरा स्थान अंग्रेजोंने कैसी युक्ति और चालबाजीसे अधिकारमें लिये थे, अिसका अितिहास भुलाया नहीं जा सकता।

अफ्रीकी महाद्वीपमें बसे हुअे गोरोंका केनिया मानो स्कॉटलैंड है। यहांके गोरोंके घमंडके अुदाहरण अितने प्रसिद्ध हैं कि अुसकी बात यहां फिर छेड़नेकी जरूरत नहीं। यहांके अफ्रीकी निवासियोंको भी यह ठंडा प्रदेश बहुत प्रिय होनेके कारण वे अंग्रेजोंको अिस कार्रवाअी और लूटके लिअे कभी माफ नहीं कर सकते। अफ्रीकामें सारी सत्ता ज्यों त्यों करके गोरोंके ही हाथमें रखनी चाहिये, अिस बारेमें अधिकसे अधिक प्रयत्न करनेवाले गोरे अिस केनियामें ही हैं। और अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके मलानकी नीतिके प्रति अिन्हें बड़ी सहानुभूति है।

मैंने देखा कि यहां जमीन लेकर बसे हुअे गोरोंके जबरदस्त असर तले होने पर भी केनियाके गोरे राजकर्मचारी अितने कट्टर नहीं हैं। अुनमें चाहे समझदारी अधिक हो या अिन्सानियत, वे कुछ और

ही ढंगसे बोलते हैं। अंग्रेजोंके राष्ट्रीय नेता भी समय-समय पर केनियाके गोरे जमींदारोंसे कहते हैं कि पिछले महायुद्धके बादकी नअी दुनियामें अुनका घमंड अब चल नहीं सकता। फिर भी हम यह बात नहीं भूल सकते कि केनियाके गोरे जमींदार गैरमामूली ताकत और असर दोनों रखते ह।

अंग्रेज जहां जाते हैं वहां तमाम जमीन सुघड़ और सुंदर बनाते ही हैं। मकान, रास्ते, पानीकी सहूलियत, बिजली, फलफूलोंके बगीचे, आदि तमाम सुविधाअें वे बड़ी लगनसे पैदा करते हैं और जीवनको हर प्रकार सुखकर बनाते हैं।

हमारे यहांके लोगोंको अिस ढंगसे रहनेकी आदत नहीं होती। अच्छे-अच्छे मालदार लोग भी कुछ रुपयेके जोर और प्रतिष्ठाके लोभसे अैसी ही सुविधामें और अैशआरामके साधन पैदा तो करते हैं, परंतु अिस व्यवस्थाको वे कायमी नहीं रख सकते। अैसी स्थितिमें अगर अंग्रेज हमारे साथ रहें, तो कौनसी नीति अपनायें? म्युनिसिपैलिटीके कड़े कानून बनाकर अदालतकी मददसे अुन पर अमल करायें? या यह कहकर कि 'हमें अलग-रहने दो, तुम्हें जैसी पसंद हो वैसी व्यवस्था अपने हिन्दुस्तानी विभागमें कर लो,' आबादीके दो हिस्से कर लें? जिन लोगोंमें वर्णका अभिमान नहीं होता, वे पहली नीति पसंद करते हैं और अुससे पैदा होनेवाली तमाम मुश्किलें और कड़वाहट बर्दाश्त कर लेते हैं। जब कि वे लोग, जिनके दिलोंमें भारतीयों और अफ्रीकी लोगोंके प्रति प्रबल तिरस्कार होता है और जो रोज अुठकर नअी-नअी कड़वाहट मोल लेनेमें विश्वास नहीं रखते, दूसरी नीति पसंद करते हैं। और आपसमें बातें करते हुअे हमेशा कहते हैं—'Let these wretches stew themselves in their own juice.' वर्णद्वेष अेक बार जगा कि रेलवेके अलग डिब्बे और ट्रामकी अलग बैठकें वगैरा व्यवस्था तक वह पहुंच ही जायगा।

अेक बात हमें स्वीकार करनी चाहिये कि हमारे यहांके लोग स्वच्छता और शुद्धिके नाम पर पानी बेहद काममें लेते हैं और जहां तहां कीचड़ कर डालते हैं और नंगे पैर चलनेके कारण जहां तहां गंदगी फैलाते हैं। हमारे भोजनालय, हमारे पाखाने और हमारे नहानेके कमरे जैसे होने चाहियें वैसे नहीं होते। बच्चोंकी किस तरह रक्षा की जाय और अुन्हें कैसे स्वच्छ रखा जाय, अुन्हें टट्टी कहां फिराया जाय, आदि बातोंमें मध्यम वर्गकी स्त्रियां भी बड़ी लापरवाह होती हैं। समाजके नेता अैसी आदतोंके लिअे अपने लोगोंकी खानगी तौर पर बहुत निन्दा करते हैं। परंतु लोगोंके बीचमें जाकर अुन्हें धीरजसे समझानेका काम कोअी नहीं करता। अितना कहना काफी नहीं कि फलां रिवाज बुरा है। पुरानी आदतोंके बजाय अच्छी कौनसी आदतें डालनी चाहियें और नये ढंगसे सुघड़ता कायम रखनेके लिअे क्या क्या करना चाहियें और कौन कौनसी सुविधाअें कायम करनी चाहियें, यह सब अुन्हें ब्यौरेके साथ और कअी दफा समझाना चाहिये। अितना ही नहीं, बल्कि अच्छे अुदाहरणोंका पदार्थपाठ भी अुनके सामने पेश करना चाहिये। मनुष्य सुबह अुठकर रास्ते पर दतून करे और जोर-जोरसे आवाज करके गला साफ करे, तो यह समझानेमें हरगिज कठिनाअी नहीं आ सकती कि यह रिवाज असामाजिक है।

अैसे तमाम जरूरी सुधार सारी जातिमें जारी करनेके बजाय हमारे यहांके लोगोंने अंग्रेजोंकी पोशाक, अुनके खानपानके तरीके और अुनकी सामाजिक सभ्यताकी भाषा अपना ली। परिणामस्वरूप हम लोगोंमें अंग्रेजोंका अनुकरण करनेवाली अेक नअी जाति अुत्पन्न हो गअी है और रुपये-पैसेसे समर्थ होनेके कारण बाकीके समाजसे वह अलग रह सकती है। अिसमें से अनेक सामाजिक और आन्तर-सामाजिक पेचीदगियां पैदा हो गअी हैं, जिनका हल किसीने अभी तक नहीं ढूंढा।

हमने ता० २१ की शामको मोम्बासा छोड़ा। रातको गाड़ीमें डाअिनिंग कारमें हमने भोजन किया। गोरोंके बीचमें खाना खाते

हुअे हमें कोअी मुश्किल पेश नहीं आअी। हममें से ज्यादातर शाकाहारी थे, परन्तु अुनके बारेमें पहलेसे ही बाकायदा सूचनाअें दे दी गअी थीं।

सवेरा होनेसे पहले हम केनियाकी अूंची भूमि (हाअि लैंड्स) पर पहुंच गये थे। ठंडी हवा मीठी चुटकियां ले रही थी और आसपासका अुपजाअू प्रदेश आंखोंको संतोष दे रहा था। मोम्बासा और नैरोबीके बीच अेक भी बड़ा स्टेशन नहीं है। हमने जब 'आथी' नदी पार की, तब मुझे आश्चर्य हुआ कि अितने छोटेसे प्रवाहको नदी कैसे कहते हैं। मैं तो अुसे प्रवाह या नाला कहते हुअे भी संकोच करूं।

नैरोबी पहुंचनेसे पहले ही हमारी ट्रेन वहांके अभयारण्य — नेशनल पार्क — में से गुजरी। अपने डिब्बेकी खिड़कीमें से हम कितने ही जानवरोंको देख सके। अप्पा साहबकी दृष्टि बहुत तेज होनेके कारण वे कितनी ही दूरके जानवरोंको झट देख लेते और हमें बताते। अिनमें 'अेन्टी अेयर क्राफ्ट गन' जैसी लम्बी गर्दनवाले जिराफ, अूंट या हंससे अुधार ली हुअी गर्दनवाले अुड़ना भूले हुअे शुतुर्मुर्ग, अपने सींगोंका अभिमान रखनेवाले हिरण आदि अनेक जानवर हमने देखे।

स्टेशन पर पहुंचते ही बरसातने हमारा शुभ स्वागत किया। हमें श्री तात्यासाहब अिनामदारके यहां ठहरना था। और वे खुद हमारे साथ थे अिसलिअे अुनकी पत्नी शकुन्तलाबहन और अुनकी लड़कियां हमें लेने स्टेशन पर आअी थीं। चि० सरोजका अेक पारसी बालमित्र श्री जाल कन्ट्राक्टर अुससे मिलनेके लिअे कभीसे तरस रहा था। वह भी स्टेशन पर आया। स्थानीय नेता तो सभी थे। स्टेशनकी जान-पहचान कितनी ही जरूरी हो, परन्तु अुपयोगी साबित नहीं होती। सौ पचास लोगोंके नाम जल्दी-जल्दी बोले हुअे सुने जायं और अुनके चेहरोंके क्षणिक चित्र अेकके बाद अेक आंखों द्वारा लिये जायं, तो यह सब

किसी कामका नहीं होता। यह परिचय मेहमानोंके सिवाय और सबके लिअे ही बड़े कामका होता है!

नैरोबीमें अिस बार हम कुल ७ दिन रहे। अिन सात दिनोंमें कार्यक्रम अितना अधिक भरा हुआ था कि अुसे सारा याद रखना आसान नहीं। मन पर जो संस्कार पड़े, अुन सबकी दिमागमें मक्खनके जैसी मुलायम खिचड़ी बन गअी। ये संस्मरण बहुत स्वादिष्ट तो हैं, परन्तु अुन्हें अलग-अलग करना असंभव है।

राजधानीके अिस शहरमें बहुतसे युरोपियन मिले। यहांके गवर्नर सर फिलिप मिचेल होशियार आदमी हैं। साम्राज्यके प्रखर राजनीतिज्ञोंमें अिनकी गिनती होती है। परन्तु अिस समय वे छुट्टी पर गये हुअे थे। अुनका काम अुनके चीफ सेक्रेटरी संभालते थे। अुनकी मुलाकातके दौरानमें जो खास बात मेरे जाननेमें आअी, वह अफ्रीकाकी प्राकृतिक परेशानीके बारेमें थी। अुन्होंने कहा: "अफ्रीकाकी भूमि बहुत अुपजाअू है, परन्तु यहां पानीकी कमी सदा भुगतनी पड़ती है। यह कमी न होती तो यहां आजसे कअी गुनी आबादी रह सकती थी।" मैंने कहा: "आपके यहां बरसात कम नहीं पड़ती। अिस बरसातका पानी जगह-जगह तालाबोंमें रोक रखा जाय, तो बहुतसी दिक्कतें दूर हो जायं। हिन्दुस्तानके पुराने राजा यही करते थे। नहरें खोदनेके बजाय अुन्होंने तालाब बनवाने पर अधिक ध्यान दिया था।" मेरी अिस सूचनाका विचार करते हुअे अुन्होंने जो कठिनाअियां बताअीं, अुन्हें मैं बराबर सुन न सका। वे साहब बहुत ही बारीक आवाजसे बोलते थे और मेरी कानकी मुश्किल छोटी-मोटी नहीं है। बहुत वर्षोंसे दाहिने कानसे सुन ही नहीं सकता और बायें कानसे जरा कम सुनाअी देता है। परिणाम-स्वरूप जहां बहुत लोग अिकट्ठे हुअे हों, वहां मुझे खूब संभलकर बैठना पड़ता है। मेरी यह चिन्ता रहती है कि दायीं तरफ कोअी महत्त्वका मनुष्य न बैठे; और सभा या भोजके व्यवस्थापक खास महत्त्वके लोगोंको मेरी दायीं तरफ बिठाते हैं। परिणामस्वरूप मुझे

कमरको टेढ़ी करके वायां कान आगे लाना पड़ता है। अिससे वायीं तरफ वैठनेवाले मनुष्यका तिरस्कार-सा हो जाता है। कोअी परिचित हो तव तो चिन्ता नहीं होती, अन्यथा वड़ी परेशानी पैदा हो जाती है। हर मौके पर कितने लोगोंको समझाने वैठूं कि सुननेको कान मेरे पास अेक ही है! वातचीतमें भी व्याख्यानकी तरह जोर-जोरसे वोलनेवाले लोग दूसरे लोगोंको भले ही अटपटे मालूम होते हों, मेरे लिअे अुनका 'दाक्षिण्य' वड़ा सुविधाजनक होता है।

अेक अधिकारीने — वहुत करके वे यहांके न्यायाधीश होंगे — मध्य अेशिया और अफगानिस्तानकी तरफके अपने अनुभव कहे। अेक वार वहांके चोरोंने अुन्हें लूटा। वे अकेले और सामने वहुतसे डाकू थे, अिसलिअे अिन्होंने 'गांधीजीकी अहिंसक नीति' अपनाअी। अुन्होंने चोरोंसे कहा: "मेरा सव कुछ ले लो, मगर मुझे सताओ मत।" वादमें अुन्होंने यह और कहा: "मुझे अपनी पतलून तो काममें लेने दोगे न?" चोरोंने मंजूर किया। फिर कहने लगे: "और मेरा टोप मेरे सिर पर न हो तो मुझे चक्कर आ जाय। तेज धूपसे मैं वीमार पड़ जाअूं। अिसलिअे मर्जी हो तो वह भी मुझे दे दो।" वह भी तय हो जानेके वाद चोर साहवको साथ ले गये। अिनकी सज्जनतासे वे अितने खुश हुअे कि अुन्होंने अिस गोरे मेहमानको अपने घर खानेके लिअे रख लिया और दूसरे दिन अिन्हें अपने प्रदेशकी सीमा तक सही सलामत पहुंचा दिया!

जिस गोरे अफसरके हाथमें हिन्दुस्तानी लोगोंकी शिक्षा है, अुसके साथ मेरी वहुत वातें हुअीं। वर्धा शिक्षाके स्वरूपके वारेमें हमने तफ-सीलसे वातें कीं। अप्पासाहवकी लगनके कारण कअी वार गोरों, थोड़ेसे अफ्रीकियों और हमारे भारतीयोंका मिलाजुला श्रोतृमंडल हमें मिलता था। अफ्रीकाकी भूमि पर तीनों महाद्वीपोंके सहयोगके विषयमें जव मैं वोलता, तव तीनोंको मेरी वात स्वागतके योग्य प्रतीत होती। परन्तु यह सहयोग असलमें तभी सिद्ध होगा, जव गोरे लोकशासक होनेका अपना

अभिमान छोड़ दें और गोर वर्णकी महत्ता भूल जायं, हिन्दुस्तानके लोग अिस सहयोगके लिअे तभी योग्य होंगे, जब वे अपनेको केवल भारतके नहीं परन्तु अफ्रीकाके भी स्थायी निवासी मानें और अफ्रीकी लोगोंसे मित्रता पैदा करें तथा अफ्रीकी लोग आलस्य छोड़कर शिक्षामें तेजीसे आगे बढ़ें और अहिंसक शक्ति पैदा करके दिखा दें।

तीनों जातियोंके सहयोगकी संभावना बताते हुअे मैं कहता था कि अंग्रेज राष्ट्रने अिस दिशामें पहला कदम अुठाया है। हिन्दुस्तानकी पूरी आजादी स्वीकार करनेके बाद ब्रिटिश लोगोंने हिन्दुस्तानको (और अिसी तरह लंका और पाकिस्तानको भी) अपने कॉमनवेल्थमें समान हकोंके साथ अेक सदस्यके रूपमें शरीक होनेका निमंत्रण दिया। गांधीजीने हमारे देशको सलाह दी कि यह निमंत्रण स्वीकार करने लायक है। अब तक ब्रिटिश साम्राज्य या ब्रिटिश कॉमनवेल्थ सिर्फ ब्रिटिश लोगोंका — गोरे लोगोंका — अेक कौटुम्बिक साझा था। कनाड़ा, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, न्यूजीलैंड, और ऑस्ट्रेलिया सब जगह ब्रिटिश लोगोंका राज्य था। भिन्न जाति, भिन्न वर्ण, भिन्न देश और भिन्न संस्कृतिवाले लंका, पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोंको अपने कॉमनवेल्थमें समान अधिकार देकर अुन्होंने अेक बड़ा कदम अुठाया है, जिसकी मिसाल आजकलके अितिहासमें कहीं भी नहीं मिलती। अब कॉमनवेल्थका बंधन नस्ल या वंशका बंधन नहीं, परन्तु अेक प्रजासत्ताक आदर्शका बंधन है।

गोरी जातिका यह कदम आखिरी नहीं, परन्तु नव-संगठनका पहला कदम है। समय पाकर अिसमें नअी जातियों और नये राज्योंके शामिल होनेकी गुंजािश है। अैसा संगठन हिन्दुस्तानके अितिहासके अनुकूल है। अब जब हम स्वेच्छापूर्वक काफी विचार करके अिस कॉमनवेल्थमें शरीक हुअे हैं, तब हमें अिस कॉमनवेल्थके वफादार रहना चाहिये। वफादारीका यह अर्थ नहीं है कि अिसके स्याह सफेद सभी कामोंमें हम अिसका साथ दें। वफादारीका सच्चा अर्थ यह है कि अिस कॉमनवेल्थके

प्रति हम सदा मित्रभाव रखें, सच्चे अर्थमें और सच्चे रास्तेसे अुसकी अुन्नति चाहें और अच्छे कामोंमें अुसे मदद दें और अुसकी मदद लें।

शासकोंके साथ सद्भावपूर्ण वर्ताव रखना जैसे हमारा फर्ज है, वैसे ही और अुससे भी अधिक यहांके मूल निवासी अफ्रीकी लोगोंके साथ प्रेमपूर्वक सेवकके तौर पर वर्ताव करना हमारा कर्तव्य है। हम अिन लोगोंकी भाषा घरके नौकरोंको हुक्म देने भरको ही सीखते हैं, यह काफी नहीं। हमें अुनकी भाषा अितनी सीखनी चाहिये कि हम अुनके दु:ख-सुखमें शरीक हो सकें, अुनके दु:खमें अुन्हें दिलासा दे सकें, अुनके सुखमें अुन्हें वढ़ावा दे सकें और आत्मोन्नतिके अुनके सारे प्रयत्नोंमें हम अुनके मददगार वन सकें। शिक्षाके मामलेमें हमें हर तरह अुनका मददगार वनना चाहिये। हमारी दानवृत्तिको अव हिन्दुस्तानकी ओर न वहाकर अुस प्रवाहको अपने वच्चों और अिस देशके वच्चोंकी अर्थात् अफ्रीकियोंकी शिक्षाकी ओर मोड़ना चाहिये, जिससे हमारा जीवन यहांके लोगोंको आशीर्वाद स्वरूप लगे और हमारी जड़ें यहांकी भूमिमें मजवूत हो जायं। हम न यहांके आदिम भूमिजन हैं और न यहांके शासक हैं। हम तो सेवाके द्वारा ही यहांके निवासी होनेका अपना अधिकार सावित कर सकते हैं। न संख्याके वल पर और न सत्ताके वल पर, परन्तु अपनी अुपयोगिताके वल पर ही हम अपनी शक्ति पैदा कर सकते हैं।

स्वतंत्र हिन्दुस्तानने मित्रताकी निशानीके तौर पर, और पड़ोसी वर्गके अेक अंगके रूपमें, अफ्रीकी विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानमें जाकर पढ़नेके लिअे चार छात्रवृत्तियां दी हैं। अिसी तरह यहां रहनेवाले भारतीयोंने और वारह छात्रवृत्तियां अफ्रीकियोंके लिअे दी हैं। अफ्रीकी लोग जानते हैं कि यह सव श्री अप्पासाहवके प्रयत्नसे हुआ है। अव जो खादी-विद्या सीखना चाहते हों, अुनके लिअे वर्धाके चरखा संघने ६ छात्रवृत्तियां देनेका निश्चय किया है। और हिन्दुस्तान जाकर जो राष्ट्रभाषा सीखना चाहें, अुनके लिअे हिन्दुस्तानी प्रचार

सभाकी तरफसे तीन छात्रवृत्तियां देनेकी मैंने घोषणा की। अैसी सक्रिय कारवाअियोंके कारण ही यहांके अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानके प्रति सद्भाव और आशाकी दृष्टिसे देखने लगे हैं।

कुछ अंग्रेज यहां अफ्रीकी लोगोंको अब समझा रहे हैं कि, 'ये हिन्दुस्तानी लोग तुमसे मनमाना नफा लेते हैं और यह सारा नफा स्वदेश ले जाते हैं। ये जोंकें जब तक हैं तब तक तुम सिर अूंचा नहीं कर सकोगे।' यह बात सच है कि यहांके हमारे लोग कमानेके लिअे ही यहां आये थे, अिसलिअे जितना नफा खींचा जा सकता हो अुतना खींचते थे। जैसे अंग्रेज हिन्दुस्तानका रुपया विलायत ले जाते थे, अुसी तरह, भले ही थोड़ी मात्रामें सही, हमारे यहांके लोग यहांका रुपया स्वदेश ले जाते थे, यह बात भी सच है। हर साल हिन्दुस्तानसे कितने ही साधु और वहांकी संस्थाओंके प्रतिनिधि यहांसे मदद ले गये हैं।

परंतु हम लोगोंके सम्पर्कमें यहांके लोग बहुत कुछ सीखे भी हैं। अुन्होंने बढ़अी और दर्जी वगैराके छोटे-मोटे धंधे सीखे। रूअीकी खेती अुन्होंने सफलतापूर्वक बढ़ाअी। जहां अंग्रेज पहुंच भी न सके, अैसे दूर-दूरके जंगली अिलाकोंमें हम लोगोंने हिम्मतके साथ जाकर दुकानें खोली और अपने बालबच्चोंको ले जाकर जंगलके अफ्रीकियोंके बीच बस गये। कुछ जंगली लोगोंको अेक अेक शिलिंगमें अेक अेक पायजामा देकर हम लोगोंने अुन्हें अपनी नग्नता ढंकना सिखाया। और अब तो कुछ अफ्रीकी हम लोगोंके साथ रहकर दुकानें भी करने लगे हैं। हम लोग अुन्हें अपने मुनीमके रूपमें विश्वासपूर्वक रखते हैं और अिस प्रकार अुनकी और अपनी आमदनी बढ़ाते हैं। अगर हम लोग बदली हुअी परिस्थितिको पहचान कर अफ्रीकियोंकी जागृतिमें मददगार बनें, अपना लोभ कम कर दें और अफ्रीकियोंको अनेक प्रकारसे शिक्षित बनायें, तो हमारा यहां रहना सफल हो।

कुछ लोगोंने मुझे खानगीमें कहा: "आपकी बात हम शिरोधार्य करनेको तैयार हैं। यहांके लोगोंके लिअे हम भरसक करके रहेंगे। परन्तु

हमारा अनुभव कहता है कि यहांके लोग बिलकुल कृतघ्न हैं। अुनके लिअे कितना भी कीजिये, तो भी समय पर आंख बदलते अुन्हें देर नहीं लगती।" मैं अुनसे कहता हूं कि यह बात सच निकली, तो भी मुझे अिससे जरा भी आश्चर्य नहीं होगा। जिनका देश लूटा गया है, जिन्हें परावलम्बी और भयभीत दशामें हमेशा रहना पड़ता है, मध्यकालमें जिन्हें पकड़कर गुलाम बनाकर बेचा जाता था, अुनके लिअे कृतज्ञता भी कअी बार आत्मघातक सिद्ध होती है। हमारे यहां भी मुसलमानों और हरिजनोंके लिअे अैसी ही शिकायतें हम सुनते थे। मराठीमें 'गुलाम' शब्द बदमाश या अक्लमंदके अर्थमें अिस्तेमाल किया जाता था — कभी निंदाके तौर पर और कभी कद्रके रूपमें। यह बताता है कि गुलामोंको बदमाशी सीखे बगैर छुटकारा ही नहीं था। अेक बार अिन लोगोंको स्वावलम्बी बन जाने दीजिये, फिर देखिये अुनमें धीरे-धीरे अिन्सानियतके तमाम लक्षण प्रगट हो जायंगे।

परंतु मैं यह माननेके लिअे तैयार नहीं कि ये लोग कृतघ्न हैं। कितने धीरजसे वे गोरोंके तरह-तरहके अन्याय सहन करते आये हैं? हम अैरण लेकर सूअीका दान करें और अितने पर ही यह अुम्मीद रखें कि वे हमारे प्रति अुपकारबद्ध रहें, तो यह किस तरह ठीक माना जा सकता है? अब तक अुनकी रहन-सहन बिलकुल सादी थी। संतोष अुनकी जीवन-पद्धतिका प्रधान गुण है। मिट्टी और फूसके झोंपड़ोंमें वे रहते हैं। अितने विशाल देशमें अुन्होंने अेक भी बड़ा मकान, मंदिर या राजमहल नहीं बनाया। मजदूरी लेकर काम करना अुनके स्वभावमें नहीं। अिन लोगोंको हमारे जैसे बना देनेके लिअे सरकारने अुन पर 'मुंड-कर' (Pol tax) लगा दिया है। कमायें तो ही वे सरकारके शिकंजेसे बच सकते हैं। अुनकी संतोषप्रधान संस्कृतिसे अुन्हें विचलित करनेके लिअे जहां अितने प्रयत्न हो रहे हों, वहां अुन लोगोंका जीवन स्वाभाविक रह ही नहीं सकता।

अितने अधिक मिशनरी अिनकी सेवा करते करते मर मिटते हैं। अुन्होंने कभी यह शिकायत नहीं की कि ये लोग कृतघ्न हैं। अिस्लामका और अीसाअी धर्मका स्वीकार करने पर भी अिन लोगोंमें किसी प्रकारकी कट्टरता नहीं आअी। अिन बातोंको समझनेके लिअे हमें समाजशास्त्रकी गहरी दृष्टि पैदा करनी चाहिये। और अुनके लिअे जो कुछ करें, वह सच्चे धर्मनिष्ठ बनकर निष्काम भावसे करना चाहिये। जहां ऋण चुकानेके लिअे सेवा करनेकी बात हो, वहां सामनेवाला कृतघ्न है या कृतज्ञ, यह देखा ही नहीं जाता; सद्गुणों पर किसी भी जातिका ठेका नहीं होता। जहां आत्मा है वहां तमाम सद्गुणोंका अुत्कर्ष होगा ही। अर्थात् समय पाकर।

नैरोबीके पास कोअी ३० मील दूर अेक अफ्रीकी नेता श्री पीटर कोअिनांगे रहते हैं। ये भाअी हाल ही में हिन्दुस्तानका सब जगह दौरा करके आये हैं। भारत सरकारने अुनके लिअे सब सुविधाअें कर दी थीं। हम अुनसे मिलने अुनके यहां गये। आदमी बड़ा पितृभक्त है। अुन्होंने अपने पिताका परिचय कराया। अुनकी ६ मातायें अपने-अपने बच्चोंके साथ अलग-अलग झोंपड़ियोंमें किस तरह रहती हैं, यह सब अुन्होंने बताया। पीटर कोअिनांगेने अपनी किकूयू जातिके लिअे दो दो सौ पाठशालाअें चलाअी हैं। सरकारसे वे मदद नहीं लेते। गोरोंकी नौकरी करने या सरकारी नौकरीमें स्थान प्राप्त करनेका अुद्देश्य न रखते हुअे अपनी जातिकी सेवा करनेकी योग्यता हासिल हो, अिस किस्मकी शिक्षा अिन पाठशालाओंमें दी जाती है। अुसी स्थान पर हमें अेक अफ्रीकी बहन मिली — वांजीकू। अुन्होंने कातना-बुनना सीखकर अपने कपड़े तैयार किये हैं। हम अुनके स्थान पर गये, तब अुन्होंने अेक हिन्दी पाठ पढ़कर सुनाया और अपनी लिखी हुअी थोड़ीसी हिन्दी भी दिखाअी!

पूर्व अफ्रीकामें हम लोगोंका सबसे बड़ा सवाल है आन्तरिक अेकताका। हिन्दू-मुस्लिम अेकता जो पहलेसे मौजूद थी, अुसे हमने अकारण तोड़ दिया और पराये लोगोंके सामने हम हंसीके पात्र बने। मैंने अुनसे कहा कि हिन्दुस्तानका पागलपन हिन्दुस्तानमें रहने दीजिये। यह मान लें कि वहां लड़नेका कारण था, तो भी वह कारण यहां नहीं है। अदाहरणके लिअे मैंने कहा कि हिन्दुस्तान अुत्तर गोलार्धमें है, पूर्व अफ्रीकाका बड़ा भाग दक्षिण गोलार्धमें है। हिन्दुस्तानमें जब जाड़ा होता है, तब अिधर गर्मी होती है। वहां गर्मी हो, तब यहां सर्दी होती है। अैसी स्थितिमें हिन्दुस्तानमें जाड़ा होनेके कारण यहां गर्मी होने पर भी हम गर्म कपड़ा ओढ़कर बैठें और वहां गर्मी पड़नेकी खबर लगते ही यहां हम पंखा चलायें और ठंडके मारे कांपने लगें, अिसमें कोअी अर्थ है? यहां आपसमें लड़कर हम क्या ले लेंगे? मिल कर रहेंगे तो हिन्दुस्तानके लिअे अुदाहरण स्वरूप बनेंगे। अेकता रखेंगे तो ही तीनों महाद्वीपोंके लोगोंके बीच भाअीचारा पैदा करनेकी कला हमारे हाथमें आयेगी। अिस प्रदेशमें रहनेवाले हमारे मुसलमान करीब सबके सब भारतके ही नागरिक हैं, पाकिस्तानी नहीं।

युरोपियन लोगोंके साथ बातें करते समय अेक सवाल हमसे बहुत बार पूछा जाता था।

हिन्दुस्तानमें कम्युनिज्म — साम्यवादका जोर बढ़नेकी कितनी संभावना है?

मैं अुनसे कहता था कि साम्यवादके लिअे हिन्दुस्तानमें जरा भी गुंजाअिश नहीं है, मगर अुसके खास कारण हैं। आप अंग्रेज लोगोंने समयानुसार हिन्दुस्तान छोड़नेका फैसला न किया होता, तो हमारे यहां साम्यवाद जरूर फूट निकलता। गांधीजीकी पैदा की हुअी हमारे देशकी अहिंसक शक्तिको आप पहचान सके, आपने अुसकी कद्र की और हमारी स्वतंत्रताको आपने मंजूर किया, अिसका हिन्दुस्तान पर भारी

असर हुआ है। आपके प्रति जो द्वेष था वह मिट ही गया, लोगोंको यह भी विश्वास हो गया कि गांधीजीके मार्गसे ही देशकी अुन्नति होगी।

और भी कारण हैं। जहां सामाजिक, वांशिक या आर्थिक अन्याय हैं और गरीबोंमें अुनसे मुक्त होनेकी आशा नष्ट हो जाती है, वहीं साम्यवाद फूट निकलता है। हमारे यहां हमने हजारों वर्ष पुरानी छुआछूतको सपाटेसे नष्ट कर दिया और सामाजिक न्याय स्थापित किया। छोटे-बड़े असंख्य राजाओंने सिर परका मुकुट अुतार कर प्रजाके चरणोंमें रख दिया। जमींदारी प्रथाका भी अन्त करनेके लिअे हम तैयार हो गये हैं और जमींदार भी अुचित मुआवजा लेकर जमीन छोड़ देनेको तैयार हो गये हैं। और हरअेक बालिगको मताधिकार देकर दुनियामें बेमिसाल विशाल निर्वाचक मंडल हम लोगोंने तैयार किया है। अैसी-अैसी जबर्दस्त कार्रवाअियोंके कारण लोगोंमें विश्वास जम गया है कि नेहरू सरकारके हाथों न्याय जरूर मिलेगा। अिसलिअे हमारे यहां साम्यवादके लिअे गुंजाअिश नहीं है। जिस-जिस जगह सरकारी अिन्तजाम ढीला था, वहां-वहां साम्यवादी लोग बखेड़ा कर सके। लोगोंमें सीधा प्रचार करके आनेवाले चुनावोंमें जीत जानेकी हिम्मत साम्यवादके पास होती, तो वह बखेड़े और धांधलबाजीकी झंझटमें हरगिज न पड़ता। जहां सामाजिक, वांशिक और आर्थिक न्याय होता है, वहां साम्यवादका डर नहीं रहता। साम्यवाद समूह-जीवनके रोगकी ही अेक निशानी है।

अेक दिन हमने कबेटे जाकर वहांकी सरकारी अुद्योगशाला देखी। अिस अुद्योगशालामें अफ्रीकी लड़कोंको बढ़अीगिरी, लुहारी, टीनका काम, राजका काम, बिजलीका काम, दर्जीका काम, मोचीका काम वगैरा धंधे सिखाये जाते हैं। पाठ्यक्रम अेकसे तीन वर्षका रखा गया है। सभी छात्र लगनसे काम करते दिखाअी दिये। कामकी सफाअी भी अच्छी थी। शिक्षक सभी गोरे कारीगर थे। अैसा लगता था कि कुछ अच्छे शिक्षाकार भी होंगे। मैंने अेक आदमीसे खानगीमें

पूछा कि, "क्या यह खयाल सच्चा है कि अफ्रीकी लड़के दूसरी जातियोंके विद्यार्थियोंसे वुद्धिमें कम या मंद होते हैं ?" अुन्होंने जरा सोच कर कहा कि, "आम तौर पर यह वात सच है। परंतु जो होशियार होते हैं वे गैरमामूली होशियार होते हैं। तीन सालकी शिक्षाके अंतमें सभी स्वावलम्वी वन जाते हैं और अच्छे-अच्छे काम जुटा लेते हैं।"

पंजावसे आये हुअे सिक्ख लोगोंसे मैंने कहा कि कवेटे जैसी संस्थाअें यहां वढ़ेंगी तो आपका काम यहां नहीं रहेगा। अभीसे अिन लोगोंको अपने कारखानोंमें काम देते जाअिये, ताकि अुनके और हमारे वीच प्रेमसंवंध कायम रह सके। अगर हमें यह देश छोड़ना ही पड़े, तो हम यह संतोष लेकर जायं कि हम अिन लोगोंको स्वावलम्वी वना कर ही जा रहे हैं, हम अिनका आशीर्वाद लेकर ही जा रहे हैं।

नैरोवीका अेक वड़ा आकर्षण है यहांके जंगली शिकारी जानवरोंका अभयारण्य। यह भाग खासा लंवा चौड़ा ४० चौरस मीलका है। जहां-जहां घाटियां हैं वहां-वहां थोड़ेसे पेड़ हैं, वाकी सारा भाग घासका खुला मैदान है। अिस प्रदेशमें जानवरोंको मारने, छेड़ने या सतानेकी सख्त मनाही है। यह नियम सिर्फ मनुष्यों पर ही लागू है। जानवर आपसमें जंगलके कानूनकी रूसे जैसा चाहें वर्ताव कर सकते हैं। अेक जानवरसे दूसरे जानवरकी रक्षा करनेके लिअे भी मनुष्यजाति दखल नहीं दे सकती। अिस अरण्यमें सिंह हैं, परन्तु वे पेट भरने जितनी ही शिकार करते हैं। सिंहको भूख न हो तो वह नजदीक आये हुअे जानवरको भी नहीं मारेगा। अिस अभयारण्यमें अनेक प्रकारके चतुष्पाद श्वापद, सर्प जैसे अनेक सरीसृप और तरह-तरहके पक्षी रहते हैं। वहुत कोशिश करने पर भी अिस वार सिंह हमारे देखनेमें नहीं आया। वैसे, हिरण और गायके लक्षणोंवाले वुट्टू नामक जानवर, 'जिव्रा' के नामसे परिचित चित्राश्व, जिराफ वगैरा अनेक पशु हमें देखनेको मिले। अेक हिप्पोको हमने कीचड़में लोटपोट होते देखा। असंख्य प्रकारके हिरण यहां घूम रहे

थे। सिंहके होनेसे वे अुदास नहीं थे। शुतुर्मुर्ग जब नीचा सिर किये चरते हों, तब पहचानना मुश्किल होता है। परन्तु जब वे सिर अुठा कर अिधर अुधर देखने लगें, तब अुनका गर्व देखने लायक होता है। वे अिस ढंगसे दौड़ते हैं मानो अपने पांखोंके नीचे भारी कीमती माल छिपा रखा हो!

नेशनल पार्कमें मोटरमें बैठ कर दौड़नेमें हमें अपनी कुतूहल वृत्ति ही प्रेरक होती थी। परन्तु भाओी सूर्यकान्त जैसे हमारे मेजवानोंको, जो असंख्य बार सारा पार्क रौंद चुके थे, हमारे संतोषका ही संतोष था। अुनसे अिन जंगली जानवरोंकी खासियतें सुनते और पुराने प्रसंगोंका रसपूर्ण वर्णन किये जाते समय हमारा आनन्द द्विगुणित हो जाता था। मेरे खयालसे अिन वर्णनोंके बिना पशु-दर्शन ज्यादातर फीका ही रहता।

वापस लौटते समय हमें जो बन्दर दिखाओी दिये, अुनकी हस्ती तमाम जानवरोंमें अलग ही मालूम होती थी। मनुष्यको नजदीक देखकर सभी जानवर हट जाते हैं, परन्तु बन्दर मानो हमें देख-कर आलोचना करते हों और हमें तुच्छ समझते हों, अैसा मुंह बनाकर ही हटते हैं।

हमें कअी तरहके जानवरोंको वन्य दशामें देखनेसे आनन्द होता है। देश-देशान्तरके और तरह तरहके मनुष्योंको अिस प्रकार आकर अपना दर्शन देते हुअे देख कर श्वापदोंको क्या खयाल होता होगा? अभयारण्यमें आनेवाले सभी मनुष्य सज्जन और तृप्त होते हैं, कोअी हमें मारता नहीं, यह देखकर भी अुन्हें आश्चर्य होता होगा।

अरण्यवासी श्वापदोंका जीवन देख कर मेरे मनमें अेक विचार आया। सलामती और शांति प्राप्त करनेके लिअे मनुष्यने सामूहिक जीवनका संगठन किया। राज्य-व्यवस्थाकी स्थापना की। राजा, न्यायाधीश, सेनापति, सेनाअें और पुलिस खड़ी की। लोगों पर जबरदस्त कर लगाया। अनेक कानून बनाये, व्यक्तिकी स्वतंत्रता

पर प्रहार किये, फिर भी हम कितनी हिंसा टाल सके? कितनी शांति स्थापित कर सके? अिन पशुओंकी तरह मनुष्य भी वन्य और अराजक दशामें रहे होते, तो क्या हम आजसे ज्यादा भयभीत हालतमें रहे होते? हमें समझाया जाता है कि आज जितनी मारकाट होती है, मारपीट और लूट होती है, वह अराजक स्थितिकी अपेक्षा बहुत कम है। परन्तु समय-समय पर जो भीषण और अति भीषण युद्ध सहन करने पड़ते हैं और अुनमें जो मनुष्य-हत्या, लूटमार और बर्बादी की जाती है अुसका हिसाब लगायें, तो यही कहना पड़ेगा कि राज्य-तंत्र स्थापित करके मनुष्य-हत्या अधिक ही हुअी है। और न्यायव्यवस्थाका विचार करने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अराजक स्थिति कम संतोषजनक है। मनुष्यके हृदयमें जो स्वाभाविक न्यायबुद्धि है, अुसकी अपेक्षा पुलिस और न्यायमंदिरों द्वारा मनुष्यजातिको अधिक न्याय मिलता है, यह मानना भी कठिन है। अभयारण्यमें पशु-पक्षियोंको विश्वासपूर्वक रहते, चरते और फिरते देखकर मुझे तो विश्वास हो गया कि मनुष्य-समाजसे अिसी जगह पर निर्भयता अधिक है। और किसी भी जातिकी संख्या बढ़ जाय, तो अुसका अिलाज भी वन्य जीवनमें अपने आप किया हुआ होता है। डार्विनका जीवन कलहका सिद्धांत और प्रिंस क्रोपॉटकिनका परस्पर सहयोगका सिद्धान्त दोनों जान लेनेके बाद मनुष्यको अेक बार वन्य जीवन और मानवीय राज्य-जीवनका फिर नये सिरेसे विचार करना चाहिये।

* * *

देवताओंका जन्म कब हुआ और किस ढंगसे हुआ, अिसका विचार करनेवाले अपने पूर्वजोंके मानसिक पराक्रमसे जैसे हम विस्मित और चकित होते हैं, अुसी तरह अिस पृथ्वीकी रचना या महासागर और विशाल महाद्वीपोंकी रचनाकी भी कल्पना करनेवाले और अुसके लिअे विज्ञानका सबूत पेश करनेवाले विद्वानोंकी कल्पनाशक्ति और हिम्मत हमें आश्चर्य-चकित कर डालती है।

अफ्रीका महाद्वीप छोटा-मोटा देश नहीं है। अुसका सिर लगभग पांच हजार मील चौड़ा है और अुसका अुत्तरी दक्षिणी विस्तार अिससे जरा अधिक है। अिस महाद्वीपकी रचना किस प्रकार हुअी होगी, अिसका विचार करते समय जैसे सहारा और कलाहारीके दो रेगिस्तानोंका विचार करना पड़ता है, अुसी प्रकार पूर्व अफ्रीकाकी जमीनमें जो प्रचंड दरारें पड़ी हैं अुनका भी विचार करना पड़ता है। सैकड़ों मील लम्बी, ४० से ६० मील तक चौड़ी और डेढ़से ढाअी हजार फुट गहरी दो दरारें, 'रिफ्ट्स' किस तरह पैदा हुअी होंगी, अिसकी कल्पना अनेक भूगर्भ-शास्त्री करते हैं। किसीका मानना है कि हिन्द महासागरके पूर्वी किनारे परका दबाव किसी भी कारणके घट जानेसे ये दरारें पैदा हुअी हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि ज्वालामुखीके फटने और पृथ्वीकी सतहमें कोअी गड़बड़ होनेसे ये दरारें अुत्पन्न हो पाअी हैं। कुछ भी हो, ये दरारें आज असली रूपमें नहीं हैं। समय-समय पर ज्वालामुखियोंके फटनेसे हरअेक दरारके टुकड़े हो गये हैं। आलबर्ट अेडवर्ड, कीव्हू, टांगानिका, रुकवा और न्यान्जा वगैरा तमाम सरोवर मिलकर अेक दरार थी। दूसरी तरफ पूर्वी दरार अियासी, नेट्रन, मागड़ी, नैवाशा, हेनिंगटन, बेरिंगो और रुडोल्फ वगैरा सरोवरोंसे लगाकर लाल समुद्र होती हुअी फिलस्तीनके मृत समुद्र तक जाती है। और अिन दो दरारोंके चिमटेके बीच पकड़ा हुआ हो, अिस प्रकार विक्टोरिया (अमृत) सरोवर युगान्डा और केनियाके बीच विराजमान है।

अिस पूर्वी दरारका कुछ भाग समतल होनेसे अिसमें मनुष्य और प्राणियोंकी बड़ी आबादी समाअी हुअी है। अिसे देखनेका मौका कैसे छोड़ा जाता? पिछले युद्धके अिटैलियन कैदियोंसे नैरोबीके आसपास बहुतसे रास्ते तैयार कराये गये। अिन रास्ते दरारकी अेक किनारी पर हम अुतर गये और वहांसे कोअी ३० मील दूर स्थित सामनेकी किनारी और बीचकी तलहटीमें अुभरी हुअी कुछ मृत ज्वालामुखीकी पहाड़ियां हम देख सके। कुछ लाख वर्ष पहले जब यह दरार पहले

पहल पड़ी तब कितनी बड़ी आवाज हुआी होगी, अिसकी कल्पना करने पर काल-वृद्धिने कहा कि अुस समयकी आवाज सुननेके लिअे न कोअी मनुष्य था, न कोअी जानवर। भयानक नभो-विदारक शब्द हुआ होगा, परन्तु डरनेके लिअे वहां कोअी था ही नहीं! आवाज हुअी और वह अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी। आसपासकी जड़ सृष्टिने मूल शब्दकी प्रतिध्वनियां बर्दाश्त की होंगी और वे भी अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी होंगी। आज अिस दरारके केवल अवशेष ही रह गये हैं और अुनमें वनस्पति–सृष्टि, पशुसृष्टि और मनुष्य–सृष्टि अपने-अपने जीवनका आनन्द लेने लगी हैं। अिस 'रिफ्ट'का दृश्य सचमुच भव्य है। भूगर्भशास्त्रकी जिसे थोड़ीसी भी कल्पना और दिलचस्पी है, अुसकी कल्पनाके लिअे यह दृश्य बड़ा ही अुत्तेजक है।

दूसरे दिन अिस दरारके दूसरे प्रदेशमें हम पुराना अुत्खनन देखने गये। अिस स्थानको 'ओरलेगोसाअिली' कहते हैं। वहां अेक प्राचीन सरोवरकी तलहटी दस दस हजार वर्षमें कैसे भरती गअी और अुस समयके जानवरोंकी हड्डियां किस प्रकार छोटी बड़ी होती गअीं, यह हमने जान लिया।

मिट्टीके, ज्वालामुखीकी राखके, रेतके और हड्डियोंके जो अलग-अलग पर्त अेक पर अेक जमते हैं, अुनका हिसाब करके प्राग्-अैतिहासिक बातोंका कालक्रम तय किया जाता है। हमें सब कुछ समझानेवाले भाअी कहते थे कि बीचमें दस हजार वर्ष तक बरसातकी अेक बूंद तक नहीं पड़ पाअी। परिणामस्वरूप सारी प्राणीसृष्टि मर गअी। अुसके बाद जब नअी सृष्टि पैदा हुअी तब फिरसे जानवर पैदा हुअे और जैसे-जैसे खुराककी कमी दूर होती गअी, वे प्राणी बड़े भी होते गये।

अैसी जगह जो प्राचीन अवशेष अथवा अुनके 'फोसिल' मिलते हैं, अुन्हें अुठा कर ले जाना अपराध है या नहीं? साधारण मनुष्य अिन अवशेषोंका कोअी भी अुपयोग नहीं कर सकते। निरर्थक कुतूहल तृप्त करनेके लिअे अैसे प्राग्-अैतिहासिक महत्त्वकी सामग्री अुठा

कर ले जाना मानवी ज्ञानके प्रति महाद्रोह है। संबंधित देशोंकी सरकारोंको अैसी तमाम सामग्री संभाल कर रखनी चाहिये और दुनियाके समर्थ विद्वानोंकी अन्तर्राष्ट्रीय जातिको अिस सामग्रीका अुपयोग करनेकी छूट देनी चाहिये।

अिस प्रदेशमें जाते और आते रास्तेमें हमने तरह-तरहके अनेक श्वापद देखे। अुनमें भी खास तौर पर जो जिराफ बिलकुल नजदीकसे देखनेको मिले, अुनकी शान भुलाअी नहीं जा सकती। अुनके सिरके सींग अितने छोटे होते हैं, मानो बायनोक्यूलर चश्मेकी तरह आंखोंके अूपरसे सिर पर चढ़ा दिये गये हों! जिराफ प्राणी अितना अूंचा और लम्बग्रीव होता है, परन्तु अुसके चेहरे परसे अैसा नहीं लगता कि खुद अुसे यह अटपटा लगता हो। क्या अिन जानवरोंको सचमुच अपने पूर्वजोंके हजारों वर्षके अितिहासका पता होगा? काल भगवानके अुदरमें प्रवेश करके कल्पनाकी नजरसे देखनेकी शक्ति मनुष्यजातिके पास ही है। बाकीके प्राणियोंके लिअे वर्तमान काल ही सत्य होता है। भूत और भविष्य काल अुनके लिअे मायाकी तरह ही होगा। और अिसलिअे वे निश्चिन्त होकर प्राचीन अवशेषोंके बीच भी चल सकते हैं।

'रिफ्ट' वेली और ओरलेगोसाअिली, अिन दो स्थानोंके दर्शनसे ताजी हुअी जिज्ञासाको लेकर हम नैरोबीका 'कॉरिन्डन' म्यूजियम देखने और खास तौर पर अुसे अनेक प्रकारसे सजा कर अुपयुक्त बनानेवाले विद्वान डॉक्टर लेकीसे मिलने गये।

मैंने सुना कि अिसी म्यूजियममें अेक गांधी विभाग खोलनेवाले हैं, मगर अभी तक मैंने यह नहीं पूछा कि अिसमें क्या क्या रखा जायगा और अुसकी व्यवस्था कैसी होगी? गांधी म्यूजियम मेरा क्षेत्र होनेसे अिस कल्पनाके प्रेरकोंसे मिलकर अुसकी तफसील जान लूंगा।

नैरोबीका कॉरिन्डन म्यूजियम सामान्य संग्रहालय नहीं है। अुसमें सारे अफ्रीका महाद्वीपका रहस्य प्रगट हुआ है। डॉक्टर लेकी दुनियाके अेक प्रखर भूगर्भ-शास्त्री हैं। अुन्होंने बड़े-बड़े शोध किये हैं।

अुन्होंने अफ्रीका महाद्वीपका लाखों और करोड़ों वर्षका अितिहास अनेक अुत्खननोंमें से खोज निकाला है। केवल मनुष्योंके ही नहीं परन्तु छोटे वड़े असंख्य प्राणियोंके अितिहासका श्रेय आज अुन्हींको है। खुदाअी करते करते अुन्हें कुछ खोपड़ियां अैसी मिली हैं कि जो वंदर और मनुष्यके वीचकी कड़ी पूरी कर देती हैं। वड़े अभिमानके साथ अुन्होंने वह खोपड़ी आलमारीसे निकाल कर हमारे हाथमें रखी और हमें वताने लगे: "देखिये, यह आंखके अूपरकी भौंहकी अुभर आअी हुअी हड्डी ...। यह देखिये मनुष्यका मस्तिष्क समा जाय अैसा अिस खोपड़ीका वड़ा पोलापन।" वातों ही वातोंमें अेक चित्रकी तरफ अंगली दिखाकर अुन्होंने कहा कि: "यह जो वंशवृक्ष मैंने तैयार किया है, अिसके लिअे कुछ जानकारी हिन्दुस्तानसे ही मिल सकती है। अपने हिन्दुस्तानके भूस्तर-शास्त्रियोंसे कहिये कि अिसमें मेरी मदद करें, क्योंकि यह काम सारी मानवजातिका है।"

मैंने अुनसे कहा: "आप जो चाहते हैं अुस वातकी खोज हिमालयसे पहलेकी शिवालिक पहाड़ियोंमें ही हो सकती है।" "मैं भी यही मानता हूं" अुन्होंने अनुमोदन किया। यही चर्चा आगे चलने पर मैंने कहा: "मेरे जन्मसे पहले व्रूसफुट नामक अेक भूगर्भ-शास्त्री दक्षिण भारतमें दौरा करता था। अुसे अेक राक्षसी मनुष्यका जवड़ा मिला था। मेरे पिताजीने अुस जवड़ेका जो फोटो लिया था वह मैंने देखा था।"

"व्रूसफुटका नाम मैंने सुना है। अुनको जो जवड़ा मिला था, वह अव कहां होगा?" अुन्होंने मुझसे पूछा। मैंने कहा कि, "अुस समय मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। शायद मद्रास म्यूजियममें वह पड़ा होगा। छुटपनमें वह फोटो मेरे पास था। वहुत लोगोंने अुसे देखा है।"

डॉ० लेकीने कहा कि "मनुष्य शरीरसे वड़ा हो या छोटा, यह सव खुराक पर निर्भर करता है। गेंडा या हिप्पो जैसा प्राणी भी

खुराककी कमीके कारण दस बीस हजार वर्षके भीतर चूहे जैसा छोटा बन जाता है।"

दो–अेक घंटे हमारी बातें हुअीं। अुस बीच अरण्योंके सिलसिलेमें वनस्पतिशास्त्र, तितलियोंका शास्त्र, प्रकृतिमें होनेवाली 'मिमिक्री', पशुपक्षियोंके प्रकार वगैरा कितने ही विषय आ गये। साहबका काम करनेका कमरा देखने लायक था। पुस्तकों, रिपोर्टों, नोटबुकों और तसवीरों आदि अनेक वस्तुओंके ढेर जहां तहां पड़े हुअे थे! अुनके कपड़ोंका भी ठिकाना नहीं था। सारे समय अपने काममें मस्त, और कुछ अुन्हें सूझता ही नहीं था। अपने शास्त्रमें अखंडरूपसे रमे रहते थे। जिस जातिमें अैसे मस्त लोग पैदा होते हैं, अुस जातिका मुख सदा अुज्ज्वल रहेगा।

म्यूजियमकी रचना विचारपूर्वक की गअी थी। भिन्न-भिन्न जातिके जानवर अपने स्वाभाविक वातावरणमें रखे गये थे। यह देखकर मुझे बंबअीका प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम याद आ गया। मैं मानता हूं कि हरअेक देशके मुख्य-मुख्य म्यूजियमोंके वस्तुपालोंको सरकारी खर्चसे दूसरे बड़े-बड़े म्यूजियम देखने भेजना चाहिये। और अुनसे अैसा साहित्य तैयार कराना चाहिये, जिसे साधारण आदमी समझ सकें।

अेक दिन भाअी सूर्यकान्तने मुझे आकर पूछा: "काकासाहब, आपने यहांका किकूयू सरोवर देखा है?" मैंने कहा: "नहीं, मेरे सामने किसीने अुसकी बात तक नहीं की।" "आपको अुसे खास तौर पर देखना चाहिये। अूपर जमीन है और नीचे सरोवर है। आप अुस पर चल सकते हैं। परन्तु वह जमीन अिस तरह झूलती है जैसे रबरकी बनी हो।"

मुझे बंबअीकी मलबार हिल परका हेंगिंग गार्डन याद आ गया। अितनी तो मैं कल्पना कर ही सका कि किकूयू सरोवरमें अुससे अधिक विशेषता होगी, परन्तु अुसकी स्पष्ट कल्पना नहीं हुअी। अेक सुबह सूर्यकान्तभाअी हमें वहां ले गये। किकूयू स्टेशनसे वह अेक फर्लांग भी दूर

नहीं होगा, परन्तु नैरोबीसे वह ग्यारह मील दूर है। वहां जाते हुअे रास्तेमें हमें किलिमांजारो पहाड़के सुन्दर शिखरके स्पष्ट दर्शन हुअे। दो-तीन दिन पहले युनाअिटेड केनिया क्लबमें प्रवेश करनेसे पहले श्री अप्पा-साहब अपनी मोटरमें मुझे जल्दीसे ले गये थे और अुन्होंने मुझे सूर्यास्तके गेरुआ रंगसे रंगा हुआ किलिमांजारोका शिखर बताया था। दो-तीन मिनिट देखा होगा कि अितनेमें सूर्यनारायणने अपनी किरण-कृपा समेट ली और अुसी क्षण शिखरकी शोभा विलीन हो गअी।

आज बढ़ते हुअे प्रकाशमें किलिमांजारोके शिखरका दर्शन हमने जी भर कर किया। बड़े हाथीकी पीठ हो या किसी औलियाका कमंडल औंधा रख दिया गया हो, अिस तरह वह शिखर शोभा दे रहा था। हमारे देशमें पर्वत-शिखरोंकी कमी नहीं है। और कितने ही शिखर तो बहुत ही सुंदर होते हैं। परंतु किलिमांजारो तो किलिमांजारो ही है।

हम किकूयू पहुंचे और सरोवरके किनारे मोटरसे अुतरे। किसी बड़े विशाल तालाबका पानी सूख गया हो और अुसकी तहके कीचड़में काअी और घास अुग आअी हो, अैसा दृश्य था। श्री सूर्यकान्तभाअीने कहा कि, "अिस जमीनके नीचे पानी है। अुस कोनेमें जो पंप दिखाअी देता है अुसकी मददसे अिस तालाबका पानी खींचकर नैरोबीके कुछ भागोंको पानी दिया जाता है। अितना पानी खिंचता है, तो भी तालाबका पानी खूटता नहीं।"

डरते-डरते हमने तालाबके अूपरकी जमीन पर पैर रखा और आगे चले। जमीन लब-लब-लब हिलने लगी। हमें लगता कि पैरोंके नीचेकी जमीन अब फट जायगी और पैर पानीमें चले जायंगे। कहीं-कहीं पैर दो अिंच अिस तरह अंदर भी चले जाते जैसे कीचड़में फंस गये हों। हम चलते-चलते सरोवरके बीच तक गये और बाअीं तरफ मुड़ कर वापस आ गये। बीच-बीचमें छोटे-छोटे कुअें जैसे खड्डे थे, जिनमें से नीचेका पानी दिखाअी देता था। पानीके

अूपरकी जमीनकी तह आठ नौ अिंचसे ज्यादा मोटी नहीं होगी। सूर्यकान्तभाअीने अेक लोकोक्ति सुनाअी कि पुराने जमानेमें कुछ अफ्रीकी लड़के अिनामकी लालचसे अेक किनारे पर पानीमें डुबकी मार कर सरोवरके अंदरसे तैरते-तैरते दूसरे किनारे पर आ जाते थे। अितनी देर सांस रोक कर तैरना आसान बात नहीं थी। अेक बार अेक लड़का अिसी तरह डुबकी मार कर गया। वह शायद अंदरके जालमें फंस गया होगा या अुसका दम टूट गया होगा। वह अूपर आया ही नहीं। तबसे सरोवरमें अिस तरह डुबकी लगानेकी मनाही कर दी गअी है।

सरोवरका आकार टेढ़ामेढ़ा तिकोना है। अिसे कुदरतका अेक चमत्कार कहा जा सकता है। सरोवरोंका स्वभाव अपना मुख अुज्ज्वल और शांत रखकर आकाशके अनंत तारोंको प्रतिबिंबित करनेका होता है। यह स्वभाव छोड़कर घास-मिट्टीका घूंघट निकालना अिस सरोवरको कहांसे सूझा? या आसपासकी पहाड़ियोंने सासपन चला कर अिस बेचारी लड़कीको अिस तरह घूंघट निकालनेको मजबूर किया होगा? क्या यह लड़की अितनी ज्यादा अुच्छृंखल थी कि और किसी भी सरोवरको नहीं और अिसको पर्दा करना पड़ा?

दोपहरको लंच और रातको डिनर और बीच-बीचमें चाय-नाश्ताका हमारा रोजमर्राका क्रम था। कहीं हम यह न भूल जायं कि हम हिन्दुस्तानसे आये हुअे 'बड़े आदमी' हैं, अिसलिअे यह सारी व्यवस्था थी। हर बार हमें कुछ न कुछ बोलना पड़ता था। श्री अप्पासाहबने कह रखा था कि हर जगह नये-नये लोग आते हैं, अिसलिअे आप अपना संदेश अुन्हें देनेके लिअे अेक ही रिकार्ड चलाते रहें तो भी हर्ज नहीं। मगर मुझे यह आता नहीं। चीज भले अेक ही हो, परन्तु नये लोगोंको देखकर अुस चीजको नये ढंगसे पेश करनेकी अिच्छा होती है। और कुछ लोग तो सब जगह हमारे साथ होते ही थे। अुन्हें अेक ही चीज, अेक ही भाषामें बार-बार सुननी पड़े यह भी मुझे अटपटा लगता था। परन्तु प्रचारकोंको अिस मामलेमें ढीठ

वनना ही पड़ता है। किसी भी शोभा या शृंगारके विना अपनी वात लोगोंके सामने सीधी रखनेकी कला गांधीजीने पैदा करके दिखा दी। परन्तु अिस सादगीमें भी अुनका अनुकरण करना आसान नहीं। मैंने निश्चय किया कि अपने विचारों संबंधी अपनी अुत्कटता पर विश्वास रखकर समय पर जो सूझे वही-वोल दिया जाय।

अेक वार मुझे खास विषय दिया गया Non-violence in Peace and War–शांतिकाल और युद्धकाल दोनोंमें अहिंसाका पालन।

विषय जरा विचित्र जरूर था। कुछ लोगोंका खयाल है कि युद्ध शुरू कर देनेके वाद अहिंसाकी गुंजाअिश ही कहां है? Non-violence in War–युद्धमें अहिंसा–परस्पर विरोधी चीज है।

अुधर कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि जहां हिंसा हो रही हो, वहीं अहिंसाके प्रचारकी गुंजाअिश है। शांतिके दिनोंमें सभी लोग अहिंसक होते हैं। शांतिका अर्थ ही यह है। तव शांतिके दिनोंमें अहिंसाके पालन या प्रचारका अर्थ क्या?

असलमें मनुष्य-जीवन आज अितना कृत्रिम वन गया है कि युद्धके दिन हों या शान्तिके दिन हों, शान्तिकी साधना अुग्र या अुत्कट रूपमें करनी पड़ती है।

गांधीजीकी अहिंसा कायरोंकी अहिंसा नहीं है। असलमें गांधीजीने कोअी खास वात सिखाअी है, तो वह पूर्ण अहिंसावाला तेजस्वी प्रतिकार है। युद्धके अेवजमें सफलतापूर्वक अिस्तेमाल की जा सकनेवाली अहिंसा ही गांधीजीका सत्याग्रह है। लड़ाअीमें भाग लेनेवाले वहादुर लोग खुद मरनेको तैयार होते हैं और सामनेवाले आदमियोंको मारनेकी कोशिश करते हैं। मरनेकी तैयारी रखना सत्याग्रहीका काम है, मारनेकी तैयारी करना जल्लादका काम है। सत्याग्रही और जल्लाद अेकत्र होकर क्षत्रिय वीर वनते हैं। अिस क्षात्रधर्मका

गांधीजीने शुद्धीकरण किया। जल्लादको निकाल दिया और शुद्ध सत्याग्रहीको रख लिया। अिसीका नाम है Non-violence in War.

परन्तु रोज अुठकर सत्याग्रहका हथियार नहीं चलाना पड़ता। सत्याग्रह हो या हत्याग्रह, दोनोंका प्रसंग ही न आये अैसा निष्पाप जीवन वितानेका नाम है Non-violence in Peace. अिसके लिअे मनुष्य-जातिको अपना सारा जीवनक्रम ही वदलनेकी जरूरत है।

आज हमारा जीवन अन्याय, अत्याचार और द्वेष पर आधारित है। सामाजिक अूंच-नीचपन और अपने-परायेका भाव, आर्थिक वंटवारेमें असमानता, राजनैतिक निरंकुशता और वांशिक तिरस्कार — 'रेस हेट्रेड' — मानव-जीवनके मुख्य दोष हैं। जव तक ये दोष वने हुअे हैं, तव तक हिंसाके लिअे स्थान रहेगा ही।

अेक वार कुछ विदेशी लोग सावरमतीमें गांधीजीसे मिलने आये थे। वहुत करके युद्धविरोधी शांतिवादी होंगे। गांधीजीने अुनसे कहा कि युद्धोंसे मैं घवराता नहीं। युद्धोंमें किया जानेवाला रक्तपात मुख्य हिंसा नहीं है। युरोप, अमरीकाका दैनिक जीवन ही हिंसा पर अवलंवित है। सामाजिक और आर्थिक अन्याय हदसे वढ़ जाता है, तव युद्ध फट पड़ते हैं। जैसे मनुष्यको वुखार आता है। अैसी हालतमें वुखार वीमारी नहीं होता, परंतु हाजमा और खून विगड़ जानेकी निशानी होता है। अिसी तरह जव सामाजिक न्याय और सामंजस्य विगड़ता है, तव अुसके चिन्हस्वरूप युद्ध फूट निकलते हैं।

मनुष्य मनुष्य-जातिको चूसता है, निचोड़ता है, जवरदस्त आदमी गरीव आदमी पर अपनी हुकूमत चलाता है, यही असली हिंसा है। अिसे हम मिटा सकें और अपना जीवन स्वावलंवी और निष्पाप वना लें तो युद्ध करने ही न पड़ें। जहां कोअी किसीको निचोड़ता नहीं, वहां जवरदस्त और जेरदस्तका भेद मिट जाता है। अत्यंत गरीवी और अत्यंत अमीरी अेक ही साथ चलती हैं। अगर हम समाजमें न गरीवीको

जड़ अुखाड़ दें, तो अमर्यादित अमीरी अपने आप गायब हो जायगी। मेरी शिक्षा यह है कि अन्यायका प्रतिकार करके न्यायकी स्थापना करनेके लिअे हम हिंसाको काममें लेना छोड़ दें और अहिंसक सत्याग्रहको अपना लें। और साथ ही साथ हम अपने जीवनमें अैसा फेरबदल कर लें कि न हम किसीको लूटें और न कोअी हमें लूट सके। अैसा जीवन बितानेके लिअे हमें भोग-तृष्णाका संयम करना चाहिये। विलासकी वस्तुओंके पीछे पड़ना छोड़ देना चाहिये। किसी भी चीजको काममें लानेसे पहले हमें विचार करना चाहिये कि अिस चीजको तैयार करनेमें अिन्सानकी कितनी मेहनत खर्च हुअी है और यह भी सोचना चाहिये कि अिस चीजके तैयार करने और जुटानेमें कितना पाप अिकट्ठा हुआ है।

दुनियाके लोग जीवनका मानदंड — स्टैन्डर्ड ऑफ लिविंग — अूंचा करनेकी कोशिश कर रहे हैं। परन्तु भौतिक मानदंड अूंचा करनेमें वे नैतिक मानदंड — मॉरल स्टैन्डर्ड — गिरा देते हैं और मनुष्यता खो बैठते हैं। हिन्दुस्तानके ऋषि-मुनियोंने ही नहीं, परन्तु राजाओं और सम्राटोंने भी देख लिया था कि भोगविलासका अंत नहीं है। राजा ययातिने अपनी सारी जिंदगी भोगविलासमें बिताअी — अरे, अपने लड़केकी जवानी अुधार लेकर भी अुसने मौज अुड़ाअी, फिर भी अुसकी तृप्ति न हुअी। अंतमें अंतर्मुख होकर वह बोला, "अिस दुनियामें जितने तिल और चावल हैं, धन-धान्य और पशु-पक्षी हैं और जितने दास-दासी और युवतियां हैं, अुन सबको अिकट्ठा कर लें तो भी वे अेक मनुष्यकी तृप्ति होनेके लिअे काफी नहीं। अिसलिअे वासना-निवृत्ति ही सच्चा अुपाय है; वही जीवनका रहस्य है।" यह तो हुअी पौराणिक कहानी। अितिहासकालमें सम्राट अशोकने भी यही अनुभव किया और अुसने राज्य-विस्तारका काम छोड़कर धर्म-विस्तारका काम हाथमें लिया।

भोगविलासमें मनुष्य तभी रम सकता है, जब वह दूसरोंके सुख-दुःखके प्रति बेपरवाह हो जाय। अहिंसाके मूलमें विश्वबंधुत्वका आदर्श है, राष्ट्रपूजाका नहीं।

आजकलके राष्ट्र शांति-रक्षाके लिअे 'बैलेंस ऑफ पावर' अुत्पन्न करना चाहते हैं। अेकके स्वार्थके विरुद्ध दूसरेके स्वार्थको, अेकके सामर्थ्यके विरुद्ध दूसरेके सामर्थ्यको तौल कर शांति स्थापित हो ही नहीं सकती। तराजू बाजारू चीज है, अुससे शांति निर्माण नहीं होती। प्रेम और बंधुत्व ही अुसे पैदा कर सकता है। जो कानून हम कुटुंबके भीतर काममें लेते हैं, वही राष्ट्रोंके बीच अिस्तेमाल करना चाहिये।

हिन्दुस्तानके लिअे अहिंसाका संदेश युगों पुराना है। गांधीजीने अिस सिद्धांतको राष्ट्रोंके बीच लागू करके बता दिया।

दुनियामें बन्धुताकी बातें बहुत होती हैं। परन्तु हरअेक राष्ट्र कहता है कि हमें बन्धुता तभी मंजूर होगी, जब बड़े भाअीका स्थान हमें मिले।

असलमें बड़ा भाअीपन तभी तक निभता है, जब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीके लिअे त्याग करनेको तैयार होता है। छोटा भाअी बड़े भाअीकी आज्ञामें रहे, तब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीका कान पकड़ सकता है। मगर यही छोटा भाअी जब बिगड़ता है और घरसे निकल कर रास्ते पर जा खड़ा होता है, तब बड़ा भाअी अुसका कान छोड़ कर पैर पकड़ता है और अुससे क्षमा मांगकर अुसे घरमें लाता है। यह प्रेमका मार्ग, अहिंसाका मार्ग गांधीजीने राष्ट्र आन्दोलनमें काममें लेकर बता दिया है।

आजकी दुनिया विज्ञानके जोर पर अनेक प्रकारसे समर्थ बन गअी है। परन्तु वह गांधीजीका रास्ता न ले, तो अुसका नाश ही होनेवाला है। अुसने मनुष्यता खो दी है। अगर गांधीजीके मार्ग पर दुनिया न सुधरी और अुसने अमर्यादित सहिष्णुता और असीम धीरज पैदा नहीं की, तो दुनिया आत्महत्या ही करेगी।

मेरा भाषण पूरा होनेके बाद अेक आदमीने पूछा कि, "अगर कोअी सिंह अेक गाय पर वार करे, तो गाय अहिंसा किस तरह पाल सकती है?" अैसे सवाल सदा ही पूछे जाते हैं। मैंने अितना ही कहा: "पशु पशुधर्मके अनुसार चलेंगे। मनुष्यको अपना जीवनधर्म पशुओंसे नहीं सीखना पड़ता। हम किस लिअे पशुओंको अपना गुरु बनायें?"

६
थीका

श्री मेघजीभाअी शाह पूर्व अफ्रीकाके अेक होशियार व्यापारी हैं। वे अपना अेक कारखाना दिखानेके लिअे हमें थीका ले गये। यह स्थान नैरोबीसे ३४ मील दूर है। वहां मेघजीभाअीका वॉटलकी छालसे अर्क निकालनेका कारखाना है। रास्ता बहुत अच्छा है। दोनों तरफ सायसल अर्थात् घायपात या रेडेअनसकी खेती है। हमारे यहां खेतोंकी बाड़में अनन्नास या केतकीके पत्तों जैसे लम्बे-लम्बे कांटेदार पत्तोंके पेड़ अुगते हैं। तलवार जैसे ये लम्बे पत्ते जब पक जाते हैं, तो अुन्हें तोड़ कर पानीमें सड़ाया जाता है। सड़ा हुआ भाग सूखकर झटकानेके बाद जो रेशे रहते हैं अुनके बड़े-बड़े रस्से बनाते हैं। ये रस्से पानीमें गलते नहीं और बड़े मजबूत होते हैं, अिसलिअे अिस रेशेकी अितनी कीमत है। अिस पेड़को दक्षिण महाराष्ट्रमें रेडेअनस कहते हैं। अंग्रेजीमें अिसे सायसल कहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस सायसलकी खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती है।

वॉटल-बार्क बबूलकी छाल जैसी अेक छाल है। चमड़ा कमानेमें अिसका अर्क बहुत अुपयोगी होता है। वॉटलकी छाल अिकट्ठी करके अुसके टुकड़ोंको अुबाल कर अुसका अर्क निकाला जाता है और अिस अर्कको सुखाकर अुसकी सूखी सलाअियां तैयार की जाती हैं।

थीकामें अेक पहाड़ीकी गोदमें, काव्यमय स्थान पर वॉटलवार्कका अर्क निकालनेका कारखाना है। हमने यह सब विस्तारसे देखा। अपने कारखानेके लोगोंके लिअे मेघजीभाअीने जो संतोषजनक सुविधाअें कायम की हैं, वे भी हमने देखीं।

लौटते हुअे हम थीकाके पासके दो प्रपात देखने गये। अुनमें से अेक प्रपात जहांसे सबसे बढ़िया ढंगसे दिखाअी दे सकता था, वहां गोरे लोगोंने अेक होटल बनाया है। अैसी जगहों पर पश्चिमके लोगोंको जीवनका आनन्द लूटनेकी सूझती है, जब कि हम लोग अैसे स्थानोंको तीर्थधाम बनाकर वहां अीश्वरका चिन्तन करना पसंद करते हैं। लेकिन यात्राका धाम तय होते ही वहां मंदिर और धर्मशालाअें आ ही जायंगी। अुनके साथ लोगोंके झुंड, बाजार और तरह-तरहकी गंदगी भी — भौतिक और सामाजिक दोनों तरहकी। यहांकी बढ़ियासे बढ़िया जगह होटलके कब्जेमें चली जानेसे वहां सुन्दर बगीचा बनाया गया है। नहानेके लिअे अेक बड़ा कृत्रिम तालाब बनाया गया है। अुसके आसपास कपड़े बदलनेके और गर्म पानीसे नहानेके कमरे भी बनाये गये हैं। भोगविलासके तमाम साधन अिकट्ठे किये गये हैं। मगर मामूली आदमी वहां नहीं जा सकता। सिर्फ मालदार और अुनमें भी गोरे लोग ही यह सब आनन्द लूट सकते हैं। दोनों प्रकारके अच्छे पहलू जमा करके अिसे अेक आदर्श स्थान नहीं बनाया जा सकता?

आवश्यक अनुमति लेकर हम ये दोनों प्रपात देख आये। अेकका नाम थीका है और दूसरेका चानिया।

पानीका प्रपात नशेकी-सी चीज है। जितना ज्यादा खड़े रहिये, अुतना वहीं रह जानेका मन करता है। दोनों प्रपात काफी मस्तीमें थे। मिट्टीके कारण पानीमें ललाअी आ गअी थी। परन्तु जहां प्रपात गिरता है वहां अैसा चमकता हुआ पीलापन दिखाअी देता था, जैसे सोनेका ही प्रपात गिर रहा हो!

७

नैरोबीका हमारा घर

जब तक नैरोबी छोड़ा नहीं, तब तक हमें अैसा नहीं लगा कि हमारी अफ्रीकाकी यात्रा शुरू हो गअी। मोम्बासा सिर्फ प्रवेशद्वार था। नैरोबी आये तभी लगा कि हम अफ्रीकामें आये हैं। नैरोबी छोड़ा तब लगा कि हम अफ्रीकाकी यात्रामें निकले हैं। तब तक हम मानो अपने घरमें ही थे।

अिसका मुख्य कारण थे हमारे मेजबान श्री तात्यासाहब अिनामदार, अप्पासाहब पन्तके निजी मंत्री। श्री अिनामदारके साथ मेरा परिचय बहुत पुराना था। सन् १९३६ में जब अहमदाबादमें गुजराती साहित्य परिषद हुअी थी और पूज्य गांधीजी अुस परिषदके अध्यक्ष थे, तब मैं था कलाविभागका अध्यक्ष। अुस समय श्री अिनामदार औडर राज्यमें शिक्षा-विभागके संचालक होंगे। अुन्होंने वहांकी स्थापत्य-कला पर अेक सुन्दर निबन्ध लिखकर छपाया था, जो मुझे खूब पसन्द आया था। अिसी कारण हम नजदीक आये। अुसके बाद हरिपुरा कांग्रेसमें हम फिर मिले। अिनामदारने देशदेशान्तरकी शिक्षा-पद्धतिका अध्ययन करनेके लिअे जापान और युरोपका सफर किया था। औंधके राज-परिवारके साथ अुनका संबन्ध है। अिसलिअे श्री अप्पासाहब पन्त जब भारत सरकारकी तरफसे पूर्व अफ्रीकाके कमिश्नर मुकर्रर हुअे, तब स्वाभाविक तौर पर श्री अिनामदार अुनके निजी मंत्रीके रूपमें अुनके साथ आये। मैं मानता हूं कि अप्पासाहबके बचपनमें श्री अिनामदारने शिक्षाशास्त्रीकी हैसियतसे अुन पर देखरेख रखी होगी।

नैरोबीमें श्री कमलनयन बजाज सकुटुम्ब अप्पासाहबके यहां रहे। स्वराज्य आन्दोलनके अन्तमें देशी राज्योंके सवालके हलके सिलसिलेमें

वे दोनों अेक दूसरेके काफी सम्पर्कमें आये थे, अिसलिअे अुनका साथ रहना ही यथायोग्य था और मैं श्री अिनामदारके यहां रहूं यह भी अुतना ही ठीक था। अुनके घरमें घुसते ही सौभाग्यवती शकुन्तला वहनने हमें घरका वना लिया। 'हम' यानी मेरी पुत्री समान मन्त्री चि० सरोजिनी नाणावटी और मेरे साथ आये हुअे श्री शरद पंड्या। श्री अिनामदारकी लड़कियोंने भी कोअी संकोच रखे विना हमें अपने घरमें स्थापित कर दिया। कुछ कुछ शरमाये हों तो अुनके छोटे भाअी विनयकुमार। आज-कल सर्व जगह यही देखा जाता है कि लड़कियोंकी अपेक्षा जवान लड़के ही ज्यादा शरमाते हैं! धीरे-धीरे विनयकुमार भी हमारे साथ घुलमिल गये। अिसका मुख्य कारण था अुनकी सेवावृत्ति। विनयकुमार तो वे जरूर थे, ही परन्तु तरह-तरहकी सेवा करते हुअे विनय कहां तक टिकती? अुन्होंने पहले शरदके साथ दोस्ती की, फिर मेरे साथ बातें करने लगे। चि० अुषा तो पहले ही दिन हमारी लाड़ली वन गअी। प्रार्थनामें भजन गाती, खाते समय हम पर देखरेख रखती। चि० रजनी थोड़े ही दिनोंमें अुच्च शिक्षाके लिअे हिन्दुस्तान चली गअी। नैरोबीसे मोम्बासा तक रेलसे और वहांसे वंवअी तक जहाजमें अुसने अकेले ही प्रवास किया। पुराने ढंगकी स्त्रियां अैसी हिम्मत नहीं करतीं। आज-कलकी लड़कियोंको सफरके लिअे कोअी साथी मांगनेमें शर्म आती है।

तात्यासाहवकी वड़ी लड़की चि० लताने समाजसेवाकी विद्याकी शिक्षा पाअी है, अिसलिअे वह नैरोवीमें ठोस काम करनेकी तैयारी कर रही है।

अिनामदारके यहां दो विल्लियां, अेक वड़ा कुत्ता 'वाघ्या' और अेक नीला तोता है। तोतेका काम था घरमें आनेवालोंका स्वागत करनेका। और कुत्तेका काम घरकी रखवाली करनेका। कुत्ता अपने नामके अनुसार सचमुच शेर है। घरके लोग कहें कि 'फलां आदमी पर न भौंको, वे घरके वन गये हैं,' तो फिर वह तुरन्त दोस्ती करने

लगता है। बिल्लियोंने दो सिरेके दो रंग पसंद किये हैं। अिसलिअे अेकका नाम मैंने रखा अमावस्या और दूसरीका पूर्णिमा। बिल्लियां स्वभावसे प्रेमेच्छुक होती हैं। सबसे लाड़ वसूल करती ही जाती हैं।

अैसे घरमें से सफरके लिअे निकलते समय जी भारी होना स्वाभाविक था। परन्तु तात्या खुद हमारे साथ आनेवाले थे, अिसलिअे विशेष बुरा न लगा।

८

दो व्योमकाव्योंका समकोण

नैरोबीसे हवाअी जहाजमें बैठकर हम निकले टांगा जानेको। परन्तु मोम्बासामें हमें हवाअी जहाज बदलना था, अिसलिअे पहले हम नैरोबीसे सीधे समुद्रकी तरफ अुड़े।

विमान यात्रा यानी व्योमकाव्यका आनन्द। जब हम रवाना हुअे, तब मुश्किलसे सूरज अुगा था। नीचे गोरोंकी छोटी बड़ी वाड़ियां और अफ्रीकी लोगोंके झोंपड़े दिखाअी देते थे। दोनों जातियां खुले जीवनकी रसिया; मगर अफ्रीकी कमसे कम सुविधाओंसे सन्तुष्ट, जब कि गोरे तरह-तरहके सुभीते पैदा करनेमें शूर हैं। हवाअी जहाजसे नीचेकी ओर देखने पर पहाड़ोंके सिर पर दौड़ते रास्ते और सिरसे नीचे अुतरते हुअे पानीके प्रवाह — सभी कुछ सुंदर मालूम होता था। अफ्रीकाकी सारी ही जमीन पुराणकालके ज्वालामुखीके अुत्पातसे बनी हुअी है। अिस तरफ जमीन सिंदूर जैसी लाल और अुसके अूपर हरी हरी वनश्री — मानो अिन्द्रलोकके रसिकोंके लिअे खास तौर पर बनाअी गअी विशाल रंगभूमि हो।

जिसे केवल भूगोल-विद्यामें ही दिलचस्पी है, अुसके लिअे भी विमानयात्रा अेक अपूर्व अवसर होता है। अूंची-नीची जमीनकी रचना, पानीका विस्तार, नदियोंका टेढ़ापन और जंगलोंकी समृद्धि प्रत्यक्ष आंखों

देखनेको मिले विना भूगोलवेत्ताकी आत्मा तृप्त नहीं होती। परन्तु जो आदमी वचपनसे कुदरतकी अुपासना करता आया है, कुदरतके दर्शनसे ही जिसकी आत्मा विकसित होती आयी है और कुदरतके द्वारा ही जो भगवानके दर्शन करनेकी कोशिश करता आया है, अुसके लिअे हवाअी जहाजका सफर अेक आध्यात्मिक महोत्सव ही है।

विमानमें चढ़ते ही अच्छीसे अच्छी जगह देखकर मैं अपनी आंखें खिड़कीके कांचसे लगा देता हूं। और भूखे-प्यासेकी तरह सारी दृश्य सृष्टिका पान करता रहता हूं।

वाअीं तरफ सवसे पहले अिस प्रदेशके देशनायक गिरिराज माअुंट केनिया दिखाअी दिये। अुन पर अेक हद तक वृक्ष वनस्पतिकी समृद्धि अुछलती हुअी दिखाअी देती है। अुसके वाद जहां ठंड वढ़ती है, सनसनाती हुअी हवा किसी भी वनस्पतिको टिकने नहीं देती—वहां सव कुछ कोरमकोर होता है। केनियाको प्रणाम करके नजर दक्षिणकी तरफ फिराअी। वहां पहले पहाड़ोंमें अुत्तम माना जानेवाला मेरु पर्वत दिखाअी दिया। (भगवान स्वयं ही स्वीकार करते हैं 'मेरुः शिखरिणाम् अहम्।') अुस पर नजर जरा ठहरी कि अितनेमें दूर, वहुत दूर अफ्रीकाका गौरवस्वरूप अद्वितीय किलिमांजारो दिखाअी दिया। कोरी आंखोंसे जी भरकर देखनेके वाद मैंने अुसे दूरवीनके जोरसे अधिक पास खींच लिया। किलिमांजारोकी वगलमें ही अुसका अेक पड़ोसी है—मानो सेवा करनेके लिअे तत्पर खड़ा हुआ कोअी किंकर हो। किलिमांजारोके सिर पर श्वेत मुकुट होनेके कारण अैसा सहज ही लग सकता है कि सारे अफ्रीकी महाद्वीपका राज्यपद अुसीका है। दूरसे अुसका शिखर सफेद गुम्वजकी तरह अंडाकार दिखाअी देता है। परन्तु असलमें अुसके सिर पर ज्वालामुखीका द्रोण (क्रेटर) है। किसी-किसी तरफसे जव विपरीत दिशाके किनारेका सिरा दिखाअी देता है, तो विश्वास होता है कि अूपर द्रोण जरूर होगा। डॉ० लेकीने हमसे कहा था कि किलिमांजारोके ज्वालामुखीके अंदरकी गर्मी धीरे-धीरे वढ़ती जा रही है और अिसलिअे

अंदरकी तरफका वर्फ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। अगर यही हाल रहा तो किसी समय यह ज्वालामुखी फिरसे सजीव भी हो सकता है।

'यह कब होगा?'

'यह नहीं कहा जा सकता। वह २०-२५ वर्षके भीतर भी फट सकता है, या दो सौ, चार सौ वर्षके बाद भी फट सकता है।' भूगर्भ-शास्त्रियोंके पास संख्याकी कंजूसी नहीं होती। जैन पुराणोंकी तरह हजारोंकी संख्याकी अिनके यहां गिनती ही नहीं होती।

हमारा विमान आगे चला और देखते-देखते बाअीं तरफ बादलोंके टोले अुमड़ आये। सूर्यकी किरणोंके कारण दांअी तरफ कोहरेमें अिन्द्र-धनुषका अेक पूरा गोलाकार बन गया। और अुसके केन्द्रमें हमारे हवाअी जहाजकी छाया! मानो कोअी देवदूत आकाशमार्गसे हम जैसे मनुष्योंको अिन्द्रलोकमें पहुंचानेके लिअे तैयार हुआ है।

थोड़ी ही देरमें दूर सामनेकी तरफ हिन्द महासागर दिखाअी देने लगा। दर्शन होते ही अुस महापुरुषको मैंने प्रणाम किया, क्योंकि अुसकी लहरें मेरी जन्मभूमिको स्पर्श करती हैं। हवामें हम जरा नीचे अुतरे और मोम्बासाका टापू स्पष्ट दिखाअी देने लगा। हवाअी जहाजोंका यह नियम होता है कि अेक बड़ी प्रदक्षिणा किये बगैर जमीनको स्पर्श नहीं किया जा सकता, अिसलिअे नीचे अुतरते-अुतरते आसपासकी सारी शोभा सब तरफसे देखनेको मिल जाती है। वहां थोड़ासा आराम करके हमने छोटा-सा नया विमान लिया। अुसमें दस आदमी ही बैठ सकते थे। अुनमें से पांच तो हमी थे। नैरोबीसे मोम्बासाका रास्ता पश्चिमसे पूर्वको था। मोम्बासासे टांगाका रास्ता अुससे समकोण बनाकर अुत्तरसे दक्षिणको जाता था। अब अेक नया ही दृश्यकाव्य नजरके सामने अुपस्थित हुआ। बाअीं तरफ समुद्रके अद्भुत रंग — घड़ी भरमें गहरा नीला रंग तो घड़ी भरमें हरा! दूर पेम्बाका टापू दिखाअी दिया। अुसमें आसपासके समुद्रका हराथोथा जैसा हरा रंग, अुसके बाद नारियलके सिरके जैसा काला हरा रंग और कोअी अूंची पहाड़ी

आ जाती थी तव अुसका सिंदूरी रंग — अिन सबकी शोभा आकर्षित करती थी। दांअी तरफ किनारेके फेनकी सफेद चंचल रेखा नाच रही थी। टांगाके आसपास जमीनमें घुसे हुअे समुद्रके हाथकी तरह 'वैकवाटर्स' चमकते हैं।

देखते देखते जर्मन निर्मित चौकोर शहर टांगा दिखाअी दिया और हमने दुवारा चक्कर काटकर अुसकी सख्त जमीन पर पैर रखा।

९
टांगा

हवाअी जहाजके वन्दरगाह यानी विमानके अड्डे पर श्री आदमभाअी करीमजी अपने वालक लतीफके साथ आये थे। टांगासे थोड़ी दूर लिसोटो नामक अेक ठंडा शहर है। वहां मेरे अेक स्नेहीके सम्वन्धी डॉ० दिव्यकृष्ण रहते हैं। वे खुद टांगा नहीं आ सकते थे, अिसलिअे अुन्होंने अपनी पत्नी और लड़केको भेजा था। ये लोग भी हवाअी अड्डे पर आकर मिले।

यहां भी हमारी मंडली दो-तीन घरोंमें वंट गअी। श्री अप्पासाहव और कमलनयन आदमजीके यहां ठहरे। हमारा डेरा टांगाके प्रसिद्ध वकील मनुभाअी देसाअीके यहां था। जाते ही कअी मिलनेवाले आ गये। अुनमें वढ़िया अंग्रेजी वोलनेवाले और अिस अिलाकेकी हालतको अच्छी तरह जाननेवाले दो अफ्रीकी भाअी भी थे। अुनके साथ वहुत वातें हुअीं। हिन्दुस्तानकी सहानुभूतिके कारण अफ्रीकी लोगोंमें वहुतसी आशाअें पैदा हो गअी हैं। 'अव हम विलकुल अनाथ नहीं हैं। अेक समर्थ पड़ोसी हमारे जीवनमें दिलचस्पी ले रहा है।' अैसा अिस जातिको अनुभव होने लगा है और अिसीलिअे आअिंदा अिन लोगोंके प्रति हमारा रवैया वदलना चाहिये। जवसे

अिन लोगोंने यह बात सुनी है कि गांधी स्मारक कॉलेज खुलेगा, तबसे वे अुसकी स्थापनाकी बाट देख रहे हैं।

पहले पहल रीगल सिनेमामें अेक सार्वजनिक सभा हुअी। अिस सभाके बिखरते ही तुरन्त बहनोंने अुस स्थान पर कब्जा कर लिया। अुनके सामने भी हमारा व्याख्यान हुआ। अिसके साथ ही आर्यकन्या मंडलकी तरफसे लड़कियोंके नृत्य-संगीत वगैरा रखे गये थे। यहां महाराष्ट्री और गुजराती बहनोंने मिलकर संगीत कलाका अच्छा वायुमंडल जमा लिया है।

रातको अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे जो भोज रखा गया था अुसमें गोरे भी आये थे।

दूसरे दिन आदमभाअी करीमजी और अुनकी पत्नी जेबुन्निसाबहनके साथ हम अुनका चायका बगीचा देखने गये। यह बगीचा टांगासे ६०-७० मील दूर स्थित अुसुम्बारा पहाड़की चोटी पर है। पहाड़की वन्य शोभा देखते-देखते हम पुरानी सरकार द्वारा विकसित परन्तु अब कुछ बिगड़ते हुअे वानस्पत्यम् (बोटेनिकल गार्डन) तक पहुंचे। वहां हमें मैंगोस्टीनका अेक फल मिला। हममें से कुछ लोगोंने अुसे देखा या चखा नहीं था। कलकत्तेमें यह फल खूब मिलता है। पूर्व अेशियाकी तरफका यह स्वादिष्ट मेवा है।

हर जगह नअी-पुरानी संस्थाओंके कारण हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पैदा होता ही है। व्यक्तिगत रूपसे हिन्दू-मुसलमान खूब प्रेमसे मिल-जुलकर रहते हैं। पर संस्थाका नाम आया कि तुरन्त कअी सवाल खड़े हो जाते हैं। यहां मेरे हाथों अेक 'अिंडियन कल्चरल सोसायटी' (हिन्दुस्तानी संस्कृति मंडल) का अुद्‌घाटन हुआ। अुसका विधान तैयार करनेमें भी मुझे दिलचस्पी लेनी पड़ी।

तीसरे दिन सबेरे मैं आग्रहपूर्वक 'वॉर सिमेटरी' — जंगी श्मशान भूमि देखने गया, क्योंकि मैं जानता था कि पिछले महायुद्धके समय हिन्दुस्तानके अनेक सिपाहियोंने यहां अपने प्राण अर्पण किये थे। १९१५ में

मारे गये अिन चार पांच सौ लोगोंमें ग्वालियरकी तरफके महाराष्ट्री, राजस्थानके, राजपूत, काश्मीर-जम्मूकी तरफके हिन्दू, मुसलमान, डोगरे और कुछ मद्रासी थे। अफ्रीकाकी भूमि पर जिस जगह मेरे देशभाअियोंने अपना खून बहाया, अुस स्थानके बारेमें मेरे मनमें आदरकी भावना जाग्रत हुअी। अिसीलिअे अिन वीरोंकी श्मशानभूमि देखनेका मेरा आग्रह था। दारेस्सलाममें भी भारतीय वीरोंकी अैसी ही अेक श्मशानभूमि है।

टांगा छोड़नेसे पहले हम वहांका करीमजी स्कूल देखने गये। वहांके प्रिंसिपल मि० पैरी मुझे अुत्तम शिक्षाशास्त्री मालूम हुअे।

हवाअी जहाजने जब फिरसे हमें लाद कर अुठाया, तब अेक ओर समुद्र तथा दूसरी ओर कलके देखे हुअे अुसुंबारा पहाड़को देखते समय परिचयका आनन्द होता था।

१०

शान्तिधाम दारेस्सलाम

अब हम झांझीबार होकर दारेस्सलाम जानेको निकले। रास्तेमें फिर वही हराभरा दृश्य। आज भी समुद्रमें छोटे बड़े कअी टापू दिखाअी देते थे। अुनमें से कुछ पानीसे बाहर सिर अूंचा कर सके थे और नारियल आदि वनस्पति सृष्टिका भार वहन करते थे; जब कि कुछ द्वीप अभी तक पानीसे बाहर सिर नहीं निकाल सके थे। अिन सबको मैंने पन्नालाल नाम दिया है। मेरा विश्वास है कि देवताओंमें रसिकता हो, तो वे अिनमें से अेक अेक द्वीपको अुठाकर अपनी-अपनी अुंगलीके लिअे अुसकी अंगूठी बना लेंगे। द्वीप जरा बड़ा हो तो अुसके बीचमें चमकता हुआ भाग होगा ही, जिसका रंग गेरुअे और सिंदूरके बीचका ही माना जायगा। अुड़ते-अुड़ते हम अैसी जगह आये, जहां नीचे समुद्र और दोनों तरफ जमीनके किनारे दिखाअी देते थे। बाअीं ओर झांझीबारका टापू और

दांअी तरफ अफ्रीकाका महाद्वीप। जंगवार (झांझीवार)के अूपर पहुंचे तो नीचेसे विद्युत्-संकेत मिला कि नीचे कोअी मुसाफिर नहीं, जो हमारे विमानमें सवार होना चाहता हो। हमारे विमानमें भी जंगवारमें अुतरने-वाला कोअी था नहीं, अिसलिअे हमारे विमानीने कहा, "हम यहां नहीं अुतरेंगे। जंगवार देखना हो तो अूपरसे ही देख लीजिये।" अुसने विमानका बायां पंख ठीक नीचे झुकाया कि तुरन्त हम घनी आवादीवाले जंगवार शहरका पूरा दर्शन कर सके। हमें संतुष्ट हुआ देखकर विमानीने अपना विमान फौरन सीधा कर लिया और हम दारेस्सलामकी तरफ वायुवेगसे वढ़े। देखते-देखते दारेस्सलामका अविस्मरणीय समुद्र तट आंखके सामने विशाल होने लगा। हम सारा शहर पार करके दूसरे किनारे पर अुतरे और दारेस्सलामके अपने अनेक मेजवानोंके अधीन हुअे।

दारेस्सलाम टांगानिका प्रदेशकी राजधानी है। जर्मन लोगोंने टांगाकी तरह यहां भी अपनी नगर-रचना कला खूब आजमाअी है। अुसके वाद भी समुद्रके किनारेका यह शहर देखते-देखते वढ़ता रहा। यहांके अेक गोरे नगरसेठने वातों ही वातोंमें कहा: "रिक्शा चलने लायक छोटे रास्ते जो शुरूमें तैयार किये गये थे, वे अव असुविधाजनक हो रहे हैं। अुस समय किसने कल्पना की थी कि दारेस्सलामके रास्तों पर दिन-रात वड़ी-वड़ी मोटरें दौड़ने लगेंगी?" मैंने हंसते हुअे अुनसे कहा: "हमारे यहां वच्चोंके लिअे कपड़े वनाये जाते हैं, तव जल्दी-जल्दी वढ़नेवाले शरीरोंका हिसाव रखकर ही कपड़े व्योंते जाते हैं।" सफरमें जैसे नैरोवी हमें अपना घर जैसा लगा, अुसी तरह दारेस्सलाम भी हमारा घर वन गया। क्योंकि दारेस्सलामको मुख्य केन्द्र वनाकर हम अेक वार ठेठ दक्षिणमें लिण्डी तक हो आये। फिर यहांसे निकल कर जंगवार हो आये और वादमें थोड़ासा आराम करके हमने टांगानिका अिलाकेमें प्रवेश करनेके लिअे मोरोगोरो और डोडोमाकी रेलवे यात्रा की। अिस प्रकार तीन वार दारेस्सलाम जानेका काम पड़नेसे वह घर जैसा वन गया। परन्तु अिससे भी

अधिक हमारा डेरा अेक अत्यन्त सात्विक, धर्मपरायण और प्रेमी कुटुम्बमें रखा जानेके कारण हमारे लिअे दारेस्सलाम सब तरह घर जैसा बन गया। श्री जयन्तीलाल शाह और अुनकी पत्नी मुक्ताबहन दोनोंने हमें घरका बुजुर्ग बना दिया। अुनके घरकी रहन-सहन हमें सब तरह अनुकूल रही। घरके छोटे बच्चोंने भी हमें पूरी तरह अपना लिया। श्री जयन्तीभाअी थियोसोफिस्ट हैं, अिसलिअे हमारी सुबह-शामकी प्रार्थनामें सारे कुटुम्बी आत्मीय भावसे शरीक हो जाते। पहले दिन अुनके मकानकी छत पर ही प्रार्थना की। प्रार्थनाके समय ही पूर्वी समुद्रमें से नहा-धोकर अूपर निकले हुअे सूर्यनारायणके पावन दर्शन हम कर सके, अिसलिअे अुस स्थानके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हुआ। दूसरे दिन प्रार्थनाकी जगह वहांसे हटाकर नीचेके दीवानखानेमें रखी गअी, क्योंकि बाहरके कअी लोग अुसमें शरीक होनेके लिअे आने लगे। आखिरी दिनोंमें शहरके हिन्दू मंदिरोंके व्यवस्थापकोंने मांग की कि आप अपनी प्रार्थना हमारे यहां क्यों न करें। बहुतसे नगर-निवासी अुसका लाभ अुठा सकेंगे। हमने अुनसे कहलाया: "चूंकि हम सर्व-धर्म-समानताको मानते हैं, अिसलिअे हमारी प्रार्थनामें कुरानशरीफकी आयतें भी होती हैं और अीसाअी आदि दूसरे धर्मोंके स्तोत्र भी होते हैं। हिन्दूधर्ममें भाषाभेद और धर्मभेदकी आपत्ति नहीं होती, परन्तु आपमें से किसीके मनमें आजकलके वातावरणके कारण आपत्ति हो तो नाहक दिल खट्टे हो जायंगे। अिसलिअे हमारी सर्व-धर्मी प्रार्थनाकी आपके यहां गुंजाअिश हो तो ही हम आपके मंदिरमें आ सकेंगे।" अुन लोगोंने तुरन्त बिना संकोचके विश्वास दिलाया, "हमें जरा भी अेतराज नहीं। सब लोग आपकी सर्व-धर्मी प्रार्थनाका स्वागत करेंगे।" हिन्दू समाजकी अिस अुदारतासे मुझे आश्चर्य कुछ न हुआ मगर आनन्द जरूर हुआ। हिन्दुस्तानमें नोआखलीमें गांधीजीकी प्रार्थनामें मुसलमानोंने रामधुन पर अेतराज किया था और दिल्लीमें हिन्दुओंने 'अल्फातिहा' पर आपत्ति की थी। ये दोनों प्रसंग मुझे याद आये।

गांधीजीकी सर्व-धर्म-समानताके कारण दोनों जगहके अेतराज़ मिट गये थे, यह बात भी मुझे याद आयी। परधर्मके बारेमें हिन्दूधर्ममें कभी असहिष्णुता थी ही नहीं। मैं जानता हूं कि आअिंदा भी वह जड़ नहीं पकड़ेगी। अिसीलिअे मुझे दारेस्सलामका सुंदर वातावरण देखकर आनन्द होने पर भी आश्चर्य न हुआ।

पूर्व अफ्रीकामें जो हिन्दुस्तानी मुसलमान हैं, अुनमें से ज्यादातर नामदार आगाखानके अनुयायी हैं। वे अपनेको अिस्माअिली कहते हैं। जो आगाखानी नहीं हैं, अुन्हें यहां अिस्नाशरी कहते हैं। यहां जो पंजावसे आकर बसे हुअे मुसलमान हैं, वे अलग हैं। जिनका वतन पाकिस्तानमें है, अैसे मुसलमान यहां नहींके बराबर हैं। अधिकांश कच्छ-काठियावाड़के ही हैं। घरोंमें गुजराती बोलते हैं, पाठशालाओंमें गुजरातीके मार्फत ही पढ़ते हैं। आगाखानी मुसलमानोंके रीति-रिवाज दूसरे मुसलमानोंसे कुछ अलग होते हैं। वे हजरत अलीको मानते हैं। मक्काकी यात्राके बारेमें अुन्हें आग्रह नहीं है। माननीय आगाखान असलमें अीरानकी तरफके हैं। आजकल ज्यादातर विलायतमें रहते हैं। अुनका घोड़ोंका शौक सारी दुनिया जानती है। घुड़दौड़में आगाखानके घोड़े सबसे अच्छे माने जाते हैं। माननीय आगाखान जैसे अिस्माअिली लोगोंके धर्मगुरु हैं, वैसे ही ब्रिटिश साम्राज्यमें वे अेक अच्छे खासे राजनैतिक पुरुष माने जाते हैं। अुनका असर बहुत है और अुसे अिस्तेमाल करके वे अपने अनुयायियोंकी बढ़तीके लिअे सदा तत्पर रहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस्माअिली जमात सबसे अधिक संगठित है और हमेशा माननीय आगाखानकी सलाहके अनुसार ही चलती है।

कुछ वर्ष पहले यहांके अिस्माअिली लोगोंने माननीय आगाखानकी ६० वर्षकी हीरक जयन्ती मनाअी। अिसके लिअे अुन्होंने दुनिया भरसे हीरे अिकट्ठे करके माननीय महोदयकी हीरक-तुला की। और अुन हीरोंकी जितनी कीमत हुअी, वह अुन्हें भेंट कर दी गअी। अलबत्ता, हीरे अपनी-अपनी जगह वापस चले गये।

गुरुभक्तिका यह ढंग लोक-विलक्षण कहा जायगा। माननीय आगाखानने अिस रकमके बड़े भागका ट्रस्ट बनाकर यहांकी अपनी कौमको ही सौंप दिया और अुस रुपयेसे अब अिस कौमके अुत्कर्षके लिअे अनेक योजनायें अमलमें लायी जा रही हैं। किसी गरीब किन्तु होशियार खोजाको पूंजी चाहिये, तो वह भी अिसमें से बिना ब्याज मिल सकती है। अितनी बड़ी रकमका संचालन ट्रस्टके द्वारा होता हो, तो कुछ लोग अुसकी नीतिके बारेमें आलोचना करेंगे ही। परन्तु सब बातोंको देखते हुअे अिस कोषसे यहांकी खोजा कौम अेकदम आगे बढ़ गअी है।

ना० आगाखान अेकाग्र निष्ठासे अपनी कौमके दुन्यवी हानि-लाभका विचार करके अुसे दूरंदेशी भरी सलाह देते हैं। अुदाहरणके लिअे यहांके अपने लोगोंसे अुन्होंने कहा कि, "झांझीबारमें अब ज्यादा भीड़ करके नहीं रहना चाहिये। वहांके वैभवकी अब मर्यादा आ पहुंची है। अब अधिक लोगोंके वहां रहनेमें सार नहीं है। अब आपको अधिकसे अधिक संख्यामें टांगानिका जाना चाहिये। वह प्रदेश बहुत विशाल है और अुसमें भावी अुत्कर्षके बढ़िया साधन हैं।"

अुन्होंने अपने लोगोंको यह भी सलाह दी कि, "लड़के-लड़कियोंकी शिक्षाकी तरफ ज्यादा ध्यान दीजिये। अिन सबको अंग्रेजी पढ़ाअिये। मानो अंग्रेजी मातृभाषा ही हो, अितने अुत्साहसे यह भाषा सीख लीजिये। यह वांछनीय है कि लड़कियां पुराने ढंगकी पोशाक छोड़कर फ्रॉक पहनें। जितने अधिक लोग विलायत जाकर पढ़ आवें अुतना अच्छा।"

अिसमें आश्चर्य नहीं कि मुसलमान होनेके ही कारण यहांके मुसलमानोंकी भावना और निष्ठा पाकिस्तानकी ओर है। अब तक हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे वे यहांके अिंडियन अेसोसियेशनोंमें खुलकर शरीक होते थे और अुनमें प्रमुख भाग लेते थे। अब वे अपनेको अलग मानते हैं। सुना है ना० आगाखानने अुन्हें सलाह दी है कि अब वे हिन्दुस्तान-पाकिस्तानके झगड़ेमें न पड़ें, हिन्दुस्तानके लोगोंका विरोध न करें, मगर अपनी निजी अुन्नति पर सारा ध्यान दें।

ना० आगाखानका प्रयत्न अफ्रीकामें वसनेवाले दूसरे मुसलमानोंको भी अपनानेका है। अिस देशके मूल निवासी अफ्रीकी लोग अरवोंके असरके कारण खासी संख्यामें मुसलमान वने गये हैं। कहा जाता है कि अिन लोगोंको भी संगठित करनेकी ना० आगाखानकी मुराद है।

ना० आगाखानके अनुयायी अिस्माअिली लोगोंके रीति-रिवाजोंमें कुछ रिवाज हिन्दुओं जैसे हैं। वे घरोंमें गुजराती वोलते हैं और रोजमर्राके व्यवहारमें कट्टर नहीं हैं। अिसलिअे अुनके साथ मिठासके साथ रहनेमें हिन्दू लोगोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती। कच्छ-काठियावाड़की तरफके होनेके कारण अुनका और गुजराती हिन्दुओंका संवंध ज्यादातर अत्यंत मीठा होता है। यह अेकता दोनोंके लिअे लाभदायक है। अिसलिअे मैंने यहांके तमाम लोगोंको सलाह दी कि "'हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है; पाकिस्तानकी अुर्दू है; और महात्माजी दोनोंकी मिली-जुली हिन्दुस्तानी चलाना चाहते हैं' — अिस विवाद या झगड़ेमें न पड़कर गुजराती द्वारा जो अेकता सिद्ध हुअी है और मीठा संवंध वना है अुसीको अधिक मजवूत कीजिये और शक्तिके अनुसार हिन्दी और अुर्दू दोनोंका अध्ययन कीजिये। और मुख्य वात यह है कि भाषाके झगड़ेमें पड़ना ही न चाहिये। अंग्रेजी सीखे वगैर यहां काम नहीं चल सकता। शिक्षामें जैसे आगे वढ़ा जा सके वैसे वढ़िये और यहांकी जो अफ्रीकी जनता है अुसे हर तरह अपनाना अपना फर्ज समझिये।

"गांधीजीकी शिक्षा है कि सव धर्म सच्चे हैं। सारे मजहव अच्छे हैं। अिसलिअे हमें अिस्लाम और अीसाअी धर्म दोनोंके प्रति सद्भाव वढ़ाना चाहिये। अिन दोनोंकी असली तालीम हमारे धर्मकी शिक्षासे अलग नहीं है। सभी अीश्वरभक्ति और सदाचारमें विश्वास रखते हैं। सभी विषयवासना पर विजय प्राप्त करनेके हामी हैं। और भगवान सभीका होनेके कारण सभी मनुष्यता वढ़ानेके लिअे वंधे हुअे हैं। अिस-लिअे हमें धर्मभेदकी तरफ विलकुल ध्यान न देकर सवके साथ

भाओीचारा बढ़ाना चाहिये। किसी भी तरहका पक्षपात मनमें न लाया जाय। दूसरे लोग संकुचित संगठन करें, तो अुनसे द्वेष न किया जाय। परन्तु अपनी अुदारताका असर अुन पर डालते रहें।"

पूर्व अफ्रीकाके कुछ ओीसाओी मिशनरियोंने अफ्रीकी लोगोंकी बहुत गहरी सेवा की है। यहां तक कि अैसे मिशनरियोंकी सेवाके प्रतापसे अफ्रीकी लोगोंमें बहुत जागृति हुओी है और अिसलिअे यहांके अंग्रेज शासक अिस प्रकारके मिशनरियोंके कामके बारेमें किसी अंशमें सशंक और नाराज रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि, "अिन मिशनरियोंकी सेवाके बदौलत ही अफ्रीकी ओीसाओी गोरोंसे समानताकी बातें करते हैं। अिससे अिस्लाम अच्छा, शासनके विरुद्ध झगड़ा तो नहीं करता।" अिस्लामके बारेमें कैसी राय!

ना० आगाखानकी जो हीरक-तुला हुओी, वह अिसी दारेस्सलाममें हुओी थी। यहां अिस्माअिली लोगोंकी संख्या अच्छी है। वे संगठित हैं। लड़के-लड़कियोंकी शिक्षा पर वे विपुल धन खर्च करते हैं। पाठशालाओंमें अनुशासन अच्छा रहे, अिसलिअे अंग्रेज शिक्षक-शिक्षिकाअें रखनेका भी अुनका आग्रह रहता है। कितनी ही छोटी-छोटी अुम्रकी खोजा लड़कियोंको अध्यापिकाअें बनकर कक्षाओंको पढ़ाते मैंने देखा। यहां अेक बात दर्ज करनी ही चाहिये कि यह शिकायत आगाखानी स्कूलोंके बारेमें भी सुनी जाती है कि 'अच्छे शिक्षक मिलते नहीं; जो मिलते हैं वे टिकते नहीं। नतीजा यह होता है कि पैसा खर्च करने पर भी शिक्षा खराब होती है।' मां-बाप जानते नहीं कि खुद रुपयेके पीछे लगे होनेके कारण वे ही सर्वत्र पैसेका वातावरण फैलाते हैं। जैसे दुनियाभरके मां-बापकी यह अिच्छा पूरी नहीं होती कि हम भले ही कैसे भी हों तो भी हमारे बच्चे धर्मनिष्ठ और चरित्रवान होने चाहियें, अुसी तरह शिक्षाके बारेमें बिलकुल अुदासीन मां-बापके हाथोंमें जिन संस्थाओंका अधिकार है अुन संस्थाओंमें अच्छे शिक्षक टिकेंगे नहीं, और शिक्षाका वातावरण बनेगा नहीं।

पाठशालाओंकी शिक्षाका वायुमंडल मां-बाप किस तरह बिगाड़ते हैं और अुसे कैसे चुपचाप सहन करना पड़ता है, असकी शिकायत यहांके केवल देशी शिक्षक ही नहीं करते, अंग्रेज भी करते हैं।

मोम्बासामें मुसलमानोंके लिअे अेक बड़ी संस्था काम कर रही है — 'मोम्बासा अिस्टिटचूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन'। वहांके अेक गोरे अध्यापकसे मैंने यों ही कहा कि, "पूर्व अफ्रीकाके लिअे मुस्लिम युनिवर्सिटी बनानेका अिरादा सुना जाता है।" अुसने हंस कर कहा कि, "अिसमें शक नहीं कि शिक्षाका यह अेक बड़ा केन्द्र होगा, परन्तु अेक ही जातिकी शिक्षाके लिअे बंधी हुअी संस्थाको युनिवर्सिटी शब्द कैसे लागू किया जा सकता है? युनिवर्सिटी तो युनिवर्सल ही होनी चाहिये न?"

समय और अुत्साहके अभावमें मैंने अुनसे यह कहनेका विचार छोड़ दिया कि हिन्दुस्तानमें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी है, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी है और जामिया मिलिया अिस्लामिया भी है। अिन युनिवर्सिटियोंमें दूसरी जातियोंके विद्यार्थी लिये जाते हैं, परन्तु अिन संस्थाओंका संगठन जातीय ढंग पर ही किया गया है।

मोम्बासाकी 'अिस्टिटचूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन' में औद्योगिक शिक्षाको प्रमुख स्थान दिया गया है। थोड़े ही दिनोंमें वहां जहाजरानीका कालेज खुलनेवाला है। समुद्रका किनारा, अच्छे-अच्छे मकान, होशियार अध्यापक, विशाल भूमि और विपुल धन — जब अितनी सुविधाअें मिली हुअी हैं, तो फिर संस्थाका विकास होना ही चाहिये।

अिस संस्थाके लिअे ना० आगाखानने बहुत बड़ा दान दिया है और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारने वचन दिया है कि अिस प्रकार जितनी रकम आपकी तरफसे अिकट्ठी होगी अुतनी ही सरकारकी ओरसे, कॉलोनियल डेवलपमेण्ट फंडकी तरफसे दी जायगी।

अिसमें शक नहीं कि यह अिस्टिटचूट जब बुआंधार काम करेगी और पूर्व अफ्रीकाकी मुस्लिम संस्थाअें अुसके साथ शरीक होंगी, तब यह शिक्षाका अेक जबरदस्त केन्द्र बन जायगी।

दारेस्सलाममें भी मैंने अनेक शिक्षासंस्थाओंसे और भारतवासियोंके नेताओंसे जोर देकर कहा कि हमारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अच्छी बुनियाद पर नहीं है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। शिक्षाको जीवनकार्य बनाये हुअे शिक्षक भी आज हमारे पास नहीं, यह भी मैं जानता हूं। परन्तु हमारी मुख्य कठिनाअी यह है कि यहां अुच्च शिक्षाका कोअी साधन ही नहीं है। अुच्च शिक्षाके अभावमें हमारी सारी जाति, शिक्षाकी दृष्टिसे, वामन अवतारकी तरह बौनी हो गअी है। हिन्दुस्तानसे भी अच्छे शिक्षक कितने लायेंगे? वहांसे बहुत लोग नहीं आयेंगे। यहांके अिस सहारामें बाहरसे नदी बहानेसे यहां कुछ नहीं अुगनेवाला है। यहीं पर अुच्च शिक्षाकी सुविधा करेंगे, तो ही अन्तमें हम यहां अपने बीचसे अच्छे शिक्षक पैदा कर सकेंगे। हमें दीर्घदृष्टिवाले मंजे हुअे नेता भी अिसी शिक्षासे मिलेंगे। हम अपनी संस्थाअें जातीय आधार पर खड़ी न करें। अच्छेसे अच्छे अध्यापक जहांसे मिलें वहींसे हम अेकत्र करेंगे। अच्छे अंग्रेज मिलेंगे तो अुन्हें भी ले लेंगे। भारत सरकारसे अच्छे विद्वानोंको अुधार लेंगे और अुच्च शिक्षाकी अेक संस्था खोलेंगे। शुरू-शुरूमें अुसमें विद्यार्थी थोड़े होंगे, परन्तु देखते-देखते यह संख्या बढ़ेगी। अफ्रीकी लोगोंके लिअे अिस संस्थामें खास सहूलियत रखेंगे। हमारे बच्चे तो होंगे ही। और मेरा विश्वास है कि भले ही बहुत ही थोड़ी संख्यामें सही, कुछ अंग्रेज युवक भी हमारी संस्थामें अवश्य भरती होंगे। अिस खयालसे नहीं कि और कहीं अच्छी सुविधा नहीं है, बल्कि अिस नैतिक कारणसे कि यहां तीनों जातियोंके — काले, गोरे और गेहुंअे रंगके विद्यार्थियोंको समान भावसे अुच्च शिक्षा दी जाती है, कुछ गोरे मां-बाप ही अपने बच्चोंको यहां भेजेंगे और कुछ नवयुवक मां-बापके विरोधके बावजूद भी आयेंगे। गोरे विद्यार्थियोंकी तादाद नहीं के बराबर होगी। मगर जो आयेंगे अुनका अुद्धार होगा। और कोअी नहीं आयेगा तो भी हमारा कुछ बिगड़ेगा नहीं। हम अेक अच्छीसे अच्छी संस्था चला कर दिखायेंगे। अिस संस्थाके साथ गांधीजीका

नाम जोड़नेमें कोअी आपत्ति होनेका कारण नहीं। यह सही है कि अुसमें गांधीजीकी शिक्षा-पद्धति तुरंत जारी नहीं होगी। गांधीजीकी पद्धति युरोप-अमरीकाके कुछ समर्थ शिक्षाशास्त्रियोंके गले अुतर गअी है। अिसका असर हिन्दुस्तानसे नहीं, परन्तु युरोप-अमरीकासे यहां आयेगा। गांधीजीका नाम होगा तो कुछ नैतिक अूंचाअी और गरीब दलित जनताके अुद्धारका आदर्श अुसमें रहेगा। हम जितना रुपया जमा करेंगे, अुतनी मदद सरकार भी हमें दिलायेगी।

हमारे बच्चोंको हिन्दुस्तान या विलायत भेजनेसे यहांके प्रश्न हल नहीं होंगे। नअी और अुच्च शिक्षा द्वारा हम यहां नअी संस्कृति स्थापित करेंगे। अेक कालेज कायम हो जायगा, तो अुसके आसपास अनेक प्रवृत्तियां गुंथ जायंगी। गांधी-टैगोर व्याख्यानमाला जारी करेंगे। यहांकी जातियोंकी भाषाओंमें अच्छा साहित्य तैयार करा कर अुन भाषाओंकी संस्कारशक्ति बढ़ायेंगे। जिस जातिकी भाषा समर्थ हुअी, वह जाति भी समर्थ होगी ही। क्योंकि भाषा और साहित्य जातिका आध्यात्मिक दूध है। यहांकी ब्रिटिश नीतिकी संकीर्णता मुझे मालूम है। वह हमें अन्त तक नहीं सता सकेगी। आजकलकी दुनियाकी हालत ही अैसी है कि संकुचित नीति भविष्यमें अुन्हें नहीं पुसायेगी। अगर हम अफ्रीकी जनताकी सच्ची सेवा करेंगे, तो हमारी जड़ें यहां अवश्य मजबूत होंगी। शर्त यह है कि हमें नग्न स्वार्थ छोड़ देना चाहिये और यहांकी जनताके हितोंको प्रधानता देनी चाहिये।

गांधी स्मारक कॉलेजकी कल्पनाके प्रति लोग धीरे-धीरे अनुकूल होते जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह काम अवश्य शुरू होगा और अुसके द्वारा बहुत अच्छे परिणाम निकलेंगे। परन्तु अच्छे कामोंमें विघ्न भी अधिक होते हैं।

दारेस्सलाम हिन्द महासागरके पश्चिमी किनारेका आभूषण है। जैसे बम्बअीमें चौपाटीका गोल समुद्र कोलाबाके प्रकाश-स्तंभसे लगा कर मलाबार हिल तक फैला हुआ है, वही बात दारेस्सलामकी भी है।

समुद्रस्नानके लिअे यहां अितनी अधिक अच्छी जगहें हैं और वहांसे समुद्रके रंग अितने सौम्य, सुन्दर और विविध दिखाअी पड़ते हैं कि अुन स्थानोंको छोड़नेका जी ही नहीं करता। हिन्दुस्तानमें कारवारका बंदरगाह भी अैसा ही सुंदर है, यद्यपि वहांका दीपस्तंभ यहांकी अपेक्षा अधिक शोभा देता है। अुत्तर पूर्वके समुद्र तट पर ओशियन रोड है। यह रास्ता जहां समुद्रकी तरफ आगे जाता है, वहां हमारे यहांके लोगोंने अेक सुंदर बंगला बना कर अिस स्थानकी कद्र की है। अिस समय वहां ओशन ब्रीझके नामसे अेक युरोपियन होटल चलता है। आरामके लिअे यहांके किनारेकी अपेक्षा अधिक अच्छी जगह शायद ही कहीं मिल सके। दारेस्सलाममें जहां तहां नारियलके पेड़ नीचेके मनुष्योंको आशीर्वाद देते हुअे खड़े दिखाअी पड़ते हैं। जहां-तहां अच्छे नये मकान बन रहे हैं। और अिस प्रकार शहरकी शोभा और सुविधायें बढ़ती जा रही हैं। कांगोके बेल्जियन लोगोंने यही बंदरगाह अपने लिअे पसंद किया है। अुनका जिलाका मध्य अफ्रीकाके पश्चिमकी तरफ है। परन्तु पश्चिमकी तरफ अुन्हें समुद्र तट नहींके बराबर ही मिला है। बेल्जियन कांगोके पूर्वकी ओर टांगानिकाका लंबा सरोवर है। अुसका आकार लाल मिर्चके जैसा लंबा पतला है। अिस सरोवरके पूर्वी किनारे पर जो किगोमा बंदरगाह है, अुसके और दारेस्सलामके बीच सात सौ मीलकी अेक सीधी रेलवे जाती है। यह रेलवे सारे टांगानिका प्रदेशको अुत्तर और दक्षिणमें विभाजित करती है। युद्धके समय रक्षाकी दृष्टिसे यह रेलवे बड़े ही महत्वकी है। रुआंडा-अुरुंडी जिलाकेकी तरफ या अुसुम्बुरा शहरकी तरफ जानेके लिअे यही रास्ता सुभीतेका है।

दारेस्सलाममें अफ्रीकी बालकोंकी शिक्षाकी दो सरकारी संस्थायें हमने देखीं। लड़कोंकी संस्थामें पढ़ाअीका काम अुनसे सख्तीके साथ कराया जाता है। वहांके मुख्य अध्यापकने बातों ही बातोंमें कहा, "जो लड़के चौदहवें वर्षमें शादी कर सकते हैं, अुन लड़कोंको अिसी अुम्रमें अपने भविष्यका खयाल करके लगनके साथ पढ़ना ही चाहिये। क्या

आपको अैसा नहीं लगता ? बच्चे हैं कह कर दरगुजर किया जाय, तो वे कभी अूंचे नहीं अुठेंगे और अपनी सारी शक्ति प्रकट नहीं कर सकेंगे। पढ़ाया जाय प्रेमपूर्वक परन्तु लड़के पढ़ाअीमें ढिलाअी करें तो सहन नहीं करना चाहिये।" अुस गोरे शिक्षककी बात सच थी। अुसके विद्यार्थी लगनसे पढ़ भी रहे थे।

जब हम लड़कियोंकी पाठशाला देखने गये, तब वहां खेलकी छुट्टी थी। कुछ लड़कियां खाने बैठी थीं, कुछ खेल रही थीं। अुनके घुंघराले बाल और अुस्तरेसे निकाली हुअी मांगें खास तौर पर देखने लायक थीं। दुनियाके दूसरे मनुष्योंसे अफ्रीकी लोगोंके बाल बिलकुल भिन्न होते हैं। अुनमें भी सुन्दरता लानेका ये लोग बहुत प्रयत्न करते हैं। और अुसमें सफलता मिलती ही न हो, सो बात नहीं। यहांके हरअेक प्रदेशकी बाल संवारनेकी पद्धति अलग है। ये सब प्रकार फोटो-आल्बममें अेकत्र किये जायं, तो अफ्रीकी रसिकताका अेक सुन्दर संग्रह तैयार हो जाय। अफ्रीकी लोग दूसरी जातियोंके साथ विवाह करें, तो अुनकी सन्तानकी चमड़ीका रंग बदल जाय। परन्तु कहा जाता है कि बालोंके मामलेमें अफ्रीकी असर स्थायी दिखाअी देता है। अैसी रायें कहां तक सच होती हैं, यह कोअी नहीं देखता। कुछ सिद्धान्त अिसीलिअे बिना जांच किये स्वीकार कर लिये जाते हैं कि लोगोंको वे आकर्षक लगते हैं।

अफ्रीकी लोगोंके लिअे सरकारकी तरफसे कअी स्थानों पर वेलफेअर सेन्टर्स खुले हुअे हैं, जहां ये लोग आजादीके साथ अिकट्ठे हो सकते हैं, खेल खेलते हैं, अखबार पढ़ते हैं, रात्रिवर्ग चलाते हैं और जीमें आये तो वहां शराबका सेवन भी कर सकते हैं।

सारे पूर्व अफ्रीकामें शराब खुले तौर पर अिस्तेमाल की जाती है। हमारे यहांके लोगोंने भी अिस रिवाजमें वहां बड़ी प्रगति की है ! कुछ अच्छे और प्रतिष्ठित लोग जब सूर्यास्तके समय शराब पीते हैं और मस्त होकर बातें करते हैं तब हमें अजीबसा लगता है। सभी कहते हैं कि कुछ लोग अपवादस्वरूप नहीं पीते। कौन अपवादस्वरूप हैं और

कौन नियमके अधीन हैं, यह जांच करने या जान लेनेकी मैंने हिम्मत नहीं की। मैंने यही माननेमें सुविधा समझी कि जो हमारे सम्पर्कमें आते जाते हैं अुनमें से अधिकांश नहीं पीते।

हमारे सम्मानमें जो भोज रखे जाते, अुनमें युरोपियन लोगोंको भी आमंत्रण होनेके कारण अुनके लिअे शरावकी सुविधा रखी जाती थी; और फिर हमारे यहांके लोगोंमें भी जैसी जिसकी रुचि होती, वह अुसी तरह करता था। यह यहांका सर्वमान्य रिवाज है। जव मेरे जैसा कोअी आता है तव अिन लोगोंको यह प्रश्न पूछनेमें मजा आता है कि "आप यह सव कैसे निभा लेते हैं?" मैं यह कहकर संतोष कर लेता कि "विदेशमें सारा समाज जिस रिवाजको मानता है, मैं अुसका काजी वनने नहीं आया हूं। मैं अपने सिद्धान्तका पालन करके संतोष रखता हूं। मद्यपान-निषेधका मिशन लेकर आया होता, तो दूसरा ढंग अख्तियार करता।" दारेस्सलामको ध्यानमें रखकर यह सव नहीं लिखा है। युगांडामें यह सवाल खास तौर पर विशेष महत्त्वका वताया गया था।

अफ्रीकन वेलफेअर सेण्टरोंमें ग्रामोफोन चलता देखकर मैंने अफ्रीकी संगीतकी मांग की। अफ्रीकी भाषाओंमें लिखे गये गीत और युरोपियन राग — अैसे प्रकार मिशनरी लोगोंने वहुतसे चलाये हैं। अिनका संगीत अुच्च कोटिका होता है। अमरीकामें प्रशंसित 'निग्रो स्पिरीच्युअल्स' के वारेमें हम जानते हैं। मुझे यहां अफ्रीकी भाषा, अफ्रीकी छन्द, और राग भी अफ्रीकी, अैसा संगीत चाहिये था। अेक ही प्लेट अिस प्रकारकी थी और अुसमें भी राग शुद्ध अफ्रीकी नहीं था। अरवी संगीतका असर अुसमें स्पष्ट जान पड़ता था।

हरअेक जाति अपने संगीतमें अपनी आत्मा अुंडेलती है और अपने सारे अितिहासका हृदय पर जो असर हुआ हो, अुसे अपने संगीतके द्वारा व्यक्त करती है। अिसलिअे अफ्रीकी लोगोंका संगीत सुननेको मैं अुत्सुक था। जहां जहां कुछ भी अवसर मिला, वहीं मैंने अफ्रीकी संगीत सुननेका प्रयत्न किया। और जानकार लोगोंसे अुनकी राय पूछी। अफ्रीकी रागोंमें

युद्ध संबंधी कोअी राग होता है या नहीं, रणमदके स्वर अुसमें मिलते हैं या नहीं, अिसकी मैंने जांच की। लोगोंने कहा कि वीररसके स्वर तो नहीं मिलते, परन्तु अुत्सवों और त्यौहारों वगैराके राग, विवाह-गीत और विजय-गीत मिलते हैं। मैंने जो थोड़ासा संगीत सुना, अुसमें विषाद और निराशाके स्वर स्पष्ट दिखाअी देते थे। अरबी असर होने पर भी यह विशेषता कायम थी। श्री जयंतीभाअीने कुछ अफ्रीकी रेकॉर्ड लाकर सुनाये। अुन परसे अूपरकी राय मजबूत हुअी। परंतु दूसरी तरहका संगीत अफ्रीकी लोगोंके पास नहीं है, यह कहने जितना अनुभव मुझे नहीं है। संगीतका मर्म समझनेवाले लोगोंको अफ्रीकी संगीतका गहरा अध्ययन करना चाहिये। हमारे यहां संगीतशास्त्रकी जितनी अुपासना हुअी, अुतनी अुसके मर्मकी नहीं हुअी। अिसलिअे बहुत लोग 'साअिकोलॉजी ऑफ म्यूजिक' से अपरिचित रहते हैं।

दारेस्सलाममें अेक अच्छा-सा अफ्रीकी म्यूजियम है। म्यूजियम है तो छोटा, परन्तु अत्यंत कीमती है।

अफ्रीकी लोग जब शिकारको जाते हैं, तब नोक पर जहरसे बुझाये हुअे तीर लेकर जाते हैं। पुराने जमानेके तीरोंकी नोक भी लकड़ीकी होती थी और हमारी तकलीकी नोककी तरह अुसमें आंकड़ा रहता था। तीर जानवरको लगा कि अुसका सिरा तुरंत टूट जाता है, जानवरके शरीरमें घर कर लेता है और नोकके जहरसे जानवर मर जाता है। मुझे कहा गया कि म्यूजियमके वस्तुपालने अफ्रीकामें काम आनेवाले अैसे जहरोंका गहरा अध्ययन किया है।

अफ्रीकाके मध्यभागकी किसी गुफामें चालीस हजार वर्ष पहलेका जो अेक चित्र चित्रित है, अुसकी नकल अिस म्यूजियममें रखी गअी है। पशुओंकी हूबहू शकलें और शिकारके प्रसंग अिस चित्रकी खासियत है।

अफ्रीकाकी सारी संस्कृति ग्रामीण ढंगकी है। अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सब जगह झोंपड़े ही झोंपड़े दिखाअी देते हैं। अींट-चूने या

पत्थरका अेक भी मकान प्राचीन अफ्रीकियोंने नहीं बनाया। चमड़े या वल्कलके अुनके कपड़े, लकड़ीमें खोदी हुअी नावें, कौड़ियों, कांचके टुकड़ों और मणियोंकी कारीगरी, लकड़ी और चमड़ेके अुनके वाजे, अैसी बहुतसी चीजें देखनेको मिलीं। कुल मिलाकर अब तक हम कोअी पांच म्यूजियम ही देख सके।

पूर्व अफ्रीकामें जहां-जहां महाराष्ट्री मिले, वहीं अुच्च अभिरुचि वाला संगीत, अच्छासा नाट्य और अहिंसाके सिद्धांतके प्रति अश्रद्धा सुननेको मिली। महाराष्ट्री लोग गांधीजीकी बात समझनेका पूरा प्रयत्न करते हैं। परन्तु अेक खास पक्षके नेताओंके अखंड प्रचारका असर अुनके मस्तिष्क पर अितना हो गया है कि वे किसी भी तरह अिस बातको नहीं मान सकते कि गांधीजीका आदर्शवाद व्यावहारिक भी है। अुन्हें धीरजके साथ समझानेकी जरूरत है।

दारेस्सलामका व्यायाम मंडल वहांके युवकोंमें अच्छा काम कर रहा है। व्यायाम मंडलमें सेवाका वातावरण होने और शरीर-संवर्धनकी तरफ ध्यान दिया जानेके कारण धर्मोपदेशकी अपेक्षा भी व्यायाम मंडलोंके जरिये चरित्रकी दृढ़ता अधिक अच्छी तरह संपादित होती है।

अिसी शहरमें अेक अफ्रीकी संस्थाने हमें पार्टी दी थी। अुसमें सदाकी भांति भाषण होनेके बाद बढ़िया प्रश्नोत्तर हुअे। गांधीजीके सिद्धांतोंको समझनेके लिअे और हिन्दुस्तानका रुख जान लेनेके लिअे हर जगह अफ्रीकी लोग बड़े अुत्सुक होते हैं। "आप लड़ाअी किये बगैर और खून बहाये बिना कैसे स्वतंत्र हो सके? आपकी यह कला हमें सिखाअिये।" अिस तरह हर जगह अफ्रीकी लोग हमसे पूछते। यहां आनेके लिअे परमिट देते समय यहांकी सरकारने हम पर किसी किस्मकी शर्त नहीं लगाअी थी, यह सच है। परन्तु अिसी कारण मेहमानकी हैसियतसे मेरे लिअे मर्यादाअें रखना जरूरी था। अिसलिअे अिस प्रकारकी शंका भी मुझे पैदा नहीं करनी थी कि यहां आकर

अफ्रीकी लोगोंको मैं यहांकी सरकारके विरुद्ध भड़काता हूं। अिसके सिवाय माखनसिंह नामक अेक हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पर अिन दिनों अेक मुकदमा चल रहा था, जिससे सारा वातावरण क्षुब्ध हो गया था। अिन सब बातोंका विचार करके मैंने हर जगह गांधीजीके रचनात्मक कार्योंका महत्त्व समझाकर संतोष मान लिया। रचनात्मक कार्योंसे जनताकी शक्ति किस तरह बढ़ती है, अुसमें आत्मविश्वास कैसे आता है और जनताका संगठन करना किस प्रकार सरल हो जाता है, यह सब कहकर ही मैं रुक जाता था। सत्याग्रह या असहयोगकी बात मैं जानबूझकर नहीं कहता था। गांधीजीका अंग्रेजी साहित्य सर्वत्र मिलता ही है। गरज होगी तो ये लोग पढ़ लेंगे।

मैं मानता हूं कि अिस देशमें अब भी कुछ समय तक गोरोंके लिअे स्थान है। हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रता मान लेनेके बाद अंग्रेजोंका अंतिम आधार अफ्रीका ही है। अगर ये लोग भविष्यको पहचान कर अफ्रीकाके लोगोंके साथ और यहांके भारतीयोंके साथ अच्छा बर्ताव करें, तो अंग्रेज जाति अपना भी अुद्धार कर सकेगी और अितिहास-विधाता परमेश्वरकी योजनाओंमें भी अपना ठोस हिस्सा दे सकेगी। आज तो यहांके गोरोंमें यह दूरदृष्टि दिखाअी नहीं देती। आज वे अितना ही सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी लोगोंको सता कर किस तरह घबरा दिया जाय और यहांके लोगोंको जकड़कर कैसे काबूमें रखा जाय।

मैं मानता हूं कि यह स्थिति लम्बे समय तक नहीं टिक सकती। कॉमनवेल्थके नेता अिकट्ठे होकर अिस तमाम नीतिमें तब्दीली करेंगे और यहांके लोगोंको अच्छी शिक्षा देकर यहांकी नीति सुधारेंगे।

आजकल फोटोग्राफीके आ जानेसे चित्रकलाको बड़ा नुकसान पहुंचा है। अगर कोअी पूछे कि अफ्रीकी लोग कैसे दिखाअी देते हैं, तो अुसके सामने हम अफ्रीकाकी दस बीस जातियोंके प्रतिनिधिस्वरूप कुछ फोटो रख सकते हैं — अितने बढ़िया फोटो कि अुन लोगोंको प्रत्यक्ष देखने जैसा सन्तोष मिले। परंतु अफ्रीकी मूर्तिकार अपनी

जातिकी जैसी कल्पना करेगा और अुसकी मूर्ति बनावेगा, वह किसी भी फोटोसे नहीं मिलेगी। फिर भी अुस मूर्तिके भीतर अफ्रीकी लोगोंका चेहरा, अुनका स्वभाव और हजारों वर्षके अनुभवकी अेकत्र की हुअी छटा — तीनों हमें अेकत्र देखनेको मिलेंगे। अिसके लिअे मैंने हरअेक म्यूजियममें अैसी मूर्तियां देखनेका अवसर ढूंढा। नैरोबी, दारेस्सलाम, झांझीबार, डोडोमा और कंपाला — अितने स्थानोंके म्यूजियम हमने देखे। अिसके सिवाय झांझीबारके सुलतान, वहांके रेसीडेण्ट, दारेस्सलामके गवर्नर, युगाण्डाके कबाका यानी राजा वगैरा बड़े लोगोंके मकानों और दीवानखानोंमें स्थानीय कारीगरीकी जो खास चीजें रखी रहती हैं अुन्हें मैंने ध्यानसे देखा। किंग्ज कॉलेज बुडो, मेकरेरे कॉलेज, गायाजाका मिशन स्कूल वगैरा स्थानों पर पुरानी व नअी चित्रकला देखनेको मिली सो भी देख ली। जंगबारमें मुझे कोअी अच्छी मूर्ति नहीं मिली। वह मैंने दारेस्सलाममें बड़ी दुकानोंके आगे रास्ते पर बैठकर बेचनेवाले लोगोंसे खरीद ली। ये कारीगर कुशल हों या मामूली, वे अपने देशकी परंपरागत कारीगरीको अच्छी तरह पेश करते ही हैं। काले और सफेद रंगके लकड़ोंमें से खोदी हुअी ये मूर्तियां अफ्रीकी जीवनकी प्रतिबिंब हैं। अुनके कान, अुनकी आंखें, अुनके होठ, अुनकी ठोड़ी — चारों जगह अुनके स्वभावका प्रतिबिंब पड़ता है। युरोपियन लोग अफ्रीकी लोगोंकी मूर्तियां लकड़ीमें खोदकर अपने घरोंमें रखते हैं और अुनके हाथोंमें थाली या तश्तरी देते हैं। यह मुझे बिलकुल पसंद नहीं। यह जाति हमेशाके लिअे घरके बॉय या नौकर बननेके लिअे पैदा नहीं हुअी। नौकरकी मूर्ति रखनी ही हो तो अपनी जातिकी मूर्ति ही अच्छी। अिसकी अपेक्षा हाथमें तीर और ढाल लेकर शिकार करते हुअे जंगली अफ्रीकियोंकी मूर्तियां हजार दर्जे अच्छी।

११

प्रार्थना-प्रवचन

महात्मा गांधीने अेक वार आश्रमकी व्याख्या करते हुअे कहा था कि, "प्रार्थना पर — सामूहिक प्रार्थना पर जिन लोगोंका विश्वास है, अुनका संघ ही आश्रम है।" किसी भी धर्मका आदमी आश्रमकी प्रार्थनामें शरीक हो सकता है। कोअी खास तरह की प्रार्थना ही करनी चाहिये, अैसा आग्रह नहीं है। जिसने सभी धर्मोंको अपनाया, अुसे सभी धर्मोंकी प्रार्थनायें गानेमें संकोच नहीं होता। थियोसोफीने भी सब धर्मोंके सिद्धान्तोंका आदरपूर्वक अध्ययन करने पर बहुत जोर दिया है। अिसलिअे हमारी आश्रमकी प्रार्थनाके प्रति थियोसोफिस्ट लोगोंका सद्भाव विशेष होता है। मोम्बासामें श्री मास्टरकी गांधी सोसायटीमें, दारेस्सलाममें श्री जयन्तीभाअीके वातावरणमें और जंगवारमें अुनके पिताजीके चलाये हुअे थियोसोफिकल प्रार्थना-मंदिरमें जो प्रार्थनायें हमने कीं, वे सचमुच सामूहिक प्रार्थनायें थीं। क्योंकि अनेक लोग अुनमें भक्तिभावसे शरीक होते थे। अिन प्रार्थनाओंके साथ जो प्रवचन किये गये, अुनका सार यहां दिये देता हूं।

प्रार्थना अेक दृष्टिसे देखा जाय तो हृदयका स्नान है और दूसरी तरहसे देखा जाय तो दिलकी खुराक भी है। प्रार्थनाके वातावरणमें अगर हम तल्लीन हो सकें, तो हृदयमें जमे हुअे अनेक कुसंस्कार और मलिन संकल्प धीरे-धीरे मिट जाते हैं और शुभ संकल्प मजबूत और विकसित होते जाते हैं। प्रार्थनामें हम कुछ मांगें या न मांगें, भगवानकी सन्निधिमें खड़े रहनेसे सारा वायुमंडल अपने आप पवित्र होता जाता है। कितनी ही परेशानियां अपने आप हल हो जाती हैं और समूहमें की गअी प्रार्थना द्वारा अुसमें सम्मिलित होनेवाले लोगोंके बीच अेक

प्रकारकी आत्मीयता और आत्म-परायणता पैदा हो सकती है। समाज अनेक तरहसे गिरा हुआ हो, हारा हुआ हो और छिन्न-भिन्न हो गया हो, तो भी अुसमें नया चेतन पैदा करनेमें प्रार्थना समर्थ है। प्रार्थना मनुष्यजातिकी आखिरी पूंजी है। और कुछ भी बाकी न रहा हो, तो भी प्रार्थना हमें धीरज और नअी आशा प्रदान कर सकती है। अिसलिअे मनुष्यको सद्भावपूर्वक प्रार्थनाका रिवाज कायम रखना चाहिये। अगर प्रार्थनाकी आदत हो तो कठिन अवसर पर अुसीकी अचूक शरण लेना सूझता है। और अिस प्रकार जैसे समुद्रमें डूबनेवाले मनुष्यके लिअे रबरके कड़े या कॉर्कके जैकट काम आते हैं, वैसे ही प्रार्थना काम आती है। हरअेक कुटुम्बमें और कुछ नहीं तो रोज अेक बार सवेरे या शामको सब लोगोंको साथ मिलकर प्रार्थना करनेका रिवाज रखना चाहिये। और अुसके अन्तमें, अुसी पवित्र वातावरणमें घरके सुख-दुःखकी और मेल या झगड़ेकी बातें छेड़नी चाहियें। हरअेक खानदानके लिअे यह बड़ी शिक्षा है। जैसे व्यक्तिकी आत्मा होती है वैसे ही कुटुम्ब, जाति या संस्थामें भी हम आत्मा जाग्रत कर सकते हैं।

अिसी तरह हमारे मंदिर भी सारे समुदायकी आत्माकी जाग्रतिके लिअे अिस्तेमाल किये जा सकते हैं। मंदिरोंमें मूर्ति हो या न हो, यह गौण चीज है। परन्तु मूर्तिकी पूजाके साथ आचार धर्मका झगड़ा पैदा हो जाता है। यह नहीं कहा जा सकता कि मूर्तिको नहलाने-खिलानेमें कोअी खास धार्मिक वृत्ति पैदा होती ही है। हिन्दू समाजमें जहां खानेकी बात आअी, वहां चौका-अचौका, छुआछूत और अूंचनीचका भाव वगैरा असंख्य बातें पैदा हो जाती हैं। शुद्ध और नित्यतृप्त भगवानके लिअे नहाने-खानेकी बात न भी रखें तो काम चल सकता है। भोग रखना ही हो तो सूखे या हरे मेवे और मिठाअीका रखा जा सकता है। पूजाके लिअे पुरोहित नहीं रखने चाहियें। जिसके हृदयमें भक्तिकी अुमंग हो, वही अपने लिअे पूजा करे। रोज सवेरे अुठकर माता-पिताके पैरों पड़नेकी जिसकी आदत है, वह अगर समयके अभावमें यही काम

किसी नौकर या चपरासीके द्वारा कराये तो अुससे जितना मतलब पूरा होगा, अुतना ही पुरोहितके द्वारा पूजा करानेमें हो सकता है। पैरों पड़ना मां-बापकी जरूरत नहीं है, यह तो पुत्रके हृदयकी अुमि मानी जायगी। अिसमें अेवजी नहीं रखा जा सकता।

हमारे मन्दिर बनते हैं कितनी भक्तिसे! परन्तु बादमें अुनमें स्वच्छता कायम नहीं रखी जाती। मन्दिरोंमें दिये जानेवाले दानका सद्व्यय नहीं होता। मन्दिरोंकी आय भगवानके भोगविलासमें अिस्तेमाल नहीं होनी चाहिये, परंतु लोककल्याणके ही काम आनी चाहिये। समाजका चरित्र सुधारनेवाले अनेक कार्य मन्दिरों द्वारा हों। मन्दिरोंकी जमीन, दीवारों और कटहरोंको दिनमें कअी बार गीले कपड़ेसे पोंछकर साफ करना चाहिये। मंदिर अंतरबाह्य स्वच्छताका स्थान होता है। वहां लोगोंको व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों तरहकी सफाअीके नियम सीखनेकी सुविधा होनी चाहिये। जहां तहां पानी बिखेर कर गीलापन और कीचड़ पैदा नहीं करना चाहिये। नाम-संकीर्तनके नामसे चिल्ला कर मंदिरका वातावरण नहीं बिगाड़ना चाहिये। जिन्हें मूर्तिके दर्शन पर आपत्ति न हो, अुन तमाम लोगोंको मन्दिरमें आने देना चाहिये — भले ही वे किसी भी धर्मके हों। दर्शनके लिअे आनेवाले लोग बाहर जूता अुतारकर मन्दिरमें जाते हैं, तब अुनका ध्यान जूते चोरी जानेके डरसे अकसर वहीं होता है। अिसके बजाय छोटीसी थैलीमें जूता रख कर वह थैली साथ रखनेकी आजादी दी जाय, तो जूतेकी भी रक्षा हो जाय और भगवानका ध्यान भी बना रहे। पुराने लोगोंने कहा है — 'शुष्कं चर्म तु काष्ठवत्' अर्थात् सूखा चमड़ा लकड़ीके समान है। अिसलिअे अुसको छुआछूत न मानी जाय।

मंदिरों द्वारा धार्मिक ग्रंथोंके संग्रह, अुनके अध्ययन, प्रकाशन और चर्चाकी सुविधा होनी चाहिये। मंदिर अतिथिशाला भी हो और मनुष्य तथा जानवरोंके लिअे रुग्णालय भी हो। हरअेक धर्मके त्योहार अुचित परिवर्तनके साथ मंदिरों द्वारा मनाये जा सकते हैं। अिस प्रकार हरअेक

मंदिरको धर्मसेवाकी अेक अद्यतन (अप-टु-डेट) संस्था वनाया जा सकता है।

हमारा धर्म सनातनके नामसे पुकारा जाता है। सनातनका अर्थ है हमेशाका। कोअी भी वस्तु सड़े नहीं, विगड़े नहीं और स्वच्छ और ताजी रहे, तभी अुसे हमेशाकी या टिकाअू कहा जा सकता है। सनातन अर्थात् नित्य नूतन। जैसे वहती हुअी हवा शुद्ध होती है, वहता हुआ पानी स्वच्छ होता है, अुसी तरह समय-समय पर जिसमें सुधार और फेरवदल होते रहते हैं वही सनातन धर्म माना जाता है। हम अिसी प्रकार करते भी आये हैं। वीचमें यह काम रुक गया, क्योंकि विचार जागृति मन्द पड़ गअी और रूढ़िवर्मने जोर पकड़ लिया। अव हमें धर्मके संस्करणकी, सुधारकी प्रवृत्ति फिरसे अपनानी चाहिये।

पामर लोगोंने तेज धर्मसे डर कर अेवजी धर्म चलाया। "गोदानके वदले सवा रुपया दे दो।" . . . "त्यागके वजाय दानसे काम चला लो।" . . . . "जीवन परिवर्तनके स्थान पर नाममात्रका प्रायश्चित्त सुझा दो।" अैसे अनेक अेवजी धर्म हमने चला दिये हैं। नतीजा यह हुआ कि धर्म मंद और निःसत्व हो गया। सत्यनारायणकी ही अुपासनाको देखिये। अुसमें सत्यनिष्ठा पर जोर दिया है। वचनपालनका माहात्म्य वताया है। परन्तु यह सव मन पर जमा देनेके लिअे डर और लालचकी दो हीन असामाजिक वृत्तियोंकी शरण ली गअी है। "सत्यको छोड़ोगे — धोखा दोगे तो अमुक अमुक हानि होगी। सत्यको मानोगे तो फलां लाभ होगा," अैसी वनावटी फलश्रुति वताकर लोगोंको सत्यनिष्ठ नहीं वनाया जा सकता। सत्यनिष्ठाके कारण ही मनुष्य सत्यका पालन करे तो ही वह अुन्नत होगा।

धार्मिक कहानियां हमें वताती हैं कि भगवान कभी-कभी चाहे जैसा रूप धारण करके हमारी परीक्षा लेते हैं। "वह कुष्ठ रोगीका रूप धारण करेगा, भिखारी वनकर आयेगा। वह यवनके रूपमें प्रगट होगा और हमारी धर्मनिष्ठाकी जांच करेगा।" अैसी कहानी सुने वाद

मनुष्य अनजान या विचित्र आगन्तुकसे डरता है। हम यह क्यों न समझ लें कि हरअेक मनुष्य अीश्वरका ही रूप है? हरअेक मानवके द्वारा प्रतिक्षण अीश्वर हमें कसौटी पर चढ़ाता है। अैसी भावना दृढ़ हो जाय तो हर क्षण और हर प्रसंग नित्य साधना और अखंड आनन्दका बन जायगा।

भीतर देखने पर अीश्वर अन्तर्यामी है। बाहर देखें तो वह जगत् स्वरूप है। अीश्वरने अनेक अवतार धारण किये, अुससे पहले भगवानका सबसे पहला, सबसे बड़ा और सनातन अवतार तो यह सृष्टि ही है। भगवान हमें सृष्टिके रूपमें अखंड दर्शन देते हैं। गीता हमें यही विश्वात्मैक्यका धर्म सिखाती है।

गीता हमारा सर्वोच्च धर्मग्रंथ है, परन्तु हम अुसे केवल हिन्दू धर्मका ही न समझें। गीता-धर्म सिर्फ हिन्दुओंका धर्म नहीं है, वह विश्वधर्म है। हम गीताके हैं। गीता सबकी है, सिर्फ हमारी नहीं। गीता-धर्म सुननेके लिअे हम तमाम दुनियाको बुलायें। अिसकी दीक्षा देनेकी भी बात नहीं है। वह जिसके हृदयमें अुदय हो अुसका अुद्धार हो जाय, अिसीलिअे हम गीतामंदिर न बनाने लगें। गीता सभी धर्मोंमें प्रवेश कर सकती है। गीता केवल माननेका धर्म नहीं, परन्तु आचरण करनेका धर्म है। अुसमें ज्ञानी, भक्त, योगी, पंडित, त्रिगुणातीत और स्थितप्रज्ञके जो लक्षण दिये हैं वे सब अेक ही हैं। मनुष्य-जातिके लिअे वे सर्वमान्य आदर्श हैं। समाज बना रहे और सर्वांगीण अुन्नति करे, अिसके लिअे जो सद्‌गुण मनुष्यको पैदा करने जरूरी हैं, गीतामें वे सब दैवी सम्पत्तिके वर्णनमें दे दिये हैं। अिसलिअे गीता समाजधर्म भी है और मोक्षधर्म भी। अभ्युदय और निःश्रेयस — अिहलोककी अुन्नति और आत्माका अुद्धार दोनों अेक साथ प्राप्त करनेकी कुंजी गीताने मनुष्य-जातिको दी है। अिसीलिअे गीताधर्मी लोगोंने श्रीकृष्णको 'जगद्-गुरु' कहा है।

हमने समाजधर्मके रूपमें चातुर्वर्ण्यकी स्थापना की। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार समाजोपयोगी वृत्तियां हैं। कुछ लोगोंमें

अेक वृत्ति प्रधान होती है, कुछमें दूसरी। परन्तु हरअेक मनुष्यको ये चारों वृत्तियां अिकट्ठी ही अपनेमें पैदा करनी पड़ेंगी। नहीं तो मनुष्यका जीवन अेकांगी और पंगु हो जायगा। अकेला ब्राह्मण, अकेला क्षत्रिय, अकेला वैश्य या अकेला शूद्र सम्पूर्ण मनुष्य नहीं है। गांधीजीमें ये चारों वृत्तियां अिकट्ठी विकसित हुअी थीं। हमें अब चार अलग-अलग वर्ण और असंख्य जातियां छोड़ देनी चाहियें और हरअेक व्यक्तिमें मानवताके सम्पूर्ण विकासका आग्रह रखना चाहिये। गीताका संन्यास, संन्यास आश्रम नहीं, परन्तु ब्रह्मचारी, गृहस्थी आदि सभी लोगोंके लिअे आवश्यक अलिप्त और अनासक्त वृत्ति है।

और अब तो हमें सभी धर्मोंका आदरपूर्वक अध्ययन करके सब धर्मोंको अपनाना है। अलग-अलग धर्मोंके बीचका झगड़ा सिर्फ चर्चा और तुलनासे नहीं मिटेगा। सभी धर्मोंको स्वीकार करनेसे सच्ची धार्मिकता अूपर निखर आयेगी और विधि-विधानका मैल नीचे बैठ जायगा। हमारा बनाया हुआ अूंचनीचका और अपने-परायेका भाव धर्मका अंग नहीं है, परन्तु निरा अधर्म है। छुआछूतके साथ अूंचनीचका भाव भी हमें निकाल देना चाहिये। हिन्दुस्तानसे अितनी दूर आ गये हैं, तो हमें शुद्ध धर्मका चिन्तन करना चाहिये और सामाजिक दोष निकाल देने चाहियें। रोटी-बेटी व्यवहारके पुराने नियम अब कामके नहीं हैं। जहां सभी धर्म हम अपने मानते हों, वहां धर्मपरिवर्तन करनेकी कोअी जरूरत भी नहीं और अुसमें कोअी पाप भी नहीं।

हमारे तमाम कामोंमें सर्वोदयकी दृष्टि होनी चाहिये। जो सबसे पीछे है अुसे आगे लानेका विशेष प्रयत्न होना चाहिये। अेकके साथ अन्याय करके दूसरेका भला करने लगेंगे, तो वह सर्वोदय धर्मका द्रोह होगा। अिस तरह विश्वबन्धुत्वका हनन होता है। आत्मशुद्धि भी सामाजिक कर्तव्य ही है। अहिंसाके बिना समाजकी धारणा नहीं हो सकती और सत्यनारायणका दर्शन भी नहीं हो सकता।

१२

किटुंडा

भूमध्य रेखा पार करते समय जैसे मनमें गंभीर भाव प्रगट हुआ था, वैसे ही अब तो दक्षिणमें लिंडी वन्दरगाह तक और मूंगफलीके विराट प्रयोगवाले नचिंग्वे तक ठेठ दक्षिणमें पहुंचनेवाला हूं, अिस खयालसे भी मन गंभीर हो गया। ६ जूनको हमने पहली वार दारेस्सलाम छोड़ा। लिंडी तक का २०० मीलका सफर समुद्रके किनारे-किनारे मोटर द्वारा हो सकता था। परन्तु हमें वक्त वचाना था अिसलिअे पन्त दम्पती, कमलनयन, छोटा राहुल, चि० सरोज और मैं सवेरे दारेस्सलामसे विमान मार्गसे रवाना हुअे। यह आस्मानी रास्ता पहले जमीन परसे और फिर समुद्र परसे जाता था। अिसलिअे समुद्रका वढ़िया गुलावी रंग, वीच-वीचमें छोटे-वड़े द्वीप आते तव पन्नेका हरा रंग, माफिया, सोंगोसोंगो वगैरा द्वीपोंकी शोभा, आदि सव कुछ अपेक्षानुसार था। दाअी तरफ पहले किसूजू दिखाअी दिया। अुसके वाद रुफीजी नदीके असंख्य सुन्दर मोड़ और समुद्रसे मिलनेके अुसके अनेक मुख देखकर आनन्द ही आनन्द हो गया। सचमुच अिस नदीको रूपवती कहना चाहिये। अिसके वाद दो-तीन छोटी-छोटी नदियां समुद्रसे मिलती नजर आअीं। और अव लगभग नामशेष रह गये किलवा नामक दो वन्दरगाह दिखाअी पड़े। अेक है किलवा-किंविजी और दूसरा है किलवा-किसिवानी। अिस दूसरे वन्दरगाहसे पुराने समयमें न्यासा सरोवर तक जानेका रास्ता था। यह सारी शोभा देखते देखते हम लिंडी हवाअी अड्डे तक पहुंच गये। लिंडी वन्दरगाह और शहरसे यह विमान केन्द्र लगभग १४ मील दूर है। लिंडीका वन्दरगाह भूमध्य रेखासे दस डिग्री दक्षिणमें

है। वन्दरगाह वहुत ही शान्त माना जाता है। लुकलेडी नामकी अेक छोटीसी नदी खूब चौड़ी होकर यहां समुद्रसे मिलती है।

लिंडीमें खानावाना खाकर शाम पड़ते ही अेशियन लोगोंकी अेक सभा करके हम नदीके अुस पार किटुंडा पहाड़ी पर रातको सोने गये। शामकी सभामें हिन्दुस्तानके हिन्दू-मुसलमानोंके सिवाय वहुतसे अरव भी आये थे। अरवोंका अफ्रीकाके साथका संवंध हमारे जैसा ही पुराना है। अिसके सिवाय अरव लोग शुरूसे ही स्थानिक लोगोंके साथ मिलते-जुलते रहे हैं। अुन्होंने अफ्रीकाके पूर्वी किनारे पर छोटे मोटे कअी राज्य भी स्थापित किये थे। पुर्तगाली लोगोंके साथ वे कअी वार हारजीत खेले हैं। अरवी और पुर्तगाली दोनों संस्कृतियोंके अवशेष तमाम किनारे पर जगह जगह फैले हुअे हैं। पुर्तगाली लोगोंने वहुत कुछ खो दिया, फिर भी आज मोजाम्विकका अुपजाअू और मनोहर प्रदेश अुन्हींके हाथमें है। और अक्षांशकी ठीक अितनी ही अूंचाअी पर अफ्रीकाके पश्चिमकी तरफ अंगोलाका मुल्क भी अुनके पास है।

अरवोंका दवदवा अव नहीं रहा। थोड़ी वहुत संस्कारिता अभी तक कायम है। पूर्व अफ्रीकाकी स्वाहीली भाषा पर अरवी भाषाका असर वहुत है।

लुकलेडी खाड़ी पार करनेमें रात पड़ गअी। सामनेकी तरफ हमारे लिअे मोटर मौजूद थी। अुसमें वैठकर अूपर चढ़ते समय अेक तेन्दुआ दिखाअी दिया। मोटरके प्रकाशसे चौंधिया कर अुसने नजर फेर ली और देखते देखते पासके जंगलमें ओझल हो गया। तेन्दुअेके शरीर परके धब्बे सुन्दर होते ही हैं। परन्तु अुसकी दुमकी मोड़दार वनावट विशेष आकर्षक होती है। अिस दुमके कारण यह जानवर प्रौढ़ दिखाअी देता है। श्री मेघजीभाअी शाहके सायसलके खेत पार करके पहाड़ी पर अुनकी विशाल कोठीमें हम जा पहुंचे। कोठी वनानेवाले मूल मालिककी कल्पना विशाल थी। कमरे, वरामदे, छत सभी विस्तृत और मजवूत हैं। हमने छत पर जाकर दक्षिणके तारे देखे।

जय, विजय और त्रिशंकुको आसमानमें अितना अूंचा चढ़ा हुआ देखकर बहुत ही आश्चर्य हुआ। वृश्चिककी शोभा अनोखी थी। सोनेसे पहले और, सवेरे जल्दी अुठकर तारे खूब देखे, परन्तु हमारा जी नहीं भरा। दूसरी बार जब देखने गये तब आकाशके बादलोंने हमारे अुत्साह पर पर्दा डाल दिया और हमें बिस्तर पर पहुंचा दिया।

सुबह अुठकर देखा तो लुकलेडीकी खाड़ी शान्तिसे सो रही थी। वह जिन पहाड़ियोंके बीच होकर आती थी, वे पहाड़ियां भी निद्रा-सुख अनुभव कर रही थीं। अन्तमें भगवान सूर्यनारायण अूपर आये और अुन्होंने अपनी किरणोंसे अुन सबको जगाया। करस्पर्शसे प्रसन्न हुअी खाड़ी तुरन्त चमकने लगी। पहाड़ियोंका मुख अुज्वल हुआ और अुन्होंने हमें अपनी ओर यात्रा करनेका आमंत्रण दिया।

आठ बजे रवाना होकर सायसलके अनेक खेत देखते देखते और सायसलकी परवरिशकी तफसील सुनते सुनते हम २८ मील पहुंचे। वहां श्री धीरूभाअी पोपटकी अेक सायसल फैक्टरी थी, अुसे देखने गये। अिससे पहले नचिंग्वे ग्राअुन्डनट स्कीमके लिअे सामान ले जानेके लिअे जो अेक छोटासा बन्दरगाह तैयार किया गया है वह हमने देखा। वहांसे नअी रेलवे बन रही है और पम्प करके पेट्रोल भेजा जाता है। चाहे जैसे जंगलमें विज्ञानके साधन लाकर वहांसे चाहे जहां सही सलामत ले जानेकी गोरे लोगोंकी तत्परता प्रशंसनीय है। और अुनके अैसे काम सफलतापूर्वक पूरे करनेमें यहांके हमारे हिन्दी लोगोंकी अुपयोगिता, लगन और बहादुरी भी अुतनी ही स्तुत्य है। नअी सृष्टि पैदा करके वहां व्यवस्था स्थापित करनी हो, तब गोरे लोगोंका किया हुआ प्रबंध समझ लेने और अुसे वफादारीके साथ अमलमें लानेमें हमारे यहांके लोगोंकी बराबरी करनेवाली कोअी जाति नहीं है। फौजके सेनापति और जहाजोंके कप्तान भी हमारे यहांके लोगोंके अिस गुणकी मुक्त कंठसे बड़ाअी करते हैं।

यह सब देखकर हम लिंडी पहुंचे, तो वहांके प्रोविंशियल कमिश्नर मि० पाअिकने हमें दोपहरका खाना खिलाया। अुनके साथ वार्तालाप करके हम हिन्दू मंडलमें गये। वहां अधिकांश बहनें ही थीं।

पूर्व अफ्रीकामें हमारे सन्मानमें जो अनेक भोज और चाय-पार्टियां दी जाती थीं, अुनमें युरोपियन अधिकारी बिना किसी संकोचके आते थे। परन्तु किसी युरोपियन अधिकारीने हमें अपने यहां खानेको बुलाया हो, अैसा यह अेक ही अुदाहरण है। मि० पाअिक अत्यन्त सज्जन मनुष्य हैं और अुदार विचारोंके हैं। हममें से जो लोग बिलकुल निरामिषाहारी थे, अुनके लिअे अुन्होंने अपने यहां बहुत अच्छा अिन्तजाम किया था। अुनके यहां और गोरे मेहमान भी आये थे, अिसलिअे बातचीतका रंग अच्छा जमा।

यहांके अिण्डियन अेसोसियेशनकी चाय-पार्टीमें रिवाजके अनुसार हमारे भाषण हुअे। अुनमें श्री कमलनयन बजाजका भाषण जरा सख्त और युरोपियन लोगोंको चुभनेवाला था। परन्तु मि० पाअिकने अुस पर जरा भी आपत्ति न की।

रातको किटुंडामें मेघजीभाअीकी कोठी पर बड़ा खाना था। वहां भी गोरे काफी संख्यामें आये थे। वर्धा शिक्षाकी योजना वगैरा अनेक विषयों पर रसिक चर्चा हुअी। श्री मेघजीभाअी अत्यन्त होशियार और संस्कारी अुद्योगपति हैं। अुनके साथ अुनकी लड़की हंसा भी किटुंडा आअी थी।

१३

दुनियाभरके लिअे मूंगफली

युरोपीय महायुद्धके अन्तमें सारी दुनियाकी चिन्ता रखनेवाले होशियार अंग्रेज लोगोंने देखा कि विलायतमें और सब जगह वनस्पतिकी चर्वी यानी तेल और खलकी कमी पैदा होगी। अुन्होंने खूब जल्दी अनेक देशोंमें मूंगफली बोकर अुस कमीको पूरा करनेका बीड़ा अुठाया और अेकसे अेक अधिक प्रचंड योजनाअें स्वदेशके सामने रखीं। युद्धके कारण निचोड़ा जाकर भी अिंग्लैंडने पार्लियामेन्टकी मंजूरी लेकर यह काम शुरू किया। पानीकी तरह पैसा खर्च करके अुन्होंने अिस योजनाको प्रारंभ किया। जमीनकी जो तपास सर्वे करनी थी, सो हवाअी जहाजसे कर ली। हिसाबनवीस मिलनेसे पहले काम शुरू भी हो गया। बड़े बड़े ट्रेक्टर और बुलडोज़र लाये गये और जहाजोंमें काम आनेवाली लोहेकी बड़ी बड़ी जंजीरें ट्रेक्टरोंसे बांधकर जंगलके पेड़ जमींदोज करना शुरू कर दिया गया। मूंगफली और सूरजमुखीके फूलमें से तेल निकालना शुरू किया गया। सारी योजना देखकर लोगोंको अैसा ही लगता था कि लड़ाअीकी तैयारी हो रही है। जब काम खूब बढ़ा तब पता चला कि रुपया तो पानीकी तरह खर्च हो रहा है, परन्तु आयके नाम पर शून्य। बादमें जांच होने लगी। पता चला कि हिसाबका कोअी ठिकाना नहीं। जहाजमें काम आनेवाली जंजीरें पुरानी होनेके कारण टूट गअीं। नअी तैयार कराकर लानी पड़ीं। बड़ा शोर मचा। यह भी विचार हुआ कि सारी योजना छोड़ दी जाय क्या? परन्तु बहादुर अंग्रेज जाति युद्धकी तरह आर्थिक योजनामें भी हार मानकर बैठ जाने वाली नहीं थी। अब अिस योजनाको पक्के आधार पर चलानेके लिअे अुसमें आवश्यक सुधार होने लगे हैं।

यह सब काम देखने लायक था, अिसीलिअ हम अिधर आये थे। ८ जूनको सवेरे हम रवाना हुअे। लिंडी होकर ९३ मीलका सफर करके नचिंग्वे पहुंचे। वहां अिस जबरदस्त योजनाको अमलमें आते देखा। रास्तेमें मिन्गोयो और म्टामा दो स्थानों पर रास्ता बदलना पड़ा। पेट्रोलका नल रास्तेके किनारे किनारे जाता था। फौजी टैंकोंमें परिवर्तन करके अुनके ट्रेक्टर बनाये गये थे। बड़े बड़े बुलडोजर जमीनको साफ करते थे। अेक सांकलको दो सिरों पर दो ट्रेक्टर चलाते हैं। अिसलिअे सांकलके जोरसे जंगलके बड़े बड़े आठ दस पेड़ भी अेक साथ अुखड़ कर गिर जाते हैं। यंत्रके जोरसे, मनुष्य कितना राक्षसी काम कर सकता है, यह देखकर मैं तो स्तम्भित हो गया। अुसी क्षण मेरे मनमें विचार आया कि गोरोंकी देखभाल भले ही हो, परन्तु अिन ट्रेक्टरों और बुलडोजरोंको चलानेवाले अफ्रीकी लोग ही हैं। अितना प्रचंड राक्षसी काम जिनके हाथों पूरा कराया जाता है, अुनकी बुद्धिका विकास हुअे बगैर नहीं रह सकता। होशियारीके साथ साथ अुनकी महत्त्वाकांक्षा भी बढ़ेगी। भारतीयोंके सहायक बनकर अिन लोगोंने अब तक बढ़अीगिरी और दर्जी वगैराका काम सीखा। दुकानोंमें बैठकर हिसाब भी रखने लगे। माल बेचते खरीदते अुनमें आधुनिकता आ गअी है। अब मूंगफलीकी अिस विराट योजनाको सफल करनेमें जब वे पूरी तरह भाग लेंगे, तब चाहे जैसे कारखाने वगैरा चलानेकी हिम्मत अुनमें पैदा हो जायगी। फिर अिन लोगोंको दबाकर रखना किसी भी राज्यके लिअे असंभव हो जायगा।

कार्यालयमें जाकर हम वहांके मुख्य अधिकारियोंसे मिले। अुन्होंने बारीक जानकारीवाले नकशों पर सारी योजना हमें पहले समझाअी। फिर वे हमारे साथ घूमे। अुनमें से अेक अनुभवीने कहा: "अैसी कोअी योजना हाथमें लेनेसे पहले अुस जगह पानीकी क्या सुविधा है, यह जांच करनी चाहिये। अिस जांच पर और पानीकी सुविधा पर योजनाकी आधी पूंजी लग जाय, तो भी मुझे आपत्तिकी बात मालूम नहीं होगी। बड़े

1342

पैमाने पर खेती करनेके लिअे भूगर्भ-विद्याका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये।" अिस भाअीने दो तीन नकशे हमारे सामने रखकर हमें बताया कि यहांकी भूमि हिन्दुस्तान या युरोपकी भूमि जैसी नहीं। ज्वालामुखोंकी बनाअी हुअी अिस जमीनमें हिन्दुस्तान जैसी खेती नहीं हो सकती। भाअी स्विन्बर्न और कॉफमेनसे अनेक प्रकारकी तफसील जान लेनेके बाद मुझे तो विश्वास हो गया कि अितनी बड़ी योजनामें भी विकेन्द्रीकरणका सिद्धान्त ध्यानमें रखा जाय, तो सब बातोंको देखते हुअे लाभ ही है।

यह सारी योजना देख लेनेके बाद हमने वहीं भोजन कर लिया। अिस योजनाके सिलसिलेमें जमा हुअे दुकानदार आदि जो भारतीय थे, अुनके साथ बैठकर हमने महत्त्वपूर्ण वार्तालाप किया। अुनके आतिथ्यके लिअे धन्यवाद देकर हम वहांसे विदा हुअे। अिस प्रदेशमें काजूके पेड़ भी बहुत हैं। मैं नहीं जानता कि काजूसे तेल निकल सकता है या नहीं। [अिसके छिलकेमें से जरूर तेज तेल निकलता है] परन्तु अिस मेवेके प्रति मुझे बचपनसे पक्षपात है। हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारे पर काजूकी पैदावार बहुत होती है। ये पेड़ अफ्रीकासे ही हिंदुस्तानमें आये दिखते हैं। कहा जाता है कि यह पुर्तगालियोंकी सेवा है।

नचिंग्वेसे लौटते समय मोटरमें से सूर्यास्तकी शोभा कअी तरफसे देखते हुअे यात्राकी बहुत कुछ थकावट हम भूल गये। यहां तक कि रातको सोनेसे पहले मैं छत पर जाकर श्रीमती नलिनीबहन पंतको आकाशके तारे विस्तारपूर्वक बता सका। श्री तात्या अिनामदार भी अिसमें शरीक हो गये।

सवेरे हम किटुंडासे चले। पास ही श्री मेघजीभाअीके दो सायसलके कारखाने थे। अेककी मशीनरी पुराने ढंगकी है, जब कि दूसरेकी अद्यतन है।

सायसलका धंधा पहले पहल युरोपियन लोगोंने शुरू किया था। अिसमें वे लोग कामयाव नहीं हुअे। धीरे धीरे गोरे हट गये और यह धंधा हमारे यहांके लोगोंके हाथमें आ गया।

युगाण्डा ट्रांस्पोर्ट कम्पनीका भी यही हाल हुआ। पहले गोरोंने अुसका ठेका लिया, परन्तु पहले ही साल ७५००० शिलिंगका घाटा खाया। अन्तमें अुन्हें यह ठेका आगाखानी लोगोंको दे देना पड़ा। पहले ही वर्षमें घाटा ७५००० से घटकर ३००० पर आ गया और अुसके बाद तो अब ये हमारे लोग २० या २५ फी सदी मुनाफा बांटते हैं। जहां व्यवस्थाशक्तिमें कोअी जाति अुन्नत हो जाती है, वहां सीधी स्पर्धामें अुसे कौन हरा सकता है? अैसे लोगोंको दवानेके लिअे राज करनेवाली जाति यदि हर बार कानून और मनमानीकी शरण ले, तो अुस जातिका मानस विकृत हो जाता है और समय परिपक्व होते अुसकी अधोगति हो जाती है।

लिंडीसे दारेस्सलाम जानेको रवाना होनेसे पहले दूसरे कितने ही काम करने पड़े। लिंडीके मुसलमान अेक-दो मस्जिदोंका जीर्णोद्धार करना चाहते थे। अिस सिलसिलेमें वे श्री अप्पासाहवको और हमें वहां ले गये। अप्पासाहव तो सभीके आदमी ठहरे। हरअेक काममें अुनकी सहानुभूतिकी आशा रखी ही जाती है और वे भी लोगोंको निराश नहीं करते। कहीं न कहींसे मदद देना अुन्होंने मंजूर किया और मस्जिदका काम आगे बढ़ानेकी सिफारिश की।

लिंडीमें जो सरकारी अिंडियन स्कूल चल रहा है, अुसका संचालन गांवके लोगोंके हाथमें दिया हुआ है। अिस संचालनमें हिन्दू-मुसलमानोंके साथ होनेसे हाल में ही झगड़े पैदा हो गये हैं। अिन झगड़ोंकी तफसीलमें मैं नहीं जाअूंगा, परन्तु अुनसे जो निष्कर्ष निकलते हैं वे अुल्लेखनीय हैं। मुसलमानोंमें जब तक जागृति नहीं होती, तब तक वे कुछ नहीं बोलते। जैसे चलता हो चलने देते हैं। जब तक

यह हाल रहता है तब तक हिन्दू मुसलमानोंकी तारीफ करते हैं कि, "ये लोग कितने अच्छे हैं। मतभेद या झगड़ा है ही नहीं।"

अैसी व्यवस्थामें हिन्दुओंके मनमें मुसलमानोंके विरुद्ध पक्षपात करनेकी बात तो नहीं होती, परन्तु मुसलमानोंकी संस्कारिता और बुद्धि-शक्तिके बारेमें आम तौर पर हिन्दुओंमें विशेष आदर नहीं होता। मुसलमानोंमें जागृति आते ही यह बात अुन्हें खलने लगती है। सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेकर काम करते करते अपनी योग्यताका असर डालने और अपनी कमियां दूर करनेके बजाय वे तुरन्त साम्प्रदायिकता खड़ी कर देते हैं और मुसलमानोंकी हैसियतसे अपने हक आजमानेकी कोशिश करते हैं। "अधिकांश शिक्षक हिन्दू ही क्यों हो? हमारे शिक्षक भी होने चाहियें।" अैसा आग्रह शुरू होते ही हिन्दू शिकायत करते हैं कि, "चाहे जैसे ठोठ या संस्कार-हीन शिक्षक आप भर दें तो काम कैसे चले? हमारे बच्चोंकी शिक्षा खराब हो, यह हम कैसे सहन करें?" शिक्षकोंकी योग्यता नापनेमें हिन्दू या मुसलमान दोनों व्यवस्थापक तटस्थ होकर विचार नहीं कर सकते। धीरजपूर्वक शिक्षकोंको मौका देकर तैयार होने देना चाहिये, अितनीसी बात हिन्दू नहीं समझते। और अितनासा मुसलमानोंके ध्यानमें नहीं आता कि चाहे जैसे शिक्षक ले आनेसे लड़कोंकी तालीम बिगड़ती है। व्यवस्थापक व्यवस्थाका विचार करते समय दोनों जातियोंके बालकोंकी शिक्षाका समान आस्थासे विचार करें और अेक दूसरेके प्रति विश्वास और आदर रखें तो झगड़े मिट जायं। अपने-अपने स्वार्थोंकी तनातनी हो जाने पर लोग अितने अंधे हो जाते हैं कि वे निरा स्वार्थ भी समझना छोड़ देते हैं और आत्मनाश तक चले जाते हैं। अिसमें भी अगर किसीके सगे-सम्बन्धीकी नियुक्तिका प्रश्न आ जाय, तब तो अंधापन जहरीला बन जाता है। जहां किसी अेक जातिके शिक्षकोंका बहुमत हो, वहां दूसरी जाति यह आग्रह रखेगी ही कि "आबादीके अनुपातमें या विद्यार्थियोंके हिसाबसे या रुपयेकी

जो मदद दी गअी हो अुसके लिहाजसे हिन्दू या मुसलमान शिक्षकोंकी संख्या रहनी चाहिये।" (अिसमें अगर कोअी पारसी या अीसाअी शिक्षक आ गये हों, तो अुन्हें अपनी तरफ खींचनेका प्रयत्न दोनों तरफसे होगा ही। और अिसमें से भी झगड़े पैदा होंगे।)

अपनी ही जातिके अंधे स्वार्थका आग्रह रखनेसे किसीका भी स्वार्थ पूरा नहीं होता। केवल अभिमानका पोषण होता है और सार्वजनिक जीवन बिगड़ता है। फिर नेता कहते हैं कि हम लोगोंके लिअे लोकतंत्र अनुकूल ही नहीं है। मेरी जातिके शिक्षकोंका बहुमत हो या अनुपात अधिक हो, तो मैं अवश्य कहूंगा: "शिक्षक योग्यतानुसार नियुक्त होने चाहियें। अनुपातसे क्या होगा?" परन्तु यदि मेरी जातिके शिक्षकोंकी संख्या कम हो, तो मैं तुरन्त कहूंगा कि, "मुझे स्वयं आपत्ति नहीं, परन्तु मेरी जातिका विश्वास आप खो बैठेंगे। फिर अपनी जातिको समझाना मेरे लिअे कठिन हो जायगा। अिसलिअे वस्तुस्थितिको स्वीकार करके समझदारीके साथ अनुपातका सिद्धान्त कायम कीजिये।" अिसमें भी अनुपात जनसंख्याका, विद्यार्थियोंका या रुपयेकी मददका रहे? अिस सवाल पर झगड़ा रहेगा ही।

नोआखालीमें अेक अस्पतालमें बीमारोंको भरती करनेमें भी जातिका अनुपात रखनेका आग्रह मैंने देखा था और जिस कारण अेक खास जातिके गंभीर रोगियोंको भी निकालकर दूसरी जातिके नामके बीमारोंको बिस्तर दिये गये थे। वहांका अधिकारी कहता था, "अिसमें हमारी कुछ नहीं चल सकती। जातिको और किसी तरह समझाया ही नहीं जा सकता।"

अेक जगह तो मुझे मालूम है कि जेलके कैदियोंके मामलेमें भी जातीय अनुपातकी चर्चा हुअी थी! परन्तु अिन तफसीलोंमें मैं यहां नहीं जाअूंगा।

श्री कमलनयनने सुझाया कि, "व्यवस्थापकोंमें हिन्दुओंका चुनाव मुसलमान करें और मुसलमानोंका हिन्दू करें, तो शायद

झगड़ा मिट जाय। थोड़े दिन आजमा कर देखिये।" लोगोंने तुरंत कहा कि, "अैसा करनेसे तो सभी निकम्मे लोग जमा हो जायंगे।" दोनों जातियोंके स्वभावकी कमजोरी अिस जवाबमें पूरी तरह व्यक्त होती थी। अिस तरह जब मामला बिलकुल बिगड़ जाता है, तब दोनों पक्ष अेक पाठशालाकी दो पाठशालाअें बना देते हैं। खर्च दुगुना हो जाता है। पराअी सरकारके पास अलग-अलग ग्राण्टकी अर्जियां भेजी जाती हैं और प्रतिष्ठा खोकर अुसकी आलोचनाअें सुननी पड़ती हैं। अैसी परिस्थितिसे लाभ अुठानेका मौका किसी सरकारने नहीं छोड़ा।

अेक दूसरेको प्रेमपूर्वक और आत्मीयताके साथ अपनाकर और थोड़ा नुकसान अुठाकर भी साथ रहनेमें ही श्रेय है। और साथ रहनेके लिअे दूसरे पक्षके प्रति विशेष अुदार रहना चाहिये, अितनीसी बात अगर दोनोंको सूझ जाय तो ही सच्चा अुपाय हो सकता है।

साढ़े बारह बजे तक मायापच्ची करके हम विमानमें बैठे और डेढ़ बजे दारेस्सलाम पहुंचे। रास्तेमें फिर समुद्रके रंगों और छोटे बड़े द्वीपोंने हमारी आंखोंका स्वागत किया। जिन टापुओंका सिर समुद्रसे बहुत अूंचा नहीं आता, अुन टापुओं पर वनस्पति या मनुष्यकी आबादीकी गुंजाअिश नहीं होती। अैसे द्वीपोंमें से धीरे-धीरे अूपर निकल आनेकी कोशिश करनेवाले कच्चे या बच्चे द्वीप कितने होंगे और लहरोंकी मारसे घिसते-घिसते पानीके नीचे डूब चुके, जीर्ण और वृद्ध टापू कितने होंगे?

गंगा या ब्रह्मपुत्रा नदीके किनारे रेतके जो टापू समय-समय पर तैयार होते हैं, अुन्हें बंगला भाषामें चर कहते हैं। समुद्रके चर नदीके चरोंसे ज्यादा स्थायी होते होंगे। समुद्रके रंगमें अिस बार गुलाबी छटा अधिक थी और अुसमें आकाशमें दौड़नेवाले बादलोंकी छायाने धूपछांह जैसी शकल पैदा कर दी थी।

१४

जंगबारके विविध अनुभव

श्री अप्पासाहब कहने लगे, "झांझीबार अफ्रीकाकी संस्कारदात्री माता है। माता अब वृद्धा हो गअी है। अब अिसके पास पहलेकी-सी शक्ति नहीं रही। परन्तु अिसी कारण हम अुसकी संस्कारिताकी कद्र न करें तो ठीक नहीं।" झांझीबार (गुजरातियोंका जंगबार) हिन्दुस्तानके साथ प्राचीन कालसे सम्बद्ध है। अितिहासके शुरू होनेसे पहलेकी बात छोड़ दें; दो हजार वर्षसे जहाजोंका जो आवागमन जारी है, अुसे भी छोड़ दें; परन्तु वास्को-डी-गामाके हिन्दुस्तान आनेसे पहलेका जंगबार और हिन्दुस्तानका व्यापारिक सम्बन्ध अितिहास-विदित है।

सन् १८३२ के आसपास मस्कतका सुलतान कुछ कच्छी भाटियोंको लेकर झांझीबारमें आकर बसा। तबसे यहां अिस वंशका राज है। किसी समय झांजीबारका राज्य पूर्व अफ्रीकामें खूब दूर तक फैला हुआ था। आज सब अंग्रेजोंके अधीन है। अितना ही नहीं, खुद झांझीबारमें भी सुलतानका अधिकार नाममात्रका है। असली सत्ता ब्रिटिश रेजीडेण्टके हाथमें चली गअी है।

झांझीबार आज लौंगके व्यापारके लिअे मशहूर है। किसी समय अफ्रीकी लोगोंको पकड़ लाकर गुलामोंके रूपमें बेचनेके व्यापारका झांझीबार बड़ा केन्द्र था। पकड़कर लाये हुअे गुलामोंमें से कितने ही मर जाते, कुछ भाग जाते और बाकी बाजारमें बेचे जाते थे। अिस व्यापारके अवशेष ठेठ अभी तक रह गये थे। ब्रिटिश लोगोंका दावा है कि अुन्होंने गुलामीका व्यापार मजबूतीके साथ बन्द न किया होता, तो अफ्रीकाकी कुछ जातियां अब तक नामशेष हो गअी होतीं।

मनुष्यको गुलाम वनाकर घरके कामके लिअे, खेती और वगीचेके लिअे, और राजमजदूरके रूपमें रखनेकी प्रथा प्राचीन कालमें हरअेक देशमें थी। हां, गुलामोंके कष्टोंके मामलोंमें भिन्न-भिन्न देशोंमें फर्क था।

चाणक्यने अपने अर्थशास्त्रमें लिखा है कि आर्योंको दास वनाकर हरगिज नहीं रखा जा सकता — **न आर्यः दासभावं अर्हति**। आजकी दुनियाने यह नियम मनुष्य-जातिके लिअे लागू किया है। अेक मनुष्य दूसरे मनुष्यकी मेहनतसे गलत तौर पर लाभ अुठाकर आड़ेटेढ़े ढंग पर अुसे आज भी गुलामके रूपमें अिस्तेमाल करता है। परन्तु अिसे हम गुलामी नहीं कहते।

दारेस्सलामसे झांझीवार तक केवल ४६ मीलका समुद्री अंतर है। विमानसे अफ्रीकाका किनारा दीखना वन्द होनेसे पहले ही झांझीवार दीखने लगता है। अुड़े और अुतरे, अितनेमें झांजीवार आ जाता है। विमान कंपनीके व्यवस्थापकोंकी चालाकीके कारण वादमें आये हुअे कुछ गोरोंको हमारे वायुयानमें जानेको जगह मिल गअी और वादमें वे कहने लगे कि आप सव अपने सामानके साथ नहीं जा सकते। विमान अितना वोझा अुठा नहीं सकता और जोखम तो अुठाया ही नहीं जा सकता। थोड़ीसी झिकझिकके वाद हमने भलमनसाहत की और तय किया कि हममें से अेक आदमी दोपहरके वायुयानमें आ जाय। हवाअी जहाजवालोंकी चालाकी समय पर पूरी तरह ध्यानमें आ गअी होती, तो हम अैसी भलमनसाहत न दिखाते। शरद पंड्या भी और किसीके विमानमें आ सके। अिस प्रकार हमारा दल तीन टुकड़ोंमें झांझीवार पहुंचा। रहनेके लिअे हम दो घरोंमें वंट गये थे। श्री अप्पा-साहव और नलिनीवहन अपने पुराने मित्र श्री सिधवाके यहां रहने चले गये; जवकि वाकी सव श्री मूलजी वेलजी कंपनीके श्री छगनलालभाअीके यहां ठहरे। सात सात मेहमानोंको अेक साथ घरमें रखना और अुनको सव सुविधाअें देना, यह हमारी वहनें ही कर

सकती हैं। श्रीमती कान्ताबहन और अुनकी देवरानी लीलमबहन अैसी लगती थीं मानो सगी बहनें ही हों। दोनोंने बड़े प्रेमसे हमारा आतिथ्य किया। घरके बच्चोंको अिस तरह आतिथ्यकी तालीम मिलनेसे हरअेक भारतीय कुटुंबमें अिस परंपराकी सुगंध कायम रहती है।

झांझीबार अेक स्वतंत्र दुनिया है। शहरका मुख्य भाग काठियावाड़के घनी आबादीवाले किसी पुराने शहर जैसा है। बनारसकी टेढ़ीमेढ़ी तंग गलियोंके साथ अुसकी सहज तुलना हो सकती है। आजकलकी मोटरें अुसमें से कैसे जायं? कुछ गलियोंमें घरोंकी दीवारोंके कोने जरा जरा काटकर अैसी सुविधा की गअी है कि छोटी मोटरें निकल सकें। बनारसकी गलियोंमें चलते हुअे अकसर आश्चर्य होता था कि अितना टेढ़ामेढ़ापन मनुष्य कैसे पैदा कर सका होगा? यहां भी यही भावना पैदा हुअी।

जहां जायं वहां स्थानदेवता और वास्तुदेवताके दर्शन तो करने ही चाहियें। अिस हिसाबसे हम यहांके सुलतानसे मिलने गये। रेजीडेण्टसे भी मिल आये। हर जगह सभ्यतानुसार कहनेकी बातें कह दीं। सुलतान अधेड़ अुम्रके संस्कारी मजेदार आदमी हैं। जरा-जरा हिन्दुस्तानी बोल लेते हैं। अुनके घरमें स्थानीय कलाकी कुछ वस्तुअें और कुछ अैतिहासिक तसवीरें देखनेमें आअीं। अुनकी सुलताना युरोपियन पोशाकमें थीं। मुझे तो अेशियाअी पहनाव ही ज्यादा रुआबदार और कलायुक्त लगता है। सुलतानके यहांकी सभ्यता प्रभावशाली थी।

रेजीडेण्ट साहबके यहां हमने शिक्षाके बारेमें बातें कीं। अुनके बंगलेसे समुद्रके दर्शन बहुत ही आकर्षक थे। स्थानीय कारीगरोंकी बड़ी-बड़ी वस्तुअें यहां भी रखी हुअी थीं।

झांझीबारमें हमारा कार्यक्रम भरा हुआ होने पर भी आनंददायक था। अेक दिन हम लौंगका कारखाना देखने गये। कुछ लोगोंने कहा था कि बाजारमें जो लौंग मिलते हैं, वे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुअी छूंछमात्र हैं। मैं अिसे मान नहीं सका था। लौंगका तीखापन और

अुसकी खुशबू तेल निकालनेके बाद टिक ही नहीं सकती। झांझीबारमें हमने देखा कि हम जो लौंग खाते हैं, वह असली लौंगके फूलकी लाल कली होती है। अिस कलीके नीचेके डंठल लौंग जैसे ही तीखे होते हैं। कलियां तोड़ लेनेके बाद नीचेके डंठल अिकट्ठे करके अुन्हें अुबाल लिया जाता है और अुसमें से लौंगका तेल या अर्क तैयार करते हैं। तेल निकाल लेनेके बाद जो छूंछ रह जाती है, वह अुस कारखानेमें ही अींधनके तौर पर काममें ली जाती है। मैं यह नहीं समझ सका कि खादके रूपमें अिसका अुपयोग क्यों नहीं होता। अिस छूंछका ढेर करके कहां रखा जाय? और खादके रूपमें कोअी ले जाय, तो अींधनसे सस्ता पड़े या महंगा? यही अिसमें मुख्य सवाल है।

पहले दिन हम वहांका कन्याविद्यालय देखने गये। पुराने जमानेमें स्त्रियां अपने लिअे काममें लिये जानेवाले 'अबला' और 'भीरु' वगैरा विशेषणोंसे खुश होतीं, किन्तु आज आप अिस आदर्शको अपनानेके लिअे तैयार हैं? अिस किस्मका सवाल पूछकर मैंने विद्यालयकी कन्याओंके सामने नये जमानेकी बातें कहीं। हमारी लड़कियां नये विचार समझने और स्वीकार करनेमें बड़ी तेज होती हैं। परन्तु सामाजिक रिवाज, रूढ़ि और बंधन देखते देखते अुनका अचार बना डालते हैं। हमारे लोग शिक्षाका महत्त्व समझने लगे हैं, अिसलिअे जहां तहां कन्याविद्यालय स्थापित हो रहे हैं। परन्तु यह विचार कोअी नहीं करता कि अिस शिक्षा द्वारा कैसी स्त्री तैयार होनी चाहिये। हमारे समाजको कैसी स्त्री चाहिये, यह कोअी नहीं कह सकता। युरोपियन लोगोंमें जो समाज-सेविकाअें हम देखते हैं और वे जैसा तेजस्वी जीवन बिताती हैं, अुसे देखकर हम अुनका आदरपूर्वक गुणगान करते हैं। परन्तु वैसी स्त्रियां हमारे यहां तैयार करनेके लिअे जैसा वातावरण चाहिये, वैसा वातावरण पैदा करनेमें हमारा विश्वास नहीं!

झांझीबारमें अरब लोगोंका असर अधिकसे अधिक पाया जाता है। यह पता नहीं कि अीरानकी तरफके लोग यहां कब आये होंगे। परन्तु

आज जो शीराजी कहलाते हैं, वे तो बिलकुल अफ्रीकियों जैसे ही हो गये हैं। ये लोग स्वाहीली बोलते हैं। मूल निवासी अफ्रीकी लोगोंकी और अिन शीराजी लोगोंकी भाषा और रहन-सहन अेकसी हो जाने पर भी मुझ पर यह असर पड़ा कि अिनके बीच पूरी तरह आत्मीयता पैदा नहीं हुअी। खास व्यक्तित्व न हो और लोग अेक दूसरेमें घुल-मिल जायं तब क्या परिणाम हो, यह समाजशास्त्रका अेक गंभीर प्रश्न है। अिस बारेमें मनमें विचार बहुत आते हैं, परन्तु अुनमें से अभी कोअी अैसी चीज नहीं निकली, जो समाजके सामने रखी जा सके।

यह हुअी शीराजी कहलानेवाले लोगोंके बारेमें बात। यहांके अरब लोगोंकी स्थिति अफ्रीकी लोगों जैसी नहीं है। हिन्दुस्तानी लोगोंकी तरह वे भी यहां व्यापार करते हैं। कारीगर भी हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाकर अुजले रोजगार भी करते हैं। अुनके पास राज-नैतिक महत्त्वाकांक्षा कितनी टिकती है, यह थोड़ेसे परिचयमें हमें क्या मालूम हो सकता है? पुराना वैभव अब रहा नहीं और नअी महत्त्वाकांक्षाका अभी ठीक-ठीक अुदय नहीं हुआ — अैसी हालतमें ये लोग हैं। अेशियनके रूपमें अरब लोग भारतीयोंमें मिल सकते हैं। हिन्दुस्तानके मुसलमान आसानीसे अुनके साथ अेकरूप हो सकते हैं। अिससे जो नये संस्कार और नये बल पैदा हो जायं सो सही। अिस मुल्कके करोड़ों आदिवासियोंकी सेवा करनेका अेकमात्र आदर्श रखनेवाले लोगोंके लिअे बहुत चिन्ता करनेकी कोअी बात नहीं। जहां सेवा करके ही जीवन कृतार्थ करना है, वहां जीवन आसान और सरल बन जाता है। हरअेक समाज मनमें संकुचित महत्त्वाकांक्षा रखे और अुसकी पूर्तिके लिअे षड्यंत्र रचे और जबर्दस्ती करे, तो कठिनाअियोंका अन्त ही नहीं आ सकता। यहांके कुछ अरब नेताओंके साथ बहुत बातें हुअीं। अुनके सामने गांधीजीकी सर्व-धर्म-समभाव और जनताकी जागृतिके

लिअे गांधीजी द्वारा प्रसारित रचनात्मक कार्यक्रमकी वातें हमने कीं। अिनसे वे प्रभावित हुअे।

पश्चिमी संस्कृतिसे अगर हम विज्ञान, समाजसेवा और संगठन-विद्या ले लें और अुनका राजनैतिक आदर्श छोड़ दें—भोग और अैश्वर्यके लोभमें फंसकर नीतिके आदर्शको तिलांजलि दे देनेकी भूल न करें—तो ही हम दुनियाकी सच्ची सेवा करके शान्तिकी स्थापनाके लिअे जरूरी वातावरण तैयार कर सकेंगे।

झांझीवार शहरमें अच्छे पानीकी जरा भी मुश्किल नहीं। शहरके पास ही अेक जगह जमीनमें पानी अितना छलाछल भरा है कि जरा खड्डा खोदा कि वहां पानी अिकट्ठा होकर वहने लगता है। अिस प्रकार अनेक झरने तैयार करके अुनमेंका पानी अेक जगह अिकट्ठा कर लिया गया है। अुस स्थानको चमचम कहते हैं। यहांका पानी पंप करके सारे शहरको पहुंचाया जाता है। झांझीवारके समुद्र-द्वारमें जो जहाज आते हैं, अुन्हें भी अिसी खजानेसे ताजा पानी दिया जाता है। जव ज़हाज पानी लेने नहीं आते, तव फालतू पानी समुद्रमें छोड़ देना पड़ता है।

यह अितना अधिक पानी आता कहांसे है, अैसा प्रश्न मनमें अुठना स्वाभाविक है।

यही मालूम होता है कि अिस ओर वरसात खूव पड़ती है, अिसलिअे वरसातका पानी जमीनकी अनुकूलताके कारण भीतर ही भीतर जमा होता होगा। परन्तु कल्पनाशील लोगोंको अैसी अुत्पत्ति कैसे जंचे? वे कहते हैं कि अफ्रीका महाद्वीपमें यहांसे लगभग २५० मील दूर स्थित पर्वतराज किलिमांजारोका पानी जमीनके नीचेसे, और समुद्रके नीचेसे भी आकर यहां निकल आता है। पानी अितना अधिक अच्छा है कि वह किलिमांजारोसे ही आया हुआ है, यह माननेमें कल्पनाशक्तिको सन्तोप होता है।

झांझीवारमें नारियलके पेड़ वहुत हैं। नारियलके पेड़ोंकी आवादी ही यहां मुख्य मानी जाती है। यहांके कच्चे नारियलके पानीकी खूव

प्रशंसा होती है। हमारे यहां कच्चे नारियलके डांव, अड़सर और शहाळें वगैरा जैसे नाम हैं, वैसे यहां अुसे मडाकू कहते हैं। यहांके लोगोंमें अेक मीठी मान्यता है कि जिसने अेक बार यहांके मडाकूका पानी पी लिया, अुसे अिसे फिर चखने झांझीवार दुबारा आना ही पड़ता है। झांझीवारकी प्राकृतिक शोभा और यहांके लोगोंके आतिथ्यका विचार करते हुअे यहांके मडाकूका अैसा असर हो, तो अिस पर किसीको आपत्ति नहीं हो सकती।

मस्कतके सुलतानके साथ जो भाटिया लोग यहां आये, अुनकी निष्ठा और होशियारी पर सुलतानका अितना विश्वास था कि राज्य व्यवस्थाके अधिकांश विभाग अुन्हींको सौंपे गये थे। अिस डरसे कि हिन्दू धर्मकी रूढ़ियोंका यहां कैसे पालन होगा, ये भाटिया लोग अपने कुटुम्ब-कबीले यहां नहीं लाते थे। सुलतानने अुन्हें बहुत समझाया कि "आपके धर्मपालनकी सारी सुविधायें मैं कर दूंगा। पानीके सुभीतेके लिअे कहिये तो चांदीके नल लगवा दूं।" परन्तु हमारे 'धर्मनिष्ठ' लोगोंने सुलतानकी बात नहीं मानी!

जब यहां अंग्रेजोंका जोर बढ़ा, तब वे यहांके भाटियोंको ही हिन्दू जातिके प्रतिनिधि मानते थे। आजकलके सार्वजनिक युगमें सब हिन्दू जातियोंने मिलकर हिन्दू-मंडलकी स्थापना की। अिस कार्रवाअीके प्रति भाटिया लोगोंमें अभी तक प्रसन्नता पैदा नहीं हुअी है।

हिन्दू जातिका संगठन भी जहां अितना कठिन है, वहां युगधर्म पुकार कर कहता है कि, 'हिन्दुओंका नहीं, परन्तु तमाम हिन्दुस्तानियोंका संगठन करो।' और यहां अफ्रीकामें तो अिससे भी आगे बढ़ कर तमाम अेशियावासियोंका संगठन करनेसे ही काम चलेगा। युगधर्म पहचान कर अद्यतन संगठन करनेके मामलेमें हम दो क्रान्तियोंके बराबर पिछड़े हुअे हैं।

हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होते ही पंडित जवाहरलालजीने तुरंत अेशियाके तमाम देशोंके प्रतिनिधियोंको बुलाकर अुन्हें हिन्दुस्तानका

संदेश सुनाया कि "हम स्वतंत्रता, शांति और बंधुत्वके लिअे प्रतिज्ञावद्ध हैं। जहां स्वतंत्रता नहीं वहां अुसे स्थापित करनेकी कोशिश करनी चाहिये। जहां यह कोशिश जारी हो, वहां भारतकी सहानुभूति और नैतिक सहायता मुमुक्षु राष्ट्रके पक्षमें ही होगी; हम साम्राज्यवादके विरोधी हैं। हम अहिंसा द्वारा संसारमें सर्वत्र बंधुत्व स्थापित हुआ देखना चाहते हैं।"

खून बहाये बिना हम अपनी आजादी जबरदस्त ब्रिटिश साम्राज्यसे ले सके, अिस कारण दुनियामें हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी है। अेशियाके देश आशाकी नजरसे हमारी तरफ देख रहे हैं। अैसी स्थितिमें जब अेशियाके प्रतिनिधि दिल्लीमें अिकट्ठे हुअे, तब अुन्होंने सुझाया कि हिन्दुस्तानको अेशियाका नेतृत्व स्वीकार करना चाहिये। जवाबमें पंडित नेहरूने कहा कि घरके बड़े भाअी या बुजुर्ग होनेकी हमारी आकांक्षा नहीं है। गांधीजीने भी घोषणा की कि हम संगठन करके अेशियाकी राजनैतिक अिकाअी स्थापित करना नहीं चाहते। सारी दुनिया ही हमारी अिकाअी है।

फिर भी अेशियाके देश मदद मांगें, तो हम अिनकार नहीं कर सकते। अेशियावासी सब अेक हैं, अिस प्रकारकी भावना अेशियासे बाहर जा बसे हुअे अेशियावासियोंके मनमें जाग्रत रहेगी ही। आज नहीं तो कल वह अवश्य अुदय होगी। अैसी स्थितिमें अफ्रीकामें रहनेवाले हम 'हिन्दू' या 'हिन्दुस्तानी' आदि संकुचित नाम धारण करें, अिसके बजाय यही अुचित होगा कि हम अेशियाअी या अेशियनका नाम धारण करें।

अफ्रीकामें बसनेवाले कबीले (ट्राअिब्स) अनेक हैं। अिनके बीच आज कोअी राजनैतिक अेकता सिद्ध नहीं हुअी है। फिर भी 'अफ्रीका' के समान नामकी महिमासे ही वे अेक होने लगे हैं। युरोपमें भी अनेक देश हैं, जो आपसमें लड़ते भी हैं। फिर भी संस्कृति और महत्त्वाकांक्षाकी दृष्टिसे अुनका अेक खास रवैया होनेके कारण वे युरोपियन नामसे पुकारे जाते हैं। अब अफ्रीकन और युरोपियन अिन दो शब्दोंकी जोड़का हमारा नाम अेशियन ही हो सकता है।

अिसलिअे आअिंदा हमें अपने लोगोंका संगठन अेशियन नामसे करना चाहिये। और अुसमें हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, गोआ आदि घरका भेद भूलकर अरबस्तान, सीलोन, ब्रह्मदेश, चीन, जापान आदि देशोंके जो कोअी थोड़े या बहुत लोग अफ्रीकामें बसते हों अुन सबको भी अपने साथ लेना चाहिये। पाकिस्तानके प्रति सहानभूति रखनेवाले भारतीय मुसलमानोंको राजी करनेकी खातिर नहीं, लेकिन हमारा स्वाभाविक विशाल नाम धारण करनेके लिअे हम अेशियन नामसे ही पहचाने जायं। अरब आदि हमारे सारे पड़ोसी अिस नामके नीचे हमारे साथ चलनेको रजामंद होंगे। गोअन जैसे हिन्दुस्तानके निवासियोंकी भी, जो अिस मुश्किलमें पड़े हैं कि वे किस नामसे पुकारे जायं, कठिनाअी मिट जायगी।

अेक बात मुझे स्पष्ट करनी चाहिये, क्योंकि मैं अपने विचार छिपाना नहीं चाहता। गोअन लोगोंको मैं सोलह आने हिन्दुस्तानी मानता हूं। वे खुद भी जानते हैं कि वे हिन्दुस्तानी ही हैं। अुनमें से कुछ लोग धर्मसे अीसाअी हो गये और पुर्तगाली लोगोंके कुछ रिवाज अुन्होंने अपना लिये, अितने ही से यह बात नहीं हो गअी कि वे हिन्दुस्तानी नहीं रहे। परन्तु आजकलके लोग सांस्कृतिक राष्ट्रीयता जैसी पवित्र वस्तुको भी ताकमें रखकर अपने क्षणिक स्वार्थका विचार करके कभी घोषणा करते हैं कि वे हिन्दुस्तानी हैं और कभी कहते हैं कि नहीं। नौकरीका स्वार्थ, व्यापारमें मिलनेवाली सुविधाअें, राजनैतिक प्रतिष्ठा वगैराका विचार करके लोग पगड़ी बदलनेको तैयार हो जाते हैं। हिन्दुस्तान जब परतंत्र था और परतंत्र देशके नागरिकोंके रूपमें अफ्रीकामें हमारी हस्ती प्रतिष्ठा-हीन थी, तब कुछ भारतीय मुसलमान अपने अरब होनेका दावा करते थे और अिस प्रकार स्वतंत्र नागरिककी प्रतिष्ठा पाते थे!

मोजांबिक और आंगोलामें सफलता प्राप्तिकी दृष्टिसे कुछ गोअन लोग अपनेको हिन्दुस्तानी न बता कर पुर्तगाल निवासी बतानेमें लाभ देखते हैं। अगर कल भारत सरकार यह घोषणा कर दे कि जो पुर्तगालके निवासी हैं अुन्हें हिन्दुस्तानमें विदेशी बनकर रहना पड़ेगा,

अुन्हें हिन्दुस्तानके नागरिककी हैसियतसे कोअी हक नहीं मिलेंगे, तो में मानता हूं कि यहांके अधिकांश गोअन हिन्दुस्तान जाते ही अैलान कर देंगे कि हम हमेशासे हिन्दुस्तानके ही निवासी हैं। वम्बअी और मंगलोर जैसे शहरोंमें अितने अधिक गोअन रहते हैं और रुपया कमा कर गोवा भेजते हैं कि यह कमाअी बन्द हो जाय, तो वे खुद तो मुश्किलमें पड़ ही जायंगे, परन्तु गोवाकी सरकारको भी अपना कामकाज चलानेमें कठिनाअी अनुभव होगी। अीसाअी लोग अीसाअी हैं, अिससे किसीको अिनकार नहीं। जहां पुर्तगालका राज्य है वहां पुर्तगालके कानून चलेंगे, यह भी जाहिर है। परन्तु अिसे वे नहीं समझते कि अपनी हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताकी वात वे सुविधानुसार वदलते रहें, तो अपनी आत्मप्रतिष्ठा खो वैठते हैं।

पाकिस्तान हिन्दुस्तानका ही अेक भौगोलिक अंश है। देश अेक, संस्कृति अेक और हित-संवंध अेक। अैसा होते हुअे भी अलग हो जानेमें स्वार्थ देखकर कुछ लोगोंने अेक ढोंग चलाया; वह चल गया परन्तु अुससे भयंकर परिणाम पैदा हुअे। जो हुआ सो हुआ। अब अैसी वातोंका विरोध करनेमें सार नहीं। जो आदमी कहे कि, 'मैं हिन्दुस्तानी नहीं', अुसे जवरदस्ती नहीं समझाया जा सकता कि, 'तू हिन्दुस्तानी ही है।' हिन्दुस्तानी होनेके लाभ स्पष्ट होंगे, तव वह अपने आप अपनेको हिन्दुस्तानी कहेगा। वह अपने आपको हिन्दुस्तानी न कहे तो अिसमें हमें क्या हानि है? दो घोड़ोंकी सवारी करनेकी नीति पर चलकर जो दोहरा लाभ अुठाना चाहते हैं, अुन्हें हम अुदार वनकर लाभ अुठाने दें तो अन्तमें हमें लाभ ही है। यह लाभ अगर हम न देख सकते हों तो किसी दिन अुन्हें कह दें कि 'दोनों तरहके लाभ आपको नहीं मिल सकते।' अिससे अधिक हमारे हाथमें क्या है? अगर हममें दूरदृष्टि हो तो हम देख सकेंगे कि लोगोंको दोहरा लाभ अुठाने देनेमें हमारा सच्चा या विशेष नुकसान नहीं है। किसी दिन हमें अिससे लाभ ही होगा। और अगर न हो तो भी क्या हुआ? कोअी मनुष्य स्वार्थसे प्रेरित होकर सुविधाके समय सत्य बोले और अुससे लाभ अुठाये, तो

हम अुसका अिनकार क्यों करें? हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे भारत सरकारसे कुछ लाभ चाहेंगे और अुठायेंगे। और साथ ही साथ पाकिस्तानके प्रति निष्ठा रखकर सन्तोष मानेंगे। गोअन अीसाअियोंकी भी यही बात है। यहांके लोग मानते हैं कि गोअन आदमी अीसाअी ही होता है। सही बात यह है कि गोअन अीसाअी गोवामें सिर्फ ४५ प्रतिशत हैं। हिन्दू वहां ५२ फी सदीसे ज्यादा हैं।

सिक्ख लोगोंमें भी कुछ कहते हैं, 'हमारा धर्म अलग है, हमारा समाज अलग है, हम हिन्दू नहीं हैं।' मैं खुद मानता हूं कि सिक्ख धर्म हिन्दू धर्मका ही अेक पन्थ है। अंग्रेजोंके राज्यकालमें मुसलमानोंको जब ज्यादा अधिकार मिलने लगे और हिन्दू रहनेमें घाटा ही दिखाअी दिया, तब सिक्ख लोगोंने घोषणा की कि, 'हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' अुन्हें अिस तरह कहने देनेमें हिन्दुओंको कोअी हानि दिखाअी नहीं दी। मुसलमान भी कोअी अेतराज नहीं कर सके। अिस प्रकार सिक्ख, जो सौ फी सदी हिन्दू थे — और अब भी हैं — अलग हो गये। अैसी हालतमें कोअी सिक्ख जोर देकर कहे कि मैं हिन्दू नहीं, तो मैं जरा भी आपत्ति न करूं। कुछ सिक्ख कहने लगे हैं, 'धर्मसे हम अलग हैं, समाजके रूपमें हम अेक हैं, हमारी राष्ट्रीयता हिन्दू — अथवा हिन्दुस्तानी है।'

मन्दिरोंके देव-द्रव्यको नये कानूनके शिकंजेसे बचानेके लिअे चंद जैन भी कहने लगे हैं कि, 'धर्मकी हैसियतसे हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' ज्यों ज्यों कानून बढ़ेंगे, त्यों त्यों धर्म, समाज, नागरिकता और राष्ट्रीयताके मामलोंमें यह खेल जारी रहेगा। कोअी कहेगा: 'हम फलां हैं।' कोअी कहेगा: 'हम नहीं हैं।' यह गड़बड़ी बढ़ते-बढ़ते अन्तमें धर्मोंका महत्त्व अपने आप नष्ट हो जायगा। 'कोअी व्यक्ति या समूह दो राष्ट्रोंके अेक साथ नागरिक रहें तो हर्ज क्या?' अैसा पूछनेवाले लोग पैदा होने लगे हैं। वे नहीं समझते हैं कि दोनों राष्ट्र स्थायी मित्र हों या सदाके लिअे अहिंसाकी नीति स्वीकार करते हों, तो ही यह चीज बन सकती है। हिन्दुस्तान और पुर्तगालके बीच लड़ाअी

छिड़े और अनिवार्य फौजी भर्ती शुरू हो जाय, तब मनुष्य दो में से अेक ही देशका नागरिक रह सकता है। जब सब युद्ध मिट जायंगे और सब जगह मित्रता या बन्धुत्व स्थापित हो जायगा, तब मनुष्य विश्व-नागरिक बन सकेगा।

आज भी हर कोअी मनुष्य विश्व-नागरिक बन सकेगा — अिस शर्त पर कि वह घोषणा करे कि, 'किसी भी देशके नागरिकका कोअी विशेष अधिकार मुझे नहीं चाहिये। जिम्मेदार मनुष्यकी हैसियतसे मैं अपने तमाम फर्ज अदा करूंगा। और अगर अुनसे ज्यादा या संकुचित फर्ज मुझ पर लादे जायंगे और वे मेरे विश्व-बन्धुत्वमें बाधक होंगे, तो मैं अुन फर्जोंसे अिनकार कर दूंगा और अुससे पैदा होनेवाली तमाम सजायें खुशीसे सहन करूंगा।'

आज मैं पाकिस्तानी लोगोंके साथ, हिन्दुस्तानके मुसलमानोंके साथ, सिक्ख लोगोंके साथ, गोअन या जैन लोगोंके साथ कोअी झगड़ा नहीं करूंगा। मेरी अिस नीतिसे मैं अुन्हें विचार करनेवाले बना सकूंगा। झगड़ा करनेसे मेरी और अुनकी दोनोंकी प्रगति रुक जायगी और तीसरे ही लोग अिससे लाभ अुठायेंगे। मैं दुनियाके सामने नाहक हंसीका पात्र क्यों बनूं? हम सब अेशियन हैं, अेशियन कहलायें, अिसमें जिसे शरीक होना हो हो जाय; न होना हो वह न हो। समय आते सबको शामिल होना ही पड़ेगा। तब तक यही अुत्तम नीति है कि हम धीरज रखें। और हम दूसरा कर भी क्या सकते हैं कि जिससे सार निकले?

जहां जायं वहांकी संस्थायें देखनेका रिवाज होता ही है। झांझीबारमें अेक अफ्रीकन वेलफेयर सेन्टर हमने देखा। अुसकी अिमारत अच्छी है। लोग अुससे कितना लाभ अुठाते हैं सो भगवान जाने। 'जनताके हितमें कुछ पैसा खर्च कर देनेसे हमारा अच्छापन दिखेगा' — अिस वृत्तिसे अुदासीन सरकारकी तरफसे अैसे काम किये जाते हैं। वहां अेक दवाखाना (क्लिनिक) हमने देखा। कोअी डॉक्टर न मिलनेके कारण वह बंद पड़ा है! हिन्दुस्तानी डॉक्टरोंको सरकार युरोपियन डॉक्टरों जितना वेतन या

अधिकार नहीं देती। कोअी डिग्रियां लेकर पास हुआ हो और सरकारको वह डिग्री जंचती न हो, तो अैसे आदमियोंको सरकार धंधा भी नहीं करने देती। मराठीमें अेक कहावत है, 'मां घरमें खिलाये नहीं और पिता बाहर जाने दे नहीं'—तो अैसी हालतमें बालक करे क्या? यही हालत यहांकी जनताकी हो गअी है। सरकारको अिस स्थितिसे शर्म नहीं आती और जनताको वह असह्य नहीं लगती, यह देखकर मनमें बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ।

जब पास ही अेक प्रसूतिका अस्पताल हमने देखा और यह नजर आया कि वह अच्छी तरह चल रहा है, तब वह दुःख हम कुछ भूल गये। अिस प्रसूतिगृहमें अेक चौंसठ वर्षकी बूढ़ी युरोपियन नर्स काम करती है। मैंने मान लिया कि यह बुढ़िया किसी मिशनकी तरफसे काम करती होगी। मैंने अुससे पूछा, "आप किस मिशनकी हैं?" अुन्होंने कहा कि, "मैं अिस अस्पतालकी ही हूं।" अिस वृद्धाके कार्यकी लोगोंमें कद्र है। यह अस्पताल बनाया अेक दो मुसलमानोंने और अुसे चलाती है यहांकी हिन्दू, मुसलमान आदि सारी जनता। अिस प्रकार मिल कर काम होता देखकर बड़ा आनन्द हुआ।

अेक रातको हिन्दू-मंडलकी तरफसे व्यायामके प्रयोग हुअे। प्रयोग अच्छे थे। हाथोंमें मशालें लेकर चलनेके खेल मजेके दिखाअी देते हैं। अैसा नहीं लगता कि अुनमें व्यायामका कोअी विशेष तत्त्व हो, परन्तु नाचती हुअी ज्वाला देखनेका आनंद तो है ही।

दारेस्सलाम और झांझीबार दोनोंमें मेरे लिअे अेक बड़ी दिक्कत पैदा हो गअी। मेरे बनावटी दांतोंकी बत्तीसीमें (सच कहूं तो अूपरकी षोडशीमें) अेक दरार पड़ गअी। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी। खाते समय होनेवाली कठिनाअी सह ली जाती, परन्तु खाते या बोलते समय दरारकी नोकसे जीभ कट जाती थी। यह दुःख हदसे ज्यादा हो गया। अैसे दत्तक दांतोंकी मददके बगैर खाया नहीं जाता और सभाओंमें साफ तौर पर बोला नहीं जाता। बोलने लगें तो कष्ट

हो, और यहां देश देखनेके सिवाय हमारा मुख्य काम तो खाना और बोलना ही था। भोजनवीर और भाषणवीर अिस तरह घायल हो जाय, तब जंगमें क्या करे? अंतमें जंगबारके अेक भले गोरे दंत-वैद्यने छुट्टीके दिन होते हुअे भी मेरी बत्तीसी ठीक कर देनेका काम हाथमें ले लिया और कुछ ही घंटोंमें वह ठीक कर दी।

अितना कष्ट अुठानेके बाद ही गांधीजीकी सलाहका महत्त्व मनमें बैठा कि समझदार आदमीको अेक फालतू चश्मा और दांतकी फालतू बत्तीसी हमेशा साथ रखनी चाहिये।

झांझीबारके टापूकी बावन मीलकी लंबाअी और २४ मीलकी चौड़ाअीमें आकर्षक दृश्योंकी अितनी बहुतायत है कि अुसे सौंदर्यका संग्रहालय कह सकते हैं। अेक दिन हम कूम्बाका समुद्रतट देखने गये। बड़े-बड़े शंख, कौड़ियां और सीप देखकर हम आश्चर्यचकित हो गये। प्राणी-सृष्टिमें दो विभाग दिखाअी देते हैं। मनुष्य और पशु-पक्षीकी हड्डियां अुनके शरीरके अंदर होती हैं और मांस अूपर चिपटा रहता है। जब कि सीप और शंखोंमें मांस अंदर होता है और हड्डियां चमड़ी और घरके स्थान पर होती हैं। कछुअेका भी यही हाल है।

वनस्पति सृष्टिमें भी क्या अैसा नहीं है? छुहारेमें हड्डीके स्थान पर माना जानेवाला बीज पेटमें होता है और खानेका स्वादिष्ट भाग बाहर होता है। आमका भी यही हाल है। जब कि बादाम और अखरोट वगैरा फलोंमें मींगी अंदर होती है और अुसे सुरक्षित रखनेवाला कवच बाहर होता है। नारियलका हाल अिससे भी अलग है। अुसका मगज या खोपरा सबसे अंदर होता है। टोकसी अुसके अूपर और टोकसीकी रक्षाके लिअे सबसे अूपर जटा होती है। अूंचे पेड़ परसे फल गिर जाय तो टोकसी (खोपड़ी) के टुकड़े टुकड़े ही हो जायं। अुसकी रक्षाके लिअे कुदरतने जटाके रेशोंकी गद्दी बना दी है!

अिस ओरके समुद्र तटके पत्थर विचित्र प्रकारके होते हैं और लहरें अिन पत्थरों पर प्रहार करके अुन्हें अनेक चित्र-विचित्र आकार

दे देती हैं। देखकर मनमें खयाल आता है कि लहरोंकी अिस कारीगरीकी कद्र करें या अिनके धीरजकी?

झांझीबारमें अेक गुफा है। अुसके भीतर, पुराने जमानेमें, पकड़कर लाये गये गुलाम रखे जाते थे। हम आम या आलूका ढेर लगाते हैं और अुसे बेचनेसे पहले जो सड़ जायं अुन्हें फेंक देते हैं और फेंकते समय कहते हैं कि 'बहुत नुकसान हो गया', अिसी तरहकी यहां रखे गये गुलामोंकी स्थिति थी। अुनकी रहन-सहनकी हालतमें सुधार कौन करे? जानवरोंसे भी खराब हालतमें अुन्हें रखा जाता था। बस, जो मर गये अुन्हें फेंक दिया और अुनकी कीमत दूसरे जीते रहनेवालों पर चढ़ा दी; हो गया।

झांझीबारका म्यूजियम दो अिमारतोंमें बंटा हुआ है। बनानेवालेने अिस पर बड़ी मेहनत की है। लिविंग्स्टन जैसे पादरी संशोधकोंके अितिहासके साधन यहां मिलते हैं। मनुष्य-सृष्टि, प्राणी-सृष्टि और समुद्र-सृष्टि तीनोंके अवशेष यहां मिलते हैं। तीनोंके जीवनक्रमके अध्ययनके साधन यहां अुपलब्ध हैं। परन्तु अैसा नहीं लगता कि अिन म्यूजियमोंको जीवित अर्थात् अद्यतन रखनेकी कोअी परवाह करता हो। आज अैसे म्यूजियमोंको म्यूजियम न कहकर म्यूजियमोंके ममी कहना चाहिये। हिन्दुस्तानमें अधिकांश म्यूजियम अिसी प्रकार ममीका रूप धारण करके पड़े हैं। हमारा पुराना साहित्य, हमारे धर्म, कितने ही रीति-रिवाज और हमारी संस्कृतिके कुछ अंग कभीसे मृत बनकर नष्ट होनेके किनारे खड़े हैं। जब तक रूढ़िवादियोंका आग्रह कायम था, तब तक ये तमाम चीजें ममीके रूपमें भी सुरक्षित रहती थीं। अब अुतनी सुरक्षितता भी नहीं रही। बहुतसी चीजें गिरती जा रही हैं, सड़ती जा रही हैं या मिटती जा रही हैं। अितनी ही आशा रखें कि अब अुनका खादके रूपमें अुपयोग हो सकता है।

पासका पैम्बा द्वीप झांझीबारका अुपनगर कहा जा सकता है। दक्षिणकी तरफका माफिया बहुत दूर है, अिसलिअे झांझीबारके जीवन

पर अुसका कोअी असर नहीं। समुद्रका किनारा, अिस किनारे पर स्थित शाम्वे (वाड़ियां) और अिन वाड़ियोंमें रहनेवाले हरअेक वंशके लोग सव मिलकर झांझीवारकी शोभा पैदा करते हैं। और लौंगके पेड़ अुस शोभामें वृद्धि करके सारे टापूको सुगंधित करते हैं।

अेक दिन शामको, दिन भरके कार्यक्रमोंकी थकावट मिटानेके लिअे हम समुद्रके किनारे गये। वहां अेक भव्य राजमहल खंडहर होकर पड़ा है। अुसे मरूवी महल कहते हैं। भव्य मकानोंके खंडहर भी भव्य दिखाअी देते हैं। और जव अिन खंडहरोंके वीचमें वृक्ष और लतायें अुग आती हैं और अिन खंडहरोंकी रक्षा करनेका प्रयत्न करती हैं, तव अुनकी शोभा अितिहासके पठन जैसी ही आकर्षक होती है। अिस खंडहरके आसपास योजनापूर्वक लगाये गये पुराने पेड़ और अुनके वीचमें अपने आप अुगे हुअे दूसरे पेड़ सारे वायुमंडलकी गंभीरतामें वृद्धि कर रहे थे। अमराअी हो या नारियलकी वाड़ी हो, अपने-अपने परिपक्व वातावरणका मनुष्यके हृदय पर प्रभाव डाले वगैर नहीं रहती। अिस स्थानको देखनेके लिअे आये हुअे हमारे जैसे और लोग भी वहां मिले। हमें पहचाननेवाले होनेके कारण अुन्होंने वातें छेड़ीं।

हमें महसूस हुआ कि प्रकाश और अंधकारके वीच गंभीर और पवित्र वने हुअे अिस जल और स्थलके वीचके स्थानकी कद्र प्रार्थनासे ही हो सकती है। हम समुद्रके किनारे जाकर वैठ गये। सूर्यास्तके वादका प्रकाश मिट रहा था। लाल संध्या विदा ले रही थी। हमारी प्रार्थना शुरू हुअी। प्रार्थनाके अंतमें वहनोंने भावपूर्ण भजन गाये। हमें यह देखकर विशेष आनन्द हुआ कि हमारी प्रार्थनाके साथ ताल देनेके लिअे किनारेके सात दीपस्तंभ अपनी सफेद और लाल रोशनी झक्झक् झलका रहे थे। प्रार्थनाका असर हृदय पर गंभीर हुआ और समुद्रकी हवाके कारण वह वहां अंकित भी हो गया।

किसी भी स्थान पर दो-चार दिन रह कर अधिकसे अधिक प्राप्त किया हो, तो जिस घरके लोगोंके आतिथ्यके कारण यह सव कुछ

आनंदपूर्वक हो सका, अुन लोगों — बच्चों और बड़ों दोनों — से बिदा लेते समय बुरा लगता है। परन्तु ये प्रसंग भी रोजमर्राके हो जानेके कारण मनका विषाद हंसकर निकाल देनेकी कला भी आ जाती है। अिन सब लोगोंके साथ पत्रव्यवहार रखनेको जी तो बहुत चाहता है परन्तु यह हो कैसे? अकसर पुराने दिनोंकी याद करते समय बिजलीकी चमककी तरह अनेक व्यक्तियोंका स्मरण ताजा हो आता है और मनमें जिज्ञासा अुठती है कि क्या भिन्न जीवन-प्रवाहवाले वे सब लोग भी हमें किसी तरह कभी-कभी याद करते होंगे?

१५

मोरोगोरो

हवाअी अड्डे पर सारा झांझीबार अुलट पड़ा था। अितनी बड़ी संख्याके लोगोंके साथ बातें करनेके प्रयत्नमें किसीके साथ बातें न हो सकीं और परिणामस्वरूप मनमें विषाद ही रहा। वायुयानमें हम घरके ही नौ जने थे। अिसलिअे सारा वातावरण विशेष रूपसे घरके जैसा हो गया। छोटासा सफर। हरअेक खिड़कीमें से दिखाअी देनेवाली सुंदरता देखनेके लिअे अेक दूसरेको बुलाते बुलाते समय पूरा हो गया। और हम फिर वापस घर, यानी जयंतीभाअीके घर, पहुंच गये। दो दिन वहां रह कर और सारे कार्यक्रम बाकायदा पूरे करके बिदाका वही अनुभव किया; और १५ जूनको रातकी गाड़ीसे रवाना हुअे। अिस बारकी यात्रा किनारे किनारे न थी, परन्तु अेकदम अफ्रीका महाद्वीपके पेटमें घुसनेकी थी।

दारेस्सलामसे मोरोगोरो और वहांसे डोडोमा तकका सफर रेल द्वारा पश्चिमसे पूर्वकी तरफ हुआ। फिर वहांसे मोटरके रास्ते कअी तरहके नये-नये अनुभव करते करते हम अुत्तरकी तरफ जाकर ज्वालामुखीके मुंह ङ्गोरोंगोरो गये। वहांसे आगे मोशी अरुशाके पासके

किलिमांजारो और मेरुके अुत्तुंग शिखरोंकी अेक प्रकारसे प्रदक्षिणा करके, अम्बोसेलीके सूखे हुअे तालावके आसपासके अभयारण्यमें रहनेवाले वन्य श्वापदोंके साथ अेक रात बिताकर अुनके दर्शनसे धन्य होकर अुत्तरमें वापस नैरोबी जा पहुंचे।

दारेस्सलामसे श्री डी० के० पटेल साथ आये। हमारे ट्रेड कमिश्नर (वाणिज्य दूत) श्री शान्तिलाल पटेल भी साथ थे। अिस ओरका प्राकृतिक सौन्दर्य बिलकुल अलग ही था। और जमीनकी पैदावार भी दूसरी ही थी। तरह-तरहके पहाड़ देखते-देखते सुबहके साढ़े छः बजे मोरोगोरो पहुंचे। श्री शिवाभाअी पटेलके यहां डेरा था।

मोरोगोरोके पहाड़ अबरकके बने हुअे हैं। अिस पहाड़में श्रीमती विलिस नामकी अेक युरोपियन महिलाने अेक होटल खोल रखी थी। मानो मनुष्योंके लिअे मंजिल हो! पास ही मोरोगोरो नदीका अुद्गम भी है। वहांसे आगेकी घाटियां और अुसके बादके मैदानका विस्तार अच्छा मालूम होता था। महिला अितनी होशियार है कि कुछ गोरे यहांकी स्वास्थ्यप्रद हवा और अुनकी ममत्वपूर्ण सेवासे लाभ अठानेके लिअे अपने छोटेसे छोटे बच्चोंको भी कुछ समयके लिअे यहां छोड़ जाते हैं।

नये ही बने हुअे सिनेमाघरमें मोरोगोरोके लोगोंके सामने हमारे भाषण हुअे।

यहांसे हम ३२ मील पर मगोले हो आये। जिस चीजको देखनेके लिअे हम तरस रहे थे, वह चीज हमें वहां मिली। दुकान चलानेके लिअे नहीं, किन्तु बाकायदा खेती करनेके लिअे कुछ होशियार गुजराती भाअी यहां आकर बस गये हैं। ये लोग यहां ५००-५०० अेकड़के ३२ खेतोंमें सहयोगी ढंग पर खेती कर रहे हैं। जिस प्रकार हिन्दुस्तानियों और अफ्रीकियोंके बीच जो जीवन-विनिमय होता है, वह दोनोंके लिअे सचमुच पोषक हो सकता है। हमारे अिन किसानोंने कितनी होशियारीसे अिस कामको जारी रखा है! सरकारी नीतिके कारण अुनकी कठि-नाअी कैसे बढ़ गअी है, भारत सरकार और भारतके रूअीके व्यापारी

जरासी राहत दें तो कितनी बढ़िया मदद हो सकती है — ये सब बातें तफसीलसे प्रमाण और अुदाहरणों सहित और जोशके साथ समझानेका काम श्री जेठाभाअी पटेलने किया। श्री जेठाभाअीने जीवनकी धूपछांह बहुत देखी है और सब तरहसे मंजे हुअे आदमी हैं।

मोरोगोरोके पास हमने अेक सुन्दर नर्सरी देखी — बच्चोंकी नहीं, परन्तु फलफूलवाले पौदोंकी। अिस प्रकार पहाड़में घूमनेमें जो आनन्द आता है, अुसे अनुभवी ही जान सकता है।

मोरोगोरो छोड़ते-छोड़ते वहांके महाराष्ट्री डॉक्टर म्हैसकरके यहां हमने फलाहार किया। कोअी डॉक्टर मिले तो अुस देश और खास तौर पर अुस स्थानकी जनताके बारेमें, अुसके बीच फैले हुअे रोगोंके विषयमें और साधारण जनताके ज़ीवट ('वैटेलिटी') के बारेमें मैं पूछे बिना नहीं रहता। अूपर-अूपरसे अच्छे लगनेवाले अनेक समाजोंके बारेमें भीतरी बातें जाननेमें आती हैं, अिससे कभी-कभी दुःख होता है जरूर। परन्तु समाजके निरीक्षण और अध्ययनके लिअे यह सारी चीज कीमती होती है। अैसी जानकारी अिकट्ठी करते समय किसी भी व्यक्तिके बाबत न पूछने-कहनेका धर्म दोनों ओरसे अच्छी तरह पाला जाता है। हरअेक डॉक्टर अपने बीमारोंकी बातें गुप्त रखनेको बंधा होता है। कुछ डाक्टर यह चीज नहीं जानते। तब अुन्हें अुनके अिस धर्मका भान कराना पड़ता है। डॉ० म्हैसकर जिम्मेदार आदमी दिखाअी दिये, अिसलिअे अुनके साथ अुचित मर्यादामें रहकर मैं बहुतसी बातें जान सका।

तारीख १७ की शामको हमने मोरोगोरो छोड़ा। आसपासके पहाड़ हमारे साथ हमें पहुंचाने दूर तक आये थे और अुनके सिर पर सिंहकी तरह छलांग मारता हुआ चंद्रमा भी हिरणको पेटमें रखकर हम पर नजर रखता था।

१६

डोडोमा

रेलगाड़ीको क्या? आधी रातके बाद साढ़े तीन बजे डोडोमा आकर खड़ी हो गअी! अैसे समय हम गाड़ीसे अुतरें और गांवके लोग आकर हमारा सत्कार करें, अैसी व्यवस्था राक्षसोंको तो क्या, भूतोंको भी मंजूर न हो। अिसलिअे हमने रेलवालोंसे अिंतजाम कर रखा था कि हमारा डब्बा यहीं तोड़ कर गाड़ी चली जाय। परन्तु अितनी सुविधा हासिल करनेके लिअे हमें पहले दर्जेके टिकट होने पर भी दूसरे दर्जेमें सफर करना पड़ा। अुसमें सुविधाअें कम नहीं थीं। प्रतिष्ठा कम हो जाने पर हमें अेतराज नहीं था। सवेरे सात बजे श्री दारा कीका, अुनकी पत्नी शहेरबानू और कुछ और नगरनिवासी हमको लेने आये। हममें से अेक दल श्री दारा कीकाके यहां रहा। बाकीके हम, सब तरह सुभीतेवाली डोडोमा रेलवे होटलमें रहे। हां, खर्चकी दृष्टिसे हम भी ग्रामवासियोंके ही मेहमान थे।

हिन्दुस्तानमें क्या और यहां अफ्रीकामें क्या, पारसी जाति संख्यामें छोटी, लगभग नगण्य होने पर भी केवल अपनी भलाअी, चतुराअी और सर्व-समाजितासे अेकदम निखर आती है और अपनी सुगंध फैलाती है। अुसमें केवल व्यापारीकी दूरंदेशी नहीं होती; अिन्सानियतका भी बहुत बड़ा हिस्सा होता है। पारसी लोग देहातमें रहते हों, शराबकी दुकान चलाते हों और काफी नफा कमाते हों, तो भी आसपास किसीका दुःख देखते ही तुरंत पिघलकर मदद करने अवश्य दौड़ जायंगे।

कुछ लोग रुपया कमाते हैं, सो केवल पूंजी बनानेके लिअे, जमा करके रखनेके लिअे, और पृथ्वीमाताका दिया हुआ धन अुसीके पेटमें फिर गाड़ देनेके लिअे; कुछ लोग कमाते हैं अैश-आराम, मौज-शौक

और अशोभनीय व्यसनोंमें अुड़ा देनेके लिअे; कुछ कमाते हैं अपने कुटुम्बियों और वहुत हुआ तो जातिवालोंको हर प्रकारकी मदद देनेके लिअे; अैसे लोग तो विरले ही होते हैं जो जातिपांति, धर्म या देशका कोअी भेद रखे विना, जहां भी दुःख या कठिनाअी हो वहीं अुपयोगी बननेके लिअे धन कमाते हैं। पारसी जाति आरामसे रहनेमें विश्वास करती है। अपनी जातिके गरीबोंको दान भी काफी और व्यवस्थित रूपमें देती है। परन्तु यहीं न रुक कर वह दूसरे धर्मों, दूसरी जातियों और दूसरे देशोंके लोगोंको भी दानके समय भूलती नहीं। अिसीलिअे महात्मा गांधीने पारसियोंको 'परोपकारी पारसी' कहा है।

हिन्दुस्तानमें पारसियोंने अेक और तरह भी अपना स्थान सुशोभित किया है। वे हिन्दू और मुसलमान दोनोंमें आजादीसे घुलमिल सकते हैं, और अिस तरह कभी दोनोंके बीच प्रेम-शृंखलाकी कड़ी बन जाते हैं। खाने-पीनेमें वे मुसलमानोंके साथ छूटसे शरीक हो सकते हैं और धार्मिक भावना और तत्त्वज्ञानकी खोज अिन दो बातोंमें वे हिन्दुओंमें अनेक प्रकारसे अेकरूप हो सकते हैं। अीसा मसीहके अुपदेश और मिशनरियोंके कार्यकी भी वे कदर करते हैं और कुशल व्यापारी होनेके कारण हरअेक सरकारके साथ मीठा संबंध भी रखते हैं।

शिक्षाका महत्त्व अच्छी तरहसे जाननेके कारण जहां व्यावहारिक शिक्षाका सवाल आता है, वहां पारसियोंका कदम आगे ही रहता है। चूंकि ये लोग मानते हैं कि अिहलोकका जीवन सुखी बनाया जाय और मनुष्य मनुष्यके बीचका संबंध मिठासभरा बनाया जाय, अिसलिअे पारसियोंका जीवन हिन्दुस्तानके लोगोंको कभी खटका नहीं। सर्व-समाजिताके युगधर्ममें पारसियोंका जीवन अुपयोगी और शोभायुक्त है।

अैसी जातिको हरअेक सामाजिक अवसर पर अपनाना हमारा फर्ज है। अगर हिन्दू संकीर्ण वृत्ति रखकर पारसियोंको या अीसाअियोंको

अपनानेमें संकोच रखेंगे, तो वे साबित कर देंगे कि अुनके विरुद्ध मुसलमानोंके जो आक्षेप हैं वे सच ही हैं।

अूपरकी सब बातें सिर्फ अिसीलिअे लिखनेको प्रेरित नहीं हुआ हूं कि डोडोमामें अेक सज्जन पारसी परिवारके साथ परिचय हुआ। किन्तु अुससे भिन्न कारण है। वह अिस प्रकरणमें यथास्थान आयेगा।

श्री दारा कीकाके यहां बढ़िया नाश्ता करके हम डोडोमाका खनिज संग्रहालय — जियोलॉजिकल म्यूजियम देखने गये। यह संग्रहालय कअी प्रकारसे याददाश्तमें रखने लायक है। अब तक मैंने जितने संग्रहालय देखे, अुनमें से कुछ तो अिस तरहके थे, जो शुरूके अुत्साहमें जितने बन गये सो बन गये और बादमें अुनमें कोअी वृद्धि नहीं हुअी। अिन्हें मैंने ममी-म्यूजियम नाम दिया है (यानी जिनके प्रति अुत्साह मर गया है, परन्तु जिनका कलेवर ज्योंका त्यों कायम है।) दूसरे कुछ म्यूजियम समय-समय पर वृद्धि द्वारा अद्यतन किये जाते हैं। परन्तु अुनका कोअी अुपयोग करता है या नहीं, अिसके बारेमें व्यवस्थापक अुदासीन होते हैं। यह खनिज संग्रहालय अैसा था जिसका अुपयोग ज्ञानकी अुपासनाके लिअे और साथ ही सरकार और जनताको जानकारी देनेके लिअे व्यवस्थापक खुद ही करते थे।

टांगानीकामें खनिज संपत्ति बेशुमार है। हीरे और सोनेकी खानें तो हैं ही। किन्तु यह चीज सचमुच संपत्ति नहीं है, परन्तु संपत्तिके प्रतीकके रूपमें काममें ली जाती है। जिन खनिज पदार्थोंका व्यवहारमें अधिकसे अधिक अुपयोग है, वे पदार्थ यहां अिकट्ठा करके रखे गये हैं और अुन पदार्थों पर कअी प्रकारके प्रयोग भी हो रहे हैं। खनिज पदार्थोंको सान पर चढ़ाकर पॉलिश करना, तेजाबमें डालकर अुनकी खूबियां जांचना, भट्टीमें पकाकर अुनमें होनेवाले फेरबदल देखना, हरअेक पदार्थका पृथक्करण करके खोज निकालना कि अुसमें से क्या क्या मिल सकता है — वगैरा अनेक प्रकारके प्रयोग यहां हो रहे हैं। सी० आअी० डी० विभागके पुलिसवाले जैसे अभियुक्तको धमकाते हैं,

फुसलाते हैं, नशेमें चूर कर देते हैं या कओी तरहसे तंग करते हैं और युक्ति-प्रयुक्तिसे अुसका सब रहस्य जान लेते हैं, अुसी तरह ये विज्ञानशास्त्री जड़ पदार्थों, वनस्पतियों और प्राणियोंके पीछे पड़े रहते हैं। यह लगन अेक बार लगी कि जन्मभर अुससे चिपटे ही रहते हैं। अैसे लोगोंने ही मानवजातिके ज्ञानमें कीमती वृद्धि की है और भौतिक अुन्नतिको गति प्रदान की है। अैसे प्रयोगों पर प्रयोगशालाओंके और दूसरे बहुतसे खर्च करने पड़ते हैं। जो जाति यह खर्च करनेको तैयार नहीं होती, वह किसी भी क्षेत्रमें आगे नहीं बढ़ सकती। अिस म्यूजियममें किस किस किस्मकी चीज रखी गओी है और अुनमें से कौनसी वस्तुअें दुर्लभ हैं अिसकी सूचियां देनेका यह स्थान नहीं है। हम लोगोंको अभी कितना करना बाकी है, अिसका विचार मनमें घोटते-घोटते अुस म्यूजियमसे मैं वापस लौटा। भूमिके पेटमें क्या-क्या भरा है, अिसका विचार करते करते अिस बातकी तरफ ध्यान जाता ही था कि भूमि परके पहाड़ोंकी रचना कैसी है। डोडोमाके बिलकुल नजदीक अेक पहाड़ीके सिर पर कुछ चिकने पत्थर अिस तरह रखे हुअे हैं कि अेक खास तरफसे देखने पर हूबहू अैसा भासित होता है मानो सिंह बैठा है और हम अुसकी जांघ देख रहे हैं। अंग्रेजोंने अुसका 'लॉयन हिल' जो नाम रखा है, वह ठीक ही है।

रिवाजके अनुसार दोपहरका लंच हुआ अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे। अुसमें कओी अंग्रेज आये थे। अिसलिअे मुझे यहां अंग्रेजीमें ही भाषण करना पड़ा। दोपहरको सब अिधरकी मूंगफलीकी योजना देखनेके लिअे डोडोमासे ५२ मील दूर स्थित कांग्वा केन्द्र पर गये। हमारा कितना ही लिखनेका काम चढ़ गया था। अुसे निपटानेके लिअे सरोज और मैं पीछे रह गये। कांग्वामें भी वैसा ही काम था, जैसा नचिंग्वेमें देखा था। अिसलिअे वहां न जानेमें कुछ खोना नहीं था।

मैं पीछे रह गया तो मेरे भाग्यमें अेक दो सभायें और कुछ मुलाकातें आ गओीं। शामको हिन्दू-मंडलके सामने मेरा भाषण था।

दूसरे दिन मुझे स्त्रियोंकी सभामें बोलना पड़ा। श्रीमती शहरबानू कीका हमारे साथ आओी थीं। मैंने देखा कि श्रीमती कीकाको शिक्षामें बड़ी दिलचस्पी है। शादी करनेसे पहले वे शिक्षाका ही काम करती थीं। पूर्व अफ्रीकाकी प्राथमिक शिक्षाका विचार करनेके लिअे अगर कोअी संस्था बनाअी जाय, तो अुसमें श्रीमती कीकाको लेना ही चाहिये। बातों ही बातोंमें अुन्होंने मुझसे कहा कि, "मुझे शिक्षाकी तरह साहित्यमें भी रस है। हम जो कुछ पढ़ते हैं सो अंग्रेजीमें ही। यह भी जाननेमें नहीं आता कि गुजरातीकी अच्छी पुस्तकें कौनसी हैं। मैंने यहांके हिन्दू-मंडलसे कहा कि बाकायदा फीस लेकर मुझे मंडलकी सदस्या बनाअिये, ताकि आपके पुस्तकालयसे पुस्तकें मंगाकर मैं पढ़ सकूं। वे कहते हैं कि, 'मंडलकी सदस्या आप नहीं बन सकतीं। आपको जितनी पुस्तकें चाहियें, हम यों ही पढ़नेको दे देंगे।'"

अब अिस तरह मुफ्त किताबें लेकर पढ़ना हरअेक आदमीको पसन्द नहीं होता। लोगोंको अैसा ही लगेगा कि 'आप हमारे मंडलकी सदस्या नहीं बन सकतीं', यह कहकर हिन्दुओंने अपनी संकीर्णता प्रगट कर दी। हिन्दू कहेंगे कि पारसी लोगोंको हिन्दूके रूपमें कैसे स्वीकार किया जाय? अिधर पारसियोंको यह खयाल होगा कि हिन्दू संस्कृति और हिन्दू रीति-रिवाजके बारेमें हमारे मनमें जो आदर है, अुसकी कुछ भी कदर नहीं? हम पास आना चाहते हैं और ये लोग हमें दूर रखना चाहते हैं।

सही अुपाय यह है कि मंडलके अुद्देश्योंमें यही लिखना चाहिये कि, "जो हिन्दू हैं या जो हिन्दू संस्कृतिके प्रति सद्भाव रखते हैं, वे सब अिस मंडलके सदस्य बन सकते हैं। हिन्दू धर्मकी किसी रूढ़िके सिलसिलेमें चर्चा हो रही हो, अुस समय अिस प्रकारके बाकीके लोग मत नहीं दे सकते। अन्य सब प्रकारसे अुन्हें संस्थाके सदस्य माना जायगा।"

अितनी व्यापकता न सूझे तो पुस्तकालयके लिअे अलग नियम बनाकर बाहरके लोगोंको अुसके सदस्य बनाया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि सबके साथ मिलनेकी अुत्सुकता होनी चाहिये। आम तौर पर हिन्दू लोगोंमें स्वयंपूर्णताका खयाल होता है और अिस कारण वे बिना विचारे दूसरे लोगोंसे दूर रहते हैं। 'हम अलग स्वभावके हैं और हमारा व्यवहार दूसरे लोगोंको खटकता है', अितनी स्पष्ट बात भी हिन्दुओंके ध्यानमें नहीं आती।

Oh, would some power the gift give us,
To see ourselves as others see us.

आज दुनियाके दरबारमें हिन्दू लोगोंके प्रति सहानुभूति रखनेवाली जातियां बहुत कम हैं। सिर्फ किसीके भी हाथका और कुछ भी खाने-पीनेको तैयार हो जानेसे हमने अलग-थलगपन छोड़ ही दिया, अैसा नहीं होता।

अेक बार बम्बअीमें हिन्दूसभाका अधिवेशन हुआ होगा। लाला लाजपतराय अध्यक्ष थे। अुन्होंने अेक सीधा सवाल पूछा: "असलमें हममें जातीय संकीर्णता नहीं है। हम तमाम भारतवासियोंको साथ लेकर चलना चाहते हैं। ये मुसलमान ही साम्प्रदायिकता पैदा करके हमसे अलग रहते हैं, अिसीलिअे हम खुद साम्प्रदायिक बनकर पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी तमाम जमातोंको अपनेसे दूर क्यों रखें? मुसलमानोंको हमारे साथ शरीक न होना हो तो न हों, जो शरीक होनेको तैयार हैं, अुन्हें हम आदरपूर्वक क्यों न बुलायें?"

असलमें वह जमाना अैसा था कि अगर हमने पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी कौमोंको आदरके साथ अपने सामाजिक जीवनमें शरीक कर लिया होता, तो मुसलमान भी हमसे दूर न जाते। हममें राजनैतिक संकीर्णता तो थी नहीं। हमारा अपराध, हमारा अलग-थलग-पन सामाजिक क्षेत्रमें था। अुसकी सजाके तौर पर हमें राजनैतिक

अन्याय सहन करना पड़ा; हमारी राष्ट्रीयताका हनन हुआ और मानवजातिके दरबारमें हम दूसरे लोगोंकी सहानुभूति खो बैठे।

और फिर भी हमने अपना अलग-थलगपन अभी तक नहीं छोड़ा। हमारे कुछ धार्मिक विचार और रिवाज अधार्मिक हैं। अुन्हें हम छोड़ देंगे तभी मनुष्यकी हैसियतसे हम तरक्की कर सकेंगे।

डोडोमामें कोअी प्रचारक आया होगा। अुसने 'आत्मा नहीं, पुनर्जन्म नहीं, अीश्वर अवतार नहीं लेता, मूर्तिपूजा ढोंग है' वगैरा वगैरा बातें कहकर यहांकी बहनोंको भड़का दिया होगा। अिसलिअे अेक बहन अिस बारेमें मेरे विचार जानकर कुछ आश्वासन प्राप्त करने मेरे पास आअीं। मैंने ये सब प्रश्न अुच्च भूमिका पर ले लिये और अुनकी चर्चा की। अुन बहनको संतोष हुआ, अुन्होंने मांग की कि हम स्त्रियोंके सामने भाषण देकर आप ये सब बातें हमें समझाअिये।

खानगी समय लेकर मुझे जो खत-खतूत लिखना था सो रह गया और दोपहरको बहनोंकी सभामें जाना पड़ा। मैंने वहां घर और समाजकी सफाअीके बारेमें, भोजनके बारेमें और अैसे ही दूसरे अिहलोकमें अुपयोगी विषयोंकी बातें कहीं। सर्व-समाजिताके महत्त्व और अफ्रीकी बहनोंको अपनानेके बारेमें तो जरूर कहा ही। अिसे तो मैं किसी जगह भूलता या छोड़ता ही नहीं था।

कांग्वा गये हुअे हमारे साथी चार बजते बजते वापस आये। तुरंत ही हम मिसेज पाअिकके यहां चायपार्टीमें गये। लिंडीके वर्णनके समय मैंने लिखा है कि, 'गोरोंने हमें अपने यहां खानेको बुलाया हो, अैसा मि० पाअिकका अेक ही अुदाहरण था।' अुसमें अितना संशोधन करना चाहिये कि डोडोमामें अुनकी भाभीने भी हमें अपने यहां अपने गोरे मित्रोंसे मिलने बुलाया था।

रातको श्री दारा कीका और श्रीमती कीकाकी तरफसे स्वेच्छा-भोजन था। अिसे फ्रेंच और अंग्रेज लोग 'बुफे' कहते हैं। स्वेच्छा-

भोजनकी खूबी यह होती है कि खानेकी सब तरहकी चीजें तैयार करके अेक मेज पर रख देते हैं। पास ही रकाबियां, चम्मच, कांटे, हाथ रुमाल वगैरा रखे रहते हैं। मेजबान और मेहमान सब अुस मेजके पास जाते हैं और हरअेक आदमी अेक अेक रकाबी लेकर अुसे जो और जितना चाहिये, परोस लेता है और जी चाहे वहां बैठकर या घूमते-घूमते खाने लगता है और अलग-अलग लोगोंके साथ बातें करता है। अिस प्रकार आग्रह करके अधिक परोसना और अन्न बिगाड़ना टल जाता है। 'अपना हाथ सो जगन्नाथ' के हिसाबसे हरअेक मनुष्य अपनी रुचिकी चीज पसन्द करके परोस लेता है और अेक जगह बैठनेकी बात न होनेसे बहुतसी कुर्सियों और मेजों या पट्टोंकी व्यवस्था करनेकी जिम्मेदारी नहीं रहती। लोग घूमते-घूमते खायें तो कअी लोगोंके साथ थोड़ा-थोड़ा बोल सकते हैं, दोस्ती बढ़ा सकते हैं। गंभीर लोग दो-चार कुर्सियां जमा करके वहां बैठकर खाते-खाते चर्चा कर सकते हैं। श्री अप्पासाहबके अफ्रीका आनेके बाद यह प्रथा हमारे लोगोंमें काफी फैली। यह कअी तरहसे सुविधापूर्ण तो है ही।

भोजनके बादके भाषणमें मैंने कहा कि मनुष्य-जातिका आदर्श त्रिविध माना गया है। स्वतंत्रता, समता और बंधुता। ये तीनों आदर्श सिद्ध करनेके लिअे मनुष्य-जातिको महान क्रांतियां करनी पड़ी हैं।

फ्रांस देशने राजनैतिक समता स्थापित की। परन्तु अुसके लिअे खूनकी नदियां बहाअी गअीं और सामंती प्रथाका, फ्यूडेलिज़मका अन्त किया गया। अुसके बाद रूसने अुतनी ही रक्तरंजित क्रांति करके अपने यहां समताकी स्थापना की और पूंजीपति वर्ग और खानगी संपत्तिका अंत किया। अब बंधुता स्थापित करनेके लिअे अेक अनोखी क्रांति करनेकी बारी हिन्दुस्तानके भाग्यमें आअी है। अिसके लिअे पहले हिंसाका अंत करना पड़ेगा। और शहरी संस्कृतिको सीमित करके गांवोंका अुद्धार करना पड़ेगा। अिस बंधुताकी क्रांतिके

परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और वांशिक न्याय तीनोंकी स्थापना होगी।

अिसका नतीजा यह होगा कि अफ्रीकाकी भूमि पर भारतकी मिश्रित संस्कृति, युरोपकी अितिहास सिद्धसंस्कृति, और अफ्रीकाकी आदिम संस्कृति तीनोंका समन्वय हो जायेगा। और अुसमें से अेक नअी संस्कृति अुत्पन्न होगी, जिसका प्रधान स्वर होगा वन्धुता, यह वन्धुता मनुष्य मनुष्यके बीच ही नहीं, परन्तु धर्म धर्मके बीच भी स्थापित होगी।

अितने विस्तारसे नहीं परन्तु अिसी प्रकारका भाषण मैंने दिया। अुसके बाद अप्पासाहव बोले। अुनका भाषण बहुत सुन्दर था। अेशिया महाद्वीपकी पुनर्जागृति और अहिंसक पद्धति द्वारा संघर्ष मिटानेकी आवश्यकता अुनका विषय था। दूसरे दिन डोडोमा छोड़नेसे पहले हम दो-तीन पाठशालाअें देख आये। अिंडियन पब्लिक स्कूलके हेडमास्टर श्री कुरेशी फौजसे निवृत्त हुअे आदमी हैं। अिसलिअे अुन्होंने विद्यार्थियोंको कवायद अच्छी सिखाअी है। अिसका लाभ हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंने ही अधिक प्राप्त किया है, यह असर मेरे मन पर हुआ। यहां लड़कियोंकी शिक्षाके लिअे आगाखानकी कन्या पाठशाला अलग है। वहां श्रीमती टर्नबुल नामकी अंग्रेज महिला बड़ी लगनसे काम कर रही हैं। अिंडियन पब्लिक स्कूलकी लड़कियोंको खड़े-खड़े खो खो खेलते देखकर मुझे बड़ा आनंद आया।

यहांकी रेलवे दारेस्सलामसे मोरोगोरो और डोडोमा होकर टबोरा पार करके आगे किगोमा तक जाती है। किगोमा टांगानिका सरोवरका पूर्वी किनारेका बंदरगाह है। वहांसे जहाजमें बैठकर बेल्जियन कांगोमें जाते हैं।

हमारे लोग हिन्दुस्तानसे दारेस्सलाम आते हैं, वहांसे रेलवेके रास्ते किगोमा और वहांसे जहाजके रास्ते अुसुम्बारा। यह आखिरी बंदरगाह टांगानिका सरोवरके अुत्तर किनारे पर स्थित है।

१७

झोरोंगोरो

पूर्व पश्चिम जानेवाली रेलवेको छोड़कर अब हमने डोडोमासे नैरोबी तक जानेवाला अुत्तरका मोटरका रास्ता पकड़ा। अिस प्रदेशमें न बड़े जंगल हैं और न बड़े पहाड़। हमारे सौभाग्यसे श्री बदरू नामक अेक भाअी अपनी मोटरमें नैरोबी जा रहे थे। अप्पासाहबके प्रति प्रेमके कारण वे हममें मिल गये। अिसलिअे हमारी मंडली तीन सवारियोंमें आरामसे सफर कर सकी। श्री कमलनयनने अेक मोटरगाड़ी टांगामें खरीदी थी। वह डोडोमा आ पहुंची थी। अेक वह और दूसरी भाअी बदरूकी और तीसरी बॉक्स गाड़ी किराये कर ली थी।

बरसातके दिनोंमें रास्ते परसे मोटरें जानेसे कअी खड्डे-खोचरे हो जाते हैं, जो सूखनेके बाद मोटरोंको परेशान करते हैं। यह मुश्किल टालनेके लिअे रास्तेके खड्डे-खोचरोंकी हजामत करनेवाली मोटर मनुष्यने बनाअी है। लोहेका अेक मोटासा अुस्तरा रास्ते पर चलाने लगें, तो सूखे हुअे कीचड़की अुठी हुअी नोकें कट जाती हैं और अुनकी मिट्टी खड्डोंको भरती जाती है।

अिसके सिवाय रास्ता सुधारनेका अेक देहाती अुपाय है। जंगलकी झाड़ियां अिकट्ठी करके रास्तेकी आधी चौड़ाअी तक पहुंचने लायक अेक ब्रश तैयार कर लिया जाता है। बुनाअीके काममें मॉड़ देनेके लिअे जो कूचा तैयार किया जाता है, अुसके जैसा ही यह ब्रश होता है। लम्बी रस्सी बांधकर यह ब्रश रास्ते पर फेरनेसे रास्ते परकी मिट्टी समान रूपमें फैल जाती है, जिसके कारण मोटरोंकी दिक्कत बहुत कुछ घट जाती है। रास्ते सुधारनेके ये दोनों प्रकार हमने देखे। हमारे यहां कुछ खास स्थानों पर ये जारी किये गये हैं।

रास्तेके दोनों ओर दूर दूर तक, जैसे क्रिकेटके क्षेत्रपाल खड़े हों अुसी तरह गोरख-चिन्च अर्थात् चिरमुलाके विशालकाय पेड़ खड़े थे। अैसे पेड़ पूर्वी किनारे पर भी बहुत हैं। दारेस्सलामके आसपास तो बहुत ही हैं। अिस अिलाकेका नाम टांगानिका न होता तो मैं अिसे चिरमुला नाम देता।

आधुनिक सभ्यतासे अलग पड़े हुअे अिस देशमें जहां-जहां वस्ती है, वहीं हिन्दू और मुसलमान गुजराती अपनी अपनी दुकानें खोलकर बैठे हैं। अिनके बीच कोअी झगड़ा नहीं है (क्योंकि यहां संस्कृति, सभ्यता और अखबार नहीं पहुंचे हैं!)। रास्तेमें कोन्डोवा नामक अेक छोटासा गांव था। वहां दूरसे पानी लाकर गांवको बड़ी राहत पहुंचाअी है। हम यहां न ठहर कर आगे बबाटी पहुंचे और वहां अेक मुसलमान भाअीके यहां दोपहरका भोजन किया। अिनके छोटेसे दीवानखानेमें अेक सादा जर्मन चित्र था। अुसमें सिंहोंका चित्रण बड़े अच्छे ढंगसे हूबहू किया हुआ था।

यहांसे आगे चलकर सारा प्रदेश बदल गया। बाअीं ओर अेक विशाल खारे पानीका सरोवर था। अुसका नाम मनियारा है। अिस सरोवरके आसपास जंगली शिकारी जानवर बहुत हैं। माफयूनी गांवके पास रास्ता फट गया। वह रास्ता पकड़कर हम आगे बढ़े। बाअीं तरफ तालाब और दाअीं ओर लोर्शिमिगुर पर्वत। पहले आया कराटू गांव, अुसके बाद आया ओल्डियानी। कराटूके पास भाअी बदरूकी मोटर बिगड़ गअी। हमने अुन्हें रास्ते पर छोड़कर आगे जानेसे अिनकार कर दिया। जंगलमें वे अकेले और अिस पर भी अेक पैरमें कुछ कमजोरी। अुन्हें अिस तरह कैसे छोड़ा जाय?

मगर वे माने ही नहीं। कहने लगे, 'मैंने अैसे सफर बहुत किये हैं। मैं अपनी मोटरको पहचानता हूं। वह घंटे भरमें ठंडी हो जायगी और मान जायगी।' आखिर हमने अुनकी बात मान ली और

ओल्डियानी चले गये। वहां पहुंचते ही जब अेक बसको भाअी बदरूकी मददमें भेज सके, तभी हमारे मनकी घबराहट कम हुअी।

अिस प्रदेशमें कुछ युरोपियनोंने सुन्दर खेतीवाड़ी की है। कॉफी, चाय, गेहूं वगैराकी खेती करके वे अच्छा कमाते हैं और अच्छी तरह रहते भी हैं। परन्तु हम अिधर जो आये थे सो अुनकी खेतीवाड़ी देखनेके लिअे नहीं, बल्कि यहांके अेक प्रसिद्ध सुप्त ज्वालामुखीके मुंहके भीतर हाथी और सिंह जैसे वन्य पशु रहते हैं, अुस स्थानको देखनेके लिअे।

अंधेरा होनेकी तैयारी थी। हमने ओल्डियानी छोड़कर ङ्गोरोंगोरो जानेका रास्ता लिया। गोरोंके कितने ही शाम्बे पार किये और पहाड़ चढ़ने लगे। प्रारम्भमें ही अेक दो खरगोश मोटरके प्रकाशमें दिखाअी दिये। अिसलिअे आशा बंधी। थोड़े आगे गये तो अेक तेंदुआ — नहीं, तेंदुआ छोटा होता है — चीता दिखाअी दिया, जिसे अंग्रेजीमें 'लेपर्ड' कहते हैं। मोटरके प्रकाशमें चौंधियाकर वह अेक तरफ हट गया और अुसने अेक पेड़के छोटेसे कोटरमें छिप जानेकी कोशिश की। मोटर नजदीक आअी तो अुसकी जगह पर जरा अंधेरा हो गया। अिससे लाभ अुठाकर, अिधर अुधर देखकर, जरा दुबक कर अुसने दौड़ लगाअी और देखते देखते जंगलमें गायब हो गया। हम जरा आगे बढ़े। अंधेरा जम गया था। आकाशका चंद्रमा छाछसे भी पतली चांदनी बरसा रहा था। अितनेमें मोटरके सामने अेक बड़ा जानवर दिखाअी दिया। हाथी है या गेंडा है, अिसका विचार करें अितनेमें खोपड़ी परके दो सींगोंने बता दिया कि यह वन-महिष है। जंगलके शिकारी हाथी, गेंडे या शेरसे अितने नहीं डरते जितने महिषसे डरते हैं। महिष जबरदस्त ताकतवाला जानवर है। हाथी या शेर भी अिसका नाम नहीं लेते। शिकारी कहते हैं कि बाकी सब जानवरोंका स्वभाव समझा जा सकता है और अुनसे निपटा जा सकता है। महिष भूखा हो या न हो, अुसे आप छेड़ें या न छेड़ें, वह अकेला

झो या झुण्डमें हो, जहां अुसे आपके प्रति शक हुआ कि अुसने आप पर हमला किया ही समझिये। और अुसका झपाटा अितना जोरदार होता है कि अुससे शायद ही कोअी बच सके।

हमारे सामनेका महिष खूब मस्तीमें आया हुआ जानवर दिखाअी देता था। सामने रास्ते पर आड़ा खड़ा रहकर डोल रहा था। दूरबीन लेकर देखा तो अुसके गले और गरदनकी तरफके बाल काफी लम्बे दिखाअी दिये। थोड़े ही समयमें अुसने सिर फेरकर मोटरकी तरफ टकटकी लगाअी। हमने अुसे अच्छी तरह देखनेके बाद मोटरकी रोशनी बन्द कर दी। काफी समय तक अच्छे चन्द्रप्रकाशमें हम अेक-दूसरेके दर्शन करते रहे। अुसका विचार हम पर हमला करनेका नहीं था। परन्तु हम हमला नहीं करेंगे, अिसका क्या भरोसा? अिसलिअे अुसने थोड़ी देर हमारी बाट देखी। अुसे विश्वास हो गया कि हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं, तो वह रास्तेके बाअीं ओरके जंगलमें विलीन हो गया। रास्तेके दाअी तरफ अूंचा पहाड़ था। बाअीं तरफ अुतार था। दिनका वक्त होता तो यह देखनेको हम ठहरते कि वह कहां गया। हम आगे चले। अेक स्थानसे ङ्गोरोंगोरोके मुखके भीतरका भाग कुछ कुछ दिखाअी देता था। तालाब जैसा था। वहां चांदनीका प्रकाश स्पष्ट हो रहा था। अूपर पहुंचे तब आसपास कुछ भी दिखाअी नहीं दे सकता था। अूपर सरकारकी तरफसे यात्रियोंके लिअे बनाया हुआ दस-बीस झोंपड़ोंका कैम्प था।

अुसमें हमारे रहनेकी सुविधा की गअी थी। अेक व्यापारी अपने यहां से ३०-४० कम्बल ले आये थे। पीनेका पानी तो ढेर सारा था। अेक बड़ी झोंपड़ीमें खानेकी तैयारी की गअी थी। अुसकी दीवार पर महिषोंके सिरकी हड्डियां और सींग टंगे हुअे थे। हम लोगोंने अेक अेक झोंपड़ी पसन्द कर ली और अपने बिस्तर आप बिछा लिये। सवेरे अुठते ही ४० मील चौड़ा और कोअी १०० चौरस मीलके क्षेत्रफलवाला ज्वालामुखी दिखाअी देगा तब कैसा लगेगा, अिसका विचार

करते करते हम सो गये। मनियाराके आसपास हमने असंख्य हिरण, शुतुर्मुर्ग, चित्राश्व (जिब्रा), जिराफ और बुद्दू वगैरा जानवर देखे थे। अब सवेरे क्या क्या दिखाओी देगा, अिसकी कल्पना कर रहे थे। अितनी अूंचाअी पर ठंढ तो होती ही है। हम खूब सोकर अुठे, प्रार्थना की और बाहर निकले। जहां देखो वहीं कोहरेका क्षीरसागर था! कोहरा कपाल, आंखों और कानोंको गुदगुदाता और आगे चलने लगें तो दो तीन हाथ हट जाता और पीछेकी तरफसे नजदीक आ जाता। आसपास घूमने पर बड़े-बड़े पेड़ कोहरेमें भूत जैसे लगते और पास जाने पर अुनकी छाल पर जमी हुअी और नीचे लटकती हुअी काअीके कारण वे रीछ जैसे लगते थे। अुन पेड़ोंके नीचे हमारी 'लांग केबिन' बड़ी सुन्दर लगती थी। यह स्थान ८५०० फुट अूंचा है, अिसलिअे ठंड और कोहरा दोनों लम्बे समय तक रहते हैं। हमें दोपहर तक अरूशा होकर मोशी जाना था, अिसलिअे कोहरा मिट जानेकी प्रतीक्षा नहीं की जा सकती थी। हम तुरन्त रवाना हो गये। हमारी पार्टीमें से श्री कमलनयन और कुछ और आदमी पीछे रह गये। १० बजे बाद वे सारा ज्वालामुख और अुसके भीतरके कुछ जानवर देख पाये।

अफ्रीकाकी भूमिका अितिहास ज्वालामुखियोंका अितिहास कहा जा सकता है। अूपर अेक जगह कहा गया है कि लाखों वर्ष पहले पूर्व अफ्रीकाकी भूमिमें ३०-४० मील चौड़ी और ३००-४०० मील लम्बी और हजारों फुट गहरी दो दरारें पड़ी थीं। वे कैसे पड़ीं, कब पड़ीं, अुस समय अुनका रूप क्या था, यह हम आज नहीं जान सकते। अितना ही जानते हैं कि ये दरारें पड़नेके बाद बीचमें ज्वालामुखी सुलगे। अुन्होंने दरारका कुछ भाग भर दिया। परिणामस्वरूप कुछ सरोवर तैयार हुअे और नदियां बहने लगीं। यह सब कुछ अेक ही समय अेक साथ हुआ हो, सो बात भी नहीं। जो फेरबदल होनेवाले थे, वे स्थायी हुअे हों सो भी नहीं। १९३८ और १९४८ तक कुछ

ज्वालामुखियोंने सिर अूंचा किया यानी मुंह खोला और अुसमें से अग्निरस बहने दिया।

झोरोंगोरोका ज्वालामुख कब बना, यह हम नहीं जानते। परन्तु जब अितना बड़ा ज्वालामुख अग्निरससे खदबदा रहा हो, तब अुसके सिर पर कोअी १०० मील तक पक्षी भी अुड़नेकी हिम्मत नहीं करते होंगे। आज यह सब शांत हो गया है। अिस ज्वालामुखका पेंदा सीधे मैदान जैसा हो गया है। अुसमें पानी जमा होता है और जंगल अुग आये हैं। ये पेड़ यहां किसने बोये होंगे? जंगलके पेड़ोंके बीज खा-पचाकर अनेक छोटे बड़े पक्षी यहां आये होंगे। विष्टामें से ये बीज बोये गये और अुनके बड़े जंगल हो गये। कुछ जानवर यहां आहार ढूंढ़ते हुअे आये होंगे। अितनी अूंचाअी पर वे कैसे चढ़े और यहां अुन्होंने स्थायी निवास कैसे किया, अिसका अितिहास अुन जानवरोंके वंशज कहांसे जानें? और जानें तो भी हम अुनसे यह अितिहास कैसे प्राप्त कर सकते हैं? नगैः रक्षितं अिति नगरम्, यह नगरकी व्याख्या सच हो, तो अफ्रीकाके श्वापदोंका यह अरण्यनगर है। किसी समयके ज्वालामुखीके सिर पर ठंड और कोहरेका अनुभव करते हुअे हम अेक रात बिता सके, यह बात भी हमें बहुत संतोष दे सकी। अुसी रातको अमरीका — ओटावासे आया हुआ चि० सतीशका अेक प्रेमपूर्ण पत्र मुझे अुस स्थान पर मिला, अुसका भी मन पर बड़ा असर पड़ा। कहां हिन्दुस्तान, कहां केनाडाकी राजधानी ओटावा और कहां यह शिकारी जानवरोंका अरण्यनगर! परन्तु लेखनकला और पत्रव्यवहारके आधुनिक साधनोंके कारण अैसी स्थितिमें भी हम अेक दूसरेके साथ हार्दिक सम्पर्क साध सके।

१८

दो पर्वतराज

ङोरोंगोरोसे अरुशा और वहांसे मोशीकी दौड़ लगाकर हमें तीसरे पहर तक व्याख्यानके लिअे पहुंचना था। अिसलिअे सुवह जल्दी नाश्ता करके ङोरोंगोरो छोड़ा। पहाड़ परसे जरा नीचे अुतरे कि कोहरेके वादल अूपर रह गये। अव नीचे ओल्डियानीकी तरफका सुन्दर दृश्य नजरके सामने फैल गया। धूप और वादलोंकी धूपछांहके कारण सारी जमीन स्वर्गभूमि जैसी लग रही थी। कराटू तक वापस आये और फिर जिराफ, शुतुर्मुर्ग और तरह तरहके हिरण वहुत नजदीकसे देखनेमें आये। अेक हिरण हमारे नजदीक पहुंचने तक निर्भय होकर हमें देखता हुआ ही वैठा रहा। परन्तु अन्तिम क्षणमें अुसने विचार वदल दिया और अैसी छलांग मारी मानो हवाअी गोला हो! यहां हमने पहली वार जिराफको दौड़ते देखा। सुवह ही मैंने कहा था कि सिर पर दूरवीन जैसे सींग लेकर खड़े हुअे जिराफ हमने वहुत देख लिये। यह प्राणी दौड़ता होगा तव कैसा दिखाअी देता होगा? और कुछ ही घंटोंमें जिराफ पानीकी लहरोंकी तरह दौड़ता हुआ हमारे देखनेमें आया। अुसकी सुडौल गति देखकर अैसा ही लगता है कि जान वचानेके लिअे भी यह कलावान प्राणी वेढंगेपनसे दौड़नेको तैयार नहीं होता!

कराटूमें अेक गुजराती भाअीने वड़े प्रेमसे हमें केसरिया दूध पिलाया। जाते समय हम अुनके यहां नहीं ठहरे, अिस पर हमें अुलहना दिया और पक्के केलोंकी अेक फली और तरह-तरहके फल हमारी मोटरमें लाद ही दिये! अिन लोगोंका कैसा निष्काम प्रेम था? हमने अुनके लिये क्या किया था। क्या कर सकते थे? अुनके या हमारे जीवनमें दुवारा मिलनेकी संभावना भी कम थी। फिर भी घरके

आदमियोंकी तरह ये लोग हमारे साथ व्यवहार करते रहे। अपनी होशियारी या बहादुरीके बखान करना भी अुन्हें नहीं सूझता। सारे पूर्व अफ्रीकामें हमें जहां तहां असे ही गुजराती भाअी मिले हैं और हर जगह हमने अिसी प्रेमकी बाढ़का अनुभव किया है।

हम अंगारक पर्वत तक सीधे अुत्तरमें गये। मोंडुली गांवको बाअीं ओर रखकर हमने पूर्वकी ओरका रास्ता लिया। थोड़े ही समयमें हमें अफ्रीकानिवासी मेरु पर्वतके दर्शन हुअे। अुसका शिखर बादलोंमें ढंका हुआ था और अुसका विस्तार पौन सौ मील तक फैला हुआ था! फिर आया अरुशा शहर। बड़ा ही सुन्दर। युरोपियन लोगोंने अिसे नंदनवन बना दिया है। हमें यहां तक लानेवाले श्री त्रिलोकीनाथ वोरा यहीं अुतर गये और हम अिन्हींकी मोटर लेकर आगे मोशी गये। रास्तेमें दोनों ओर अंग्रेजोंके अनेक शाम्बाओं (अेस्टेट्स) की शोभा हम देख सके। बीचमें हमने अुपा नदी पार की। कितने ही मीलों तक फैले हुअे घासके बीहड़ देखे। टांगासे अरुशा तक आनेवाली रेलवेको हमने तीन बार पार किया। पहली बार हमने यहां तारके खम्भे देखे। और अन्तमें :—

जिसकी धुन बहुत दिनोंसे लगी हुअी थी, वह किलिमांजारो पर्वत नजदीकसे दिखाअी दिया। पहले तो बादलोंमें धनुषकी रेखाकी तरह अेक सफेद सुरेख किनारी दिखाअी दी। मनको यह विश्वास हो जानेके बाद कि यह बादल नहीं परन्तु पहाड़की चोटी है, हमने देखा तो किलिमांजारो अपने सिर परका बादलोंका पटल धीरे धीरे हटा रहा है। कैसा वह गंभीर और भव्य दर्शन था! मानो कर्पूरगौर महादेव बुद्ध भगवानका अवतार लेनेके लिअे अपनी जटा अुतार कर यहां ध्यानस्थ बैठे हों! आज किलिमांजारोके सिर पर हमेशासे ज्यादा बर्फ थी। अिसलिअे अुसके नीचे अुतरते हुअे रेले खूब दूर तक पहुंचे हुअे दीखते थे। शिखरकी रचना अितनी सुन्दर मालूम होती थी कि यह जानते हुअे भी कि अुसके सिर पर ज्वालामुखीका

द्रोण (मुंह)है, यहांसे वह सच्चा प्रतीत नहीं होता था। हृदयके अुद्गार निकाल डालनेकी पुरानी आदत रही होती, तो मैंने जरूर कहा होता "अद्य मे सफलम् जन्म, यात्रा च सफला अियम्।"

हमारी मोटर हमें सपाटेसे मोशी और अुसके वैभवशाली पहाड़ किलिमांजारोकी तरफ ले जा रही थी। रास्ता टेढ़ामेढ़ा होनेके कारण दर्शनकी खूबियां क्षण क्षण बदल रही थीं। बादमें मैंने जाना कि मोशीका अर्थ धुआं है। किलिमाका अर्थ पहाड़ और अन्जारोका अर्थ अूंचा या चमकता हुआ। दोनों अर्थ अिस पहाड़के लिअे जंचते हुअे थे। किलिमांजारोका विस्तार भी बहुत चौड़ा है। अूपर चढ़नेका रास्ता अुसके पीछेकी तरफ है। दूसरे दिन हम अुस रास्तेसे अेक अफ्रीकी मुखियाका घर देखने गये।

मोशीमें हम बहुत ही थोड़े समय रह सके। परन्तु अुस समयका अुपयोग अच्छा हुआ। श्री सदरुद्दीन — माननीय वलीमुहम्मद नजर-अलीके लड़के — के यहां हमारा डेरा था। श्रीमती सदरुद्दीन बड़ी चतुर महिला थीं। अुनके यहां खा-पीकर ताजा होकर हम सभामें गये। अितनेमें श्री कमलनयनकी मंडली भी आ पहुंची। प्लाजा थियेटरमें काफी भीड़ लगी हुअी थी। बहनोंकी संख्या भी अच्छी थी। यहां पहली बार मैंने अपनी राय जाहिर की कि हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होनेके बाद अेशियाकी अनेकवंशी जनता हमारी तरफ प्रेम और अुमंगभरी नजरोंसे देखने लगी है। अिसलिअे अब हमें अेशियाके प्रतिनिधि बनकर अेशियन नाम धारण करना ही पड़ेगा। अिस सभाके बाद तुरन्त किलिमांजारोकी बिलकुल सीढ़ियों पर अेशियन अेसोसियेशनकी चायपार्टी थी। यहां अप्पासाहबका बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ। अिस प्रदेशमें रहनेवाले चाग्गा अथवा वाचागा लोगोंकी अेक संस्था है। अिन लोगोंको शिक्षा देकर अुन्हें आगे लानेवाले मि० बेनेटके साथ मुलाकात हुअी। अेक आदमी सोच ले तो अफ्रीकी लोगोंके लिअे कितना कर सकता है, अिसका वे अुत्तम नमूना थे।

यहांकी पार्टीमें अेक महाराष्ट्री डॉक्टर, दो गोअन, अनेक सिक्ख भाअी और गुजराती हिन्दू थे। अिस्माअिली भाअी तो बड़ी तादादमें जमा हुअे थे। रातको यहांके हिन्दू भाअियोंके साथ खास वार्तालाप रखा गया था, जो ९ से ११ बजे तक चला। अैसे वार्तालाप हमारी यात्राका सर्वोत्तम भाग माने जायंगे। अिनमें हम कुछ भी संकोच रखे बिना हिन्दू मुसलमानोंके सम्बन्धके बारेमें आजादीके साथ बोल सकते थे, लोगोंकी भावनाअें और अुनकी मुश्किलें जान सकते थे और अनेक भूमिकाअें बनाकर हम अपना दृष्टिबिन्दु अुन्हें समझा सकते थे। मोशीमें वहांके डिप्टी कमिश्नर मि० जॉन्स्टन मिले। आदमी स्वभावसे बड़ा सज्जन और विचारोंका अुदार था। कोअी घंटे भर बैठकर अुन्होंने बहुतसी बातें कीं। और अुनसे बहुत कुछ जाननेको भी मिला।

दूसरे दिन हम चाग्गा लोगोंके वेलफेयर सेंटरकी अेक वाड़ी देखने मरांगू गये। अुस वाड़ीके पास चाग्गा लोगोंके अेक नेता — मुखिया पेट्रोका सुन्दर निवासस्थान है। अुनके मेहमान बनकर हमने देख लिया कि अफ्रीकी परिवार कैसे रहते हैं। अुनके नये मकानके पीछेवाली बड़ी गोल झोंपड़ी हम भीतरसे देख आये। बिलकुल अंधेरेमें अिन्सान और हैवान साथ-साथ कैसे रहते हैं, यह देखकर हिमालयके पहाड़ी लोगोंकी याद आ गअी। परन्तु वहां अितना अंधेरा नहीं था। अफ्रीकी लोग गायका दूध भी पीते हैं और अुसका खून भी पीते हैं। गाय या बछड़ेको खंभेसे बांधकर अेक बाणसे अुसके गलेकी नस कैसे काटते हैं और आवश्यक लहू निकाल लेनेके बाद घाव कैसे बन्द किया जाता है, जिसके बारेमें हमने विस्तृत बातें सुनीं। प्रत्यक्ष प्रयोग देखनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी, अिसलिअे मैं वहांसे खिसक गया। हमारे दलके लोगोंने क्या क्या देखा, सो मैंने पूछा भी नहीं। श्री पेट्रोके साथ बर्बाके ग्रामअुद्योगों और नअी तालीमके बारेमें बातें कीं। हाथकी कताअी और बुनाअीकी खादी और हाथके बने हुअे कागजके नमूने वगैरा देखकर अुन्हें महसूस होने लगा कि हम भी अैसा ही

क्यों न करें? बादमें मैंने अुन्हें बड़े विस्तारसे समझाया कि शहदकी मक्खीका पालन कैसे किया जाता है और अुनका नाश किये बिना शहद कैसे निकाला जाता है। और अुन लोगोंने भी खूब ही दिलचस्पीके साथ यह सब सुन लिया।

मुखिया पेट्रोकी बाड़ीके मकअीके गरम-गरम भुट्टे हमने चखे। अुसके दाने अितने बड़े और मीठे थे कि यहांके बीज हिन्दुस्तानमें ले जानेकी जीमें आ गअी। मकअीका आटा अफ्रीकी लोगोंका मुख्य भोजन है। अिसके साथ वे अेक प्रकारके बेमिठास केले पकाकर खाते हैं। और अेक प्रकारके शकरकन्द भी सेंक कर खाते हैं। अिन शकरकंदोंका स्वाद भी हमारे शकरकंद जितना मीठा नहीं होता। अफ्रीकाकी मकअीका स्वाद हमने कअी जगह लिया है, परन्तु स्वादमें यहांकी मकअीकी बराबरी कोअी नहीं कर सकती।

लौट कर हमने खाना खाया और अरुशाके लिअे रवाना हो गये। रास्तेमें फिर किलिमांजारोके भव्य दर्शन हुअे। अगले दिनके दर्शनोंके कारण आजका दर्शन बासी भी नहीं लगा और अुसका नशा भी कम नहीं हुआ। परन्तु परिचयकी आत्मीयता अवश्य अुमड़ आअी। सारा रास्ता पहचाना हुआ था, अिसलिअे हम आसानीसे पौने चार बजे अरुशा पहुंच गये। वहां हमारे मेजबान श्री नरसीभाअी मथुरादास थे। श्री नरसीदासभाअी श्री नानजी कालीदास महेताके भतीजे होते हैं। अुनका घर अरुशाभरमें तमाम सुख-सुविधाओंसे भरा हुआ सबसे अद्यतन (अप-टु-डेट) माना जाता है। अरुशामें अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे चायपार्टी हुअी। अिसमें वहांके प्रांतीय कमिश्नर और अुनकी पत्नी आअी थीं। सारी पार्टीमें जो युरोपियन थे, अुनमें ग्रीक और डेन लोग भी थे। अेशियन लोगोंमें हमारे हिन्दुस्तानी लोगों — गोअनों सहित — के अुपरांत अरब वगैरा थे और अफ्रीकी लोगोंमें स्थानीय अेबिसीनियन और सोमाली भी थे। लोग चाय और खाद्य पदार्थोंके साथ न्याय करनेमें मशगूल थे, जब कि मेरा सारा ध्यान मेरुकी

प्रचंड मूर्तिकी तरफ था। अिन दिनों मेरुके सिर पर बर्फका मुकुट नहीं होता, परन्तु मुकुटके बिना भी वह आसपासके प्रदेशके राजाकी तरह ही सुशोभित था। किलिमांजारो और मेरु जबसे अूपर निकल आये हैं, तबसे अफ्रीकाके शिकारी जानवर और मनुष्य, नदियां और सरोवर — सबके सुदीर्घ अितिहासके वे साक्षी हैं। प्राचीन कालके कितने ही अफ्रीकी नेताओंने अिन दो पहाड़ोंकी शपथ खाकर अपनी मित्रता दृढ़ की होगी या शत्रुसे वैर लेनेकी प्रतिज्ञा पर मुहर लगाअी होगी। ये दो पहाड़ कोअी संकल्प नहीं करते। पक्षपात नहीं करते। अपने सिर पर जितनी वर्षा हो, अुसके छोटे बड़े झरने बनाकर अुसा (usa), पंगानी (pangani), त्सावो (tsavo), जो कोअी नदी अुनसे लाभ अुठाना चाहे अुसे जीवन अर्पण करते रहते हैं।

सार्वजनिक सभामें अनेक पंजाबी और गुजराती बहनें वगैरा मिश्रित श्रोता थे। हिंसा अहिंसाका प्रश्न तो छेड़ा ही था।

रातके भोजनमें बड़े-बड़े दो सौ लोग मौजूद थे। अंग्रेजोंकी संख्या यहां सबसे ज्यादा थी ; Non-violence in peace and war (युद्धकाल और शान्तिकाल दोनोंमें अहिंसाकी नीति) के बारेमें मैं थोड़ासा बोला। बहुतसे विदेशियोंने अिस चर्चामें भाग लिया। अुसमें अपने कर्तव्यका गहरा विचार करनेवाला अेक गोरा पुलिस अफसर था। अुसने विशेष बातें करनेके लिअे दूसरे दिन मिलनेकी अिच्छा प्रगट की। सवेरे अपराधों और अुनके लिअे दी जानेवाली सजाओंकी काफी तात्त्विक चर्चा हुअी। अैसा जान पड़ा कि यह आदमी अपने कर्तव्यके बारेमें गहराअीमें जाकर विचार करता है। हमारे लोगोंकी आर्थिक नीतिमत्ता यानी अीमानदारीके बारेमें अुसका अूंचा खयाल नहीं था। केवल नरसीभाअीके बारेमें अुसने आदरके वचन कहे थे। मुझे वे केवल शिष्टाचारके शब्द नहीं लगे।

सुबहकी चर्चाके बाद हम अेक अैसा तालाब देखने मोशीके रास्ते रवाना हुअे, जो अरुशाके गलेका मोती जैसा लगता है। डेलूटी

(Deluti) सरोवरका श्रेय भी ज्वालामुखीको है। अुसका आकार देखते ही यह मालूम हो जाता था। अिस तालावके किनारे श्रीमती रॉयडन नामकी अेक अंग्रेज महिलाने सुन्दर मकान और अुससे भी सुन्दर वगीचा वनाया है। महिला अितनी होशियार है कि पिछले युद्धके दिनोंमें अपनी और दूसरे गोरोंकी १४ अेस्टेटें वही संभालती थी। और अिस महिलाकी जिज्ञासा अितनी प्रखर कि मिश्रके पिरेमिडों और अुनके संबंधकी गूढ़ विद्याके वारेमें भी वह जानती थी। दीवानखानेमें अुसने जो चित्र रखे थे, वे भी अूंची अभिरुचि व्यक्त कर रहे थे।

१९

ब्रह्मक्षत्री साहस

अव तो नमंगा होकर आम्वोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमें अेक रात विता कर नैरोवी जाना वाकी था। परन्तु रास्तेमें अेक होशियार भारतीय युवक रजनीकान्त ठाकोरकी खेतीवाड़ी देखनी थी। वह यहां आल्डोनिअू शाम्वाके नामसे पुकारी जाती है। वहां जाते हुअे रास्तेमें ही जो पहाड़ियां दिखाअी दीं, वे हरी, चिकनी और मनोहर थीं। खेतीवाड़ीमें अच्छे अच्छे जानवरोंका पालन हम देख सके। गायें, सांड़ और अन्य पशु यहां खास शास्त्रीय ढंगसे रखे जाते हैं। गायका दूध अिकट्ठा करके अुसमें से मक्खनके सिवाय पनीर (चीज) वनाया जाता है। दूधमें से पनीर कैसे वनाया जाता है, अिसकी सारी क्रियायें हमने यहां देखीं। रजनीकान्तके पिता श्री सत्येन्द्र त्र्यंवक ठाकोर यहां वेटेसे मिलने आये थे। अुनसे अिस तरफका वहुतसा अितिहास जाननको मिला।

हमारे लोग ज्यादातर देहात या शहरोंमें दुकान खोलकर देशी-विदेशी माल बेचनेका ही काम करते हैं। हाल ही में अुन्होंने सायसल, बॉटल या शकरके कारखाने शुरू किये हैं। परन्तु खेतीवाड़ीका काम करनेवाले लोग नहीं के बराबर ही हैं। अिसलिअे मोरोगोरोकी तरफके मगोलिया पटेल और आल्डोनेअूके ठाकोर दोनों अुज्ज्वल अपवादके रूपमें नजरके सामने आते हैं।

गुजराती ब्रह्मक्षत्रिय जातिकी होशियारीका मैंने बखान किया, तो सत्येन्द्रभाअी कहने लगे: "परन्तु हमारे लोग घरघुस्सू हैं, यह आप क्यों भूल जाते हैं? अितने गुजराती यहां आये हैं, अुनमें ब्रह्मक्षत्रियोंकी संख्या कितनी है? हमारे लोग अभिमान ही अभिमानमें रह गये।" हमारे लोगोंने अभी तक काफी होशियारी नहीं दिखाअी, अैसी आलोचना करके ही अपने लोगोंके प्रति अपनी आत्मीयता अनुभव करनेवाले कुछ लोग होते हैं। मेरी गणना भी अिसी कोटिमें होती है, अिसलिअे मैं सत्येन्द्रभाअीकी अपने लोगोंकी आलोचनाका रहस्य अच्छी तरह समझ सका।

२०

अभयारण्यमें प्रवेश

हम नमंगा पहुंचे। यहांसे आंबोसेली जानेका रास्ता फटता है। नमंगामें मराठी बोलनेवाले दो होशियार कोंकणी मुसलमान भाअी रहते हैं। अिनमें से मोहम्मद अुमर साहबके साथ मेरी बहुत बातें हुअीं। अुनके पिताने और अुन्होंने अंग्रेजोंको कैसा छकाया; अपने लोगोंका होनेवाला अपमान टालनेके लिअे अुन्होंने यहां कैसे देशी होटल खोला वगैरा बातें अुन्होंने कहीं। जंगलके जानवरोंके पीछे भटकनेकी धुनमें अगर किसीको दूसरा नंबर लेना पड़े, तो वह मोहम्मद अुमर साहब नहीं। मोहम्मद साहबने आसपासके आदिवासी मशाअी लोगोंकी अितनी ज्यादा

सेवा की है कि ये लोग हरअेक काममें अुनकी सलाह लेते हैं और अुन पर पूरी तरह विश्वास रखते हैं। होटल खोलनेके लिअे जब अुन्हें जमीन चाहिये थी, तब अंग्रेज लोग अुन्हें जमीन मिलने नहीं देते थे। यह मुश्किल मालूम होते ही मशाअी लोगोंने अपनी जमीनमें से अच्छा टुकड़ा निकाल कर दे दिया। सरकारी अफसरोंने मशाअी लोगोंसे धमका कर पूछा कि, "हिन्दुस्तानी आदमीके प्रति अितना पक्षपात क्यों करते हो?" मशाअी लोगोंके नेताओंने अुड़ता हुआ जवाब देनेके बजाय सीधा ही कह दिया कि, "मोहम्मद साहब हमारे पुराने दोस्त हैं, हमारे हितैषी हैं। अुनके प्रति कितना ही पक्षपात करनेमें हमें खुशी ही होती है।"

कअी तरफसे नदियोंका प्रवाह आकर जैसे समुद्रमें मिलता है, वही नमंगामें हमारे काफलेका हुआ। डोडोमासे चले तब श्री अप्पासाहब, श्री अिनामदार, सकुटुंब कमलनयन, सरोज और मैं और शरद पंड्या अितने हम थे। अरुशासे श्री नरसीभाअी और अुनके भाअी हमारे साथ हो गये। ङ्गोरोंगोरोसे श्री जशभाअी देसाअी, अुनके लड़के निरंजन और श्री शहाणेके लड़के अजित हमारे साथ शरीक हो गये। आल्डोनिअूसे श्री रजनीकान्त और मिल गये। 'सर्व अेव महारथा:!' अलबत्ता यह रथ तैलवाहन था। अब नमंगामें नैरोबीसे आये हुअे डॉक्टर और श्रीमती नायू, सौ० नलिनीबहन पंतकी सहेली श्रीमती लीला फाटक और चि० सरोजके बचपनके मित्र और सहपाठी श्री जाल कण्ट्राक्टर — ये सब आ पहुंचे। सारा काफला अुमंगके साथ आंबोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमें प्रवेश करने लगा। मोटरें, लारियां और ट्रकों जैसे महारथ और अुनमें बैठे हुअे हम महारथियोंके अस्त्रशस्त्र देखने लायक थे। बन्दूक और पिस्तोलके बजाय हमारे पास टॉर्च और दूरबीन थीं। हम जानवरोंको मारनेके लिअे नहीं, परेशान करनेके लिअे नहीं, परन्तु देखनेके लिअे निकले थे। जो कोअी अिस अभयारण्यमें प्रवेश करता है, अुसे संकल्प कर ही लेना पड़ता है कि

'अभयं सर्व भूतेभ्यः; शम् नो अस्तु द्विपदे; शम् चतुष्पदे। झाड़ और झंखारमें से हम पूर्व दिशामें चले। रास्तेमें थूहरके विशाल वृक्ष हमारा स्वागत कर रहे थे। और कुछ कांटेदार पेड़ पक्षियोंको अभयदान दे रहे थे।

सो किस तरह? सांप और दूसरे प्राणी वृक्षों पर चढ़कर पक्षियोंके घोंसलोंमें से अंडों और बच्चोंको खा जाते थे। अिसके विरुद्ध अुपायके तौर पर पक्षी अपने घोंसले हमेशा पेड़के सिरे पर, पतली पतली डालियोंके साथ, चीनी लालटेनकी तरह, लटका देते हैं। अैसी डालियोंके नीचे अगर तालावका पानी हो, तो ज्यादा अच्छा और डालियां अगर कांटेवाली हों तो वह और भी अधिक रक्षण है। अिस प्रकार शत्रुसे हरअेक प्रकारकी रक्षा करनेवाले ये पेड़ तमाम पक्षी जातिका आशीर्वाद लेते हैं।

कोअी ३० मीलका जंगल पार करनेके वाद हमने दक्षिणका मार्ग लिया। वहांसे सूखे हुअे आम्वोसेली सरोवरका रेगिस्तान शुरू होता था। जहां देखो वहां रेत, रेत और रेत! और सामनेकी तरफ अपने पवित्र दर्शनोंका लाभ देनेके लिअे किलिमांजारो खड़े ही थे।

सारा रेगिस्तान पार करके हमने अभयारण्यमें प्रवेश किया। वहां हिंस्र पशुओंने हमें अभयदान नहीं दिया था, परन्तु हमारे जैसे मनुष्योंकी सरकारने वहांके तमाम पशु-पक्षियोंको अभयदान दिया था। लम्बे समयकी सुरक्षितताके कारण यहांके पशु भी मनुष्यके प्रति बड़े सौम्य हो गये हैं। और अिसलिअे हम भी निर्भय हो गये थे। अिस प्रकार सब तरहसे अभयारण्य माने जानेवाले अिस प्रदेशमें हमने अुत्सुक नेत्रोंसे प्रवेश किया। अेक वात स्पष्ट करनी चाहिये। यहांके तमाम पशु-पक्षियों और वृक्ष-वनस्पतियोंको सिर्फ अिन्सानकी तरफसे ही अभय दान है। वे आपसमें अहिंसक होनेके लिअे वंधे हुअे नहीं हैं। और वंधे हों तो खायं क्या? और हाथीको अगर सूंडसे या सिरके धक्केसे

पेड़ गिरानेकी लीला न मिले, तो वेचारेके लिअे सारा जीवन वेस्वाद और भारस्वरूप वन जाय।

पूर्व जन्ममें हमने क्या पुण्य किये होंगे कि अनजान मुल्कमें अैसे जंगलमें हम किसी धर्मात्मा सम्राटकी तरह भयानकसे भयानक पशुओंका अहिंसक शिकार कर सके। जशभाअीने कहा, "हम जल्दीसे सामनेकी पहाड़ी पर जाते हैं, आप हमारे पीछे पीछे जल्दी आअिये। शामके वक्त अकसर वहां हाथी अिकट्ठे होते हैं। पहाड़ी परसे अच्छी तरह दिखाअी देंगे।" जंगलका अिलाका। यहां किसीने कोअी रास्ते नहीं वनाये हैं। जैसे सूझे और जैसे जंचे वैसी मोटरें चलाना। मेरे मनमें क्षण क्षण पर विचार आता था कि संयोगवश मोटरें यहां अटक जायं तो हमारा क्या हाल हो? कोअी पशु क्रुद्ध होकर हमला कर दे और अुसी समय मोटर फेल हो जाय, तो मनुष्य क्या कर सकता है?

जव तक मृगयाका रंग नहीं जमा था, तभी तक अैसे विचार मनमें आ पाये। अेक वार अुत्साहकी भट्टी गर्म हुअी कि हम वहांके वातावरणके साथ अेकरूप हो गये। जितना हमारा विश्वास अपने पैरों पर था, अुतना ही मोटरों और लारियों पर जम गया। फिर तो खड्डे क्या और टीले क्या; झंखार क्या और पत्थर क्या — हमारे लोगोंने मोटरें चला ही दीं। और मोटरें भी अितनी अुमंगमें आ गअी थीं कि जिधर मोड़िये अुधर मुड़ती थीं। मनुष्योंको भी चढ़ना कठिन प्रतीत हो, अैसे स्थान तक पहाड़ी पर हमारी मोटरें चढ़ गअीं। चार चार छः छः आंखोंसे हमने चारों किनारे देखे, परन्तु अेक भी जानवर दिखाअी नहीं दिया। मानो अुन्होंने हमारे विरुद्ध षड्यंत्र ही कर लिया हो। हम निराश हो गये। कमी पूरी करनेके लिअे संध्याकाल मनानेके खातिर पहाड़ी पर आया हुआ अेक पक्षी हमें हंसने लगा। अितना गुस्सा आया अुस पर! परन्तु करते क्या? गुस्सेको जेवमें रखकर अुतरे। खूव ही भटके। हाथीकी लीद कहीं भी दिखाअी दे, तो यह देखकर कि वह ताजी है या सूखी हुअी, हम साश या निराश हो जाते।

अब तो अंधेरा भी हो गया। मोटरोंके दीयोंने अपनी आंखें खोलीं, अितनेमें दूर भैंसके जैसी कोअी चीज दिखाअी दी। नजदीक जाने पर निश्चय हो गया कि नाक पर सींगका भार अुठानेवाला अेक जबरदस्त गैंडा है। क्षण भरमें अुसके पास ही हमने अेक बच्चा देखा। विश्वास हो गया कि गैंडी है। अपने बच्चेको संभालती संभालती घूम रही है। हम घड़ी घड़ीमें दूरबीन चढ़ाकर देखते, फिर नीचे रख देते। मैंने देखा कि गैंडी लंगड़ाती है। किसी अैसे ही दूसरे जबरदस्त प्राणीके साथ झगड़ा हुआ होगा। हमने विचार किया कि सवेरे अगर अुसके खूनकी बूंदें दिखाअी दें, तो अिसका स्थान ढूंढ़ निकालेंगे।

दूसरी पार्टीमें कमलनयन वगैरा थे। अुन्हें तीन सिंह दिखाअी दिये। हम अुस तरफ पहुंचे तो ये तीनों सिंह अैसे खिसक गये कि अुनमें से अेक ही की पीठ जरा दिखाअी दी। सिंहकी जांघ या अुसकी दुम पहचाननेमें देर नहीं लगती। कहने लगे कि अिस ओर तीन तीन नहीं परन्तु कोअी १५ सिंह घूम रहे थे। खैर, हम जरा अूबकर अपने डेरेकी तरफ मुड़े। अिस अरण्यमें कुछ सरकारी झोंपड़े हैं। अुनमें और लोग रहे थे या नहीं सो पता नहीं। परन्तु हमारा डेरा दूसरी जगह स्वतंत्र था। अुसका स्थान खोज निकालनेमें देर लगी। डेरेमें जाते ही अुसका बादशाही ठाठ देखकर मैं तो हक्का-बक्का ही रह गया। आश्रमवासी यात्री हूं या कोअी अरण्य-रसिक शाहजादा हूं? छोटे छोटे कअी तम्बू — अुनके आगे बरामदे जैसे शामियाने, कुरसी, मेज, गद्दे, लालटेनें, खानेपीनेकी हर किस्मकी चीजें — सोडा, लेमनेड, कोको-कोला, फल, मेवे अित्यादि — अेक भी वस्तुकी कमी नहीं थी। जंगलमें पीने लायक स्वच्छ पानीकी सुविधा शायद ही मिलती है। राजा दुष्यन्तके साथ शिकारमें जानेवाला अुसका दोस्त माढव्य भी शिकायत करता था कि शिकारमें जाने पर जंगलके पत्ते सड़नेसे कड़वा जहर हो गया पानी पीना पड़ता है और रथमें बैठकर श्वापदोंके पीछे दौड़नेमें शरीरकी

तमाम हड्डियां ढीली हो जाती हैं। यहां लोहेके अेक बड़े पीपेमें पीने लायक पानी भरा था। वही हमारा हौज और वही हमारी टंकी था। पीपा जरा जमीन पर अुलट कर हमें लोटा दो लोटा जितना चाहिये पानी दे देता। कुछ पंजाबी वहनें खास तौर पर आकर हमारे लिअे पूरियां तल रही थीं और तरह तरहके साग तैयार कर रही थीं।

शिकारका व्यवसाय करनेवाले युरोपियन लोग अिधर बहुत हैं। अुनके बराबर ही या अुनसे ज्यादा होशियार हमारे अेक भाअीने भी यह व्यवसाय हाथमें लिया है। अिनका नाम है श्री तरलोकसिंह। अुन्होंने और अुनके साथी श्री राणाने अप्पासाहबके प्रेमके कारण और स्वदेशसे महात्माजीके आदमी खास तौर पर आये हैं, अिस खयालसे हमारे लिअे अिस दूर दुर्गम जंगलमें तमाम सुविधाअें जुटा दी थीं। और स्वयं आकर तमाम बातों पर देखरेख रखते थे। अितना ही नहीं, खुद सारा काम भी करते थे। बर्तन वगैरा धोनेके लिअे पानीकी सहूलियत देखकर ही केम्प खड़ा किया गया था। यही स्थान हाथियोंका भी माना हुआ होनेके कारण शामको जब तम्बू तन रहे थे, तब कुछ हाथी यहां दर्शन देकर गये थे। परन्तु हमारे भाग्यमें अुस रातको अुनका दर्शन नहीं लिखा था।

जंगलमें अितनी सुरक्षितता अवश्य होती है कि जहां धूनी जल रही हो या मनुष्योंके हाथोंमें मशालें हों, वहां जंगली जानवर पास नहीं आते। परन्तु बीस पच्चीस कदम आगे जाने पर आप सुरक्षित नहीं हैं। कोअी जानवर ताकमें बैठा हो, तो पशुदेवोंके लिअे भी दुर्लभ हमारा लहू अुसे चखनेको मिल जाय। अिसलिअे रातको अग्निके प्रकाश जितनी दुनिया ही सुरक्षित माननी चाहिये। परन्तु शौच जानेकी हाजत हो तब क्या किया जाय? हाथमें टॉर्च और लोटा लेकर अंधेरेमें गये बिना काम नहीं चल सकता। पशुओंका डर और मनुष्यकी शर्म दोनोंके बीच प्रसंगानुसार अुचित हिसाब लगाकर मैंने अन्तर तय

कर लिया। बिल्लीकी तरह मिट्टीमें खड्डा किया और अुसी मिट्टीको खड्डा भरनेके लिअे काममें ले लिया और आरामसे लौट आया। खा-पीकर तम्बूमें जाकर बैठे और प्रार्थना की। मनमें विचार आया कि हिन्दुस्तानसे चार हजार मील दूर, श्वापदाकीर्ण अिस जंगलमें हिन्दुस्तानके लोग कितने आये होंगे? और अुनमें भी गंभीरतापूर्वक भगवानका स्मरण करके वैदिक मंत्रोंसे प्रार्थना करनेवाला क्या कोअी आया होगा? भारतके समस्त ऋषि-मुनियोंका स्मरण करके मैंने भक्तिभावसे प्रार्थना शुरू की। श्री जाल कण्ट्राक्टर अुसमें प्रेमसे शरीक हो गये। और भी कअी लोग थे। प्रार्थना हुअी और हमने सोनेकी तैयारी की। अितनेमें पता चला कि श्री अप्पासाहब, कमलनयन और कुछ और लोग चुपचाप खिसक कर शिकारी जानवर देखने निकल गये हैं। हम झुंझलाये। मैंने तुरन्त मोहम्मद साहबसे कहा, 'अगर लॉरी तैयार कर सकें तो हम भी चलें।' हम गये। घोर अंधकारमें — अनजान जंगलमें — हम चले। मोटरोंके आने जानेसे जो रास्ते पड़ जाते हैं, वे रातको अच्छी तरह दिखाअी नहीं देते। कहीं कहीं झूठा भ्रम भी हो जाता है कि रास्ता होगा। भटकते भटकते हमें अप्पासाहब वाली पार्टी लौटती हुअी दिखाअी दी। अुन्होंने कहा कि, 'अेक गेंडेने हम पर हमला किया था। हम वहांसे भागे परन्तु दिशा भूल गये। टकराते और कुटते-पिटते वापस आ रहे हैं।' हमारे जीमें आया कि हमें भी कुछ न कुछ अनुभव लेना चाहिये। हम भी पेट्रोल या लॉरी पर दया किये बगैर खूब भटके। श्वापद भले ही न मिले हों, परन्तु मोटरके प्रकाशमें झाड़-झंखारके तने देखने और पगपग पर जोखम अुठानेका मजा तो आया ही। अपवादके रूपमें अेक गेंडा चरता हुआ और अेक जरख हमसे डरकर भागता हुआ दिखाअी दिया। गेंडेके दीखते ही भाअी जालको काव्य सूझा और अुन्होंने ललकारा: "छुप छुप बैठे हो जरूर कोअी बात है, पहली मुलाकात है, पहली मुलाकात है!" अुस गेंडे पर अिस प्रेमकाव्यका कोअी असर हुआ हो, अैसा लगा

नहीं। गैंडे लोगोंका प्रेम करनेका ढंग कैसा होता है, यह हम कहां जानते हैं?

हम अितने थक गये थे कि दूसरे दिनका सदुपयोग करनेका संकल्प न होता, तो सुबह आठ बजे तक अुठते ही नहीं।

नींद तो चार ही घंटे मिली, परन्तु हम अितने गहरे सो लिये कि चार बजे ताजा होकर जगे और फिर प्रार्थना करके तैयार हो गये।

साढ़े पांच बजे निकल गये। दिन अुगा। परन्तु भाग्य जागनेके लक्षण नहीं दिखाअी दिये। खूब भटकते भटकते दूर अेक हाथी दिखाअी पड़ा। हमने तरसती आंखोंसे अुसे देख लिया। अितनेमें वह पासके अेक गांवके खेतमें जाकर गायब हो गया। अफ्रीकाके हाथियोंके कान बहुत ही बड़े और चौड़े होते हैं। हममें से दो जने मोटरसे अुतर कर हाथीके पीछे दूर तक चले गये थे। वक्त बचानेके लिअे हमने अुन्हें वापस बुलवा लिया। अुस हाथीके मुख पर अैसा भाव दिखाअी नहीं देता था कि हम सारे प्रदेशमें अकेले पड़े हैं। "मुझे क्या? सारा राज मेरा ही है", अैसी अनिरुद्ध चालसे गजराज घूम रहे थे। 'मुबारक हो आपको अपना राज्य' कहकर हम वहांसे चल दिये। मोरनी और मुर्गीके बीचका रूप धारण करनेवाले गिनीफाअुल, कुछ बंदर और चार पांच तरहके हिरण हमने देखे। अुन्हें देखनेमें मजा तो आया। परन्तु यह हमें कैसे महसूस होता कि अुनके दर्शनोंसे हमारा दिन कृतार्थ हुआ? हम तो तरस रहे थे सिंह, हाथी, गैंडे और महिष जैसे प्रचण्ड और भयानक प्राणी देखनेको। अंतमें अेक दिशासे निराश होकर हम दूसरी तरफ गये। वहां हाथियोंकी ताजा लीद देखकर हमारा अुत्साह बढ़ा। वहां थोड़ी दूर पर दो हाथी घास अुखाड़ते मिट्टी अुड़ाते स्वच्छंद खड़े थे। अिन्सानको देखकर हाथी भड़कता नहीं। लेकिन अगर अिन्सान आवाज करे या हवाके कारण अिन्सानकी गंध अुसकी सूंड़ तक पहुंच जाय, तो हाथीको क्रोध आता है। अिसलिअे

हम खुल्लमखुल्ला परन्तु चुपचाप मोटरसे अुतरकर हाथीकी तरफ जाने लगे। हाथीने हमें देख लिया, परन्तु अपना वनविहार रोका नहीं। जब हम विशेष नजदीक गये, तब अुसे पसन्द नहीं आया। हमें धमकानेका भी अुसका अिरादा नहीं था। अुसने सिर फेर लिया और धीरे-धीरे वहांसे खिसक गया। तब हमने अुसे छोड़कर दूसरे हाथीकी तरफ अपनी मोटर हांकी। फिर अुतरकर हम अुसके निकट गये। अुसने भी थोड़े समय हमें सहन करके नया रास्ता ले लिया। यह समझकर कि दिन सफल हुआ, हम लौट रहे थे कि हमारे साथके अेक अफ्रीकीने अिशारा किया कि 'पास ही अेक सिम्बा (सिंह) है।' तुरन्त हमारा सारा ध्यान हमारी दोनों आंखोंकी पुतलियोंमें आकर बैठ गया। परन्तु हमें शेरको देखनेकी जितनी अुत्कंठा थी, अुतनी अुत्कंठा शेरको अिन्सानको देखनेकी नहीं थी। अिसलिअे वह हमारी मोटरके नजदीककी घास और झाड़ियोंमें से बाहर आकर दूसरे रास्तेसे भीतरकी तरफ लुप्त हो गया। अयाल नहीं थी अिसलिअे हम समझ गये कि सिंहनी है। सिंह ताकतवर जानवर भले ही हो, परन्तु क्रूर नहीं दिखाअी देता। अुसके मुंह पर सज्जनता छाअी होती है। अुसमें जरासी तुच्छता की छटा होती है, जो अिन्सानको देखकर यों ही बढ़ जाती है। सिंहनीने हमारी तरफ देखा और चली गअी। परन्तु अितने से हम पर यह असर पड़ गया कि हम लोग अुसकी नजरमें कुछ नहीं। सिंहको देखनेके आनन्दमें अपमान और तिरस्कारकी यह भावना मिला कर ही हमें लौटना पड़ा।

सारा सामान मोटरों और लॉरियोंमें भर लिया और पिछली रात और आजकी सुबह जिन भाअी-बहनोंने हमारी सेवामें बिताअी थी, अुनका आभार मानकर हम रवाना हुअे।

बहुत कुछ देखा। हमारी वनयात्रा सफल हुअी, यह भावना लेकर हम लौटे। अितनेमें अेक आदमीने आकर मानो हमारे कानमें कहा, 'जरा मुड़ कर बायें जायंगे तो वहां कितने ही हाथी हैं।' हमारी अुत्सुकता तुरंत जग

अुठी और हम हाथियोंकी तलाशमें निकल पड़े। हमें अधिक भटकना भी नहीं पड़ा। अेक, दो, चार करते करते आठ हाथी हमने पेड़की डालियां तोड़कर पेटके अर्पण करते देखे। हम अुतर कर हाथियोंकी तरफ चलने लगे। अुनमें अेक हाथी छोटा था। अुसकी नजर हम पर सबसे पहले पड़ी। अुसने अपनी सूंड़ हमारी तरफ अुठाअी और दोनों कान चौड़े फैलाकर हमें सूचित किया कि, 'आप लोग कितने ही अच्छे हों, हमारे खयालसे अिष्ट नहीं हैं।" हाथी सूंड़ अूंची करे और कान फैलाये, तो समझ लेना चाहिये कि वह नाराज हो गया है। हम जरा ठिठके और छोटा हाथी नरम नरम डालियां तोड़कर खाने लगा। हमारी हिम्मत बढ़ी तो आगे चले।

अगर हाथी हम पर हमला करते, तो हम सहीसलामत मोटर तक दौड़ सकते या नहीं, यह सन्देहास्पद है। और मोटर भी हाथीके आगे सुरक्षित नहीं है। मोटरका पहिया सूंड़में पकड़कर अुसे अुलट देनेमें हाथीको देर नहीं लगती। और दो हाथी मिलकर मोटरको मत्थेसे धक्का लगायें तो तुरन्त स्वीकार करना पड़े कि मोटर लोहेकी नहीं परन्तु मोमकी बनी हुअी थी। फिर भी हम जिज्ञासासे कुछ न कुछ आगे बढ़े। आज तक अिस जिज्ञासाके कारण कम लोगोंने प्राण नहीं गंवाये। परन्तु जिज्ञासा कभी कभी जिजीविषासे भी अधिक प्रबल सिद्ध होती है। हमारा अविनय देखकर हाथी नाराज हुअे। परन्तु हम पर क्रुद्ध नहीं हुअे। सवेरे अुठ कर अिन दो पैरवालोंको कौन छेड़े, यह विचार करके अिन लोगोंने अुस स्थानको छोड़कर जाना तय किया। परन्तु व्यवस्था न रखें तो वे हाथी नहीं। तलवार निकाली हुअी हो, अिस तरहके दो दांतोंवाला अेक बड़ा हाथी सबसे पीछे रहा। अेक आगे चला। हथिनी और बच्चे बीचमें रहे और अिस प्रकार आठोंका यह जुलूस अेकके बाद अेक वनमें चला गया। जल्दबाजी जरा भी नहीं पाअी जाती थी। मानो वे यह समझते हुअे चले कि वनदेवीकी सवारी गंभीरताके साथ ही चलनी चाहिये। हमने वह जुलूस जी भर कर देखा। अुसके

चले जानेके बाद हम थोड़े समय वहां खड़े ही रहे, मानो देखा हुआ सारा दृश्य हमारे समक्ष विद्यमान ही हो!

पालतू हाथियोंके जुलूस हम कअी बार देखते हैं। आठ-आठ दस दस हाथी, अरे पचास पचास हाथी तक हम अिकट्ठे ला सकते हैं। परंतु स्वच्छन्द विहार करते हुअे आठ हाथियोंको अेक जगह कौन ला सकता है? और वे आठ कैसे! लम्बे लम्बे और मुड़े हुअे दांतोंवाले, पेड़ोंकी छोटी मोटी डालियां तोड़कर खा जानेवाले। मैं अिन प्रचण्ड गंभीर प्राणियोंको देखकर धन्य धन्य हो गया। जब अुनका जुलूस चला तब अैसा ही मालूम हो रहा था, मानो समस्त वनकी महत्ता चल रही हो। वह दृश्य जन्मभर भुलाया नहीं जा सकता।

लौटते समय हमारी पार्टियां अलग अलग हो गअीं। जो जल्दी रवाना हुअे, वे सीधे रास्ते गये। हम अपने गजानन्दकी जुगाली करते करते चले। और दाहिनी ओर जानेके बजाय बाअीं तरफ मुड़े। हमारी दिशा ठीक है या नहीं, अिसकी जांच करनेके लिअे मैं बार बार पीछे मुड़कर किलिमांजारोकी तरफ देखता था। मुझे लगा कि कोअी भूल हो रही है। परन्तु मोटरकी पगदंडी दूसरी नहीं थी। मैं नकशा देखता जाअूं और कहता जाअूं कि "दिशा-भूल हो गअी है।" और लोग कहें "नहीं, ठीक है।" सभी अनजान! हरअेकके दिमागमें आत्मविश्वास और अविश्वासकी लहरें अेकके बाद अेक अुठती जातीं। जो आदमी विश्वासके साथ चलता, वह कुछ समय बाद विश्वास खो बैठता, तब तक दूसरे मस्तिष्कमें गड़बड़ी हो जाती। फिर वह दिशा बताना स्वीकार करता और नया घोटाला कर देता! 'नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्'— अेक भी अैसा समझदार नहीं मिलता था कि जिसके वचनको प्रमाण मानकर चला जा सके।

अेक बार तीन महाराष्ट्री वनमें घूम रहे थे। अुन्होंने अेक नेवला देखा। अेक आदमी बोल अुठा, "सुमंग, सुमंग, सुमंग!" दूसरा क्रुद्ध

होकर बोला, "सुमंग सुमंग क्या करता है? अिसका नाम तो मुसंग है।" तीसरा समझदार बनकर कहता है, "जान लिया, जान लिया! अिसका नाम है घुंमस।" नेवलेके लिअे मराठीमें सच्चा नाम है मुंगुस! अुन्हींके जैसी हमारी स्थिति थी। संतोष अितना ही था कि वक्त सवेरेका था। हम रेगिस्तानमें अुगी हुअी छोटी घासमें से जा रहे थे, अिसलिअे दूर तक देख सकते थे। और पेटमें नाश्ता था और मोटरमें पेट्रोल था। हम अिस तरहसे दिशा बदल बदल कर जा रहे थे कि किसी अनजान आदमीको अैसा लगता कि अिन लोगोंको किसीने आम्बोसेलीकी लम्बाअी चौड़ाअी बाकायदा माप लेनेकासर्वे (survey) काम सौंपा है। और ये लोग अुसे अेक खास समयके अंदर पूरा करके अिनाम कमानेके लिअे भागदौड़ कर रहे हैं।

पहले तो रास्ता भूलनेमें भी मजा आया, परंतु धीरे धीरे नाश्ता पचने लगा और पेट्रोलका धुआं हो गया। अब अगर रास्तेमें ही पेट्रोल खतम हो जाय तो? हमने मोटरका भोंपू बजाकर दसों दिशाओंमें घोषणा कर दी कि हम रास्ता भूल गये हैं। परंतु वापस प्रतिध्वनि करनेके लिअे कोअी पहाड़ी भी नजदीक नहीं थी। ध्वनि अंतरालमें विलीन हो गअी और मैदानकी शांति पूर्ववत् स्थापित हो गअी।

काफी वक्त निकलनेके बाद हमारी ही पार्टीकी अेक मोटर दाहिनी ओर दूर दूर धूल अुड़ाती हुअी दौड़ती दिखाअी दी। हमने अुन्हें देख लिया और अुस दिशामें दौड़ लगाअी। परंतु वे स्थिर नहीं थे। बीचमें कोअी रास्ता मिलता तो यह समझकर कि वह हमसे सयाना समझदार है, अुसकी सलाहके अनुसार चलते। परंतु वह कोअी हमारे लिअे वहां खड़ा नहीं था। थोड़ासा आगे जानेके बाद मूक रास्तेकी सलाह मानने पर पछता कर हम फिर अपना दिमाग चलाते। अिस प्रकार करते करते मैदान पार करके हम झाड़ियोंके जंगलमें पहुंचे। वहां रास्ता मिलनेमें काफी देर लगी। मोटरको सख्त भूख लगी थी। वह कोअी मनुष्य नहीं कि खुराकके बगैर काम चला सके।

दोपहर होते हुअे भी पक्षियोंके घोंसलोंने हमारा प्रेमसे स्वागत किया, हमें आगेका रास्ता बताया और हम ज्यों त्यों करके नमंगा पहुंच गये और वहां थोड़ा खा लिया।

नमंगा, जो कल हमारा मिलन स्थान था, आज विदाअी और विखर जानेका स्थान बना। कुछ लोग अरुशाकी तरफ गये, कुछ नमंगामें ही रह गये और बाकीके सब लोग तीन मोटरोंमें बंट गये और नैरोबीकी तरफ चल पड़े। रास्ता सुन्दर था। यहां अभयारण्यका आश्रय न लेनेवाले कितने ही श्वापद हमारे देखनेमें आये। खास तौर पर जिराफ, शुतुर्मुर्ग, बुद्दू और चित्राश्व। १०२ मीलका रास्ता काटकर हम नैरोबी पहुंचे। अब नैरोबी शहरके पास स्थित अभयारण्य हमें सादा और बेमजा लगने लगा! अुसी दिन मुझे स्व० गिजुभाअीकी पुण्यतिथिकी सभामें जाना था, अिसलिअे हमारी मोटरने विशेष वेगसे दौड़ लगाअी। हम नैरोबी पहुंचे और हमारी पूर्वी अफ्रीकाकी यात्राका पूर्वार्ध पूरा हुआ।

२१

फिर नैरोबीमें

नैरोबीमें दो ही दिन रहकर हम युगांडाकी यात्रा पर निकलनेवाले थे। नैरोबीमें आते ही भाअी वसन्त नायक और श्रीमती कान्ताबहनके स्वामित्वके बालमंदिरकी तरफसे होनेवाले गिजुभाअी अुत्सवमें मुझे भाग लेना था। मैंने अिन लोगोंसे कहा कि, "स्वर्गीय गिजुभाअीने बालशिक्षाके लिअे फकीरी ली, अुससे पहले वे वकालत करनेके लिअे पूर्वी अफ्रीका आये थे और अुन्होंने स्वाहिली भाषा सीखी थी। यह बहुत लोगोंको मालूम नहीं होगा। आज गिजुभाअीके ४० शिष्य अुसी पूर्वी अफ्रीकामें बालशिक्षाका काम कर रहे हैं। यह कितना सुन्दर है!"
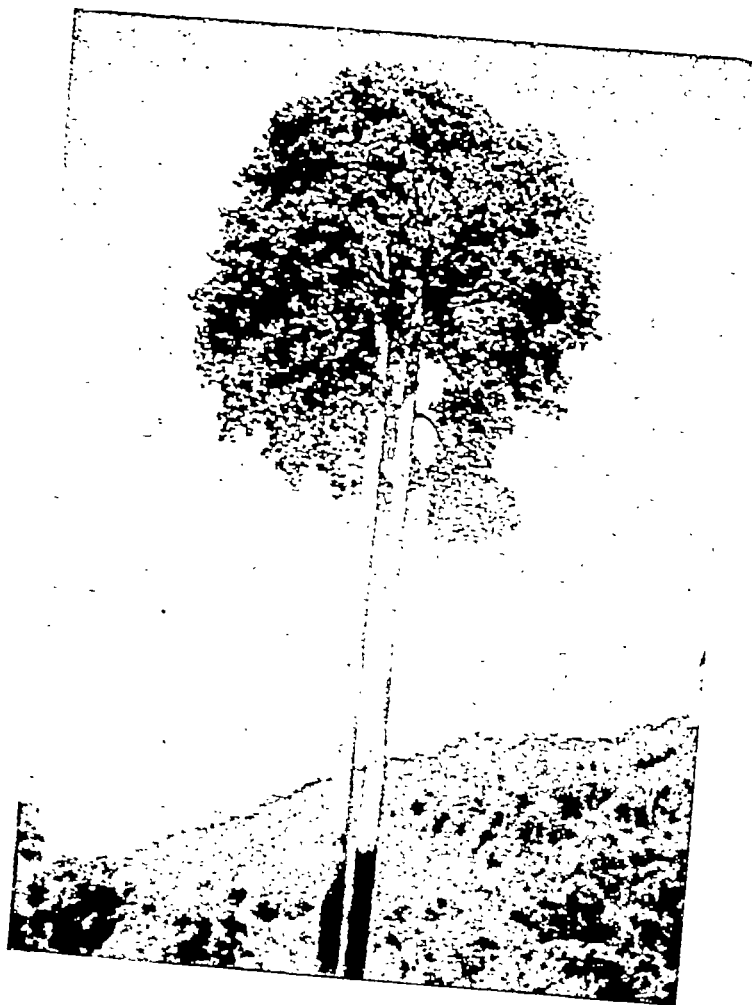
'वृक्षनसे मत ले'
दो होते हुअे भी अेक

[पृ० ७५

स्तन्यदायिनी — वंशवृद्धिकी चिन्ता अिन्हें नहीं है।

सन्तोषी संस्कृतिके प्रतिनिधि

टांगानिकाके वतनी [पृ० ४६

तुम्हारी तरफ कौन देखे ? — अफ्रीकी वनराज [पृ० २७१
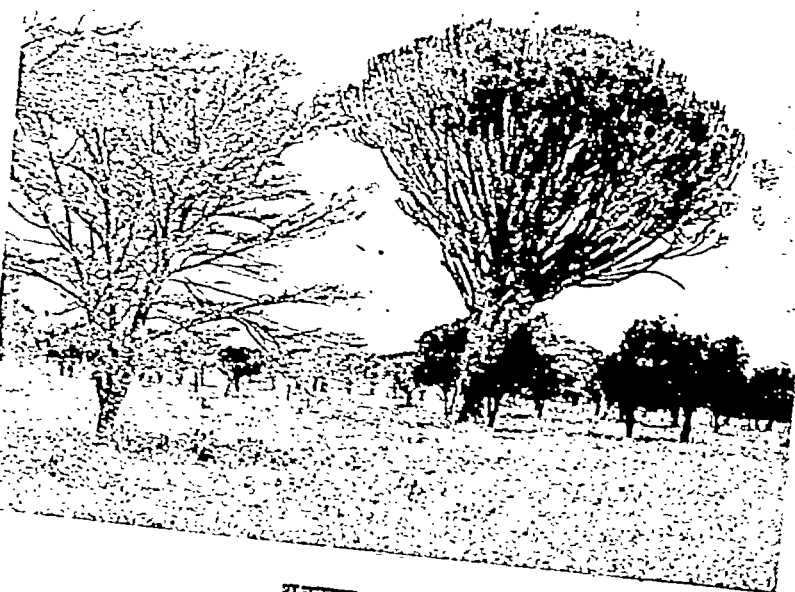
यहरका

धरतीमाताके बालक मशाओी लोग [पृ० १४९

अन्तिम दृश्य ?

थोड़े ही दिनोंमें अिस प्रपातकी जगह बिजलीका कारखाना खड़ा होगा। [पृ० २०६
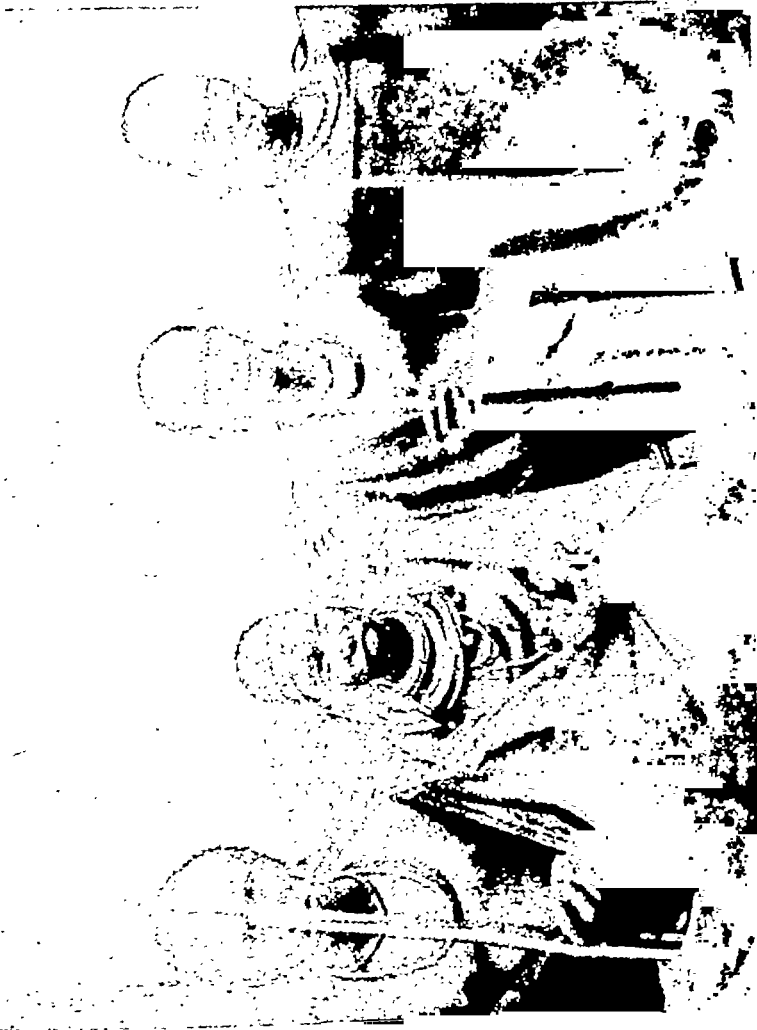
छलांग मारनेसे पहलेकी शान्ति — नील नदीका जन्मस्थान [पृ० १९९

अफ्रीकी

अफ्रीकी संस्कृतिकी परिसीमा [पृ० ४६
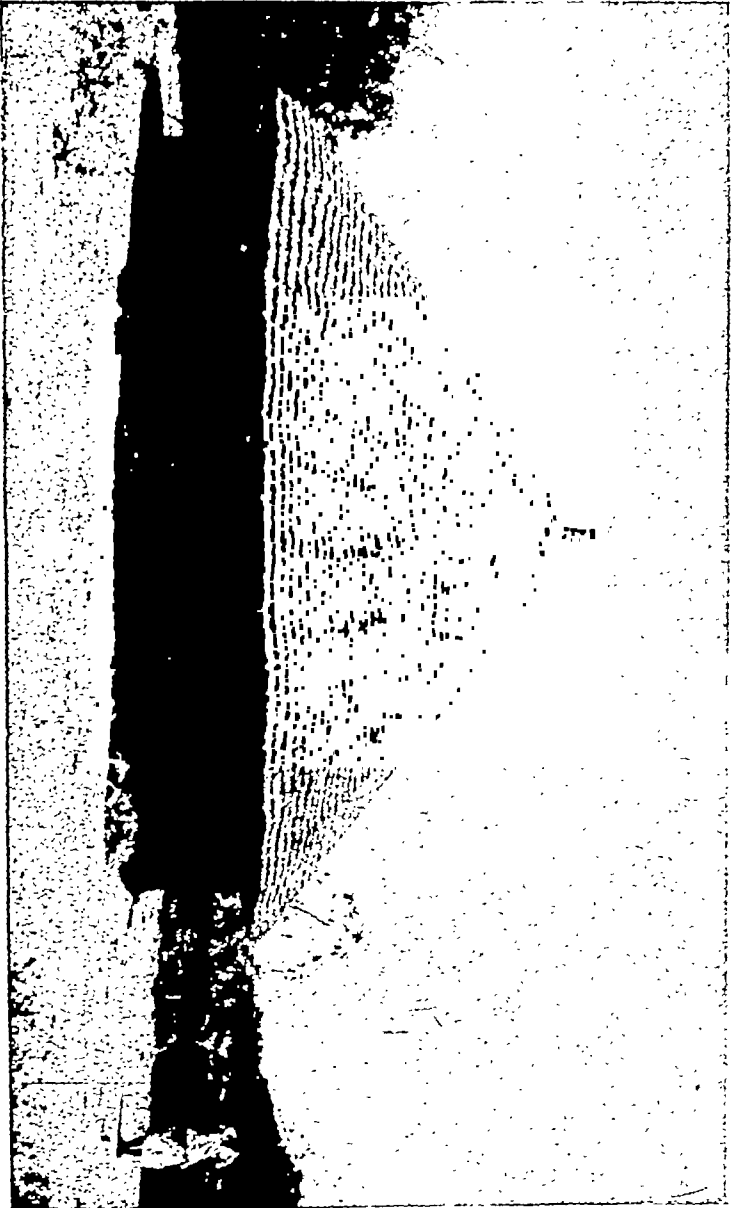
वालशिक्षाका महत्त्व लोगोंको समझाया और ख़ानगी संस्थाओंको भी खुले हाथों मदद देनेकी सिफारिश की।

रातको भाओी अिब्राहीम नायूके यहां भोज था। वहुतसे युरोपियन आये थे। मैंने अेक छोटासा भाषण दिया। वादमें प्रश्नोत्तर हुअे। हालांकी युरोपियनोंने प्रश्न नहीं पूछे, परन्तु अुनकी वातें प्रश्नके रूपमें ही अिब्राहीमभाओीने रखीं। अुन्होंने कहा कि, "हिन्दुस्तानी लोग छोटे-छोटे धन्धोंमें से अफ्रीकियोंको खदेड़ रहे हैं और अिसलिअे कुछ लोगोंका यह विश्वास है कि वे अफ्रीकियोंके शत्रु हैं। अिस वारेमें आपका क्या कहना है?"

मैंने कहा, "आपने प्रश्न अच्छा पूछा। जवसे पूर्वी अफ्रीकामें आया हूं, तवसे हर जगह अपने देशके लोगोंसे शिकायत करता रहा हूं कि, 'आप अफ्रीकी लोगोंके साथ काफी मिलते-जुलते नहीं। आपको अपने धन्धोंकी खूवियां अुन्हें सिखानी चाहियें, अुन्हें साथ लेना चाहिये,' वगैरा वगैरा। अिसलिअे आज अगर अुनके पक्षमें जो कुछ कहने लायक है, वह कह दूं तो अुनके साथ कुछ न कुछ न्याय होगा और मेरा भी भला ही होगा।

"आप कहते हैं कि, 'छोटे-छोटे धन्धोंमें से हिन्दुस्तानियोंने अफ्रीकी लोगोंको निकाल दिया है।' अिसका जवाव क्षणभर वाद दूंगा। परन्तु वड़े-वड़े धन्धोंका क्या हाल है? सवसे वड़ा धन्धा राज्य करनेका है! वह तो अफ्रीकियोंके हाथमें था। पर अव किसके हाथमें चला गया है?

"अव मुझे वताअिये कि कौन कौनसे धन्धे अफ्रीकियोंके हाथमें थे, जो हिन्दुस्तानियोंने अुनसे छीन लिये हैं? अैसा अेक भी धंधा वता सकेंगे? अुल्टे मैं आपको अैसे अुदाहरण दे सकता हूं, जहां वेचारे हिन्दुस्तानी अैसे जंगली अिलाकेमें जाकर रहे, जहां अंग्रेज भी नहीं पहुंच सकते; और वहां विलकुल नंगे रहनेवाले लोगोंको अेक-अेक शिलिंगमें अेक-अेक पायजामा देकर कपड़ा पहननेवाले वनाया। जो काम वे खुद करते, अुसमें अफ्रीकियोंको सहायक वनाकर हमारे लोगोंने

अुन्हें बढ़अीका काम सिखाया, दर्जीका काम सिखाया, और तरह तरहका भोजन बनाना सिखाया। अिसीलिअे तो वे लोग अंग्रेजोंके यहां अुपयोगी नौकर बन गये।

"हमारे लोगोंने यहां रेलवे बना दी। अुस काममें कितने ही भारतीय भाअी जंगली जानवरोंके पेटमें पहुंच गये, कितने ही मलेरियाके शिकार बन गये। अिस प्रकार हमारे लोगोंने यहां अंग्रेजों और अफ्रीकियोंकी कम सेवा नहीं की। यह सही है कि हम लोगोंको बड़े-बड़े शब्दोंमें अपनी सेवाका बखान करना नहीं आता। अैसे भी लोग होते हैं जो बेशुमार धन भी लेते हैं और सेवाकी बात करते हैं। और अैसे लोग भी होते हैं जो जानकी जोखिम अुठाकर सेवा करते हैं, केवल पेट भर लेते हैं और सेवाका नाम लेनेमें संकोच अनुभव करके नम्रतापूर्वक कहते हैं कि, 'हम यहां पेटके लिअे आये हैं।' अैसे लोगोंकी निन्दा करना किसीको भी शोभा नहीं देता।

"और दूर जंगलमें दुकान खोलकर रहनेवाले हमारे लोग कमाते भी कितना हैं? अगर वे अैश-आराममें रहकर फिजूलखर्ची करते और दुराचार फैलाते तो अुनके हाथमें कुछ न रहता। हमारे लोगोंका स्वभाव है कि बापका कर्ज सिर पर न रखें। कानूनके अनुसार कर्ज चुकाना लाजमी न हो, तो भी लड़का बापका कर्ज चुकाये बगैर नहीं रहता। अिस प्रकार अगर किसीने यहां किफायत करके रुपया बचाया हो और हिन्दुस्तानमें भेजकर बापको ऋणमुक्त किया हो या किसी शिक्षासंस्थामें या मंदिरके जीर्णोद्धारके लिअे रुपया दिया हो, तो अिसकी अितनी शिकायत क्यों? हमारे लोगोंने अफ्रीकियोंका सारा देश कब्जेमें तो नहीं किया; अिनके बीच रह कर वे सेवा ही करते रहे हैं। हमारे लोगोंकी रक्षाके लिअे फौज नहीं रखनी पड़ी। हमारा रहना अफ्रीकियोंको अगर बुरा लगता, तो जंगलोंमें हम अरक्षित और अकेले जाकर रह नहीं पाते।

"अब मैं अुनसे कहता हूं कि आप शिक्षामें आगे बढ़िये। अपने बच्चोंको अच्छीसे अच्छी शिक्षा दीजिये। अफ्रीकियोंको भी अुसका

लाभ दीजिये। यहांका रुपया यहीं खर्च कीजिये। आप जिस देशमें रहते हैं, वह कॉमनवेल्थका सदस्य है। हम भारतवासी भी राजीखुशीसे अिस कॉमनवेल्थमें रहे हैं, अिसलिअे अंग्रेजोंके साथ हमारा संबंध मित्रतापूर्ण रहना चाहिये।

"वंशभेदके कारण अुत्पन्न होनेवाला अलग-थलगपन किसी दिन अवश्य दूर होगा और हम सब मिलकर अिस देशमें विश्व-कुटुम्बकी स्थापना कर सकेंगे।"

अिन्हीं दिनोंमें विलायतके अेक प्रसिद्ध पत्रकार आये हुअे थे। कहा जाता है कि अुन्हें हिन्दुस्तानियोंसे न मिलने देनेका पूरा प्रयत्न हुआ था। परंतु अिस भोजमें अुन्हें निमंत्रण दिया गया और वे आये। अुन्होंने शर्त रखी थी कि "मैं आ तो जाअूंगा परंतु मुझसे बोलनेके लिअे न कहियेगा।"

मेरे भाषणके बाद अुन साहबसे नहीं रहा गया। अुन्होंने कहा "आजके मेहमान नम्रतासे कहते हैं कि 'अिस देशमें केवल दो महीने रह कर सर्वज्ञकी तरह अुपदेश करनेका — 'ग्लोब ट्रॉटर' का काम मैं नहीं करूंगा।' मैं तो यहां तीन ही दिनसे आया हूं और फिर भी अपनी राय देना चाहता हूं! तीन बरस पहले अिसी तरह अेक बार मैं यहां आया था। अुस वक्त हिन्दुस्तानियोंके बारेमें बहुतसी प्रतिकूल बातें सुनी थीं। अिस बार कम्पालामें मैंने देखा कि अेक भारतीयने अुस शहरको बढ़िया पार्क दिया है। अेक टाअुन हॉल बना दिया है। अिन लोगोंने अफ्रीकी लोगोंके लिअे छात्रवृत्तियां दी हैं। मैं समझ नहीं सकता कि वे क्या करें? ये लोग अगर थोड़ा पैसा स्वदेश भेज दें, तो कहा जाता है कि They are bleeding Africa white — वे अफ्रीकाका खून चूस रहे हैं; और यहां घरबार बना कर यहांके होकर रहना तय करें, तो कहा जाता है कि ये लोग अफ्रीकाको खरीदने बैठे हैं। तो आखिर ये लोग करें क्या? अिस समय अिन २० मिनिटोंमें मैं जितना समझ सका हूं, अुतना बहुत घूमकर भी

न समझ सकता। आपके जैसे लोगोंको यहां अकसर आना चाहिये और गलतफहमियां दूर करनी चाहियें।"

हमारे दोनोंके भाषणोंका युरोपियन मेहमानों पर क्या असर हुआ सो जाननेमें नहीं आया। हिन्दुस्तानी मेहमान खुश हुअे, अिसमें आश्चर्य नहीं। परंतु में मानता हूं कि अुन्हें अपने कर्तव्यका भान हुआ। श्री बार्टलेटकी मौजूदगीका परिणाम बहुत अच्छा हुआ।

दूसरे दिन सवेरे यहांकी अेक प्रारम्भिक पाठशालाके आचार्य मिलने आये। अुन्होंने शिक्षण-कलाका अेक सवाल छेड़ा कि, 'प्रारंभ अक्षरोंसे किया जाय, शब्दोंसे किया जाय या वाक्योंसे किया जाय? प्रारम्भिक अिकाअी किसे माना जाय?' राजनैतिक और सामाजिक बातें कर करके अूबे हुअे मुझको यह विषयान्तर खूब भाया। मैंने अुनसे कहा कि, "गुजराती, हिन्दी वगैरा स्वभाषा सिखाते वक्त हमें लेखन द्वारा भाषा सिखानी ही नहीं चाहिये। हमें भाषाका ज्ञान प्रारंभमें मौखिक ढंगसे ही देना चाहिये। लेखनकी जल्दी न करनी चाहिये। लिखना-पढ़ना सीखनेसे पहले बालक सुन्दर साहित्य-गद्य और पद्य-बहुतसा सुनें, कंठस्थ करें, संवादोंका अभिनय करें, पत्र लिखायें, वर्णन लिखायें। अितनी तैयारी होनेके बाद भाषाकी अिकाअी ढूंढनेकी जरूरत नहीं। विचारोंकी अिकाअी वाक्य है, अिस बारेमें शंका नहीं। परंतु लिखनेमें सच्ची अिकाअी अक्षरमें भी नहीं और शब्दमें भी नहीं, सच्ची अिकाअी 'सिलेबल' है। सिलेबलका अर्थ है अेक स्वर और अुसके आधार पर बोले जानेवाले अेक या अधिक व्यंजन मिलकर तैयार होनेवाली ध्वनि। यह सिलेबल ही हम बारहखड़ी द्वारा बच्चोंको सिखाते हैं। हमारे अक्षर 'लेटर्स' नहीं, परंतु 'सिलेबल्स' हैं। हरअेक अक्षरके भीतर अकार छिपा ही रहता है। अिसलिअे अंग्रेजीमें जिस ढंगसे अिस विषयकी चर्चा होती है, वही ढंग हमारी भाषामें लानेकी जरूरत नहीं।" मेरे संक्षिप्त अुत्तरसे मेरे अुस व्यवसाय-बन्धुको पूरा संतोष नहीं हुआ। मेरे पास अधिक समय होता, तो यह सब विस्तारपूर्वक समझाता।

मेरे अेक मित्रके अेक संबंधी लिसोटोमें रहते थे। वे अपनी पत्नी और बच्चेको लेकर मुझसे मिलने आये। वे डॉक्टर थे और आगे पढ़ाओके लिअे विलायत जाना चाहते थे। अुनके सामने यह सवाल था कि पत्नीको साथ लेकर अुन्हें नर्सिंगके लिअे तैयार कर लिया जाय तो दोनोंके लिअे ठीक रहे। परन्तु ६ बरसके बच्चेका क्या किया जाय? माता-पिताके सहवासके कारण बालकमें अुसकी अुम्रके हिसाबसे ज्यादा समझदारी आ गयी दिखाओी दी। वह अकेला हिन्दुस्तान जाने और वहां किसी बोर्डिंगमें रहकर आगे पढ़नेको तैयार हो गया। ६ वर्षका लड़का अफ्रीकासे हिन्दुस्तान अकेला जानेको तैयार हो जाय और मां-बापके लौटने तक अकेला रहनेको तैयार हो जाय, यह हम लोगोंके लिअे मामूली बात नहीं। मां-बापको मैंने आवश्यक सलाह दी और अुनकी अिस हिम्मतके लिअे अुन्हें बधाओी दी। अफ्रीका जैसे दूर देशमें आकर रहनेसे कुटुम्बमें कैसे सवाल पैदा होते हैं और अुन सवालोंसे निपटनेकी कितनी हिम्मत हमारे लोग पैदा कर लेते हैं, अिसका नमूना दर्ज करनेके लिअे ही यह किस्सा मैंने खास तौर पर यहां दिया है।

जैसे मुझे श्री गिजुभाओी-अुत्सवमें भाग लेना था, वैसे ही अिस बार नैरोबीके महाराष्ट्र मंडलके मकानकी कोण-शिला (कॉर्नर स्टोन) रखनेका काम भी करना था। महाराष्ट्रियोंके मेरे प्रति सद्भावके लिअे मैं सदा अुनका ऋणी रहूंगा। बात यह है कि मेरी शिक्षा पूरी हुओी तबसे, यह कहा जा सकता है, मैं महाराष्ट्रमें रहा ही नहीं। ज्यादातर गुजरातमें रहा हूं और फिर सारे देशमें घूमता ही रहा हूं। परिणाम-स्वरूप महाराष्ट्रियोंके साथ मेरा संबंध बहुत ही कम माना जा सकता है। महाराष्ट्रके लोग लोकमान्य तिलककी राजनैतिक कार्यपद्धतिको विशेष जानते और मानते हैं। गांधीजीकी पद्धति अुनके गले अुतरनेमें मुश्किल होती है। अिस कारण भी वे मेरे साथ मिलने जुलनेमें कुछ-कुछ संकोच अनुभव करते हैं। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी दोनों

स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध थे, दोनों महान देशभक्त थे, दोनोंके मनमें अेक दूसरेके लिअे असीम आदर था। फिर भी दोनोंकी कार्य-पद्धतिमें कुछ मौलिक भेद था। यह भेद समझकर अपनी मान्यता और अभिलाषाके अनुसार स्वराज्यकी सेवा करना दोनोंके अनुयायियोंके लिअे मुश्किल नहीं था। परन्तु जहां पद्धति-भेद आया, वहां विवेक छोड़कर भी आपसमें चर्चा करना और भेद बढ़ाना जिन लोगोंका स्वभाव था, अुन्होंने दोनों ओर मामला बिगाड़ा। अिस परिस्थितिका बहुत अनुभव किया हुआ होनेके कारण मुझे जब महाराष्ट्री अपनाते हैं और किसी खास अवसर पर बुलाते हैं, तब मनमें कृतज्ञताकी भावना पैदा हुअे बिना नहीं रहती। परंतु जब अुनसे मिलता हूं, तब केवल शिष्टताकी चार बातें कहकर वापस नहीं चला आता। बहुतसी बातें साफ-साफ कहनी ही पड़ती हैं।

हिन्दुस्तानमें महाराष्ट्री मेरा यह स्वभाव समझ गये हैं, अिस-लिअे अब पहले जैसी मुश्किल नहीं होती। यहांके महाराष्ट्रियोंके साथ मेरा सम्पर्क नहींके बराबर है। गुजरातियोंने मेरा साहित्य थोड़ा बहुत पढ़ा है। मैं बीस-पच्चीस वर्ष गुजरातमें रहा हूं और वह भी गांधी युगके प्रारंभके दिनोंमें। अिसलिअे गुजरातियोंके बीच और मेरे बीच आत्मीयता पूरी तरह जम गअी है। महाराष्ट्रियोंकी यह बात नहीं है।

अैसे वातावरणमें जब यहांके महाराष्ट्रियोंने अपने मंडलकी अिमारतकी कोण-शिला रखनेके लिअे मुझे बुलाया, तब मुझे बहुत ही आनन्द हुआ। यहांके महाराष्ट्री या तो सरकारी अफसर हैं या कर्मचारी वर्ग हैं। गुजरातियोंकी तरह अुनके पास रुपयेकी बहुतायत नहीं है। मराठी भाषाकी अेकाध पाठशाला स्थापित करना भी अुनके लिअे कठिन है। न रुपया मिलता है और न काफी विद्यार्थी। बड़ी मुश्किलसे अिन लोगोंने थोड़ासा रुपया अिकट्ठा किया और थोड़ासा लोनके तौर पर ले लिया। अुनकी होशियारी और अीमानदारीकी साख अच्छी होनेसे लोन लेनेमें अुन्हें कठिनाअी नहीं होती। अच्छे

स्थान पर जरूरी जमीन प्राप्त करके अुन्होंने प्रारंभ कर दिया और जब मैं यह लिख रहा हूं तब तो जिस हॉलकी कोण-शिला मैंने रखी थी, वह लगभग पूरा भी होने आया है।

मैंने अपने भाषणमें महाराष्ट्रियोंसे अुनके अितिहास-सिद्ध स्वभावकी बातें कहीं। चीनी यात्री ह्यूअेनसांगने महाराष्ट्रियोंके बारेमें जो कुछ लिखा है, वहांसे लगाकर शिवाजीके समयके मद्रासी कवि व्यंकटाध्वरिके वचनों तकका हमारे देशके लोगोंका मत अुद्धृत करके मैंने अुनसे कहा कि, "हमारे लोग किसीका दम्भ, कृत्रिमता या खाली बातें सहन नहीं कर सकते। यह सब ठीक है। परंतु दम्भ या खाली बातों और आदर्शवादके बीचका भेद समझना चाहिये। आदर्शकी बातें अेकदम अमलमें नहीं आतीं। आदर्शवाद सदियों तक हवामें ही रह जाता है, अितनेसे ही अुसका भी विरोध करना शुरू करें, तो जीवनमें श्रेष्ठ तत्त्व रह ही नहीं जाता। महाराष्ट्रियोंको आदर्शवादका विरोध हरगिज नहीं करना चाहिये। आदर्शवाद महाराष्ट्रके संतोंसे मिली हुअी हमारी कीमती पूंजी है। शंकाशील बनकर हम अिसे खो न बैठें। नौकरीकी कारगुजारीमें ही अटके न रहकर हमें आगे बढ़ना चाहिये," अित्यादि। अिस अुत्सवमें नैरोबीके छोटे बड़े सभी महाराष्ट्री जमा हुअे थे। स्त्रियों और बच्चोंकी अुपस्थिति भी अच्छी थी। अिसलिअे सारा वातावरण अेक विशाल कुटुम्बके जैसा बन गया था। मैंने अुनसे कहा कि अपने मंडलकी प्रगतिके बारेमें मुझे समय समय पर लिखते रहिये और बैठे या मैदानी खेलोंमें सिर्फ महाराष्ट्रियोंको ही नहीं, परन्तु नैरोबीमें रहने वाली तमाम जातियोंको शरीक कीजिये।

माननीय माथू यहांके अफ्रीकी लोगोंके नेताओंमें से अेक हैं। रातके अेक दो भोजोंके समय अुनसे परिचय हो गया था। अुनकी अिच्छा थी कि हम अेक बार अुनके घर जायं और अुनके घरके लोगों और कुछ मित्रोंके साथ आरामसे बातें करें। नैरोबीकी पहली यात्राके समय अैसा न हो सका, अिसलिअे अिस बार हम आग्रहपूर्वक अुनके

यहां गये। अुनका घर नैरोबीसे २६ मीलकी दूरी पर है। जाते ही अुनकी पत्नी और बच्चे वगैरासे मिले। थोड़ासा खाया और पीछे अुनके बगीचेमें कुछ घूमकर खुलेमें घास पर बैठ गये।

अफ्रीकी स्त्रियोंके बाल पुरुषोंकी तरह ही घुंघराले होनेके कारण वे अुन्हें लम्बे नहीं बढ़ातीं। शायद बहुत बढ़ते भी नहीं होंगे। अुनके अन्दर ही अुस्तरेसे तीन चार मांगें निकालकर बांके बालोंकी शोभा लाअी जाती है। हमें अैसे सिर देखनेकी आदत नहीं, अिसलिअे पुरुषोंके सिर जैसे लगते हैं। अुनकी पोशाक कुछ कुछ हमारी कुर्ग प्रांतकी बहनोंकी पोशाक जैसी है। धीरे धीरे वह पूरी अंग्रेजी बन जाती है। चेहरा, बाल या पोशाक कैसे भी हों, स्त्रीकी मार्दवता, विनय और शालीनता तो होती ही है। और बच्चोंको लेकर जब खिलाती हैं, तब माताओंका वात्सल्य सारी दुनियामें अेकसा ही होता है। और बच्चे तो भगवानकी मूर्ति हैं। अनजान मुल्कसे आये हुअे नये लोगोंको देखकर अुन्हें प्रथम विस्मय होता है और पास या गोदमें बिठायें तो क्षणभर वे हम पर विश्वास नहीं करते। यह संकोच अेक बार छूटा कि तुरन्त गोदमें अैसे जम जाते हैं कि अुठनेको जी भी नहीं चाहता। छोटे बच्चोंको भाषाकी झंझट नहीं होती। आंखोंसे और मुस्कराहटसे सारा भाव समझ जाते हैं और व्यक्त करते हैं। गलतफहमीके लिअे कोअी कारण ही नहीं होता। हम कोअी आधा घण्टा अनजाने महाद्वीपके अैसे घरोंमें बिताते हैं। परन्तु मैं मानता हूं कि घरके लोगों और आसपासके पड़ोसियोंके लिअे भी वह महीनों तक बातों और चर्चाओंका विषय बनता होगा। अुन्हें लगता होगा कि अितनी दूरसे आनेवाले ये लोग हमारे जैसे नहीं हैं। अिनके देशका जीवन कैसा होगा? परन्तु ये लोग हमारे जैसे बिलकुल नहीं, सो बात भी नहीं।

जब आंगनमें घास पर जाकर बैठे, तब गांधीजीकी नअी तालीम यानी वर्धा-शिक्षाके बारेमें बातें हुअीं। श्री माथू बीचमें ही बोल अुठे, "काकासाहब, आपकी अेक बात मेरे मन पर सोलह

आने जम गअी है। हमें हिन्दुस्तानी भाषा सीखनी ही पड़ेगी। हिन्दुस्तानकी भाषा द्वारा ही हिन्दुस्तानके साथ अपना सम्बन्ध हम दृढ़ कर सकेंगे और हिन्दुस्तानको पहचान सकेंगे। मैं गुजराती सीखना तो शुरू कर ही दूंगा।" अेक आदमीने पूछा, "हम गुजराती सीखें या हिन्दी? आपकी क्या सलाह है? कौनसी भाषासे हमें ज्यादा लाभ होगा?" मैंने कहा कि अिस चिन्तामें जितना समय बितायेंगे, अुतने समयमें दोनों भाषायें सीख सकेंगे। गुजराती भाषा आअी कि हिन्दी आधी आ ही गअी। यहां आपके देशमें गुजरातियोंकी संख्या अधिक है, अिसलिअे आपको यहां वह भाषा अधिक अुपयोगी साबित होगी। अिस कारण वहांसे आरम्भ कर सकते हैं। परन्तु हिन्दुस्तान आना हो, तो हिन्दीके बिना आपका कांम नहीं चलेगा।

'अफ्रीकाके ४० विद्यार्थी आज हिन्दुस्तानमें पढ़ रहे हैं, अिनमें से अेक तो सारी दिल्ली युनिवर्सिटीमें पांचवां आया,' वगैरा बातें मैंने कहीं और कहा कि, "जो लोग कहते हैं कि 'आप सभ्यता-सुधारोंके मामलोंमें पिछड़े हुअे हैं — हजार दो हजार वर्ष पिछड़े हुअे हैं, हिन्दुस्तान या पश्चिमके लोगोंकी पंक्तिमें आकर बैठनेमें आपको हजार वर्ष बाट देखनी पड़ेगी', अुन पर आप विश्वास न कीजिये। अज्ञान दूर करनेके लिअे हजार वर्षकी जरूरत नहीं। २५-३० सालके अन्दर, अेक ही पीढ़ीमें आप सबके जैसे हो सकेंगे। गलत खयाल और तंग भावनायें ('सुपरस्टिशन्स अेन्ड प्रेज्युडिसिस') छोड़ देनेमें बहुत देर लगती है। परन्तु अज्ञान तो पोलेपनकी तरह है। अुसे दूर करते देर नहीं लगती। किसी कमरेमें दो सौ बरसका अंधेरा हो, तो क्या वह वहां जमकर पक्का हो जाता है। दरवाजा खोलते या प्रकाश भीतर ले जाते ही अंधकार गायब हो जायगा।" श्रोता लोगों पर अिस अुपमाका अच्छा असर पड़ा। अुनके चेहरे अेकदम खिल अुठे। सभी कहने लगे, "हां, सच बात है।"

संयोगसे मेरी पुस्तक 'ब्रह्मदेशका प्रवास' के नये संस्करणके प्रूफ हिन्दुस्तानसे अुसी दिन मुझे मिले। हिन्दुस्तानके बाहर पूर्व दिशामें जहां तक गया था, वहांके प्रवास-वर्णनके प्रूफ हिन्दुस्तानके बाहर पश्चिमके सिरे पर बैठकर देखते समय मन बड़ा अुत्तेजित हुआ। ब्रह्मदेशकी माता 'ऑरावती' के दर्शनका वर्णन दुबारा पढ़ रहा था और मिश्रकी माता 'नील' नदीके अुद्गम स्थानकी ओर अुड़कर जानेकी तैयारी कर रहा था! रातको प्रूफ देखे, टिप्पणियां देखीं। दूसरे दिन सुबह अुठकर नये संस्करणकी नअी प्रस्तावना जब लिखी, तो अुसमें जिस अद्भुत संयोगका अुल्लेख किये बिना कैसे रहा जाता!

२२

सरोवर पर व्योम-विहार

सोमवार तारीख २६ जूनको हमने नैरोबी छोड़ा। नैरोबीसे कम्पाला तकका लम्बा सफर हमने सवा दो घण्टेमें पूरा किया। सुबह नौ बजे हम रवाना हुअे। रास्तेमें पहले केनिया हाअीलैंड्सकी खेती देखी। यह सुन्दर अुपजाअू प्रदेश है। यहां रहनेवाले किकूयू लोगोंकी सबसे बड़ी शिकायत यह है कि हमारी अिस अन्नपूर्णाको युरोपियन लोगोंने हजम कर लिया है। लम्बे-लम्बे खेत, मनोहर पहाड़ियां, अुनके बीच बहनेवाले पानीके झरने, गोरे जमींदारोंके बंगले, और बेचारे अफ्रीकियोंकी झोंपड़ियां — ये सब देखते देखते हम आकाशमें आगे चले — चले नहीं बढ़े। पहले तो सब जगह बादल ही थे। मैंने आशा रखी थी कि दूर अेलगनका पहाड़ दिखाअी देगा। परन्तु बादलोंमें कुछ भी दिखाअी नहीं दिया। माअुंट केनियाका धवल शिखर बहुत दूर और पीछेकी तरफ होनेके कारण अुसके दीखनेकी आशा ही नहीं थी। अब हमारी नजरके सामने आता हुआ विक्टोरिया सरोवर दिखाअी

दिया। यह तालाव सारे अफ्रीका महाद्वीपके लिअे वैभवस्वरूप है। मीठे पानीका अितना वड़ा तालाव दुनियामें और शायद ही हो। सत्ताअीस हजार वर्गमीलका मीठे पानीका विस्तार कोअी छोटी वात है! अगस्त्यका स्मरण करके दो आंखोंसे अिस सारे विस्तारको पी जानेकी हमने वहुत कोशिश की। दाअीं ओर दूर किसूमू शहर विक्टोरिया सरोवरसे अिस तरह लगा हुआ दिखाअी दिया, जैसे वछड़ा गायसे लगा रहता है; सरोवरका किनारा वड़ा टेढ़ामेढ़ा है। अन्दर छोटे वड़े अनेक टापू थे और पानीके पृष्ठ भाग पर लज्जाकी झलक थी! सारा सरोवर अितना प्रसन्न–पावन दिखाअी देता था कि मुझमें शक्ति होती तो वहीं अेक स्तोत्र तैयार कर देता। कुछ जहाज अपने पाल फैलाकर सरोवर पर तैर रहे थे। जब कि कुछ वालक-वादलोंको सरोवर पर हवामें तैरनेकी सूझी थी। किस तरह वे दौड़ रहे थे और किल्लोल कर रहे थे! वादलोंने सरोवरकी शोभा कितनी बढ़ा दी थी, अिसका अुन्हें खयाल होता तो वे अितनी जल्दी न विखर जाते। असलमें अिसमें अुनका दोष नहीं था। हमारा विमान वायुवेगसे दौड़ रहा था, अिसलिअे सव वादल पीछे रह गये।

हम कितनी ही तेजीसे दौड़ें — हमारे साथ ठीक अुतनी ही गतिसे हमारे विमानकी छाया दौड़ लगा रही थी। अुसे जमीन, पानी, टापू, वादल — किसी पर भी दौड़नेमें कठिनाअी नहीं थी। वह छाया दोनों ओर पंख फैलाकर दौड़ती थी, क्योंकि अुसे अपनी वफादारीमें कमी नहीं आने देनी थी। विमान वहुत ही अूंचा चला जाता, तो छाया अपनी श्यामलता छोड़ कर अुज्ज्वलता धारण कर लेती। परन्तु सूर्यकी दिशा कायम रखकर वह रहती साथ ही। विमान वहुत ही अूंचा चला जाय, तो छायाके पैर जमीनको नहीं छूते। अुसे अपना मयूख साकाश ही आकाशमें खींचना पड़ता। आगे चलकर पानी पर समानान्तर सफेद रेखाअें दिखाअी देने लगीं। समुद्रमें कभी कभी छोटी छोटी लहरें फूटकर हंसती हैं। अुनके जैसी यह वात नहीं थी। जाड़ेमें जैसे मनुष्य

नाखूनसे शरीर खुजाता है और अुस पर सफेद लकीरें पड़ जाती हैं, वैसी ही ये लकीरें दिखाअी पड़ती थीं। विमानकी गतिके साथ ये तिरछी होकर दृष्टिके पंथमें आती और जाती थीं, जिससे विशेष आकर्षक मालूम होती थीं। ये लकीरें कैसी पैदा होती हैं, अिसका मैं खयाल नहीं कर सका। अैसा कोअी जानकार भी अभी तक नहीं मिला जिससे मैं पूछ सकूं।

हमारा समय पूरा हुआ और सामने अेन्टेबे दिखाअी देने लगा। अेन्टेबेका हवाअी अड्डा सरोवरके बिलकुल किनारे है। हवाअी जहाज नीचे अुतरे तो किनारेको ही छुअे। जरा भूल जाय तो पंख पानीमें भीग जायं। मछलियां पकड़नेवाले बगुलोंकी खूबीके साथ हमारा विमान जमीन पर अुतरा।

विमानसे बाहर निकलते ही तुरन्त कंपालाके खास खास भारतीय नागरिकोंने हम पर अधिकार कर लिया। अेन्टेबेसे कंपाला १९ मील दूर है। अेन्टेबे युगांडाके अफसरोंकी अंग्रेजी राजधानी है। अंग्रेज गवर्नर वहीं रहता है। जब कि कंपाला युगांडाकी व्यापारिक राजधानी है। अिस प्रदेशके अफ्रीकी लोगोंका राजा, जिसे कबाका कहते हैं, कंपालामें ही रहता है। हम अेन्टेबे ठहरे बिना सीधे कंपाला जा पहुंचे।

अिस हवाअी सफरके दौरानमें अिसका ठीक-ठीक खयाल न रहा कि हम भूमध्य रेखा पार करके दक्षिणी गोलार्धमें से अुत्तरी गोलार्धमें कब चले गये।

२३

नौ पहाड़ियोंकी नगरी

अेन्टेबेसे कंपाला तकका १९ मीलका सारा प्रदेश बहुत ही मनोहर है। विमानमें सरोवरकी शोभा देखनेके बाद मोटरके रास्तेसे दौड़ते हुअे यही तालाब कअी तरहसे दिखाअी देता है, अुस समय हमें अैसा आनन्द होता है कि हम कोअी नअी ही शोभा देख रहे हैं।

पूर्व अफ्रीकामें कअी शहर देखे। अुनमें पहाड़ियोंके कारण अनोखी शोभा कंपालाकी, समुद्रतटकी शोभा दारेस्सलामकी और अुंगलियोंमें अुंगलियां डालकर प्रेम करनेवाले तालाब और पहाड़ियोंके गूंथनसे बनी हुअी शोभा कॉस्टरमनविलकी है। अिसका वर्णन आगे आयेगा। अिन नगरियोंकी शोभा भुलाअी नहीं जा सकती।

कंपाला नगरी प्राचीन रोम शहरकी तरह सात पहाड़ियों पर बसी हुअी थी। परन्तु यह नअी नगरी जल्दी जल्दी बढ़ती जा रही है, अिसलिअे अिसमें दो पहाड़ियोंकी वृद्धि हो गअी और आज वह 'नौ पहाड़ियोंकी नवल नगरी' बन गअी है। हम कंपालाके नजदीक पहुंचे और अेक पहाड़ी परकी मस्जिद दिखाअी दी। टेकरीके सिर पर विराजमान मस्जिद अितनी सुन्दर लगी कि हमने निश्चय किया कि पहाड़ी पर जाकर मस्जिदको पाससे देखे बिना कंपाला न छोड़ेंगे। (लेकिन हुआ अैसा कि अबकी बार नहीं, किन्तु युगांडाका सारा कार्यक्रम पूरा करके रुआन्डा-अुरुण्डीवाला बेल्जियन अिलाका देखकर आनेके पश्चात् ही रवाना होते होते हम अुस मस्जिदके पास जा सके।)

अिस मस्जिदका कुछ अितिहास है। मुसलमानोंको मस्जिद बनानेके लिअे अच्छी जगह मिलती नहीं थी। अिसलिअे यहांके कबाकाके किसी रिश्तेदारने अिस पहाड़ी परकी अपनी जगह मुफ्त दे दी। अितनी

बढ़िया जगह अिस तरह गअी हुअी देखकर युरोपियन लोगोंको बुरा लगा। अुन्होंने मुसलमानोंसे कहा, "अितनी जगह लेकर क्या करोगे? मस्जिद बनानेके लिअे आपके पास रुपया नहीं है। अिसलिअे आप कुछ जगह मस्जिदके लिअे रखकर बाकीकी हमें दे दीजिये। हम आपको मस्जिद बनानेके लिअे आवश्यक रुपया देंगे।" मुसलमानोंने जवाब दिया, "जमीन नहीं दी जा सकती। धीरे धीरे रुपया जमा करके हम मस्जिद बना लेंगे।" मस्जिद लगभग पूरी हो गअी है, अब थोड़ा ही काम बाकी रह गया है।

जैसे अेक पहाड़ी पर यह मस्जिद है, वैसे ही और दो पहाड़ियों पर दो अीसाअी गिरजे भी हैं। अेक रोमन कैथलिक मन्दिर है और दूसरा प्रोटेस्टेण्ट प्रार्थनागृह है। हम ये दोनों गिरजाघर देख आये। अेककी खिड़कियोंमें बाअिबलके पौराणिक प्रसंगके चित्र थे।* मकान भव्य हैं और वहांसे आसपासकी शोभा भी अच्छी दिखाअी देती है।

हम कंपाला पहुंचे तब स्थानीय सेवादलने हमारा पहले पहल स्वागत किया। यह कहा जा सकता है कि सारा गांव अिकट्ठा हुआ था। यहां भी अंधेरा होने पर मशालोंका कार्यक्रम रखा गया था। कवायद और व्यायामके कार्यक्रम अच्छे थे। भारतीय स्त्री-पुरुषोंकी अितनी बड़ी संख्या देखकर मैंने अपना मुख्य भाषण वहीं दिया। अुसके बाद कअी जगह दोपहरका भोजन, शामका खाना और समय-समय पर चाय पार्टियां छः दिन तक होती रहीं। पहली ही रातको नकासीरो क्लबमें भोज रखा गया था। यहां मेरा पहले पहल ध्यान गया कि अैसे भोजोंके समय शराबका आजादीसे व्यवहार होता है। मेरे सामने

---

* अीसाअी गिरजोंमें रंगीन कांच काममें लेकर खिड़कियोंमें जो चित्र बनाये जाते हैं, वे सदा अुच्च कलाके नमूने होते हैं। अंग्रेजीमें अुसे 'स्टेण्ड ग्लास' कहते हैं।

बड़ा धर्मसंकट पैदा हो गया। हमारे सम्मानमें खाना रखा जाय और अुसी वक्त लोग क्लबके बार (दुकान) से शराब लेकर पीते रहें, यह मुझसे क्योंकर सहन हो? भारत सरकारने राष्ट्रीय नीतिके रूपमें सार्वजनिक अवसरों पर मद्यपानका निषेध किया है। फौजके कुछ लोगों या प्रसंगोंको ही अपवाद रखा है। और मैं तो आश्रमवासी हूं। मेरा यहां क्या धर्म है?

अैसा ही अेक धर्मसंकटका मौका पू० गांधीजीके लिअे भी आ गया था। अुनके सम्मानमें राजकोटके ठाकुर साहबने अेक गार्डन पार्टी दी थी। जिस मेज पर गांधीजी बैठे थे, अुसी पर अेक तरफ ठाकुर साहब और दूसरी ओर ब्रिटिश पोलिटिकल अेजेण्ट थे। बातें हो रही थीं, अितनेमें गांधीजीने ठाकुर साहबके सामनेकी शराबकी बोतल अुठाकर पोलिटिकल अेजेण्टके आगे रख दी।

धर्माधर्मका खयाल रखनेवाले किसी सामाजिक पहरेदारने गांधीजीसे अिस विषयमें पत्र लिखकर स्पष्टीकरण मांगा कि, "आपके जैसा मद्यपान निषेधक अैसे स्थान पर भोजन कर ही कैसे सकता था? आपने भोजन ही नहीं किया, बल्कि शराबकी बोतल भी पीनेवालेके सामने रख दी!" गांधीजीने अुत्तरमें अितना ही लिखा, "अैसे अवसर पर कैसा व्यवहार किया जाय, अिसका सूक्ष्म विवेक मुझे मालूम है। आपसे अितना ही कह सकता हूं कि आपके जैसे लोग मेरा अनुकरण न करें।"

मांसाहारके संबंधमें भी अैसे ही प्रश्न अुठाये जाते हैं। हम मांसाहारको व्यसन नहीं मानते परन्तु पाप समझते हैं। धूम्रपानको व्यसन मानते हैं, पाप नहीं मानते। कितने ही बावा लोग अखंड चिलम फूंकते रहते हैं। यह व्यसन है अिससे वे भी अिनकार नहीं कर सकते। फिर भी समाज यह नहीं मानता कि अुतनी मात्रामें अुनका साधुत्व कम है। स्वामी विवेकानन्द जैसे आधुनिक साधु भी हुक्का छोड़नेकी आवश्यकता नहीं मानते थे। अिस कारण अुनके प्रति मेरा आदर तिल

भर भी कम नहीं हुआ। तथापि मैं तो मानता हूं कि धूम्रपान साधु-जीवनका अंत ही माना जाना चाहिये। जिन लोगोंका आहार ही मांस है, अुन लोगोंको जीवहत्यामें कुछ भी नहीं लगता। दुनियाकी आजकी सार्वत्रिक नीतिकी कल्पनाको देखते हुअे यह नहीं कहा जा सकता कि वे पाप करते हैं। फिर भी जीवहिंसा क्रूरता और पाप तो है ही। जो अिस बातको नहीं मानते या नहीं समझते या आदतके कारण मांसाहार जारी रखना चाहते हैं, अुनको दोष नहीं दिया जा सकता।

तो क्या हम समाजके मांसाहार करनेवाले और न करनेवाले दो भाग कर दें? और दोनोंके बीचका व्यवहार तोड़ ही डालें। वर्जितोंकी जाति अूंची और अवर्जितोंकी नीची तय करके वर्जितोंके अभिमानका पोषण किया जाय? और अवर्जितों पर घटियापनका खयाल बिठा दिया जाय? हम हिन्दू लोगोंने यह सब करके देख लिया है। अैसा करके हमने समाजकी अुन्नति नहीं की। हम यह मान लें कि वर्जितों और अवर्जितोंके बीचका व्यवहार तोड़ देनेसे वर्जितोंका निश्चय अधिक मजबूत होना संभव है। परन्तु हमें यह न भूल जाना चाहिये कि अवर्जितोंकी अलग जाति बना देनेके कारण अुनमें सुधार होनेकी संभावनाको भी हम रोक देते हैं।

गांधीजीको अीसाअी धर्मकी तरफ खींचनेकी कोशिश करनेवाले अेक पादरीने अुन्हें हर रविवारको अपने यहां खानेका निमंत्रण दे रखा था। गांधीजीने अुसे स्वीकार कर लिया। खानेकी मेज पर मिशनरीके कुटुंबी मांसाहारकी चीजें लाकर खाते, गांधीजीका आहार कट्टर परहेजका रहता। अुनसे अिस तरह पूछनेवाला वहां कोअी नहीं था कि 'मांसाहारी लोगोंकी मेज पर आप कैसे खाते हैं?' आहारमें पाप-पुण्य सम्बन्धी बात न छेड़नेका शिष्टाचार गांधीजीमें था। परन्तु मिशनरीके बच्चे पूछने लगे, "कुछ चीजें मि० गांधी क्यों नहीं खाते?" माता-पिताको कहना पड़ा, "अुनके धर्ममें यह पाप माना जाता है।"

"पाप क्यों माना जाता है?"

"वे मानते हैं कि पशु-पक्षियोंके भी आत्मा है, सुख-दुःखकी अनुभूति है। जीवोंको मारनेमें क्रूरता है—पाप है।"

"बात तो सच्ची मालूम होती है। तो हम अिस चीजको पाप क्यों नहीं समझते?"

"हम मानते हैं कि पशु-पक्षी आदि मनुष्येतर प्राणियोंके आत्मा नहीं होती।"

"यह तो कौन जाने? परन्तु अुन्हें मारनेमें क्रूरता अवश्य है। मारते वक्त वे भागदौड़ करते हैं और जोरसे रोते हैं, अितना तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं। कलसे हम ये चीजें नहीं खायेंगे।"

"न खाओगे तो कमजोर हो जाओगे।"

"तो मि० गांधी क्यों नहीं कमजोर होते?"

अंतमें पादरियोंने गांधीजीसे क्षमा मांगी और रविवारका भोजनका निमंत्रण वापस ले लिया।

यह सारा प्रसंग क्या शिक्षा देता है? अेक जमाना था जब जैन लोग मांसाहारी लोगोंमें जाकर धर्मप्रचार किया करते थे। जैन शास्त्रोंमें अैसा अुल्लेख पाया जाता है कि कुछ जैनी मांसाहार करते थे। आदतन् मांसाहार करनेवाले लोगोंको पहले जैन धर्ममें ले लिया होगा। वे धीरे धीरे मांसाहारका त्याग कर देंगे, अैसी आशा रखी गअी होगी और वह सफल भी हुअी होगी।

अिसके बाद जीवोंको बचानेकी वृत्ति शिथिल हो गअी। केवल अपना धर्म बचानेकी वृत्ति बाकी रह गअी होगी। अिसलिअे जैन लोगोंने मांसाहारी लोगोंके साथ मिलना-जुलना छोड़ दिया होगा। परिणाम-स्वरूप नये लोगोंका जैनधर्ममें आना बन्द हो गया। यानी मांसाहारी लोगोंने मांस छोड़ा हो, अैसे किस्से बंद हो गये। मांसाहार न करनेवाले कट्टर जैनियोंमें से कोअी मांसाहारकी ओर फिसला ही नहीं, यह कहा जा सकता तो कितना अच्छा होता!

परन्तु मांसाहारकी वात अलग है। शराव अनीतिकी ओर ले जानेवाला हलाहल व्यसन है। शराबमें जीवहिंसा नहीं है, परन्तु जीवहिंसासे खराव वुद्धिनाश है। अुसके साथ समझौता कैसे हो सकता है ?

अिस दलीलमें वड़ा तथ्य है। अिसमें शक नहीं कि जहां हमारे समाजमें शरावका व्यसन वहुत नहीं फैला है, वहां समाजके नियम कड़ाअीसे पालने चाहियें। परन्तु जहां हमारे लोग विदेशोंमें जाकर वस गये हैं और धीरे धीरे विलकुल शिथिल हो गये हैं, अुनमें मद्यपान फैला हुआ देखकर अुनका वहिष्कार करने लगें, तो स्वयं ही वहिष्कृत वन जायंगे और कुछ भी काम नहीं कर सकेंगे। अिसमें शक नहीं कि जिन्हें शराव पीनेकी आदत पड़ गअी है और जिन्होंने अिसे सामाजिक रिवाज वना लिया है, अुन्हें हानि होती ही है। अिसमें भी शंका नहीं कि अिन लोगोंको शरावसे वचानेकी कोशिश होनी चाहिये। परन्तु यह काम अुनका वहिष्कार करनेसे नहीं हो सकता; और खास तौर पर कहनेकी वात यह है कि अैसा अनुभव भी नहीं कि वे और सव प्रकारसे खराव आदमी होते हैं। मद्यपानके लिअे मेरे मनमें जो तिरस्कार है, वह मद्य पीनेवाले तक नहीं पहुंचता। अिसलिअे अैसे लोगोंके साथ मैं आजादीसे घुलता मिलता रहा हूं। अैसे कुछ लोगोंके प्रति मेरे मनमें आदर भी है। मेरे जैसोंको खानेके लिअे वुलानेके वाद वहां शराव अिस्तेमाल न करनेकी सभ्यता दिखाअी होती तो मैं खुश होता। परन्तु यह सभ्यता हकके तौर पर मांगकर नहीं ली जा सकती। और हरअेक समाजमें हमसे शर्त भी नहीं कराअी जा सकती कि अैसी सभ्यता रखी जाय तो ही मैं आपके यहां आअूंगा।

यहां यह अुल्लेख करते मुझे संतोष होता है कि अेक सज्जन पारसी भाअीने (जो कभी-कभी शराव लेते भी हैं) हमारे सम्मानमें होटलमें भोज दिया, तव शराव अिस्तेमाल न करनेकी व्यवस्था रखी। अुस दिन मुझे वड़ा आनन्द हुआ।

अिसमें सन्देह नहीं कि मद्यपान करनेवालोंके सम्पर्कसे खुद फिसल जानेकी जिन्हें दहशत हो, अुन्हें अैसे अवसरोंसे बचना चाहिये। परन्तु वह आत्मरक्षाके लिअे, न कि मद्यपान निषेधके कार्यक्रमके तौर पर।

कुछ लोग शराब पीनेके 'आदी' होते हैं। लुक-छिपकर पीते हैं और यह स्वीकार नहीं करते कि पीते हैं। अेक यह डर कि प्रतिष्ठा जाती रहेगी; और दूसरे यह सात्विक अभिलाषा कि अपनी छूत दूसरे लोगों तक न पहुंचे। अिसे दंभ कहा जाय या नहीं? मिथ्याचार जरूर कहा जा सकता है।

धर्माधर्मका विचार बहुत सूक्ष्म होता है। अफ्रीका जानेके लिअे मैं रवाना हुआ अुससे पहले ही श्री नानजी सेठने मुझे चेतावनी दे दी थी कि 'पूर्व अफ्रीकामें आपको शराबका व्यवहार खुलकर होता हुआ देखनेको मिलेगा। अिससे आपको आघात लगेगा।' अुसी समयसे मैंने विचार कर रखा था कि मुझे वहां क्या करना है। शामके सात बजे बाद न खानेका अपना नियम मैं पूर्व अफ्रीकामें नहीं चलाअूंगा, यह तो मैंने पहले ही तय कर रखा था। शकर न खानेका नियम भी मैंने छोड़ दिया था। चीनीके प्रति पक्षपात तो मुझमें था ही नहीं। अिसलिअे स्वाद-जयकी दृष्टिसे अिस नियमकी जरूरत नहीं थी। अिसलिअे मनमें यह तय करके ही रवाना हुआ था कि अनजान समाजके लिअे यथाशक्ति दिक्कत न बनूंगा और अैसा करते हुअे अपने जीवन-सिद्धान्तोंमें शिथिल न होअूंगा। हरअेक भोजके समय आग्रहके साथ सब चीजोंकी जांच करता था कि किस किसमें मांस या अंडा नहीं है। सिर्फ अुतनी ही चीजें खाता था। जहां भी शंका होती वहां कड़ाअीके साथ काम लेकर वे चीजें छोड़ ही देता था। अिसमें सुधार अितना ही हुआ कि पनीर जैसी चीजको, जिसे मैं निर्दोष समझकर हिन्दुस्तानमें लेता था, पूर्व अफ्रीकामें जाकर छोड़ दिया। क्योंकि मैंने देखा कि पनीर (cheese) बनानेमें रेनेट

नामक अेक पदार्थ काममें लेना पड़ता है, जो मरे हुअे बछड़ोंकी अंतड़ियोंसे निकाला जाता है।

पूर्व अफ्रीकाके सफरमें मद्य-मांसके बारेमें जो विचार मेरे मनमें चक्कर काटते रहे, अुनका बयान यहां पेश किया गया है। अिसमें यह सूचित करनेका अिरादा नहीं कि दूसरे लोग कैसा बरताव करें। यह विवेचन नहीं, केवल मनन है। अितना ही कहा जा सकता है कि जिन्हें अिसमें भी कमजोरी या शिथिलता लगती हो, वे अिस चीजका अनुकरण न करें।

पूर्व अफ्रीकामें हर जगह धर्मकी संस्थायें होती हैं। हिन्दुओंके आर्यसमाजी या दूसरे मंदिर, सिक्खोंके गुरुद्वारे, मुसलमानोंकी मस्जिदें, अीसाअियोंके रोमन कैथलिक मंदिर अथवा प्रोटेस्टेण्ट प्रार्थना-गृह। हरअेक धर्मकी तरफसे पाठशालायें खोली जाती हैं। अुनमें अपने अपने पंथके सिद्धान्तोंके अनुसार धर्मकी शिक्षा दी जाती है। अिस धार्मिक शिक्षा या अुपदेशका असर किस पर कितना होता है, क्या अिसका अन्दाज लगाया जा सकता है? कहा जाता है कि धनिक वर्गको धर्मकी जरूरत नहीं होती। अुनके अमीरी संस्कार, दिनभरके कार्यक्रम और महत्त्वाकांक्षाओं द्वारा प्रेरित प्रतिस्पर्धायें अुनके लिअे काफी होती हैं। अुनमें थोड़ी बहुत धार्मिकता हो तो अुसका अुपयोग भिन्न भिन्न धर्मोंकी संस्थाओंको रुपयेकी मदद देनेमें हो जाता है।

और बिलकुल गरीब कंगाल लोगोंके लिअे धर्म कैसा? वे कैसे जीते हैं और रहते हैं, अिसकी ओर किसीकी नजर ही नहीं होती। विरासतमें अुन्हें जो वहम मिले हों वही अुनका धर्म है। नित्यकी सोहबतके कारण मुसीबतोंके वे अितने ज्यादा आदी हो जाते हैं कि अुन्हें दैव या भाग्यका धर्मशास्त्र मानकर ही चलना पड़ता है। अैसे लोग संकटके समय अेक दूसरेके प्रति जो सक्रिय सहानुभूति दिखाते हैं, वही अुनका धर्मानुभव है। अुसकी भी काफी कद्र करने जितनी मानसिक फुरसत अुनके पास नहीं होती।

अगर सच्चा धर्म कुछ भी बच गया हो, तो अुसका अस्तित्व मध्यम वर्गके लोगोंमें पाया जाता है। वहां भी हरअेक धर्मके खास खास विधि-विधानों और विशेष विश्वासोंका ही प्रभाव अधिक होता है। फिर भी अुसके पीछे शुभभावना और गहरे विचार जरूर होते हैं। धर्मके मानी हैं चैतन्यकी अनुभूति — यह अर्थ सच्चा हो तो अुसका साक्षात्कार अिन तीनोंमें से किसी भी वर्गके व्यक्तियोंको किसी न किसी समय अंधेरेमें विजलीकी चमककी तरह हो सकता है। अिसके लिअे मंदिरों, रिवाजों या शास्त्रोंकी जरूरत होती ही हो सो बात नहीं। फिर भी धर्मके ये तीनों वाहन मनुष्य-जातिके लिअे जरूरी माने गये हैं। अिनके द्वारा धार्मिक संस्कृतिकी रक्षा होती है और मनुष्य-जातिको अुसके कर्तव्य और जीवनक्रम दोनोंका स्मरण रहता है।

भूलना नहीं चाहिये कि जब-जब समाजमें अनाचार फैलता है, तब तब लोग अिन तीनों वाहनोंसे किसी अच्छे अिलाजकी अपेक्षा न रखकर किसी जीते-जागते सत्पुरुषके सत्संगकी आशा रखते हैं। परन्तु अिस कारण अगर सत्पुरुष स्वयं सत्संगकी संस्था बनाकर साधुओंके अखाड़े चलायें, तो वहां भी जड़ता अवश्य घर कर लेती है। धर्म कभी मकान, ग्रन्थ, विधि-विधान या संस्थामें सुरक्षित नहीं रखा जा सका। फिर भी ये सारी चीजें धर्मकी रक्षाके लिअे खड़ी करनी ही पड़ती हैं। दुःखकी बात है कि ये सारी संस्थायें मिल कर अेक शराबकी बुराअीको भी दूर न कर सकीं!

कंपालामें अफ्रीकियोंकी कुछ महत्त्वपूर्ण संस्थायें देख लीं। यहां अैसी दो संस्थायें हैं, जिन्होंने अफ्रीकी लोगोंको अच्छे खासे नेता मुहैया किये हैं। अेक है किंग्स कॉलेज बुडो, और दूसरी है मेकेरेरे कॉलेज। दोनों संस्थाओंके शिक्षक शिक्षाके व्रती और अपने अपने विषयोंके निष्णात जान पड़े। अध्यापकोंमें जो प्रसिद्धि-पराङ्मुखता होती है या होनी चाहिये वह भी दिखाअी दी। बुडो कालेजमें प्रिंसिपल मि० कॉव और अुनके कअी साथियोंसे हम मिले।

शिक्षाका असर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है संगीत और चित्रकलामें। अिसलिअे मैंने अिन चीजोंको ही खास तौर पर देखनेकी मांग की। अफ्रीकी बालकोंमें अपने आप चित्रकलाका विकास हो, अैसा प्रयत्न करनेवाली अेक युरोपियन अध्यापिकासे हमने बहुत कुछ जान लिया। विद्यार्थियोंके चित्र भी बहुतसे देखे। सभी चित्र प्राकृतिक दृश्यों (लैण्डस्केप्स) के थे। चित्रोंमें विद्यार्थियोंकी कचाअी तो होती ही है। परन्तु प्रकृति माताके विविध दर्शनोंकी सजीवता अुनमें अद्भुत ढंगसे प्रगट हुअी थी। हरअेक चित्रमें कुदरतके भिन्न भिन्न स्वभावोंके हृदय पर पड़नेवाले असरकी गहराअी थी। वहांके व्याख्यानमें मुझसे कहे बिना नहीं रहा गया कि अिन अफ्रीकी युवकोंका कुदरतके साथ जो गाढ़ परिचय है, अुसे व्यक्त करनेका साधन मानो आज तक अिनके पास नहीं था। अुसके मिलते ही अनुभूतियोंकी गहराअी अिन चित्रोंमें फूट निकली है। और यह बताता है कि अिन बालकोंको शिक्षा भले ही न मिली हो, परन्तु संस्कृतिकी सच्ची गहराअी अिनके पास छिपी हुअी थी। हमारे गोरे या हिन्दुस्तानी लड़के भी यहांकी कुदरतका दर्शन दिन-रात करते हैं। परन्तु अैसा नहीं लगता कि अुन्होंने यहांकी कुदरतका व्यक्तित्व अितनी शक्तिके साथ पकड़ा हो। आजकी हमारी संस्कृति ही छिछली हो गअी है।

"चित्र सब प्राकृतिक दृश्योंके ही क्यों हैं, पशुपक्षियों या मनुष्योंके चित्र लगभग नहीं क्यों हैं?" मैंने पूछा। मुझे कहा गया कि मनुष्यके चित्र बनानेमें अिन्हें डर लगता है। मुझे शंका हुअी कि कहीं अिसकी जड़में अिस्लामी मर्यादाका प्रभाव न हो। अन्यत्र जांच करने पर ये दोनों कल्पनायें सही नहीं लगीं। तो क्या यह अिन विद्यार्थियोंकी अुस होशियार शिक्षिकाका ही प्रकृतिके प्रति पक्षपात होगा? विद्यार्थी अेक क्षेत्रमें विकास करने लगे और किसीने अुन्हें दूसरी तरफ अभी तक मोड़ा न होगा।

हम गयाजा नामक अेक गांवमें गये थे। वहांके सुन्दर मिशनरी स्कूलमें हमने मनुष्योंके चित्र जी भर कर देखे। वे सब अफ्रीकी विद्यार्थियोंके हाथके बनाये हुअे थे। ओसाओ पौराणिक कहानियोंकी मर्यादा तो वहां थी, परन्तु हरअेक चित्रमें मौलिकता और सजीवता तो थी ही।

संगीत और नृत्यके मामलेमें अफ्रीकी लोगोंके असली नमूने मुझे आसामके मिकिरी लोगोंके प्रारम्भिक श्रेणीके नृत्य-संगीत जैसे लगे। कुछ हावभावोंको शृंगारिक कहनेके बजाय लैंगिक ही कहना चाहिये। अिनके संगीतमें ताल तो होती है, परन्तु रागकी खास खूबी दिखाओ नहीं दी। मुझे तो अरबी या युरोपियन संगीतके असरसे मुक्त शुद्ध अफ्रीकी संगीत सुनना था। जो शुद्ध माना जाता था, वह बहुत आकर्षक न लगा।

अफ्रीकी लोगोंने अमरीका जाकर जिन 'नीग्रो स्पिरिच्युअल्स' का विकास किया है, अुनकी तारीफ दुनियाभर करती है। वे गीत भी हमें सुननेको मिले। ओसाओ स्तोत्र भी। अिन परसे हमने देख लिया कि अफ्रीकी लड़के-लड़कियोंके कण्ठमें विशेष माधुर्य ही नहीं होता, बल्कि अुनमें से कुछ तो अुस-संगीतके भावमें तल्लीन भी हो जाते हैं।

दूसरे दो स्थानों पर, खासकर गयाजामें और नैरोबीके पासके अलायन्स स्कूलमें हमने अैसा नीग्रो संगीत सुना, जिसके अवयव सब शुद्ध अफ्रीकी थे, परन्तु जिसकी व्यवस्था—जिसका ढांचा अंग्रेजी ढंगका था। अिस संगीतका असर सचमुच भव्य और गहरा था। अफ्रीकी संगीतका कच्चा मसाला लेकर अुसमें थोड़े बहुत सुधार करके अुसके गहने बनाये जायं, तो यह नया शृंगार दुनियाके किसी भी संगीतमें चमक अुठने लायक है।

मेकेरेरे कॉलेजमें और अन्यत्र भी भाषाका सवाल मैंने विशेष गहराओमें अुतरकर छेड़ा। मैंने देख लिया कि अंग्रेज शिक्षक और अितर अंग्रेज शासक सचमुच मानते हैं कि किसी न किसी दिन अफ्रीका महाद्वीपकी आमभाषा अंग्रेजी ही होगी। हिन्दुस्तानका अनुभव अुनके

अिस विश्वासको शिथिल नहीं करता। वे कहते हैं कि, "हिन्दुस्तानमें अेक जवरदस्त संस्कृति थी। चाहे वह हमसे बिलकुल भिन्न हो, परन्तु संस्कृति तो थी ही। यहांके लोगोंके पास जो भाषायें हैं, अुनके लिअे न कोअी लिपि है, न कोअी साहित्य। आधुनिक विचारों या विज्ञानको तेजीसे अपनाना हो, तो अंग्रेजी भाषा लेनी ही पड़ेगी।" मैंने कहा, "अिससे अिनकार नहीं कि वे अंग्रेजी भाषा सीखें। सवाल यह है कि वे कौनसी भाषामें अपना जीवन व्यक्त करें?" वे मानते हैं कि अफ्रीकामें सर्वमान्य हो सकनेवाली कोअी भाषा है ही नहीं। स्वाहिलीके प्रति कुछ जातियोंमें सख्त विरोध है। (कुछ और लोग कहते हैं कि यह विरोध सच्चा नहीं। अंग्रेजोंका पाला हुआ है।) स्वाहिली भाषाके विकासका प्रयत्न अंग्रेजोंने अपने हाथमें ले रखा है। यह काम अितना धीमा हो रहा है कि अिस ढंगसे कोअी मतलव हल नहीं हो सकता। अंग्रेजोंका कहना है कि अिस महाद्वीपमें अंग्रेजी संस्कृति लाये विना काम नहीं चल सकता। चूंकि अिन लोगोंको अंग्रेजी सिखानेके जो प्रयत्न हमने किये अुनमें सफलता मिली है, अिसलिअे अिसी नीतिको आगे बढ़ायेंगे।

सारे महाद्वीपमें अंग्रेजोंका राज्य नहीं है। बेल्जियन कांगोमें सर्वत्र फ्रेंच भाषा चलानेका आग्रह दिखाअी देता है। मोजाम्बिक और अंगोलामें पुर्तगाली भाषा चलानेका प्रयत्न हो रहा है। परन्तु यह सारी चर्चा मैंने अिन लोगोंके साथ नहीं छेड़ी। गोरे लोगोंने तय कर लिया मालूम होता है कि जैसे हिन्दुस्तानमें आर्य लोग आये और अुन्होंने अपनी संस्कृति चलाअी और यहांके दस्यु लोगोंको शूद्र जाति बनाकर रखा, अुनसे सेवा कराअी और खुद श्रेष्ठ बन गये, अिसी तरह अफ्रीका महाद्वीपको युरोपके लिअे शूद्रभूमिके रूपमें चुना जाय और यहांके अफ्रीकी लोगोंको धीरे धीरे युरोपियन संस्कृति और युरोपियन भाषाके असरमें लाकर यहां द्विवर्णी समाजकी स्थापना की जाय। यह बात कुछ गोरे स्पष्ट कहते हैं और कुछ मनमें ही रखते हैं।

अेक अंग्रेजने साफ लिखा है कि अमरीकामें हम साम्राज्य स्थापित करने गये। थोड़े दिन हमारा काम चला। परन्तु वहां अपने ही लोग होनेके कारण अुस साम्राज्यको हमें छोड़ देना पड़ा। दूसरा साम्राज्य हमने कायम किया हिन्दुस्तानमें। वह बहुत चला, परन्तु हिन्दुस्तानकी जनता संस्कारी थी, संख्या भी जबरदस्त थी, अिसलिअे वह साम्राज्य भी हाथसे निकल गया। अब ब्रिटिश जातिके विकासके लिअे सिर्फ अफ्रीकाकी भूमि रह गअी है। यहां अब तककी ढिलाअी छोड़कर मजबूतीसे साम्राज्य स्थापित करेंगे, तो सौ डेढ़सौ बरस तो जरूर वह चलेगा। पीछे देखा जायगा।

मैं गोरोंसे कहता था कि अफ्रीकामें ब्रिटिश संस्कृति चलानेकी बात छोड़ दीजिये, वह बात चलनेकी नहीं। अफ्रीकी लोगोंके पास अुनकी अपनी संस्कृति है। अुसकी अवहेलना करनेके बजाय आदरपूर्वक अुसका विकास करें। अिस भूमि पर अफ्रीकी, हिन्दुस्तानी (या अेशियाअी कहूं) और युरोपियन — तीन संस्कृतियोंका सुन्दर समन्वय होगा। अगर आप अुच्चताका अभिमान छोड़ दें और हम यहांसे भाग जानेका विचार छोड़ दें, तो हम तीनों मिलकर यहां अेक भव्य विश्वसंस्कृतिकी स्थापना कर सकेंगे।

अनेक विचारशील अंग्रेज स्वीकार करते हैं कि हिन्दुस्तानके लोगोंकी मददके बिना अंग्रेजोंका राज्य अफ्रीकामें टिक नहीं सकता। हम अुनसे कहते हैं कि केवल अंग्रेजोंका ही राज्य चलानेके सपने छोड़ दीजिये। तीन महाद्वीपोंके लोग यहीं अिकट्ठे होकर जीवन-सहयोग करेंगे। आपके पास विज्ञानका बल है, संगठनशक्ति है। आपकी यह श्रेष्ठता आज सब लोग मान लेंगे। मगर अन्तमें मनुष्य मनुष्यके बीच असमानता न रहनी चाहिये, अितना आप मान लें और दूसरे लोगों पर विश्वास रखने लगें, तो यहां हम सब मिलकर विश्वराज्य स्थापित कर सकेंगे। हम यहांके लोगोंके साथ अधिकाधिक घुलमिल जायंगे, अुन्हें शिक्षा देंगे, और अपने जीवनमें भी जरूरी परिवर्तन कर लेंगे, तो

अिस भूमिमें से अैसी बंधुता पैदा करके दिखा देंगे जिससे तमाम दुनियाको सबक मिले।

भाषाका प्रश्न अभी तक अनिर्णित ही है। खुद मुझे तो अैसा लगता है कि करोड़ोंकी संख्यावाली जातिको अंग्रेजी जैसी बिलकुल पराअी भाषा देना असंभव नहीं है; परन्तु कठिन काम है। अफ्रीकाकी ही दो चार भाषाओंको चुनकर अुनका विकास करना चाहिये। और अिन्हींमें से किसी अेक भाषाको अभीसे दूसरी भाषाके रूपमें सब जगह चलाना चाहिये। किसी भी जातिकी प्रगति अपनी भाषा द्वारा जल्दी होती है और स्वाभाविक क्रमसे होती है। अंग्रेजी द्वारा यह सब करेंगे तो सामान्य जनताको बहुत वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अंग्रेजी या फ्रेंचका अेक अुपयुक्त भाषाके रूपमें भले ही प्रचार हो।

पूर्व अफ्रीकामें रहनेवाले हमारे लोग जैसे स्वाहिली या लुगाण्डा भाषा सीखते हैं, वैसे ही कुछ अफ्रीकी लोगोंको गुजराती और हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिये। यह सुझाव मैंने अफ्रीकी नेताओंके सामने रखा है। अुन्होंने अिस चीजको खुशीसे मंजूर किया है। क्योंकि अिसमें अुन्हें प्रत्यक्ष लाभ दिखाअी देता है। दु:खकी बात अितनी ही है कि अिसका महत्त्व हमारे लोगोंकी समझमें नहीं आता। मैंने अपने लोगोंसे कहा कि गुजराती पाठशालामें कोअी अफ्रीकी लड़का पढ़ने आये, तो आप अुसे लेनेसे अिनकार न कीजिये। अितनी छोटी बात मनवानेमें भी मुझे मुश्किल पड़ी। मुझे कहते खुशी है कि अन्तमें हमारे लोग अिसके लिअे तैयार हो गये।

कंपालामें युगाण्डा शिक्षा-विभागके अेक अधिकारी मुझसे मिलने आये थे। अुन्हें गांधी कॉलेजकी कल्पना पसन्द नहीं थी। अुन्होंने मुझसे सीधा सवाल पूछा कि, "मेकेरेरे कॉलेजके होते हुअे दूसरा कॉलेज आप क्यों खोलना चाहते हैं?"

मैंने कहा, "मैं मानता हूं कि वह कॉलेज केवल अफ्रीकियोंके लिअे है।"

"आप अैसा क्यों मानते हैं? अुसमें तमाम जातियोंके विद्यार्थी आ सकते हैं।"

"अच्छी बात है। तो मेकेरेरेमें अंग्रेज विद्यार्थी कितने हैं?"

"अभी तो नहीं हैं, क्योंकि अुनके लिअे वहां कोअी आकर्षण नहीं है। यह कॉलेज बढ़ेगा तब युरोपियन विद्यार्थी आयेंगे।"

"अैसा हो जाय तो अिस चीजको मैं अभिनन्दनीय मानूंगा। आज अगर अिस कॉलेजमें हिन्दुस्तानी लड़के आयें, तो सबको अुसमें जरूर ले लिया जायगा या यह नियम बनायेंगे कि अितने फी सदी अफ्रीकी और अितने अेशियन लेंगे?"

"अैसा नियम बनाना भद्दा तो होगा ही, परन्तु किसी समय अैसा नियम बनाना पड़ सकता है।"

"तो फिर बाकीके अफ्रीकी और अेशियन अुम्मीदवारोंका क्या होगा?"

"यह मुश्किल तो है। परन्तु गांधी कॉलेज और मेकेरेरे कॉलेजके बीच स्पर्धा न होने देनेके लिअे आप क्या करेंगे?"

"जैसा दुनियामें सब जगह होता है, वैसा ही यहां करेंगे। हरअेक कॉलेजमें कुछ खास विषयोंका विकास करेंगे। 'फैकल्टी वाअिज' जो भेद होगा, सो सब तरहसे वांछनीय ही होगा। हरअेक कॉलेजके साथ जो छात्रालय होंगे, अुनमें मांसाहारी और अन्नाहारी अलग-अलग भोजनालय रखने पड़ेंगे। और कोअी भेद नहीं रहेगा। मुझे विश्वास है कि हमारे कॉलेजमें युरोपियन लड़के भी आयेंगे। अिनकी संख्या ज्यादा भले ही न हो, परन्तु अिसमें मुझे शंका नहीं कि हमारा आन्तरजातीय वायुमंडल पसन्द करनेवाले गोरे मां-बाप और विद्यार्थी जरूर निकलेंगे। हम प्रोफेसर चुनेंगे तो अच्छेसे अच्छे चुनेंगे, फिर चाहे वे किसी भी कौम या देश या धर्मके हों।

"मेरी अेक नअी कल्पना है। पूर्व अफ्रीकाका अपना विश्व-विद्यालय स्थापित न हो जाय, तव तक हमारा कॉलेज लंदन और वम्वअी दोनों विश्वविद्यालयोंसे संवंधित होगा।"

"यह कैसे हो सकता है?" अुन्होंने चकित होकर पूछा।

"मुश्किल यही है न कि आज तक अैसा नहीं हुआ? या और कोअी कठिनाअी है? वम्वअी विश्वविद्यालयने लंदनकी अुपाधियोंको मान रखा है। लंदन विश्वविद्यालयने वम्वअीकी डिग्रियोंको मान रखा है। पूर्व अफ्रीका, ब्रिटेन और अिण्डिया तीनों अेक ही कॉमनवेल्थमें हैं, तो फिर अैसा दोहरा सम्बन्ध होनेमें क्या आपत्ति है?"

"आपत्ति तो कोअी नहीं दीखती। आपकी कल्पना सुन्दर है। अमलमें आ जाय तो अच्छा ही है।"

"हमारे कॉलेजका पाठ्यक्रम तैयार करते वक्त पाठ्यक्रम-समितिमें लंदन युनिवर्सिटी और वम्वअी विश्वविद्यालय दोनोंके प्रति-निधियोंको लेंगे और पाठ्यक्रम दोनों युनिवर्सिटियोंसे पास करायेंगे। कुछ विषय लेकर जो पास हो, सो वम्वअी विश्वविद्यालयकी तरफ जाय; कुछ खास विषय ले सो लंदन युनिवर्सिटीमें जाय। अिस तरहका अिन्तजाम आरामसे किया जा सकता है। हिन्दुस्तानका अितिहास, हिन्दुस्तानका तत्त्वज्ञान वगैरा विषय तीनों कौमोंके कुछ विद्यार्थी जरूर सीखेंगे।"

गूजरात विद्यापीठके अेक विद्यार्थी और श्री गिजुभाअीके शिष्य सोमाभाअी भावसार मोम्बासाके वालमंदिरमें काम कर रहे हैं। अुन्होंने वच्चोंके लिअे 'अमर गांधी' नामक अेक विलकुल छोटी गुजराती पुस्तक लिखी है। अिसका स्वाहिली अनुवाद झांझीवारवाले श्री रामभाअी और भानुभाअी त्रिवेदीने प्रकाशित किया है। अिसी पुस्तकका युगाण्डामें प्रचलित लुगाण्डा भाषामें हुआ अनुवाद कंपालामें मेरे हाथों प्रकाशित करनेका अितजाम किया गया था। अिस छोटीसी पुस्तकका वहांके लोगों पर अच्छा असर हुआ है। अिस समारोहमें मैंने श्री काकूभाअीको पहचान

लिया। वे यहांके लोगोंकी भाषा बहुत बढ़िया बोलते हैं। यहांके लोगों पर अिनका प्रभाव भी अच्छा है। अेक बार अफ्रीकी लोगोंने दंगा किया था, परन्तु काकूभाअीको अुसमें कोअी आंच नहीं आअी। अफ्रीकी लोगोंने अुनसे कहा, "आप चिन्ता न करें, आपको या आपकी अेस्टेटको कुछ नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहें।"

अेक बातकी चर्चा यहीं कर दूं। कुछ लोग कहते हैं कि अफ्रीकी मजदूर और घरोंमें काम करनेवाले नौकर लोग कृतघ्न होते हैं। अिन लोगोंके भलेके लिअे मेहनत करनेवाले कुछ सज्जन लोगोंकी भी अैसी राय सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं अैसी रायको स्वीकार नहीं कर सकता। मनुष्य स्वभाव सब जगह अेकसा ही होता है। अिन्सान तो क्या, क्रूर जानवर भी प्रेमके वश होते हैं।

कृतघ्नता बहुत ही थोड़े लोगोंमें दिखाअी देती है। अकसर अुपकार करनेवाले अधीर होकर कृतज्ञताकी अपेक्षा रखते हैं, और अधीर होकर ही दूसरे आदमी पर कृतघ्नताका आरोप करते हैं। जैसे हम कृतज्ञताकी जरूरतसे ज्यादा अपेक्षा रखते हैं, वैसे दूसरा आदमी भी हमसे जरूरतसें ज्यादा भलाअीकी अपेक्षा रखकर हमेशा असंतुष्ट रहता है। किसी नौकरको हम अच्छी तरह रखते हों, तो हम आशा करते हैं कि वह हमें छोड़कर नहीं चला जायगा। अुसके घर या बाल-बच्चोंकी स्थितिका हमें खयाल नहीं होता। ज्यादा आमदनीकी जरूरत हो तो बेचारा क्या करे? कभी-कभी अच्छा व्यवहार होते हुअे भी दोनों तरफ गलतफहमी होती है।

और हमें यह न भूलना चाहिये कि सैकड़ों वर्ष तक अरबों, गोरों और किसी हद तक हमारे लोगोंने भी अिन लोगोंको पकड़ पकड़कर निर्दयतासे गुलाम बनाकर बेचा था और रखा था। अिनके मनकी तो क्या, शरीरकी हालतका भी हमने विचार नहीं किया। अैसे लोग मनुष्य-जाति पर अभी तक कुछ भी विश्वास रखते हैं, यही आश्चर्यकी बात है। सांप अिन्सान पर भरोसा नहीं करता और

अिन्सान सांपका भरोसा नहीं करता, अिसके पीछे हजारों वर्षका दोनोंका जातीय अनुभव है। अफ्रीकी लोगोंने दूसरे महाद्वीपोंके लोगोंके हाथों जितना कष्ट अुठाया है, अुतना किसी भी अन्य मनुष्य-जातिने नहीं अुठाया। अितने पर भी यह जाति क्रुद्ध नहीं हुअी, यह या तो अिसकी भलाअी जाहिर करती है या बचपन जाहिर करती है। किसी भी मिशनरीने आज तक नहीं कहा कि यह जाति कृतघ्न है।

कंपालामें अफ्रीकी लोगोंके राजा रहते हैं। अुन्हें ये लोग 'कवाका' कहते हैं। रानीको 'नेबागदीका' कहते हैं। हम कवाकासे मिलने गये। आदमी जवान, अुत्तम पढ़ा हुआ और संस्कारी लगा। चेहरा भी प्रभावशाली था। विलायतमें पढ़ा हुआ होनेके कारण वहांकी रीति-नीति अच्छी तरह जानता था। युगाण्डाके गांवोंमें पंचोंका राज थोड़ासा रहा होगा। वह अिस कवाकाकी देखरेखमें चलता है। सुना है अिस राजाकी वृत्तियां अच्छी हैं। परन्तु यह अनुभव होनेके कारण कि अुनके हाथमें कुछ भी करनेका बहुत अधिकार नहीं रह गया है, अुनका अुत्साह मन्द पड़ गया है। हम जब अुनसे मिलने गये तब अुनके महलमें कहीं कहीं अिमारती मरम्मतका काम हो रहा था, अिसलिअे हम सारा महल नहीं देख सके। राजमहलके आंगनमें ही कुछ गोल गोल झोंपड़ियां देखीं। झोंपड़ियां देखकर मुझे आश्चर्य हुआ, परन्तु अेक तरहसे अच्छा लगा। अफ्रीकी संस्कृतिके स्मारकके तौर पर ये मिट्टीकी झोंपड़ियां राजमहलके पास ही हैं, यह यथायोग्य है। रानीकी बहन किंग्स कॉलेजमें अध्यापिकाका काम करती हैं। वे वहां सरोजसे मिली थीं। अुसी दिन दोपहरको अेक जगह राजाके प्रधान मंत्री भी मिले। जैसे अनुभवी अधिकारी होते हैं वैसे ही ये थे।

मेकेरेरे कॉलेजके साथ अेक म्यूजियम है। वह कअी तरहसे देखने लायक है। अफ्रीकी लोगों द्वारा विकसित कअी कलायें वहां देखनेमें आती हैं। अुनके बर्तन, शिकारके साधन, तरह तरहके बाजे, जानवरोंके सींग,

अफ्रीकियोंके नाना प्रकारके जेवर, कपड़े, काठकी मूर्तियां और औजार वगैरा सब वहां देखने योग्य हैं। और अुन परसे सहज ही कल्पना होती है कि अिन लोगोंने अेक खास हद तक अच्छी प्रगति की थी और अुसके बाद अिनकी संस्कृति बीचमें ही ठहर या रुक गअी।

अपने आसपासकी कुदरत, पेड़, पत्ते, आबहवा, ऋतु, जंगलके जानवर और अपनी जरूरतें अिन सबका विचार करके अिन लोगोंने अपना जीवनक्रम और समाज-व्यवस्था बना रखी है। मन पर यह असर पड़े बिना नहीं रहता कि अुनकी परिस्थितिमें सबसे अच्छी व्यवस्था वही हो सकती है। अुनकी संस्कृतिका स्वरूप भले ही प्रारंभिक हो, परंतु अुसमें संस्कृतिके सभी तत्त्व हैं। यह बात निर्विवाद है कि नये ढंगसे सोचनेका तरीका बता देनेके बाद अुन लोगोंको आधुनिक संस्कृति अपनानेमें कठिनाअी नहीं हो सकती। बुद्धि-शक्ति और संगठन-शक्ति विकसानेमें ये लोग घटिया साबित नहीं हुअे। अुनके जीवनको नये ढंगकी तरफ मोड़नेकी ही बात है। आज वह पुरानी संस्कृति अुनके कबाकाकी तरह बेकार पड़ी है।

जिन दिनों हम कम्पालामें थे, हमें अेक दिन रातके खानेके लिअे अेन्टेबे जाना था। वहांका विक्टोरिया होटल सरकारकी तरफसे चलाया जाता है। अिन्तजाम बहुत अच्छा था। अूपर कहा ही गया है कि कम्पाला युगांडाकी देशी राजधानी है। जब कि अेन्टेबे सरकारी राजधानी है। यहां सरकारी नौकरी करनेवाले हमारे देशी भाअियोंकी तरफसे भोज था। यहां चर्चा भी बढ़िया हुअी थी।

अिसी स्थान पर आखिरी दिन सेठ नानजी कालीदासके लड़के धीरूभाअीकी तरफसे अेक बड़ा भोज था। अुसमें युगांडाके स्थानापन्न गवर्नर और बड़े बड़े अधिकारी भी आये थे। यह कहें तो कोअी हर्ज नहीं कि सारे खानेका ठाठ बादशाही था। अुस पर कितना खर्च हुआ होगा, अिसका विचार करनेकी भी मैंने हिम्मत नहीं की। कोशिश करके दिमाग ठिकाने न रखा होता, तो पूर्व अफ्रीकामें

दावतोंकी भरमारसे मस्तिष्क फिर गया होता और मैं मान बैठता कि हम कोअी बड़े अमीर या महापुरुष हैं।

हम कम्पाला गये तब यह देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ कि वहांके मेयर पंजाबके हमारे देशी युवक भाअी थे। माननीय श्री मैनी यहांके पहले हिन्दुस्तानी मेयर हैं। अपनी होशियारीसे अुन्होंने अपने लोगों पर, और गोरों पर भी, अच्छा असर डाला है। हमारे ही अेक देशवासीके बनाये हुअे यहांके सुन्दर टाअुनहॉलको देखनेके लिअे श्री मैनीके साथ जानेमें मुझे बहुत आनन्द हुआ।

कम्पालामें हमारी सारी व्यवस्था की थी श्री नानजीभाअीके कुशल साझेदार श्री छोटाभाअी पटेलने। अपने मीठे आतिथ्यसे श्री रामजीभाअी लद्धाने हमें सहज ही अपना लिया था। अुनके घरके आल्बम क्या थे, सारे कुटुम्बका अितिहास था।

२४

अफ्रीकाके गांवोंमें

किसी भी देशमें यात्रा पर जाते हैं, तो वहांकी कला, कारीगरी और सौंदर्यके नमूनोंके तौर पर प्रेक्षणीय स्थान देखते हैं, बड़े-बड़े शहर देखते हैं, कारखाने देखते हैं और अिनके अलावा वहांके खास खास व्यक्तियोंसे मिलते हैं। अितनेसे अुस देशकी विशेषता ठीक-ठीक ध्यानमें आ जाती है। लेकिन अगर अुस देशका वातावरण, अुसकी असली हालत और लोक-स्वभाव देखना हो, तो अुसके मामूली देहातमें ही जाना चाहिये। और वह भी आम रास्ता छोड़कर यदि अेक तरफ हों, तो ही अुस देशकी आत्मा 'अपने तनका विवरण' दे सकती है।

जून महीनेके आखिरी दिन हमें अफ्रीकाके तीन गांव देखनेका अवसर मिला। कम्पालासे साढ़े नौ बजे चलकर हमने आड़े रास्तेसे बारह मीलका सफर किया और 'गयाजा' पहुंचे। वहां हमारे देशसे

जाकर बसे हुअे सादे, मेहनती और साखवाले दुकानदार देखे। हमारे स्वागत-सत्कारमें सभी कुटुम्बी जन अिकट्ठे हुअे थे। मसालेदार दूध और पेड़े वगैरा स्वागतके लिअे तैयार थे। परंतु हमें विशेष आनन्द यह हुआ कि वहांके हिन्दुस्तानी लोगोंने हमारा आग्रह पहलेसे जानकर आसपासके अफ्रीकियोंको भी अिकट्ठा कर लिया था। देहातमें रहनेवाले भारतीयों और ग्रामीण अफ्रीकियों दोनोंका सहयोग प्रयागमें मिलनेवाले गंगा-यमुनाके प्रवाह जैसा लगता था। गेहूंवर्णी और कालेके मिश्रणके कारण ही नहीं, परंतु रहन-सहनके भेदके कारण अलग अलग रहनेका रिवाज होते हुअे भी ये दोनों किस प्रकार कुछ न कुछ ओतप्रोत हो जाते हैं, यह देखनेका मौका मिलनेके कारण। सभी भारती यहांकी लुगांडा भाषा अच्छी तरह बोल सकते थे। और अफ्रीकी लोग मानो हिन्दुस्तानके जातिभेदके आदी हों, अिस ढंगसे अलग रहनेमें और फिर भी सहयोग करनेमें कोअी कठिनाअी महसूस नहीं करते थे। यहां मैंने दोनोंके लिअे छोटासा भाषण दिया।

मेरे भाषणकी स्थिति यह होती है कि मैं पहलेसे तैयारी नहीं करता। आखिरी वक्त श्रोताओंका समूह देखकर वातावरणके अनुकूल जैसा सूझता है बोल देता हूं। कभी कभी हमारी पार्टीमें शरीक होकर साथ आनेवाले लोगोंका खयाल मनमें रखकर भी बोलता हूं। और कभी कभी अुसी क्षण अकल्पित रूपमें कोअी विचार मनमें आ जाता है, तो फिर श्रोताओंका या प्रसंगका कुछ भी विचार किये विना बोल ही देता हूं। या यों कहूं तो कोअी हर्ज नहीं कि अैसे किसी विचारका अुदय हो जाता है, तब और कुछ बोला ही नहीं जाता। भले ही बुद्धि कहती हो कि यह विचार यहांके योग्य नहीं है, परंतु विचार अपना सोचा हुआ ही कर लेता है।

गयाजामें मैंने प्रारंभ किया कि अिस देशमें तीन महाद्वीपोंकी संस्कृति अेकत्र हुअी है। अेशिया महाद्वीप महान पैगम्बरोंकी आध्यात्मिक वृत्तिकी परंपराका क्षेत्र है। चीनमें कन्फ्यूशियस और लाओत्जेके अुपदेशोंमें

से अेक समूची संस्कृति फली-फूली। अरवस्तानमें अब्राहमसे लेकर महम्मद और अली तक कअी पैगम्वर वहांके लोगोंको शिक्षा देते रहे। और पेलेस्टाअिन तो अनेक छोटे वड़े नवियोंका घना जंगल रहा। अीसा मसीह अिसी फसलके अेक पके हुअे फल थे। मध्य अेशिया और अीरानमें अैसे ही असंख्य नवी हो गये हैं, परंतु अुनमें से अनोखा रास्ता वताया अशो जरथुष्ट्रने। अिनकी गाथाओंमें वैदिक परम्पराकी अेक भिन्न शाखा हमें देखनेको मिलती है। और हिन्दुस्तान तो मानव-जातिके अितिहाससे लेकर आज तक अखंड चली आ रही ऋषि-मुनियोंकी और संत-महात्माओंकी परम्पराकी भूमि ही है। अिन सव धर्मप्रवर्तकोंने मनुष्य-जातिको आध्यात्मिक संस्कृति दी और अुसकी आत्माको सुसंस्कृत किया। यह है अेशियाकी खासियत।

युरोप महाद्वीपने विज्ञान और संगठनका अद्भुत पराक्रम वताया है। यह पुरुषार्थ अभी पूरा नहीं हुआ, परंतु ये दोनों शक्तियां अव युरोपकी विशेषता नहीं रहीं। अिनका फैलाव सारी दुनियामें होने लगा है। विज्ञानकी सावना आत्माकी साधनासे वहुत घटिया हरगिज नहीं कही जा सकती। आत्माकी साधना अन्तरात्माका साक्षात्कार कराती है, जव कि विज्ञानकी साधना सृष्टिके अणु और अुनकी अनन्तता, दोनों रूपोंकी गहराअी और विस्तारका दर्शन कराकर सर्जनहारकी झांकी कराती है। अिस विज्ञानने तमाम संसार पर अपना अच्छा वुरा असर डाला है।

अव अफ्रीकामें मानव जातिकी अन्तिम साधना शुरू होगी। अिसका प्रारंभ गांधीजीने अिसी भूमिमें किया था। काले झुलू लोगोंका शिकार करने निकले हुअे गोरोंको रोका तो नहीं जा सकता था, परंतु अुस 'युद्ध' (!) में मददगार वनकर घायल झुलूओंकी सेवा करनेके लिअे गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंका अेक दल तैयार किया और विश्व-वंधुत्वका प्रारंभ किया। सेवा और सत्याग्रह द्वारा सज्जन दुर्जन सवकी अेकसी सेवा करनेका और मानवताका विकास करनेका सर्वोदय पन्थ गांधीजीने अफ्रीकामें शुरू किया। अव यहां युरोपके गोरों, और हिन्दु-

स्तानके गेहुंआ रंगके लोगों और अफ्रीकाके काले लोगोंको वर्णभेद भूलकर, अूंच-नीचका फर्क मिटाकर, विश्व-कुटुम्ब स्थापित करनेकी कोशिश करनी है। यह मानवता सिद्ध करनेके लिअे लोगोंका मलिन स्वार्थ दूर होना चाहिये। जीवनशुद्धिके विना हृदय-समृद्धि असंभव है। यह जीवनशुद्धि शुरू करनेके लिअे गांधीजीने खादीकी दीक्षा दी है। गांधीजीने कहा है कि शोषणरहित अहिंसक समाजकी स्थापना ग्रामोद्धारसे ही हो सकती है और हिन्दुस्तानमें ग्रामोद्धारका आधार खादी है।

प्रकृतिकी कृपासे, हिन्दुस्तानी लोगोंकी मददसे और अफ्रीकी लोगोंकी मेहनतसे युगांडामें वहुत अच्छी कपास होती है। यहांके ग्रामीण लोगोंको सतत अुद्योगकी जरूरत है। गोरे लोगोंकी या हिन्दुस्तानियोंकी पूंजी पर आधार रखनेके वजाय देहातके लोग खादीको अपनायेंगे, तो यहां भी समय पाकर विश्व-वन्धुत्वकी स्थापना अुत्तम रूपमें हो सकेगी।

अिसी सभामें किसी अफ्रीकी जमातका अेक मुखिया हाजिर था। अिधर अिन मुखियोंको अंग्रेज लोग चीफ कहते हैं। अुसने हमें धन्यवाद देनेका काम अपने जिम्मे लिया। हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके वीचके स्नेह-संवंधके वारेमें अुसने अितना सुंदर अुल्लेख किया और अपने हृदयके भाव व्यक्त करते हुअे भी राजनैतिक जिक्र अुसने अैसी खूवीसे टाला कि मुझे खयाल हुआ कि अुचित अवसर मिले तो यह आदमी अच्छा खासा राजनैतिक पुरुष वन सकेगा।

यहांसे हमारी मंडलीके अधिकांश लोग वोम्वोकी तरफ आगे चले गये। हम रास्तेमें पड़नेवाले अेक मिशन स्कूलको देखने गये। अिस पाठशालाको चलानेवाली युरोपियन महिला यहां सेवा करते करते वूढ़ी हो गअी है। अफ्रीकी लोगोंके वीच अकेले रहकर ये मिशनरी लोग पाठशालाओंकी स्थापना करते हैं। जो जमीन मिल जाती है अुस पर सख्त मेहनत करके अुसे नन्दनवन वना देते हैं। अत्यंत सादा झोंपड़ोंमें रहते हुअे भी अुनमें कोशिश करके सुघड़ता और सुन्दरता स्थापित कर देते हैं और हरअेक आदमीसे

कहलवा लेते हैं कि जहां वुद्धि, हृदय, लगन और परिश्रम है; वहां लक्ष्मी और सरस्वती प्रसन्नतापूर्वक स्थायी वन ही जाती हैं।

अिस पाठशालामें भी हमने संगीत और चित्रकलाकी मांग की। मैंने शुरूमें ही कह दिया था कि अंग्रेजी राग और अफ्रीकी शब्दोंवाला संगीत मुझे नहीं चाहिये। अंग्रेजी चित्रकलाकी नकलें भी मुझे नहीं देखनीं। संस्थामें घूमते-घूमते मैंने देखा कि कागजों पर ही नहीं, वल्कि दीवार पर भी जीवन-कथा अीसाकी, परंतु चित्रकलाकी आत्मा शुद्ध अफ्रीकी — अैसा कीमिया यहां सघ गया है। संगीतमें भी अिन लोगोंने अफ्रीकी रागोंमें अीसाअी भाव प्रगट करनेके लिअे तरह तरहसे संमिश्रण पैदा किये हैं। सादासे सादा रागोंमें से जटापाठ और घनपाठ काममें लेकर अिन लोगोंने भावोंकी कुछ अैसी संसृष्टि की थी कि जिसने यह सव कुछ साधना की थी, अुस कलाकारको वुलाकर वधाअी दिये वगैर मुझसे रहा नहीं गया।

वोम्वोमें अेक भाषणसे निपटकर दुग्ध-पान करके हम वोवुलेन्जी गये। वहां हमें भोजन करना था। अफ्रीकाके लगभग मध्यप्रदेशके अेक मामूली गांवमें गुजराती भाअियोंके वीच स्वदेशी ढंग पर भोजन करते हुअे मुझे असाधारण आनन्द हुआ। यहांकी सभामें आसपासके मिशनरी जाग्रत कुतूहलके साथ आये थे।

स्वाभाविक तौर पर मेरे भाषणका अेक खास भाग अुन लोगोंको ध्यानमें रखकर दिया गया था। हम लोग अैसा नहीं मानते हैं कि 'हमारा ही धर्म सच्चा है। ज्ञान – सूर्य हमारे ही पास है। वाकीकी सारी दुनिया अज्ञानके अधंकारमें डूवी हुअी है, भ्रममें पड़ी हुअी है। हमारी यह भावना है कि हम सव धर्मोंको स्वीकार करते हैं, सभी धर्म सच्चे हैं, अच्छे हैं और अिसलिअे हमारे हैं। यह वात मैंने सौम्य शब्दोंमें रखी। हम लोगोंको सेवा द्वारा ही सावित करना चाहिये कि, 'हमारा यहां होना अफ्रीकी लोगोंके लिअे अुपकारक और मंगल-साधक है', यह वात मैंने यहां भी जोर देकर कही।

लौटते वक्त श्री छोटाभाअीके साथ वहुतसी वातें कर लीं। आर्य-समाजका हिन्दुस्तानमें क्या स्थान है, और यहां अुसका मिशन क्या

हो सकता है, हिन्दू-मुस्लिम संबंधोंमें सुधार कैसे हो ? हिन्दुस्तानी और अंग्रेज मिलकर अिस देशकी सेवा किस तरह कर सकते हैं ? . . वगैरा सवालों पर बहुत विस्तारमें जाकर हमने चर्चा की। सारी बातचीत खानगी होनेके कारण कुछ भी संकोच न रखकर गुणदोषकी मीमांसाके साथ हमने सारा अूहापोह कर लिया।

शामको भाटिया चेम्बर्समें भोज था। वहां भाषणके बाद अच्छे प्रश्नोत्तर हुअे। कांग्रेसका आन्दोलन, हमारा राष्ट्रीय झंडा वगैरा कअी प्रश्नोंका अितिहास और अिन चीजोंका रहस्य स्पष्ट करनेका अिस प्रकार सुन्दर अवसर मिला। खानेसे पहले कम्पालाकी कुछ लड़कियां यह कहकर मिलने आअी थीं कि 'हमें आकाशके तारे दिखाअिये'। बादलोंने हमें यह आनन्द नहीं लेने दिया, परंतु लड़कियोंमें तारा-दर्शनका यह अुत्साह देखकर मुझे आनन्द हुआ।

२५

नीलोत्री

१

अफ्रीकाकी यात्रा करनेमें अेक अुद्देश्य था अुत्तर-पूर्व अफ्रीकाकी माता समान अुत्तरवाहिनी नील नदीके अुद्गम-स्थान 'नीलोत्री'का दर्शन। गंगोत्री और जमनोत्रीकी यात्रा करनेके बाद अभी अभी महसूस होने लगा था कि नीलोत्रीकी यात्रा अवश्य करनी चाहिये। वह दिन अब निकट आ गया। जुलाअीकी पहली तारीख हुअी और हमने कम्पाला छोड़कर जिंजाके लिअे प्रस्थान किया। अपने जरूरी कामके कारण श्री अप्पासाहब आज नैरोबी वापस चले गये और हम मोटर लेकर अपने रास्ते चल पड़े।

कम्पालासे जिजाका रास्ता बड़ा मनोहर है। कअी छोटी छोटी और चौड़ी पहाड़ियां चढ़ते-अुतरते हमारी मोटर हमारे और नीलोत्रीके बीचका ५२ मीलका अन्तर काटती गअी और हमारी अुत्कंठा बढ़ाती गअी। कितना बड़ा सौभाग्य कि जिजा तक पहुंचनेसे पहले ही हमारा संकल्प पूरा हुआ और हमें नीलोत्रीके दर्शन हुअे! दाअीं ओर विक्टोरिया अथवा अमरसरका सरोवर दूर तक फैला हुआ है और अुसमें से स्वाभाविक लीलासे छलांग मारकर नील नदी अस्तित्वमें आ जाती है। हम नदीके पुल पर पहुंच गये। मोटरसे अुतरे और दाअीं तरफ मुड़कर रिपन फॉल्सके नामसे प्रसिद्ध छोटेसे प्रपातमें हमने नील नदीके दर्शन किये।

प्रपातके तुषारसे पैर ढंक गये हैं। सिर पर मुकुट चमक रहा है और पीछे अेक हराभरा पेड़ मुकुटको अधिक सुन्दर बना रहा है। देवीके दोनों हाथोंमें धानकी पूलियां हैं और मुंह पर प्रसन्न वात्सल्य खिल रहा है। अैसी मूर्ति कल्पनाकी नजरमें आअी। मूर्ति नील रंगकी नहीं थी परंतु श्याम वर्णकी तरफ जरा झुकती हुअी गोरी ही थी। सारे शरीर परसे पानीकी धारा बह रही थी और अिससे देवीके मुख परका हास्य अधिक सुन्दर लग रहा था।

जी भरकर दर्शन करनेके बाद हमने बाअीं ओर देखा। दाअीं ओर पानी हमारी तरफ दौड़कर चला आ रहा था। बाअीं तरफका पानी हमसे दूर दूर दौड़ा जा रहा था। दोनोंका असर बिलकुल अलग था। हम जानते थे कि जैसे दाअीं ओर रिपन प्रपात है, अुसी तरह बाअीं तरफ जरा दूर ओवन प्रपात है। हमारे देशमें अुसे कोअी प्रपात कहेगा ही नहीं। पानीकी सतहमें कुछ फुटका अन्तर पैदा हो जानेसे ही कहीं प्रपात बन जाता है? प्रपात तभी कहा जा सकता है, जब पानी धमाधम पड़ता हो। जितना पड़े अुतना जोरसे वापस अुछलता हो और फेन और तुषारके मेघ आसपास नाचते हों।

यात्राके अन्तमें जव तुरन्त जाकर मंदिरोंमें दर्शन करते हैं, तव यात्रियोंकी परिभाषामें अुसे 'धूल-भेंट' कहते हैं। यात्रा पैदल की हो, सारे शरीर पर धूल छाअी हो और अुत्कंठाके कारण अुसी हालतमें दौड़कर अिष्टदेवके चरणोंमें गिर रहे हों या मिल रहे हों, तव अुसे 'धूल-भेंट' कहा जा सकता है। हम तो मोटरके वेगसे आये थे। सवेरे थोड़ीसी वरसात हो जानेके कारण रास्ते पर भी धूल नहीं थी। अिसलिअे अिस प्रथम दर्शनको 'गीली-भेंट' ही कहा जा सकता है। अिसे 'भाव-भीनी' कहें तो ही वह अधिक यथार्थ वर्णन होगा। मूर्ति गीली, जमीन गीली, आंखें गीली और अनेक मिश्रित भावोंसे सरावोर हृदय भी गीला। 'अद्य मे सफलम् जन्म, अद्य मे सफलाः क्रियाः' यह पंक्ति जिसने पहले पहल गाअी होगी, वह मेरे जैसे असंख्य यात्रियोंका प्रतिनिधि था।

नीलमाताके ये प्रथम दर्शन हृदयमें संग्रह करके हमने जिजामें प्रवेश किया। विद्यापीठके किसी समयके मेरे विद्यार्थी अेडवोकेट श्री चन्दुभाअी पटेलके यहां हमारा डेरा था। पुराने विद्यार्थियोंके यहां आतिथ्य अनुभव करना जितना आनन्ददायक होता है, अुतना ही कड़ा और कठिन होता है। घरकी अच्छीसे अच्छी सुविधाअें हमें देकर खुद अड़चन भुगतनेमें वे आनन्द मानते होंगे, परन्तु हमें संकोच और परेशानी हुअे वगैर कैसे रह सकती है?

अव हम नीलोत्रीके वाकायदा दर्शनके लिअे रवाना हुअे। जहां अमरसरका पानी पत्थरोंकी किनारी परसे नीचे अुतरता है और नील नदीको जन्म देता है वहां हम पहुंचे। जल्दी-जल्दी पानी तक पहुंच कर पहले पैर ठंडे किये। आचमन करके हृदय ठंडा किया और क्षणभरके लिअे अुस स्थानका ध्यान किया। मेरी आदतके अनुसार ओशोपनिषद्, मांडुक्य अुपनिषद् अथवा अघमर्षण सूत्र मुंहसे निकलना चाहिये था, परंतु अेकाअेक श्लोक निकला:—

ध्येयः सदा सवितृ-मंडल-मध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर-कुंडलवान् किरीटी
हारी हिरण्मय-वपुर् वृत-शंख-चक्रः॥

नील नदीके किनारे अलग अलग समय, अलग अलग जगह तीन बार नीलाम्बाका ध्यान किया और हर बार मुंहसे अचूक यही श्लोक निकला। अब मुझे मिश्र देशकी संस्कृतिके पुराणोंमें यह खोज करना है कि क्या नील नदीका भगवान सूर्यनारायणके साथ कोअी खास संबंध है?

मैं संस्कृतका कवि होता तो अिस नदीके पानीमें रहनेवाली मछलियों, अिस पानी पर अुड़ते हुअे बातूनी पक्षियों और अुसके किनारे लोटपोट होनेवाले क्रिबोका (हिपोपोटेमस) की धन्यताके स्तोत्र गाता। नील नदीके किनारे जो वाटरवर्क्स हैं, अुनकी देखभालके लिअे नियुक्त अेक गुजराती भाअीसे, अुन्हींकी भाषामें अीर्ष्या प्रगट करके मैंने संतोष मान लिया: "आप कितने धन्य हैं कि आपको दिनरात नीलोत्रीके दर्शन होते हैं और यहांसे न हटनेके लिअे आपको वेतन दिया जाता है!" अुस भाअीको अैसी धन्यता महसूस होती थी या नहीं, यह देखने या पूछनेके लिअे मैं वहां न ठहरा।

मेरे खयालसे नदियां दो प्रकारकी होती हैं: जो पहाड़से निकलती हैं और जो सरोवरसे निकलती हैं। पहलीको मैं शैल-जा कहूंगा या पार्वती; और दूसरीको सरो-जा (दुनियाभरके कमल, आशा है, मुझे क्षमा करेंगे)। शैल-जा नदियोंका अुद्‌गम बहुत छोटा, बारीक और लगभग तुच्छ जैसा होता है। अिसलिअे अुनके विषयमें आदर अुत्पन्न करनेके लिअे बड़े बड़े माहात्म्य लिख डालने पड़ते हैं। गंगोत्रीके पास गंगाका प्रवाह कभी कभी अितना छोटासा हो जाता है कि मामूली आदमी भी अेक किनारे अेक पैर और दूसरे किनारे दूसरा पैर रखकर खड़ा रह सकता है। सरो-जा नदियोंकी यह बात नहीं है।

विशाल और स्वच्छ वारि-राशिमें से जितना जीमें आये अुतना ढेर खींचकर वे अस्तित्वमें आती हैं और अुनके चलने और बोलनेमें गर्भ-श्रीमन्ताओीका आत्मभान होता है।

नीलोत्रीकी यात्रा पर आनेका अेक और भी अदम्य आकर्षण था। महात्मा गांधीके पार्थिव शरीरको अग्निसात् करनेके बाद अुनके फूल (अस्थि) और चिता-भस्मका विसर्जन हिन्दुस्तान और संसारके बहुतसे पुण्य स्थानोंमें किया गया था। अुन्हींमें से अेक स्थान नीलोत्री है।

हम जिजा नगरीके सार्वजनिक मेहमान होनेके कारण यहांके लोगोंने हमारी अुपस्थितिसे 'लाभ अुठाने' का निश्चय किया। जिस जगह चिता-भस्मका विसर्जन किया गया था, अुसीके पास अेक कीर्तिस्तंभ खड़ा करनेका निश्चय हो चुका था। अिसलिअे अुसकी बुनियाद मेरे हाथों रखनेका प्रबन्ध किया गया।

२ जुलाअी, १९५० अर्थात् अधिक आषाढ़ कृष्णा तृतीयाके दिन सवेरे सैकड़ों लोगोंकी अुपस्थितिमें मैंने यह विधि पूरी की। अिस अुत्सवके लिअे गांधीजीका अेक बड़ा चित्र सामने रखा गया था। अुसकी नजर मुझ पर पड़ते ही मैं अस्वस्थ हो गया। वैदिक विधि पूरी होनेके बाद मैंने गांधीजीके जीवनके बारेमें और अफ्रीका ही अुनकी तपोभूमि होनेके बारेमें थोड़ासा प्रवचन किया। फोटो वगैरा लेनेकी आधुनिक रस्मसे मुक्त होते ही किनारेके अेक पत्थर पर बैठकर नीलमाताके सुभग जलप्रवाह पर मैंने टकटकी लगाअी और अंतर्मुख होकर ध्यान किया। अुस समय मनमें विचार आया कि अिस स्थान पर युरोप, अफ्रीका और अेशिया तीनों महाद्वीपोंके, बल्कि अमरीकाके भी, महान और साधारण आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष यहां आयेंगे, सर्वोदयके ऋषि महात्मा गांधीके जीवनकार्य और अंतिम बलिदानका यहां चिन्तन करेंगे और मनुष्य मनुष्यके बीचका भेदभाव भूलकर विश्व-कुटुम्बकी स्थापना करनेका व्रत लेंगे। भविष्यके अिन तमाम आगामी प्रवासियोंको मैंने वहांसे प्रणाम भेजे।

1392

२

नील नदीकी दो शाखाअें हैं। श्वेत और नील। जिसका अुद्‌गम जिजाके पास है वह सफेद शाखा है। नील शाखा भी सरो-जा ही है। अीथियोपिया, जिसे हम लोग हब्शियाना (अेबिसीनिया) कहते हैं, देशमें ताना नामक अेक सरोवर है। अिस सरोवरमें से नील शाखा निकलती है। ये शाखायें लाखों वरससे वहती हैं और अिनके किनारे रहनेवाले पशु-पक्षियों और मनुष्योंको जलदान करती आअी हैं। परन्तु युरोपियन लोगोंको जिस चीजका पता न हो वह अज्ञात ही कही जायगी! अेक तरहसे अुनका कहना सच भी है। दूसरे लोग नदीके किनारे रहते हुअे भी अिसकी खोज न करें कि वह नदी असलमें आअी कहांसे और आगे कहां तक जाती है, तो यह नहीं कहा जा सकता कि अुन लोगोंको सारी नदीका ज्ञान है। अुदाहरणके लिअे तिव्वतके लोग मानसरोवरवाली सानपो नदीको जानते हैं। वह नदी पूर्वकी तरफ वहती वहती जंगलमें गायव हो जाती है। अधिकसे अधिक अितना ही वे लोग जानते हैं। अिस तरफसे हमारे लोग व्रह्मपुत्रका अुद्‌गम ढूंढ़ते ढूंढ़ते अुसी जंगलके अिस तरफके सिरे तक पहुंचे। आगेका वे कुछ नहीं जानते। जव अनेक अंग्रेज प्रतिकूल परिस्थिति होते हुअे भी अिन जंगलोंमें से गुजरे, तभी वे यह स्थापित कर सके कि तिव्वतकी सानपो नदी ही अिस ओर आअी है और दूसरी कअी छोटी वड़ी नदियोंका पानी लेकर व्रह्मपुत्र हुअी है।

नील नदीका अुद्‌गम ढूंढ़नेवालोंमें मि० स्पीक अन्तमें सफल हुअे और अुन्होंने सावित किया कि जिजाके पास सरोवरसे जो नदी निकलती है वही मिश्र-माता नील है।

ये स्पीक साहव भारत-सरकारकी नौकरीमें थे। अिन्हें समाचार मिले कि प्राचीन हिन्दू मिश्र अर्थात् मौजूदा अिजिप्त देशके वारेमें वहुत जानते थे। अुन्होंने जांच करके मालूम किया कि संस्कृत पुराणोंमें कहा है कि नील नदीका अुद्‌गम मीठे पानीके अमरसरमें से हुआ है।

जिसी प्रदेशमें चन्द्रगिरि है। ठेठ दक्षिणमें जाने पर मेरु पर्वत स्थित है, वगैरा। पुराणोंमें से कुछ संस्कृत श्लोकोंका अुन्होंने अनुवाद कराया और अुनके आधार पर नीलके अुद्गमकी खोज करनेका मनसूबा बनाया। द्रव्यबल और मनुष्य-बलके बिना अैसे पुरुषार्थ सफल नहीं हो सकते, जिसलिअे अुन्होंने हिन्दुस्तानके अुस वक्तके वाअिसरॉयसे मदद ले ली।

अिस तरह जुटाया हुआ रुपया और सैनिक आदमी लेकर वे पहले झांझीबार गये और वहांसे सब तैयारी करके केनिया प्रदेश पार करके युगाण्डामें गये। वहां अुन्हें अमरसर वाला 'अच्छोद' सरोवर मिला। (अच्छ = सुअच्छ = स्वच्छ। अुद = अुदक = पानी। मीठे पानीके सरोवरको अच्छोद कहा जा सकता है।) और वहांसे निकलनेवाली नील नदी भी मिली। अुन्होंने यह प्रमाणित किया कि सूडान और मिश्रमें बहनेवाली यही नदी है। अिस बातको अभी पूरे १०० वर्ष भी नहीं हुअे।

अफ्रीका महाद्वीप सचमुच वहां रहनेवाली कअी अफ्रीकी जातियोंका मुल्क है। अिस प्रदेशके बारेमें अगर युरोपियन लोगोंको काफी जानकारी नहीं थी, तो यह कोअी वहांके लोगोंका दोष नहीं था। युरोपकी तरफके और खास तौर पर अरबस्तानके लोग अफ्रीकाके किनारे जाकर वहांके लोगोंको पकड़ लेते और अपने अपने देशमें ले जाकर गुलाम बनाकर बेचते। पकड़े हुअे लोगोंमें स्त्रियां भी होतीं और बच्चे भी होते, परन्तु लुटेरे अुनका अिन्सानकी तरह खयाल क्यों करने लगे?

कुछ मिशनरी लोगोंको सूझा कि अैसे जंगली लोगोंकी आत्माके अुद्धारके लिअे, अुन्हें अीसाअी बनाना चाहिये। जिस गहन प्रदेशमें लोभी व्यापारी भी जानेकी हिम्मत नहीं करते, वहां ये अुत्साही धर्म-प्रचारक पहुंच जाते और वहांकी भाषा सीखकर अीसा मसीहका 'शुभ सन्देश' अुन्हें सुनाते।

आगे चलकर युरोपके राजाओंने अफ्रीका महाद्वीपको आपसमें वांट लिया। अिसमें नियम यह रखा कि जिस देशके मिशनरियोंने जितना अिलाका ढूंढ़ निकाला (!), अुतना अिलाका अुस देशकी सम्पत्ति माना जाय। अिसमें अेक वार अैसा हुआ कि स्टैनली नामक मिशनरीने अिग्लैंडके राजासे कांगो नदीके क्षेत्रका प्रदेश 'ढूंढ़ने' के लिअे मदद मांगी। अिग्लैंडके राजा यानी पार्लियामेण्टने यह मदद नहीं दी, अिसलिअे वह वेल्जियमके राजाके पास गया। राजा लिओपोल्ड लोभी और अुत्साही था। अुसने सव मदद दी। परिणामस्वरूप जव अफ्रीका महाद्वीपका वंटवारा हुआ, तव कांगो नदीके क्षेत्रका मुल्क वेल्जियमके हिस्सेमें गया! यह वेल्जियन कांगोका अिलाका लगभग हिन्दुस्तान जितना वड़ा है। वहांसे रवर प्राप्त करनेके लिअे गोरोंने वहांके लोगों पर जो जुल्म गुजारे हैं, अुनका वर्णन पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, अैसा कहना अल्पोक्ति होगी। भावनाशील मनुष्य वह वर्णन पढ़े, तो अुसका खून ही जम जाय। फिर भी गोरोंने वहांके लोगोंको धीरे धीरे 'सुधारा' जरूर। अव वे लोग कपड़े पहनते हैं, वालोंमें तरह तरहकी मांगें निकालते हैं, और शराव भी पीते हैं। अिस तरह अधिकांश अीसाअी वन गये हैं।

जिसके खर्चसे जो प्रदेश ढूंढ़ा गया अुसीका वह देश हो जाय, अिस हिसावसे नील नदीके अुद्गमकी तरफका सारा युगाण्डा प्रदेश हिन्दुस्तानके हिस्सेमें आना चाहिये था। परन्तु हिन्दुस्तान जैसे गुलाम देशको भला अधिकार कैसा? अच्छा हुआ कि अिस पापके वंटवारेमें हमारे हिस्सेमें कोअी भाग नहीं आया। हमारे यहांके लोगोंने युगाण्डामें जाकर कपासकी खेती वढ़ाअी। शासकोंकी मददसे वहां वड़ी वड़ी अेस्टेटें वनाअीं और करोड़ों रुपये कमाये। हमने भी वहांके लोगोंको सुधारा है। दरजीका काम, वढ़अीगिरी, राजका काम, रसोअीका काम वगैरा धंधोंमें हमने अुनकी मदद ली, अिसलिअे धीरे धीरे वे लोग प्रवीण हो गये। हिन्दुस्तानके कपड़ेकी और विलायतसे आनेवाली

शराव आदि तरह तरहकी चीजें वेचनेकी दुकानें खोलीं और सुन लोगोंको जीवनका आनन्द अनुभव कराया।

गोरे और गेहुंअे रंगके लोगोंके अिस पुरुषार्थकी साक्षी स्वरूप नील नदी यहां चुपचाप वहती जाती है और अपना परोपकार अपने दोनों किनारों पर दूर तक फैलाती जाती है।

हमारे देशमें गंगा नदीका जो महत्त्व है वही महत्त्व, अधिक अुत्कट रूपसे, अुत्तर-पूर्वी अफ्रीकामें नील नदीका है। दुनियाकी सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कृतियोंमें अिजिप्तकी मिश्र अथवा मिसर संस्कृतिका स्थान है। और अुसका प्रभाव युरोपके अितिहास पर ही नहीं, परन्तु अुसके धर्म पर भी पड़ा है। हमारे यहां जैसी चातुर्वर्णी संस्कृति फैली, वैसी ही संस्कृति प्राचीन मिश्र देशके अितिहासमें भी देखनेको मिलती है; और अुसका प्रतिबिंब ग्रीक तत्त्ववेत्ता अफलातूनकी समाज-रचनामें पड़ा हुआ मिलता है।

चार वर्णवाली संस्कृति अुस जमानेके लिअे चाहे जितनी अनुकूल हो और भव्य मानी जाती हो, परन्तु तूफानी युरोप अुसे नहीं पचा सका। युरोपमें जो अीसाअी धर्म फैला है, अुसका पालनपोषण मिश्रमें कम नहीं हुआ है। परन्तु वहां विकसित हुआ वैराग्य और तपस्या और देहदमन वहुत आजमानेके बाद युरोपने छोड़ दिया। अैसा होने पर भी युरोपकी संस्कृतिका मूल खोजने जायं, तो वह अिजिप्तके अितिहासमें जाना पड़ता है और अिस अितिहासका निर्माण अेक अंश तक नील नदी पर आधारित है।

जिस तरह नदीका पानी आगे वहता जाता है, पीछे नहीं जा सकता, अुसी तरह यह चीज हमारा ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रहती कि अिजिप्तकी संस्कृति नील नदीके अुद्गमकी तरफ युगाण्डा प्रदेशमें नहीं पहुंच सकी। अगर अिजिप्तके लोग अमरसरके आसपास आकर बसे होते, तो अफ्रीकाका ही नहीं परन्तु दुनियाका अितिहास और ही तरहसे लिखा जाता।

हमारे यहां हम नदियोंके जितने अुद्‌गम देखते हैं, वे सब जंगलमें या दुर्गम प्रदेशमें होते हैं। और ये अुद्‌गम छोटे भी होते हैं। नील नदीका अुद्‌गम चौड़ा है, अिसकी तो कोअी वात नहीं। परन्तु अुद्‌गमके काव्यमें खामीकी वात यह है कि वहां अेक शहर वसा हुआ है। हमारे यहां कृष्णा और अुसकी चार सहेलियां सह्याद्रिके जिस प्रदेशमें से निकलती हैं, वह प्रदेश दुर्गम और पवित्र था। संतोंने वहां शिवजी महावलेश्वरकी स्थापना की। परन्तु अंग्रेजोंने अुसे अपना ग्रीष्मनगर वनाकर अुस तपोभूमिको विहारभूमि या विलासभूमि वना डाला। जिंजामें यह अितिहास याद आये विना नहीं रहा।

और अव तो वहां ओवेन फॉल्सके आगे अेक वड़ा वांध वांधकर विजली पैदा करनेवाले हैं। दुनियाका यह अेक अद्‌भुत वांध होगा। अिसकी शक्ति युगाण्डामें ही नहीं, परन्तु सूडान और अिजिप्त तक पहुंचेगी। अिससे खाद्यपदार्थ वढ़ेंगे, अकाल दूर होगा, असंख्य अश्वत्थामा (हॉर्सपावर) जितनी शक्ति मनुष्यकी सेवाके लिअे मिलेगी। अिसलिअे अैसी प्रवृत्तिको तो आशीर्वाद देने पर ही छुटकारा होगा। फिर भी हृदय कहता है कि मनुष्य-जाति अिसके वदले कुछ अैसा खोयेगी कि जिसकी समानता वड़ेसे वड़ा वैभव भी नहीं कर सकेगा। नील नदी माता थी, देवी थी, अव यह लोकधात्री दासी होनेवाली है!

२६

नील मैयाकी छायामें

हमारे और गोरे लोग दोनोंके द्वारा अुत्साहपूर्वक विकसित किये हुअे शहरोंमें जिजाकी गिनती हो सकती है। अितने बड़े तालावके किनारे होनेसे अुसका व्यापार जहाजों द्वारा किसुमु, म्वांझा वगैरा स्थानोंके साथ है ही। अिसके अलावा वहांकी कअी संस्थाओंके कारण भी जिजाका महत्त्व बढ़ गया है। यहां बिजली लगते ही जिजा अफ्रीकाके औद्योगिक शहरोंमें मुख्य स्थान प्राप्त कर ले तो कोअी ताज्जुब नहीं।

यहांकी संस्थाओंमें मुझे तो जिजाकी महिलाओंकी चलाअी हुअी संस्था खास तौर पर सजीव लगी। वहां बहनोंके लिअे तरह तरहके वर्ग चल रहे हैं। परन्तु दूसरी संस्थाओंकी तरह यहां यह बात नहीं है कि बहुतसी बहनें केवल अपना नाम देकर संतोष कर लें और काम दो-तीन बहनें ही करती हों। यहांकी पाठशालाओंके आचार्य भी अपने कामोंके लिअे विशेष अुत्साह रखते दिखाअी दिये।

अेक दिन हम पासकी अेक पहाड़ी पर मिशनरियोंकी तरफसे अफ्रीकियोंके लिअे चलनेवाली अेक संस्था देखने गये। रविवार होनेसे गोरे शिक्षक सब गैरहाजिर थे। अफ्रीकी विद्यार्थियोंने हमें सब मकानात और विद्यार्थियोंके लिअे रहनेकी सब सुविधायें आदि बताअीं। मिशनरी संस्थाओंमें जैसे अन्यत्र होता है वैसे यहां भी कक्षाके मकानोंकी टीमटाम अच्छी थी। परन्तु मुझे लगा कि खाने-पीनेके मामलेमें काफी कंजूसी बरती जाती है।

अुसी दिन हम श्री मूलजीभाअीके साथ अुनकी ककीरा अेस्टेट और चीनीका कारखाना देखने गये। जैसे मध्ययुगमें किसी सरदारके

गढ़के आसपास अुसके गढ़वाले और तरह तरहके कारीगर आश्रित रहते थे, वैसे ही वातावरणवाले आजकलके कारखानेदारोंके अिस स्थानको देखकर मुझे अेक प्रकारसे अच्छा लगा। अेक छोटीसी पहाड़ी पर शाही बंगलेमें मूलजीभाअी अपने कुटुंबके साथ रहते हैं। और अुस पहाड़ीकी देखरेखमें अुनके कारखाने और गन्ना, कॉफी, चाय वगैराके खेत दूर दूर तक फैले हुअे हैं। जगह जगह मजदूरोंके लिअे अफ्रीकी ढंगके झोंपड़े बने हों और पहाड़ीकी तलहटीमें कारखानेके कर्मचारियोंके छोटे-बड़े बंगले हों, तो अैसे सारे दृश्यमें मनुष्य मनुष्यका सम्बन्ध टूटा हुआ नहीं लगता।

फिर भी मुझे यहां अुल्लेख करना चाहिये कि अेक अज्ञानी अफ्रीकी मजदूरने मूलजीभाअी पर घातक हमला किया था। वे बड़ी मुश्किलसे बच सके। जांच करने पर मालूम हुआ कि यह कोअी मालिक-मजदूरके बीचका झगड़ा नहीं था, परन्तु शराब पीकर पागल हुअे मनुष्यका अंधा आक्रमण था। जहां जीवन है और मनुष्यका समाज है, वहां अैसी दुर्घटनाअें होंगी ही।

मूलजीभाअीने अेक बड़ी रकम खर्च करके अफ्रीकी लोगोंके लिअे अेक खास कॉमर्स कॉलेज खोला है। कंपालासे आते हुअे रास्तेमें हमने अिस कॉलेजके मकान बनते हुअे देखे थे।

ज़िजासे काफी दूर अिगांगा नामक अेक गांव है। वहां हमारे यहांके लोगोंकी अच्छी खासी वस्ती है। अिन लोगोंने रातको हमें भोज दिया। मोटर द्वारा जंगली प्रदेश पार करके हम कोअी ९ बजे अिगांगा पहुंचे होंगे। लोगोंमें अुत्साह खूब था। भोजन शुद्ध गुजराती ढंगका था, यद्यपि खाना मेज पर परोसा गया था। अितना सुधार हमारे यहां सभी जगह होना चाहिये। खानेसे पहले मैंने जांच की कि आमंत्रित सज्जनोंमें कोअी अफ्रीकी है या नहीं। किसीको यह बात सूझी नहीं थी, यद्यपि बहुत जगह मेरा यह आग्रह लोगोंके कानों तक पहुंच गया था। हमारे लोगोंने कहा कि हमें अिस बातमें आपत्ति

नहीं कि कोअी अफ्रीकी हमारे साथ पंगतमें वैठकर खायें। परन्तु अितनी रात गये किसी अफ्रीकीको कहांसे वुलाया जाय ?

जवावमें मैंने अितना ही कहा कि, 'तव तो हम लाचार हैं। अिस मात्रामें हमारा समारोह नीरस रहा।'

खाना शुरू होते होते वे किसी अफ्रीकी शिक्षकको वुला लाये और अुसे हमारे साथ खानेको विठा दिया। खानेके वाद मैं गुजरातीमें वोला। परन्तु अन्तमें दो तीन अफ्रीकी समझ सकें, अिसलिअे अंग्रेजीमें वोला। भाषणके आखिरमें अुस अफ्रीकी शिक्षकने कहा कि, "मुझे शिक्षा देनेवाले अंग्रेज थे। मुझ पर अुनके वहुत अुपकार हैं। परन्तु वे हमें कभी अपने साथ खानेको नहीं वैठाते। हमें यह वहुत खटकता है। आप लोगोंके साथ भी हम वहुत मिलजुल नहीं सकते। आज यह पहला ही मौका है, जव मैं अिस तरह समान भावसे खाने वैठा हूं।"

समान भावसे साथ वैठ सकनेके कारण अुसके मन पर जो असर हुआ, अुसका मेरे मन पर गहरा असर पड़ा। मुझे खयाल हुआ कि हमारे लोग झूठे धार्मिक विश्वासके वशीभूत होकर अलग-थलगपन रखते हैं और अिन्सानियत खो वैठते हैं। और अिसीलिअे अिन्हें अिस देशमें यहांके लोगोंके वीच विदेशियोंकी तरह रहना पड़ता है। अंग्रेज तो शासक हैं। चमड़ीका घमण्ड रखते हैं। अुन्हें अभिमान है कि अुनकी सभ्यता श्रेष्ठ है। अुनका अलग-थलगपन दूसरी तरहका है। हमारा सामाजिक अलग-थलगपन भिन्न है। अिसकी तहमें 'धार्मिक' भावना है। अनजान लोगोंके प्रति दूर-भाव है और अूंच-नीचका भाव तो है ही। हम जव तक यह दोष दूर नहीं कर लेते, तव तक विदेशोंमें हमारे लिअे कहीं भी स्थायी स्थान नहीं है। और स्वदेशमें भी हम आअिन्दा सुरक्षित नहीं हैं। मांसाहार और अन्नाहारके वड़े फर्कके कारण भोजन-व्यवहारमें कुछ मुश्किलें रहेंगी। परन्तु अुन्हें पार करनेकी शक्ति हममें होनी ही चाहिये। परन्तु अिस तरहकी वंधुताकी वृत्ति ही हम पैदा नहीं करते।

अंग्रेज लोग अफ्रीकी लोगोंके हाथका खाते हैं, परन्तु अुन्हें साथ नहीं बैठने देते। हम तो अब तक अफ्रीकियोंके हाथका खाते तक नहीं। अब यह घृणा बहुत कुछ मिट गअी है और हिन्दुस्तानियोंके ज्यादातर घरोंमें खाना अफ्रीकियोंके हाथका ही होता है। सारे पूर्व अफ्रीकामें कअी जगह खानेके बाद मैं कह सकता हूं कि अफ्रीकी रसोअिये हम जैसी चाहें वैसी रसोअी तैयार कर देते हैं। पंजाबी, गुजराती, महाराष्ट्री या कोंकणी। तरह तरहकी बानगियां वे हमारे लोगों जैसी ही बढ़िया बनाना सीख गये हैं। हमारे बच्चोंको भी अफ्रीकी नौकर लगनसे रखते हैं। जहां हमारे व्यापारियोंने अिन पर विश्वास रखा है, वहां अुन्होंने दुकान चलानेमें भी अपनी योग्यता साबित की है। और हमारे लोगोंने कहीं कहीं तनख्वाहके अलावा कुछ फीसदी नफा देनेकी शर्त पर अपनी दुकानकी शाखायें अनुभवी अफ्रीकियोंको सौंपी हैं। अफ्रीकियोंको समान भावसे हम अपने काम और अपने घरोंमें रखें, तो अिसमें हमारा लाभ तो है ही, परन्तु मुख्य बात यह है कि अिसमें हमारा नैतिक अुद्धार भी है।

अिगांगासे लौटनेमें बहुत देर हो गअी थी, परन्तु तीनों महाद्वीपोंके समन्वयके सुन्दर सपने मनमें चक्कर काटने लगे। चांदनी अपनी कीमिया फैला रही थी। अुसीमें हमने अपनी प्रार्थना बैठा दी और रातको १२ बजे आकर सोये। अिस तरह हमारी अफ्रीकाकी कुछ प्रातः सायं प्रार्थनायें अितनी गहरी और सुगंधित हो गअी हैं कि आज भी वे याद आती हैं।

अिति और अथ

शुरूमें सोची हुअी पूर्व अफ्रीकाकी यात्रा अब पूरी होनेको आअी। जिन नानजीभाअी कालीदासके आग्रहसे मैं पूर्व अफ्रीकाकी यात्रा पूरी कर सका, अुनका गढ़ लुगार्जा देखकर और वापस कंपालामें अुन्हींके स्थानका आखिरी आतिथ्य लेकर यह यात्रा पूरी करनी थी। परन्तु संकल्पोंका स्वभाव ही जरा लम्बा होनेका, बढ़नेका होता है। हम बाजारमें कोअी चीज खरीदें, तो दुकानदार हमें पूरा तौल देनेके बाद जरा अधिक देगा ही। अिसमें दोनोंको संतोष होता है। तराजू-भक्त अंग्रेजोंने भी डबलरोटीके लिअे १२ के स्थान पर १३ रोटीके दर्जनकी कल्पना की है!

अफ्रीकाके हमारे सभी यजमान कहने लगे कि, 'यहां तक आये हैं तो पूर्व अफ्रीकाका पश्चिमी सिरा पूरा करके बेल्जियन कांगोमें माना जानेवाला रुआंडा-अुरुंडीका रमणीय प्रदेश क्यों न देखते जायं? अिस देशके नकशे मैंने देखे ही थे। वुन्योनी, कीवू जैसे सरोवर देखनेको मिलेंगे। मिर्चके आकारके तंग और लम्बे टांगानिका सरोवरके अुत्तरी सिरे तक जा सकेंगे। सोये हुअे या बुझे हुअे ज्वालामुखी दिखाअी देंगे। घने अरण्योंमें जोखमभरे सफर किये जायंगे, यह सारी अुत्सुकता मनमें थी ही। अिन्सानसे ज्यादा अीमानदार जंगली जानवरोंके दर्शन करनेके लिअे भी लोगोंने हमें ललचाया था। अिस लिअे हमने अपने पास वक्तका कितना बजट है, अिसका हिसाब लगाया और मित्रोंके सुझावको स्वीकार किया। परन्तु अैसा करनेमें हमारी मंडलीके सदस्योंमें फेरबदल हुआ। श्री अप्पासाहब पंत जिजासे पहले ही नैरोबी लौट गये थे। अब तात्या अिनामदारने वापस जाना तय किया।

अिनके स्थान पर सर्वेंट्स-ऑफ-अिण्डिया-सोसाअिटीवाले मोहनराव शहाणे और अुनकी पत्नी यमुताअी हमारे दलमें शामिल हुअे। श्री कमलनयन वजाजने भी अपनी पत्नी सावित्री और वच्चोंको नैरोवी होकर हवाअी रास्तेसे हिन्दुस्तान जाने दिया। नानजीभाअीके लड़के धीरूभाअी भी हमसे विदा लेकर युरोप जानेवाले थे। अिसलिअे ३ और ४ जुलाअीके दो दिन हमारे लिअे मिश्रित भावनाओंवाले और अुत्कट सिद्ध हुअे।

जिजासे विदा लेनेके लिअे हम खास तौर पर ओवेन फॉल्स तक गये। श्री रामजीभाअी लद्धा वगैरा मित्रोंने वहां अनेक फोटो लिये। हमारे लोगोंकी शिक्षाके विषयमें और हमारी संस्थाओंमें अफ्रीकी वच्चोंको आने और पढ़ने देनेके वारेमें वहुतसी वातें कीं और हम लुगाजी पहुंचे।

श्री धीरूभाअी और आनन्दजीभाअीने हमें सारी अेस्टेट वताअी। ककीरा और लुगाजीमें वहुत साम्य है। यहां अेक अूंची पहाड़ी पर पुराने और नये दो राजमहल जैसे मकान हैं। अिस पहाड़ीकी तलहटीमें अेस्टेटके होशियार कर्मचारी रहते हैं। दूर दूर तक खेत फैले हुअे हैं। अुन खेतोंके सिरे पर अफ्रीकी मजदूर रहते हैं। यहांके वच्चोंकी पढ़ाअीके लिअे अच्छी व्यवस्था है। मजदूरोंके लिअे दवा-पानीकी व्यवस्था भी संतोषजनक थी। मैंने यहांके डॉक्टरसे मजदूरोंको खास तौर पर किन किन रोगोंके लिअे दवा देनी पड़ती है अित्यादि कुछ महत्त्वके सवाल पूछे। अेस्टेटकी व्यवस्थामें सिर्फ गुजराती ही हों सो वात नहीं है। यहां कुछ पंजावी हैं, महाराष्ट्री हैं, वंगाली हैं, मद्रासी हैं और अंग्रेज भी हैं।

दु:खकी वात अितनी ही है कि अिन खेतोंमें जितनी पैदावार की जा सकती है, अुतनी करनेकी यहां सुविधायें नहीं हैं। यहांकी सरकार वाहरसे मजदूरोंको आने नहीं देती और अफ्रीकी मजदूर काफी संख्यामें

मिलते नहीं। नानजीभाअीको आज यहां सात हजार मजदूर चाहिये। अुनके वजाय सरकार अुन्हें चार हजार ही देती है। परिणामस्वरूप जितना गन्ना वोया जाता है, अुतना पेला तक नहीं जाता। कुछ तो खेतोंमें ही सूख जाता है।

२८

भूमध्य रेखा पार की

हमारी नअी अथवा अतिरिक्त यात्राका प्रारम्भ कंपालासे हुआ। यहांके अेक गुजराती शिक्षित व्यापारीने वेल्जियन कांगोके वर्णनवाला अपना लिखा हुआ अेक अुपन्यास मुझे पढ़नेको दिया और अुसीके साथ अेक कीमती कैमरा भी भेंट किया। वे अुसी दिन जापान जानेवाले थे। डॉ० मूलजीभाअीके दो मित्र श्री खीमजीभाअी और व्रजलालभाअी शाह हमारे साथ चलनेको तैयार हो गये। अिन दो भाअियोंके विना हमारी यात्रा अच्छी तरह हरगिज पूरी न होती। अुनकी होशियारी और अुनकी नम्रताके बीच मानो होड़ होती थी। वे अपनी अेक नअी सुन्दर कार लेकर आये। हमारे हाथों अुसका मुहूर्त करते हुअे अुन्हें आनन्द हो रहा था। मुझे कहना चाहिये कि अुनकी अिस कारका हमने पूरा अुपयोग किया। श्री कमलनयनने यह कार अितनी होशियारीसे चलाअी कि हिम्मत और सावधानी दोनोंकी अुचित मात्रा अुनके हाथमें पूरी तरह आअी हुअी मालूम होती थी।

हमारा सफर शुरू होते ही मैं वाअीं ओर विक्टोरिया सरोवरकी आशा रखने लगा। वह जरा जरा दिखाअी देता, अपनी तरह हमें भी प्रसन्न करता और फिर छिप जाता। परन्तु मैंने जितना सोचा था अुतना नजदीक वह न आया।

पहले ही दिन हम अेक अैसी जगह पहुंचे, जिसका महत्त्व वहांकी भूमि और वहांके लोग महसूस नहीं करते थे। परन्तु हम सब अुत्तेजित हो गये। क्योंकि हम अपनी धरती माताकी मध्य रेखा पर पहुंच गये थे। हमारा अेक पैर अुत्तरी गोलार्धमें हो और दूसरा दक्षिणी गोलार्धमें हो, तो अैसे स्थान पर पहुंच कर कौन अुत्तेजित न होगा? रास्तेके किनारे पर यहांकी सरकारने अेक खंभा गाड़कर दो हाथोंसे बताया है कि अुत्तरी गोलार्ध अिसके दाअीं ओर है और दक्षिणी गोलार्ध बाअीं तरफ। मुझे खयाल आया कि यही खंभा अगर रास्तेके दूसरी ओर खड़ा किया गया होता तो ज्यादा अच्छा होता। दक्षिणी गोलार्धकी तरफ दाहिना हाथ आ जाता। हम अुस खंभेके आस-पास हो गये, मानो बड़ी बहादुरी कर रहे हों। और वहां अिस तरह अपने फोटो लिये, मानो अुसका दस्तावेज हमारे पास होना ही चाहिये। हमें आगे जाना था अिसीलिअे अिस स्थानको हमने छोड़ा।

दोपहरको मसाकामें भोजन करके थोड़ासा आराम किया और वहांसे लगभग अुतने ही मील दौड़कर रातको म्बरारा पहुंचे। रातको हम अेक अैसे होटलमें रहे, जहां पहाड़के अेक तरफ वृक्षोंके बीच अफ्रीकी ढंगकी गोल झोंपड़ियां बनाअी गअी थीं। अिन गोल झोंपड़ियोंमें सुविधा हो या न हो, काव्य तो है ही। अैसे स्थान पर अेक रात बिताकर अफ्रीकाका जितना अनुभव किया जा सकता है, अुतना युरोपियन ढंगके बंगलोंमें नहीं होता। अिसी स्थान पर किसी अपीलकी अदालतका अुस दिन पड़ाव था, अिस कारण मसाकाके अेक गुजराती अेडवोकेट यहां आये हुअे थे। वे हमसे मिले। अुन्होंने आते ही अपना परिचय दिया कि, "मैं भादरणका हूं, विद्यापीठमें आपका विद्यार्थी था, मेरा नाम रावजीभाअी पटेल है।" अुनके साथ बहुत बातें कीं। खास तौर पर यहांके अफ्रीकी लोग कैसे हैं, अुनमें किस प्रकारके अपराध अधिक हैं, झगड़ालू हैं या नहीं, किस हद तक विश्वासपात्र

हैं, अुनके विवाहके नियम कैसे हैं, अुत्तराधिकारकी क्या व्यवस्था है, वगैरा।

यहांका अिलाका कम्पाला, अेन्टेबे जैसे शहरोंसे दूर होनेके कारण पिछड़ा हुआ माना जाता है और अिसीलिअे यहां अफ्रीकाका सच्चा दर्शन होता है। दूसरे दिन सुबह होटलमें गरम पानीसे नहाये —पानी क्या था लोहेके जंगका काढ़ा (कषाय) बनाया हो, अैसा रंग था। परंतु सफरकी थकावट मिटानेके लिअे गरम पानीके टबमें लंबे होकर सोना अितना ज्यादा सुखकर और हितकर होता है कि जब तक पानीका वह रंग हमारी चमड़ीको नहीं लगता, तब तक अुसमें नहानेमें जरा भी संकोच नहीं होता।

होटलमें से अुतरकर हम म्वराराके लोगोंसे मिले। व्याख्यानोंका कर चुकाये बिना तो जा ही कैसे सकते थे? सिक्खोंके गुरुद्वारेके पीछे स्त्री-पुरुषोंकी सभा अिकट्ठी हुअी थी। वहां हमने भाषण दिया। श्री अप्पासाहबसे अितना सीख लिया था कि प्रस्तावना कुछ भी की जाय, परंतु हरअेक व्याख्यानमें विषय अेक ही आना चाहिये। सभामें जब बहनें आतीं तब मैं कुछ सामाजिक रीतरिवाजों पर अधिक जोर देता। सिक्ख लोग होते तो अुनके लिअे कुछ बातें मनमें खास तौर पर रखी ही रहतीं। यह प्रसंग अच्छे अच्छे अनेक विचार लोगोंके सामने पेश करके विविधता लानेका नहीं था, परंतु सारे अफ्रीकामें हमारे लोगोंको दृष्टि-परिवर्तन और जीवन-परिवर्तनका अेक ही संदेश हर जगह सुनाकर सर्वत्र अेक ही फेरबदल करानेकी बात थी। गांधीजीके नाम पर, स्वतंत्र हिन्दुस्तानके नाम पर हमारे लोगोंके स्वार्थकी दृष्टिसे और मानवताके कल्याणके लिअे आअिंदा हमें क्या करना चाहिये यह हम हर जगह समझाते थे।

२९

कबाले

अफ्रीकाके अनेकों सुन्दर स्थानोंमें भी कबाले खास तौर पर सामने आता है। हम म्बरारासे भोजन करके चले। ९० मीलके कभी अुतार-चढ़ाववाले सफरको पूरा करके शामको ५ बजे हम कबाले पहुंचे। रास्तेमें दृश्योंकी विविधता थी। परंतु जब यह दर्शन-समृद्धि बढ़ जाती है, तब बहुतसे अनुभव कुचले जाते हैं और संपूर्ण चित्र मनमें नहीं टिकता। अभी तो अितना याद आता है कि अेक बड़ी राक्षसी लॉरी रास्तेके अेक तरफ औंधी पड़ी हुअी थी, अुसके नीचे तीन आदमी मर गये थे। हम तो केवल वह लॉरी और अुसके पास पंचनामा बनानेवाले पुलिसवालोंको ही देख सके। अैसी दुर्घटना अुससे होनेवाले नुकसानसे भी ज्यादा भयानक दिखाअी देती है और अिस बातका पदार्थ-पाठ देती है कि दुनियामें अैसी दुर्घटनाअें भी हो सकती हैं। आज विचार करता हूं तो अैसा लगता है कि दो-चार दिन बाद ही हम जिस ज्वालामुखीके लावाके रेलेके दर्शन करनेवाले थे अुसकी वह पेशबंदी ही थी।

अप्पासाहबकी सिफारिशके अनुसार हम कबालेकी 'व्हाअिट हॉर्स अिन' नामक होटलमें ठहरे। पहलेसे तार देकर सारी व्यवस्था कर ली थी। अिस होटलमें ठंडे पानीसे गरम पानीकी सुविधा अधिक आसान थी। थकावटके साथ मुझे अपने सिरके बालोंका भार भी अुतारना था। कबालेके अेक नाअीको बुला लाये। ये भाअी झांझीबारसे यहां आकर बस गये हैं। वहां तंदुरुस्ती अच्छी नहीं रहती थी, अिसलिअे यहां आ गये। यहां अिनका काम ठीक चलता है। अिन्हींके भाअी हमें झांझीबारमें मिले थे।

कवालेकी खास खूबी अुसकी प्राकृतिक सुन्दरता तो है ही। अूंचाअी ६,४०० फुटकी होनेके कारण यहांका जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है, यह भी अिस स्थानके महत्त्वको बढ़ानेवाली बात है। तीसरी चीज यह है कि अफ्रीकाकी दूसरी असली जातियोंसे यहांके लोग ज्यादा मेहनती और होशियार हैं। अिसका परिचय यहांकी हरअेक पहाड़ी देती है। जहां हमें अैसा लगे कि अनाज अुगाया ही नहीं जा सकता, वहां भी अिन लोगोंने मेहनत करके अन्न अुत्पन्न किया है। अिन लोगोंने जमीनको कसकर खुराक संबंधी स्वयंपूर्णता ही प्राप्त नहीं की है, बल्कि वे आसपासके लोगोंको भी खुराक मुहय्या करते हैं।

सवेरे हमारे साथियोंके अुठनेसे पहले चि० सरोज और मैं घूमने निकले। आसपास सब जगह धुंध था। हमारे मीठी गुदगुदियां करनेमें अुसे मजा आता था। हमने आशा रखी थी कि धूप निकलनेका वक्त होने पर धुंध पतला हो जायगा, परंतु वह तो गाढ़ा होने लगा। सामनेकी पहाड़ियां दिखाअी ही न देती थीं और जब दिखाअी देती थीं तब अैसी मानो जन्मान्तरका अस्पष्ट स्मरण होता है। अैसी शंका पैदा करती थीं कि वे प्रत्यक्ष हैं या कल्पनाका अनुमान ही हैं। अंतमें सूर्यकिरणें विजयी हुअीं, धुंध धीरे-धीरे नीचे दबकर घाटियोंमें छिप गया और अूंची-अूंची प्रौढ़ पहाड़ियां प्रकट हुअीं। नाश्तेके बाद पुराने अनुभवोंका वितरण शुरू हुआ। बादमें हाथ देखनेका खेल चला। पता नहीं यह खेल दुनियामें सब जगह कैसे फैल गया है। जिन लोगोंका अुस पर विश्वास नहीं, अैसे लोगोंको भी हाथ दिखानेमें मजा आता है,; और जिन्हें अिस विद्याका कुछ भी ज्ञान नहीं, अैसे लोग भी हाथ देखकर मनमाने अनुमान लगा लेते हैं। हाथ देखनेवाले हरअेक आदमीमें अपने अनुमान अनिश्चित भाषामें पेश करनेकी कला तो आ ही जाती है।

खाना खाकर हम यहांका प्रसिद्ध और रमणीय बुन्योनी सरोवर देखने गये। वहां हमारे लिअे अेक स्टीमलांचका बंदोवस्त कर रखा

था। परंतु वह लांच शुरूसे ही नाराज हो गया। परिणामस्वरूप हम अेक नाव करके सरोवरमें थोड़ेसे घूमे। अिससे स्टीमलांच शरमाया और समझदार बनकर अुसने चलना मंजूर किया। थोड़ासा चला कि फिर अड़ियल टट्टूकी तरह ठहर गया। हममें से कुछ लोग अूब गये और नावमें चले आये। औरोंने अपनी धीरजकी परीक्षा कर लेना चाहा। अुन्हें अुसका मीठा फल मिला। वे खूब दूर तक सरोविहार कर आये। हम अपनी नाव लेकर तालावमें खिले हुअे नीले कमलोंसे मिलने चले।

कमलोंकी सुन्दरता असाधारण होती ही है। भारतीय कवियोंने तमाम फूलोंमें अिसे मुख्य स्थान दिया है। कीचड़से जन्म लेकर जीवनकी सारी अूंचाअीको अपनाकर अलिप्त भावसे पानी पर तैरता रहे और अेकनिष्ठासे 'प्रजाके प्राणस्वरूप' सूर्य भगवान् पर टकटकी लगाकर ध्यान करे, अैसे अिस फूलको हमारे कवियोंने आर्य संस्कृतिका प्रतीक बनाया तो अिसमें क्या आश्चर्य है?

कमलोंका राजा लाल कमल है। अिसकी प्रसन्न प्रौढ़ता, अिसका निर्व्याज प्रफुल्ल वदन, अिसका लावण्य और मार्दव — सभी आह्लादक होते हैं। और अिसकी हलकी भीनी सुगंध तो ढूंढ निकालनेके बाद मोह पैदा किये बगैर रहती ही नहीं।

अिसके बाद आता है पीला कमल। अिसका सुवर्ण वर्ण कभी कभी हलका होता है और कभी कभी गहरा। सुवर्णके सूचनसे ही अुसकी अमीरी साबित होती है।

अिन रंगोंकी शोभा तभी तक ध्यान खींचती है, जब तक सचमुच बड़ा सफेद कमल नजर नहीं आता। कौन कहता है कि सफेद रंग बिलकुल सादा होता है? अुसकी प्रतिष्ठा समझनेके लिअे बाकीके सब रंग जी भरकर देखे हुअे होने चाहियें। दूसरे रंग कितने ही सुंदर और आकर्षक हों, तो भी अुन्हें देखकर अंतमें थकावट आ जाती है। परंतु सफेद रंग तो शुचि, शुभ, सनातन और समृद्ध होता है। सफेद कमलोंके अंदर लाल कमल अुगा हो, तो वह विशेष

शोभा देता है। परंतु लाल कमलोंमें जब अेक ही सफेद कमल सिर अूंचा करता है, तब अैसा ही लगता है कि बाकीके कमल अिहलोकके हैं और यह सफेद स्वर्गलोकसे अुतरकर आया है।

अैसे कमल हमारे यहां अनेक तालावों और सरोवरोंमें देखनेको मिलते हैं। नील कमलका वर्णन हम कवितामें ही सुनते हैं, अिसलिअे अुसकी स्पष्ट कल्पना नहीं होती। नील रंग शांत-सुभग होता है, अिसलिअे हम अितनी कल्पना कर सकते हैं कि वह अच्छा ही दीखता होगा। परंतु जब सचमुच नील कमल नजर आता है, तब हमारी सारी कल्पनाअें फीकी पड़ जाती हैं और हमारा हृदय बोल अुठता है कि असली काव्य तो नील कमलमें ही है। नील कमल मानो परियोंकी सृष्टि है। अिसकी नजाकत और अिसकी अटूट सूचकता और किसी भी कमल या फूलमें नहीं आ पाती। श्वेत कमलकी तरह यह दैवी नहीं, लाल कमलकी तरह यह वैभवकी सूचना नहीं देता, पीले कमलकी तरह हमें पूजाके लिअे प्रेरित नहीं करता। परंतु वह कहता है कि, 'मैं परी हूं; और तमोगुणी या रजोगुणी नहीं, किन्तु शुद्ध सत्त्वगुणी अप्सरा हूं। मेरा दर्शन, मेरा स्पर्श, मेरा सहवास सहज अुन्नतिकारी है। मेरी दुनियामें अेक बार प्रवेश करनेके बाद आप अुसे आसानीसे भूल नहीं सकते, क्योंकि आप अिस दुनियाके महज मेहमान नहीं रहते, परंतु अिसका पूर्ण अधिकार आपको मिल जाता है, हमारे कवि नीलोत्पल पर अितने मोहित हुअे हैं सो निष्कारण नहीं। नील कमलोंके बीच हमने काफी सरोविहार किया।

वुन्योनी देखने हम अेक रास्तेसे गये और वापस आये दूसरे रास्तेसे। दोनों मार्ग सुन्दर थे। शामको वहांके अेक अफसर मि० रसेल हमसे मिलने आये। बड़े संस्कारी प्रतीत हुअे। अुनसे मालूम हुआ कि स्वाहिली भाषा पूर्व अफ्रीकामें सभी जगह काफी समझी जाती है। स्वाहिली भाषाके प्रति कहीं कहीं जो विरोध कहा जाता है, वह कृत्रिम रूपमें पैदा किया गया है। श्री रसेलसे हमने जाना कि जो

बुन्योनी सरोवर हम देखने गये थे अुसके भीतर अेक टापू है। अुस टापूमें कुष्ठ रोगियोंके लिअे अेक वस्ती वसाअी गअी है। कुछ मिशनरी लोगोंने कुष्ठ सेवाके लिअे फकीरी ले ली है। अुनकी सेवाका असर खास तौर पर देखने लायक है। अुस अफसरके साथ मैंने अेक प्रश्न छेड़ा कि अफ्रीकी लोगोंकी संस्कृतिने अुसका जो स्वरूप अिस समय है वह कैसे पकड़ा होगा? अुसे भी अिस विषयमें दिलचस्पी थी, अिसलिअे हमारी खूब बातें हुअीं।

कबालेके हिन्दू-मंडलने हमारे लिअे अेक सभाका प्रबंध किया था। अुसमें अफ्रीकी लोगोंकी संख्या अच्छी थी, अिसलिअे मैं अुन्हें ध्यानमें रखकर अधिक विस्तारसे बोला। मेरे अंग्रेजी भाषणका अेक अेक वाक्य अेक अफ्रीकी भाअी वहांकी भाषामें समझाते थे। केवल अनुवाद करनेके बजाय विस्तार भी करते थे। अुन लोगोंकी भाषा जाने बिना भी मैंने देखा कि वे मेरे भाव अच्छी तरह समझ रहे थे और अुनका विकास करके लोगोंके सामने रख रहे थे। सभाके अन्तमें थोड़े प्रश्नोत्तर हुअे। अिस मार्गसे अफ्रीकी लोगोंका दृष्टिकोण समझनेका मुझे अच्छा मौका मिलता था, अिसलिअे अिसका मेरे लिअे अधिक महत्त्व था। प्रश्नोत्तरकी झड़ी लग गअी। अुसमें अेक आदमीने जो प्रश्न पूछा, अुसका अंग्रेजी भाषांतर करके मुझे समझानेसे हमारे दुभाषियेने अिनकार किया। अुल्टे अुसने सभामें अुपस्थित गोरे अफसरसे पूछा कि, 'अैसा सवाल मेहमानोंके सामने जवाबके लिअे रखा जा सकता है?' अफसरने कहा, 'आप मेहमानोंसे ही पूछ लीजिये।' मैंने आग्रह किया कि, 'सवाल कैसा भी क्यों न हो, मुझे अुसका अंग्रेजी करके कहिये। जवाब देनेवाला तो मैं हूं। मुझे अवसरकी रक्षा करना आता है।' अितनी प्रस्तावनाके बाद प्रश्न आया:

"आपके देशके लोग कभी कभी हमारी लड़कियोंसे विवाह करते हैं, तो आपकी लड़कियां हमसे शादी क्यों न करें?" दूसरा सवाल यह था कि, "आपके लोग हमारी लड़कियोंसे ब्याह तो कर लेते हैं, परंतु अुनके

बच्चोंको नहीं अपनाते। परिणामस्वरूप अुनकी स्थिति बड़ी विषम हो जाती है। अिन सन्तानोंको आप अपने देशमें क्यों न ले जायं?"

मैंने देखा कि प्रश्नकी तहमें कड़वाहट है। प्रश्न सुनकर सभाके हिन्दुस्तानी श्रोताओंने अुत्तेजना नहीं दिखाअी, यह देखकर मुझे संतोष हुआ। अेक गुजराती भाअीने वहीं खड़े होकर कहा कि, "काकासाहब, आप अिन लोगोंको समझाअिये कि हमारी लड़कियां अिन लोगोंके साथ ब्याह करनेकी अिच्छा करें तो हम अेतराज नहीं करेंगे। जबरन तो कोअी किसीकी शादी नहीं कर सकता?"

मैंने कहा कि, "भिन्न भिन्न वंशोंके बीच विवाह हों तो अिसमें मुझे तात्विक विरोध नहीं। परंतु यह नाजुक सवाल है, अिसलिअे मैं दोनों ओर अैसे विवाहोंको प्रोत्साहन नहीं दूंगा। अिस महाद्वीपमें अफ्रीकी, युरोपियन और अेशियन तीन नस्लोंके लोग अिकट्ठे हुअे हैं। वे अेक-दूसरेको समझने लगें, और व्यवहारमें अेक दूसरेमें घुल-मिल जायं, आज मैं अितना ही चाहता हूं। आगे चलकर परिचयके परिणामस्वरूप आत्मीयता पैदा हो जानेके बाद अिस सवाल पर दूसरी ही तरह विचार होगा।

"अिन्डो-अफ्रीकी सन्तानके बारेमें आपने जो सवाल अुठाया है, अुसके बारेमें मैं अितना ही कहूंगा कि अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानमें न जाते हों सो बात नहीं। आज भी आपके तीस चालीस विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोंमें पढ़ रहे हैं। ये लोग अगर हमारे यहां शादी करें और स्थायी हो जायं, तो अुनकी सन्तानकी हम रक्षा करेंगे। यहांकी सन्तानकी रक्षा आप कीजिये।"

मेरा जवाब सुनकर अफ्रीकी श्रोता भी प्रसन्न हो गये और हमारे देशी भाअी भी खुश हो गये। परंतु मेरा दिमाग जोरसे चलने लगा। अंग्रेज लोग यहांके काले लोगोंके साथ घुलते-मिलते नहीं। शासक बन कर न रहा जा सके तो वे यहांसे चले जायंगे। यहांके लोगोंके साथ केवल प्रजाजनके रूपमें समान भावसे रहनेको तैयार नहीं होंगे। अेक

करनेके बाद मनमें विचार आया कि अिस सरोवरका वर्णन करनेवाला कोअी वाल्मीकि या बाणभट्ट कब पैदा होगा?

आगे चलकर ख़ेतोंवाली प्रचंड पहाड़ियोंके सिलसिलेमें पूरे हुअे और अूंचे अूंचे परंतु पतले बांसका विशाल वन शुरू हुआ। बेळगांव और बेळगुंदी मेरे बचपनके दोनों स्थानोंका नाम 'बेळ' यानी बांवू या बांस परसे ही पड़ा है। कन्नड़ भाषामें बेळका अर्थ है बांस। ठेठ बचपनसे मैं फव्वारे जैसे बांसके टापुओंको देखता आया हूं। बांसके खम्भे, बांसकी दीवारें, बांसके छप्पर, बांसकी चटाअियां, बांसके बर्तन, बांसके बाजे और औजार, अितना ही नहीं परंतु बांसका साग और बांसका अचार भी जहां पर था! अैसी संस्कृतिमें पला हुआ मैं बांसके जंगल देखकर पागल-सा हो गया तो आश्चर्य क्या? बेळगांव, धारवाड़, कारवार वगैरा अनेक स्थानों पर मैं बांसके जंगलोंमें घूमा हूं। जीवित बांसकी दीवारोंवाले गांवोंकी सुरक्षितता मैंने देखी है। पतलेसे पतले और मोटेसे मोटे बांसके दर्शन ठेठ लंकामें किये हैं और दौड़ती रेलमें घंटों तक अटूट वेणुवनके विस्तार पूर्वी बंगालसे आसाम जाते-आते मैंने देखे हैं। अिन तमाम संस्मरणोंको ताजा बनानेवाला यह वेणुवन कल्पनाके लिअे कितना पौष्टिक साबित हुआ होगा, अिसकी कल्पना मेरे जैसे अरण्यक ही कर सकते हैं।

दोपहर हुआ और हम किसोलो या किसोरो पहुंचे। श्री महेताके यहां भोजन करके हम आगे बढ़े। कंपालासे कबाले तक हमारा सारा रास्ता दक्षिण पश्चिमकी ओर जाता था। कबालेसे किसोलो तक हम लगभग पश्चिमकी तरफ ही जाते थे। अैसे पहाड़ी प्रदेशमें कोअी भी रास्ता सीधा तो हो ही नहीं सकता। परंतु कहनेका आशय अितना ही है कि किसोलो कबालेके पश्चिममें है। हमारे साथी खीमजीभाअी और व्रजलालभाअी कबालेमें आराम लेनेके बजाय रुहेंगेरी चले गये थे। वे वहांसे लौटकर हमें यहां मिले। हमारे शरद पंड्या भी अुन्हींके साथ चले गये थे। अुन्होंने वहांकी सुन्दरताका वर्णन जी भरकर किया। परंतु रुआण्डा-अुरुण्डीकी हमारी यात्रा अुसी रास्तेसे पूरी

होनेवाली थी, अिसलिअे वहां प्रत्यक्ष देखे हुअेका ही यथास्थान वर्णन करना अच्छा होगा।

अब हमने ब्रिटिश ऑस्ट अफ्रीका छोड़कर बेल्जियन कांगोमें प्रवेश किया। असलमें बेल्जियन कांगोमें नहीं, परंतु बेल्जियन कांगोके अधीन रुआण्डा-अुरुण्डी प्रदेशमें प्रवेश किया। पिछले महायुद्धके अन्तमें 'यूनो' की तरफ़से युरोपियन राष्ट्रोंको जो मेण्डेटेड मुल्क मिले हैं, अुनमें टांगानिका ब्रिटिशोंके हिस्सेमें आया और रुआण्डा-अुरुण्डी बेल्जियन कांगोको मिला। अितने सुन्दर और समृद्ध प्रदेशका अधिकार बेल्जियमको मिला, अिसके लिअे कोअी भी अिस देशसे ओर्ष्या ही करेगा।

अब आगे राज्य अंग्रेजोंका नहीं, परंतु बेल्जियन लोगोंका है और हम नये ही मुल्कमें दाखिल हो रहे हैं, अिसके तीन प्रमाण हमें यहां तुरंत मिल गये। अब तक मोटर और दूसरी सवारियां रास्तेके बाअीं ओर चलानेका नियम था। अब दाअीं ओरका नियम शुरू हुआ। यह नियम अगर हर क्षण याद न रखा जाय और मनुष्य पुरानी आदतके अनुसार चले तो पग-पग पर दुर्घटनाअें हों। श्री कमलनयनने व्रजलाल-भाअीसे अनुरोध किया कि "आपकी मोटर मैं चलाअूं, परंतु कृपा कर आप मेरे पास बैठिये और हर मौके पर मुझे चेताते रहिये कि मोटर दाअीं ओर चलानी है।"

दूसरा सबूत यह था कि मीलके बजाय मीटरका नाप शुरू हुआ। दो गांवके बीचका अंतर किलोमीटरोंमें ही मिल सकता था। हमें याद रखना पड़ा कि अेक किलोमीटर लगभग पांच फर्लांगके बराबर होता है।

हमने अिस प्रदेशमें प्रवेश किया और हमें अपनी सभी घड़ियां अेक घंटे पीछे करनी पड़ीं। अब हम अफ्रीका महाद्वीपके लगभग मध्य तक पहुंच गये थे।

आगे चलकर जब रुपयेका लेनदेन करना पड़ा, तब पता चला कि अब शिलिंगका चलन नहीं परंतु फ्रैंकका है। और फ्रैंकके व्यवहारका अर्थ था बड़ी बड़ी संख्याओंका हिसाब। यहांकी सरकारने

महंगाअी काफी रहने दी है। और अुस पर भी फ्रेंककी गिनती! सौ सौ फ्रेंक, दो दो सौ फ्रेंकका व्यवहार करते समय हर वक्त यह खयाल रहता था कि हम कितने फजूलखर्च हैं।

जहां सरहद पार की थी, वहां भी हमें गुजराती भाअी ही मिले। ब्रिटिश हद पर छगनभाअी शाह नामक अेक कच्छी भाअी चुंगी अफसर थे। अुन्होंने मेरा नाम सुन रखा था। खूब ही प्रेमसे अुन्होंने हमें मोटरकी परमिट वगैरा लेनेमें मदद दी। अिसके सिवाय अुन्होंने अपने पासका अिस प्रदेशका अेक सुन्दर नकशा हमें अिस्तेमालके लिअे दिया। अिससे हमें बहुत ही मदद मिली।

अिस अिलाकेमें जब जब रास्ते दाअीं या बाअीं ओर मुड़ते हैं, तभी रास्तोंके बीच खूटियां गाड़कर या छोटे छोटे पौदे लगाकर रास्तेके दो भाग कर दिये जाते हैं, ताकि आमने सामने आनेवाली मोटरें टक्कर खानेसे बच जायं। यह व्यवस्था हर देशमें दाखिल करने योग्य है।

अब काफी दूर तक अेक सपाट मैदान आया। सुबहसे गोलमटोल पहाड़ियां दीख रही थीं। धीरे धीरे हम अिन पहाड़ियों तक पहुंचे। हम अितने अूंचे पहुंच गये कि अुसका अभिमान होने लगा। आठ या साढ़े आठ हजार फुटकी अूंचाअी पर मोटर लेकर दौड़ना कोअी छोटीसी बात है! अितनी अूंचाअी तो पूर्व अफ्रीकाका सफर पूरा करके जब हम अीथियोपियाकी राजधानी अेडिस-अबाबा गये तभी मिली थी।

अभिमान करनेके बाद नीचे अुतरना ही पड़ता है! 'दि ग्रेट गॅप' नामसे प्रसिद्ध घाटीमें होकर हम अितने सपाटेसे अुतरे कि अुसके लिअे अधःपातके सिवाय और कोअी शब्द ही काममें नहीं लिया जा सकता! जैसे युद्धके दिनोंमें की गअी कमाअी मंदीके दिन आते ही कोअी व्यापारी खो बैठता है, वैसी ही अूंचाअीके बारेमें हमारी स्थिति हो गअी।

अब हमने अुत्तरकी दिशा पकड़ी और रुटशुरु पहुंचे। परंतु रुअिण्डीके अभयारण्यकी तरफ जानेको हम अितने अुतावले हो गये

थे कि रुटशुरु न ठहरकर आगे ही चले गये। यहां हमने रुटशुरु नामकी नदी पार की। यह नदी अेडवर्ड सरोवर और कुव्योनी सरोवर दोनोंको मिलाती है। अब तक हमने आंबोसेली और नैरोबीके ही दो अभयारण्य देखे थे। ङ्गोरोंगोरो जाते हुअे मनियाराके खारे तालावके किनारे भी हमने असंख्य श्वापद देखे थे। परंतु रुअिण्डीके जंगलमें श्वापदोंकी जो समृद्धि है, वह क्या और कहीं मिल सकती है? अभयारण्यमें प्रवेश करते ही दिलमें अुथलपुथल मचने लगी। दाअीं तरफ देखते समय दाअीं ओरका कोअी श्वापद बिना देखे रह जाय तो? और बाअीं तरफ देखें तो दाअीं ओर हमें धोखा हो जाय तो?—अिस डरके मारे क्षण क्षण सिरको घुमाते हुअे आगे बढ़े। रास्तेमें हाथियोंकी लीद दिखाअी देते ही विश्वास हो गया कि आसपास हाथियोंका आगमन हुआ है। फिर तो हम अिसकी जांच करने लगे कि लीद सूखी है या ताजी गीली है।

रास्ते पर जहां तहां फ्रेंच भाषामें और कभी कभी अंग्रेजीमें नोटिस लगे थे कि मोटरसे बाहर निकलना खतरनाक है। लेकिन जब हमने रास्तेकी दाअीं ओर गरम पानीके झरने अुबलते और फुदकते देखे, तब हमसे अंदर कैसे रहा जाता? छोटे बड़े अनेक झरने थे। अुनसे दुर्गंध आ रही थी। कुछ समय अुनके बीच घूमने पर भापवाली हवा दिमाग तक पहुंचकर अस्वस्थ करने लगी थी। मैंने अेक जगह देखा कि अुबलता हुआ गरम पानी अिकट्ठा हुआ है, परंतु अुसके नीचे काअी जमी हो अैसा हरा रंग दिखाअी दे रहा था। लाठीका सिरा पानीमें डालकर अुस काअीको बाहर निकाल कर देखनेकी जोमें आअी। अितनेमें किसी साथीने दूसरी ही तरफ ध्यान खींच लिया और वह बात रह गअी। आसपास देखनेसे भरोसा हो गया कि यह भाग कोअी दरार (rift)का अेक अवशेष है। हम मोटरमें बैठ रहे थे कि अितनेमें हमारे पीछेकी मोटरवाले मोटर दौड़ाते हुअे आ पहुंचे। अुन्होंने कहा कि, 'दूर हमने अेक हाथी देखा। यह लगने

पर कि वह हमारी तरफ आ जायगा हमने दौड़ लगाअी है। आप भी यहां अधिक समय न ठहरिये।' हम रवाना हो ही रहे थे। असलमें यहांके हाथियोंका मनुष्यके पीछे दूर तक हमला करनेके लिअे आनेका अभी तक कोअी अुदाहरण नहीं। नजदीक जाकर छेड़ें या मनुष्यकी गंध अुन्हें असह्य हो जाय तभी वे हमला करते हैं।

शाम होने आअी और हम आल्बर्ट पार्कके रुअिन्डी कैम्पमें पहुंच गये। पत्थरकी नाटी दीवारसे घिरी हुअी अिस जगहमें अेक होटल और दस पन्द्रह गोल गोल झोंपड़ियां थीं। हरअेकमें खाट वगैराकी सुविधा थी। बिजलीका डाअिनेमा खास समय तक ही चलता था। झोंपड़ियोंकी गलीके बीचमें थूहरके पेड़ोंकी कतार सुन्दर ढंगसे लगाअी हुअी थी। कैम्पके दो तीन सिरों पर हाथीके मुंहकी हड्डियां रखी हुअी थीं। बरामदेसे दूरके मैदानमें दो तीन जंगली भैंसें चरती दिखाअी दीं। यहांकी भाषामें अिन्हें भोगो कहते हैं। यहांके जंगलमें बसनेवाले लोग और शिकारी सबके सब जंगली भैंससे जितने डरते हैं, अुतने तो हाथी और सिंहसे भी नहीं डरते—अकल कम और कीना बेहद।

रातको मोटरें लेकर जंगलमें घूम आनेका हमारा विचार था। आम्बोसेली और नैरोबीमें भी हमने निशाचर बननेका आनंद अनुभव किया था। परंतु हमें यहां कहा गया कि, 'रातको तो क्या, सवेरे आठ बजे तक भी आपको कैम्पसे बाहर जानेकी अिजाजत नहीं।'

अितनी निराशा होनेके बाद तो खाने-पीने और आरामसे सोनेकी ही सूझ सकती थी।

३१

टेम्ब्रो, भोगो और किबोकोका अभयारण्य

हरअेक दिन २४ घण्टेका ही होता है, फिर भी 'सब दिन होत न अेक समान'। अिन २४ घण्टोंमें कितने और कैसे अनुभव समाते हैं, अिस परसे यह तय होता है कि वह दिन छोटा था या बड़ा। अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जंगलके जानवर देखनेके कुल दिन ५-६ ही होंगे। अिन जानवरोंके किसी सवालको हल करनेके लिअे हम वहां नहीं गये थे। हमारे जैसे लोगोंसे अुन वन्य प्राणियोंको लाभ-हानि कुछ भी नहीं थी। अुनके लिअे थोड़ी परेशानी मानी जा सकती थी, परन्तु यह अनुभव अुन्हें सदासे था। हम अगर मांसाहारी होते, शिकारके शौकीन होते या स्थानीय खेतीवाड़ीकी रक्षाकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर होती, तो अिन जानवरों और अुनके स्वभाव और जीवन-क्रमको जानकर हमें कुछ न कुछ व्यावहारिक लाभ होता। हमारे लिअे अिनमें से कोअी भी कारण नहीं था। फिर भी अितनी दूर आकर रुपया, समय और प्रभाव खर्च करके हम अिन श्वापदोंके और अुनके निवास-स्थानके दर्शनोंके लिअे अुत्सुक हुअे थे! और मानते थे कि अिससे हमारी जीवनकी अनुभूतियोंमें कीमती वृद्धि होगी। अिस अुत्कंठामें जानकी जोखिम भी अपना भाग अदा कर रही थी। हां, हजारों लोगोंका अनुभव देखते हुअे अिस जोखिमको कुछ भी महत्त्व नहीं दिया जा सकता। जहाज या वायुयानके सफरमें क्या जोखिम नहीं होती? और जिस प्रदेशमें कभी कभी भूकम्प आता है अथवा ज्वाला-मुखी फूट निकलता है, वहां भी चाहे जैसी जोखिम पैदा हो सकती है। समय समय पर अिसके अुदाहरण भी अुपस्थित न होते हों सो बात

नहीं। फिर भी हम अैसी जोखिमको कुछ नहीं गिनते। यहांकी भी यही बात मानी जाय।

आठ जुलाअीका दिन निकला। हमारी मोटरयात्रा शुरू होनेमें देर थी। साढ़े छः पौने सात बजे होंगे। पूर्व दिशाकी लालिमा अितनी आकर्षक थी कि कैम्पमें बैठे रहना असंभव हो गया। मैंने सरोजसे कहा, "चलो हम कैम्पसे बाहर जरा घूम आयें। अभी सूर्योदय होगा।" मेरा वाक्य पूरा भी न हुआ कि दूर क्षितिज पर रक्त सूर्यका चमकता हुआ बिम्ब प्रगट होने लगा। पूर्वी ८०° रेखांशके आसपास रहनेवाले हम आज पूर्वी ३०° रेखांशके आसपास खड़े रहकर सूर्यका दर्शन कर रहे थे। २० से २४ अुत्तर अक्षांशके आदी हम भू-मध्य रेखाके दक्षिणमें पहुंच गये थे, अिस बातका भान ही अुस सूर्योदयको अधिक कीमती और हमारे लिअे अधिक दुर्लभ बना रहा था। अिस सूर्योदयसे अुत्तेजित होकर मैं जल्दी जल्दी कदम आगे बढ़ाने लगा। मेरी अैसी अुत्तेजनाके प्रति सरोजका सदा ही सहयोग होता है। अिसमें भी निसर्गकी सुन्दरता और भव्यताका आकर्षण कम नहीं था। परन्तु हम कैम्पसे दूर जा रहे हैं, अिस तरफ अुसका ध्यान गया। अुसे मेरा अुत्साह मन्द किये बिना मेरा ध्यान अिस ओर खींचना था कि हम सलामतीके क्षेत्रसे बाहर जा रहे हैं। अुसने हंसते हंसते मुझसे पूछा, "Have you an immediate appointment with the lions?" —"अभी सिंहोंके साथ कोअी जरूरी मुलाकात रखी है क्या?"

मैं हंस पड़ा और ठहरकर आगे देखने लगा तो देखता क्या हूं कि चार अलमस्त भोगो (वन-महिष) हमारी मुलाकातके लिअे मौजूद थे! हम कुतूहल और कुछ कुछ आश्चर्यसे अुनकी तरफ देखने लगे। अुनका भी ध्यान हमारी तरफ गया। अपने सुन्दर कान हमारी तरफ फेरकर वे हमारी ही तरह कुतूहल और आश्चर्यसे हमें देखने लगे। पहले ही क्षण हमारी तरह वे भी अन्दाज लगाने लगे कि सामने-वालोंका क्या मनसूबा है। अिसी अेक क्षणमें युद्ध हो या सन्धि,

अिसका निर्णय हो जाता है। हमने अपनी नजर विलकुल अक्षुव्ध, अहिंसक और मित्रतापूर्ण रखी। अुन्होंने भी अपने चेहरेकी घवराहट अुतार डाली। फिर तो केवल दोनों ओर दर्शनानन्द ही रह गया। अुनके मनमें क्या व्यापार चल रहा होगा, अिसका हमें क्या पता? जीभर कर देख लेनेके वाद अुन्होंने फिर चरनेकी तरफ ध्यान लगाया और हम वापस कैम्पकी तरफ मुड़े। ङ्गोरोंगोरो जाते हुअे रातको अेक भोगो नजदीकसे देखा था, परन्तु अुस समय मोटरकी रोशनीकी मददसे जितना दिखाअी दिया अुतना ही देखा। अिस समय तो सूर्य भगवान सारे प्रदेशको प्रज्ज्वलित कर रहे थे और हमसे कह रहे थे कि 'पश्याद्य सचराचरम्'। और सचमुच अुस दिन 'वहूनि अदृष्ट-पूर्वाणि आश्चर्याणि' सूर्य भगवान्की कृपासे देखनेके हम भाग्यवान वने।

अितने शुभ-शकुनसे हमारा दिन शुरू हुआ। अेक अेक मोटरमें अेक अेक अस्कारी (सिपाही) लेकर हम चले। आज कितना घूमेंगे, अिसका हिसाव न होनेके कारण हमने अपनी मोटरोंको अुनका पेय कण्ठ तक पिला दिया। वहुत समय तक हमें यों ही घूमना पड़ा। फिर दूर अेक जानवर दिखाअी दिया। पिछले भाग परसे यह यकीन नहीं होता था कि यह हाथी है या गेंडा? यहांकी भाषामें कहें तो टेम्बो है या फारु? हम थोड़ेसे आगे निकले तो देखा कि वह अिनमें से अेक भी नहीं था। वह था किवोको (हिप्पोपोटेमस)। गेंडा (फारु) अिसके वाद दिखाअी दिया। तत्पश्चात् यत्रतत्र अनेक जानवर दिखाअी दिये। अेक हाथी घास अुखाड़कर अुसकी जड़ोंकी मिट्टी अपने सिर पर विखेर लेनेमें आनन्द मान रहा था। कभी-कभी मक्खियोंको हटा देता होगा। अिसके वाद अेक प्रकारके सूअर दिखाअी दिये। अुनके दोनों ओरके वाहर निकले हुअे दांत सीधे आनेके वजाय कौंस जैसे विलकुल टेढ़े थे!

नैरोवीके अभयारण्यमें हिप्पो वहुत कम हैं। अेक ही जगह पानीमें लोटपोट होते हुअे अेक हिप्पोका मुंह और अुसके गुलावी कान मैंने

देखे थे। अिसलिअे जीमें यह लग रही थी कि हिप्पो कव देखा जायगा — कव देखा जायगा? यहांके अभयारण्यमें अितने अधिक हिप्पो देखनेमें आये कि हमारे कुतूहलमें अुनका भाव अेकदम घट गया। परन्तु वह फिर वढ़ गया — जव हम अिस अरण्यके अेकदम सिरे पर पहुंच गये और वहांकी नदीमें वहुतसे हिप्पो जलक्रीड़ा करते हुअे देखनेको मिले।

यह जानवर भी जीमें आ जाय तो पागल हमला कर देता है, अिसलिअे अुससे डरकर ही चलना पड़ता है। अिन लोगोंको नजदीकसे देखनेके लिअे हमें अपनी मोटरोंसे अुतरकर नदीके किनारे तक पहुंचनेमें काफी चलना पड़ा। और वह भी अूंचेसे नीचे अुतरना था। हिप्पो हमला कर दे तो मोटर तक सहीसलामत दौड़ा जा सकता है या नहीं, अिसका हिसाव क्षण क्षण करना पड़ता था। मैंने सरोजसे कहा, "तुम अूपरसे ही देखना। हमें नीचे जाने दो।" परन्तु कमलनयनने हमारा यह विचार वदल दिया। अुसने कहा, 'हमें अैसी जगह जिन्दगीमें अेक ही वार आना है। थोड़ीसी जोखिम अुठा लें और सरोज वहनको साथ ले चलें।' हिम्मत कहां तक की जाय, और जोखिम किस हद तक अुठाअी जाय — अिस वारेमें कमलनयनकी दृष्टिके प्रति मुझे विश्वास होनेके कारण अुसकी वात मैंने झट मान ली और सरोजको साथ ले लिया। हमारी तरफके हिप्पो पानीमें लगभग सो गये थे। अेकाध हिप्पोको करवट वदलने या स्थानान्तर करनेका अिरादा हो जाता तो वाकीको यह अच्छा न लगता। वे अुसकी जरा भी मदद न करते। नदीके सामनेवाले किनारेकी तरफ जो हिप्पो पानीमें लोट रहे थे वे ज्यादातर अुत्पाती थे। अुनकी जल-क्रीड़ा देखना ही अधिक मजेदार था। सामनेके किनारेके अूंचे पेड़ पर अेक सफेद पक्षी था। वह भी हमारी ही तरह तटस्थ भावसे यह क्रीड़ा देख रहा था और आनन्द ले रहा था।

हमने अस्कारीसे कह रखा था कि वाकीके जानवर कितने ही दिखाओी दें या न दें, हमें अफ्रीकाका अच्छासा अुम्दा सिंह देखना है। और वह भी सिंहनी नहीं बल्कि अयालवाला बड़ा सिम्बो। हमारी यह ख्वाहिश सुननेके बाद अस्कारियोंकी तीखी नजर सब जगह घूमने लगी। अेक खास जगह हम पहुंचे और दोनों अस्कारी गरज अुठे 'सिम्बा, सिम्बा, सिम्बा।' दूर दूर —दो तीन फर्लांग दूर झाड़ियोंके बीचकी अेक खुली जगहकी तरफ अुन्होंने अुंगली की। पहले तो कुछ दिखाओी ही नहीं दिया। परन्तु वे लोग विश्वासके साथ कहते थे कि वहां बड़ा सिंह जरूर है। धीरे धीरे घासमें मिट्टीके ढेर जैसी कोओी चीज दिखाओी दी। अेक घब्बेसे ज्यादा बड़ी नहीं थी। हम दूरबीनसे देखने लगे। अितनेमें शंका हुओी कि घब्बा सिर हिला रहा है। फिर तो छाती अूंची निकालकर बैठे हुअे सिंहकी समूची भव्य आकृति बन गओी। वह बीच बीचमें सिर घुमाकर देख रहा था। मोटर लेकर अुसकी तरफ जा तो सकते ही नहीं थे, अिसलिअे जितनी दूरसे अुस वनराजको देखकर सन्तोष मानना पड़ा। अुसे जीभर देखनेके बाद हम अन्यत्र देखने लगे। अितनेमें दूरबीनसे ताककर देखनेवाले शरद पंड्याने घोषणा की कि 'सिंह अुठ गया है, अब चलने लगा है।' मैंने तुरन्त अपना दूरबीन चढ़ाया। क्या शोभा और शान थी अुस सिंहके चलनेमें!

बन्दर, हिरण, नीलगाय, तरह तरहके जानवरोंको देखते देखते हमने सारा अभयारण्य छान डाला। असली शोभा तो हाथियोंकी ही थी। कओी जगह हमने कओी जंगली हाथी देखे। और सब तरह जी भरनेके बाद लौटे। थूहरके पेड़ोंकी शोभा अिस अरण्यकी खासियतोंमें वृद्धि कर रही थी। जल्दी वापस जानेके लिअे हमने बीचकी दिशा ली। यह तो कहा ही कैसे जाय कि रास्ता लिया? हमारे पहले गओी हुओी किसी मोटरकी लीकको रास्ता कहें तो रास्ता जरूर था। हमारी मोटर आगे थी। सावधानी और जल्दीके बीच रास्ता काट

रही थी। अितनेमें सामने वाअीं ओरसे रास्ता लांघता हुआ जंगली भोगों — भैंसों — का अेक झुण्ड दिखाअी दिया। डेढ़ सौ दो सौ जरूर होंगे। हम अेकदम ठहर गये। यह भी कहा जा सकता है कि ठंडे हो गये। ये लोग सोच लेते तो अेक क्षणमें हमारी दोनों मोटरोंका चूरा कर डालते। अुनका रुख भी दोस्ताना नहीं मालूम होता था। मैंने कमलनयनसे कहा, "नाजुक प्रसंग है। भोंपू तो वजाया ही नहीं जा सकता। अिस झुण्डमें अुनके छोटे-वड़े वच्चे हैं। अुन्हें जरा भी शंका हो जाय कि वच्चोंको जोखिम है तो सारा झुण्ड ही हम पर टूट पड़ेगा। हमारी पीछेवाली मोटर भी नजदीक आ पहुंची थी। हमने अुसे रुक जानेका अिशारा किया। वे भी समझ गये कि रुके विना चारा नहीं है! अुस समयका हर क्षण कितना अधिक लम्बा था!

हमें निश्चल देखकर वड़े-वड़े भोगोंने रास्ते पर अपनी कतार खड़ी कर दी। सींगोंवाली अिस फौजको देखकर वड़े-वड़े सिंह भी हिम्मत हार जायं। अिस व्यवस्थित पंक्तिके पीछेसे वाकीके सव भोगो और अुनके वच्चे रास्ता लांघकर दाअीं ओर दूर तक पहुंच गये, तव कहीं रक्षक वीरोंकी कतार जरा ढीली पड़ी। ये लोग भी रास्ता छोड़कर दाअीं ओर पहुंच गये। जव हमें विश्वास हो गया कि रास्तेके वाअीं तरफ अेक भी प्राणी अव नहीं रह गया है, तभी हम आगे वढ़े और तुरन्त अैसी दौड़ लगाअी कि सारा झुण्ड हमारे पीछे पड़ जाता तो भी हमें न पहुंच सकता।

अैसे समय रास्तेमें न कोअी खड्डा आया न अिजन विगड़ा और न सामनेसे कोअी हाथी आया। यह अीश्वरकी कम कृपा नहीं थी। सचमुच आज वन्य श्वापदोंको देखकर हमारा जी भर गया था। पशु किस परिस्थितिमें रहते हैं, जोखिमके वारेमें वे कितने लापरवाह रहते हैं और खाने और जीने दोनोंकी मुश्किलके वीच जीवनका आनन्द किस तरह लूटते हैं, यह देखकर सचमुच ही जीवनकी अनुभूतियोंमें अेक अपूर्व वृद्धि हुअी थी। अितने सारे प्राणी किसी भी नियमके विना,

राज्य या संरक्षक दलके बिना यहां रहते हैं, बढ़ते हैं, घटते हैं; और प्रकृतिकी योजनाको पूरा करते हैं। न अुनके पास कोअी अितिहास है, न कोअी परम्पराओंका स्मृतिशास्त्र है। प्रकृति देवी जैसी प्रेरणा दे और सुविधा या असुविधा पैदा कर दे अुसीके अधीन रहते हैं। प्रकृतिसे अलग क्रम पैदा कर लेनेकी अुनमें अिच्छा नहीं है। जीनेके बारेमें अुन्हें विषाद या थकावट या निर्वेद नहीं। अिन श्वापदोंका कोअी कमीशन मनुष्यजातिके बारेमें अपनी राय अिकट्ठी कर ले, तो अुसमें हमारे बारेमें क्या क्या होगा?

अनुभवोंके भारी भारी गुच्छे बटोरकर हम अेल्बर्ट नेशनल पार्कसे लौटे। रुअिंडी और रुट्शुरु दोनों नदियां फिर पार कीं। अेडवर्ड सरोवर दिखाअी नहीं दिया अिसका पछतावा रहा। आसपासके पहाड़ोंको "पुनरागमनाय" कहकर नमस्कार किया। छोटी दरारको पार कर लिया। गंधकके झरनेको 'क्या हाल हैं?' कहकर खैरियत पूछी और देखते देखते रुट्शुरु गांव तक आ पहुंचे। यहांसे हमें तिलोत्तमा या अुर्वशी जैसे रूपराशि कीवू सरोवरकी तरफ जाना था।

३२

कीवूमरकी आधी प्रदक्षिणा

आगेका प्रवास सचमुच अेक सुन्दर सरोवरकी अुलटी परिक्रमा थी। अिसके लिअे हम पहले रुटशुरूसे गोमा गये। वहां कीवू सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे। गोमाके पास ही किसेनी नामका छोटासा अेक सुन्दर स्थान कीवूके किनारे है। वहां अेक दिन आनन्द लेकर हम अपनी अुलटी प्रदक्षिणा करनेके लिअे वापस गोमा गये और सरोवरकी बाअीं ओरकी सारी यात्रा पूरी करके कालेहे होकर कॉस्टरमन-वील तक गये और वहांसे रुझीजी नदीका सारा दाहिना प्रदेश पार करके टांगानिका सरोवर तक पहुंचे। जैसे कीवूके किनारे किसेनी है, अुसी तरह टांगानिकाके किनारे अुसुम्बरा है। वहां अेक दिन रहकर हम लौट आये और फिर अुत्तरकी दिशा लेकर कीवू सरोवरको बाअीं ओर रखकर नये नये सुन्दर प्रदेशोंमें से कुदरतका अद्भुत दर्शन करते हुअे कबाले लौटे। अिस प्रकार हमारी विशाल परिक्रमा पूरी हुअी।

रुटशुरूसे गोमा तकका रास्ता बहुत ही रमणीय था। वनश्री अितनी घनी थी कि अुसमें से रास्ता कैसे तैयार किया होगा अिसका हमें आश्चर्य होता था। कौन जाने कहांसे सारे रास्तेमें पीली तितलियां अिधर अुधर दौड़ रही थीं। अिस रास्तेमें अेक और बड़ा अभयारण्य है और सुना है कि अुसके अेक सिरे पर मनुष्य-कल्प गोरिला वा-नर रहते हैं। पहाड़ियोंकी शोभाके बीच कॉफीकी खेती शोभा दे रही थी। और बीच बीचमें पेरेथ्रमके सौम्य सफेद फूल अमावसकी रातके तारोंकी तरह घनी बस्ती बनाकर अुगे हुअे थे। यह फूल चमड़ा रंगने और कमानेके काममें आता है, अिसलिअे यहांकी सरकारने अिसकी खेतीको बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

जिस सिकोना पेड़से बुखारकी दवा क्विनाअिन निकलती है, अुसे भी यहांकी सरकारने खूब बोया है। अिस नयन-मनोहर मार्गका अन्त नयी नगरी गोमाके दर्शनसे हुआ। गोमाकी पहाड़ी परसे कीवू सरोवरका विस्तार अच्छा दिखाअी देता है। यहांके छोटे छोटे मकान भी बड़े सुन्दर हैं।

गोमाके पास ही अगर अुसका प्रतिद्वन्द्वी किसेनी न फैला होता, तो गोमाका वैभव हमेशा बढ़ता ही रहता। सुन्दर मकान, अच्छे रास्ते, तरह-तरहके फूल और नावमें बैठकर सरोवरमें सैर करनेका आनन्द — ये सब किसेनीके आकर्षण हैं। सीधे अूपर जानेवाले पेड़ बीच बीचमें खड़े होकर अिस स्थानके लालित्यमें गाम्भीर्यका मिलान कर रहे थे।

व्हाअिट रशियाकी अेक महिला फ्रांसमें रहकर फ्रेंच बन गअी होगी। वह वहांकी सरकारकी तरफसे कलकत्तेमें रह चुकी थी। यह महिला किसेनीमें बुगोअी नामका अेक होटल चला रही है। हम अुसीमें ठहरे थे। यहां भी सब सुविधाओंवाली गोल झोंपड़ियां बनाकर अुनमें मुसाफिरोंको रखा जाता है। यह महिला कअी युरोपियन भाषायें जानती है। दुबारा हिन्दुस्तान आने और हिन्दुस्तानके विदेश-विभागमें काम करनेकी अुसकी बड़ी अिच्छा है। दूसरे दिन अिस स्थानके गोरे कर्मचारी हमसे मिलने आये थे। स्थानीय भारतवासियोंने अिन्हें चाय-पार्टी दी थी। गोरे सिर्फ फ्रेंच जानते थे। मैं जितना अंग्रेजीमें बोला वह अुस महिलाने अुनके लिअे फ्रेंच करके सुना दिया। सरोजको थोड़ी बहुत फ्रेंच आती थी। अिसलिअे वह भाषान्तर कैसा हुआ, अिसकी अुसने मुझे कल्पना करा दी। यहांके भारतीयोंको हमारे आनेका पता था, अिसलिअे हिन्दू और मुसलमान दोनों अिकट्ठा होकर मिलने आये। अुनके साथ बहुत बातें हुअीं। हिन्दू-मुसलमानोंकी मित्रताके बारेमें, यहांकी सरकारके साथ अच्छे सम्बन्ध रखनेके बारेमें, और अफ्रीकी लोगोंकी अच्छीसे अच्छी सेवा करनेके

बारेमें बातें कीं। हमें मालूम था कि किसेनीके पास अेक 'सजीव' ज्वालामुखी है। हमने अिस बातकी जांच की कि वहां तक जाया जा सकता है या नहीं। यह नयी खोज हमारे कार्यक्रममें बैठ नहीं सकती थी, अिसलिअे रातको अंधेरा हो जानेके बाद गांवके बाजारमें से हमने अुस ज्वालामुखीका शिखर देखा। अंधेरेमें भूतकी तरह अपना शिखर अुठाकर अुस पर अेक विराट अंगीठी अुसने धारण की हो, अैसा वह दृश्य था! ज्वालाके कारण आसपासका आकाश भी लाल लाल दिखाअी देता था।

सुना है अफ्रीकामें अैसे दो तीन ज्वालामुखी हैं। बाकीके सब या तो मृत हैं या सो रहे हैं। हरअेकके सिर पर गहरा और विशाल द्रोण या ज्वालामुख तो होता ही है। अैसे सुप्त-शीतल शिखरोंकी शोभा भी कम नहीं होती। अैसे शिखरोंके दर्शन मेरे खयालसे केवल प्राकृतिक शोभा नहीं होते, भगवानकी विभूतिके दर्शन ही होते हैं। अुस दिन शामको सरोवरके किनारे की गअी प्रार्थनामें जैसे प्रशांत सरोवरने अपना भाग अदा किया था, अुसी तरह दूसरे दिन सवेरे जब अुसी जगह प्रार्थना करने गये तब प्रार्थनामें सरोवरके अलावा रातका ज्वालामुखी भी अुपस्थित हुआ था। सचमुच प्रार्थना द्वारा ही चेतन और अचेतनके बीचका अैक्य अनुभव किया जा सकता है।

प्रार्थना और नाश्तेसे फारिग होनेके बाद हम स्थानीय मार्केट देखने गये। हमने देखा कि हमारे लोग अफ्रीकी लोगोंको तरह तरहके कपड़े बेचते हैं। खुले मैदानमें जहां अफ्रीकी लोगोंके बीचमें ही लेन-देन होता था, वहां सब चीजें अितनी थोड़ी और सादी होती थीं कि हमें यही खयाल होता था कि अितनी-सी बातके लिअे वे बाजार तक क्यों आते हैं? कुछ अफ्रीकी लड़कियां रंगबिरंगे फैशनके कपड़े और मुश्किलसे दो तीन दिन चलनेवाले सस्ते गहने पहनकर अिधर अुधर टहल रही थीं। भगवानने अुन्हें जैसे बाल दिये हैं अुनमें अुस्तरे और कैंचीकी मददसे तरह तरहकी शोभा पैदा करनेके लिअे भी वे

पच रही थीं। बुढ़ियायें सब पुराने ढंगकी थीं। अुनकी पोशाक और व्यवहारसे ही अफ्रीकी लोगोंकी पुरानी रूढ़ संस्कृतिकी कल्पना हो सकती थी। अेक वृद्ध अफ्रीकीने अपने कानकी लोलक अितनी बड़ी कर ली थी कि अुसकी अड़चन मिटानेके लिअे वह अुसे अुठाकर जनेअूकी तरह कान पर रख सकता था!

अैसे अफ्रीकी लोगोंके बीच खड़े रहकर हमने फोटो लिवाये। अैसे फोटोकी तरफ हम अेक नजरसे देखते हैं। अफ्रीकी लोगोंकी नजर दूसरी ही होती है।

सब देख लेनेके बाद अेक बार मोटरमें बैठकर किसेनीका सारा किनारा देखनेकी जीमें आअी। पहले हम बाअीं तरफ जहां तक रास्ता जा सकता था वहां तक गये। फिर बाअीं तरफ गोमाके बंदरगाह तक गये। वहांसे पासकी पहाड़ी पर जाकर सारा दृश्य आंखें भरकर देखा। अिससे ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता था, अिसीलिअे हम वापस आ गये।

अब हमारी कीवू सरोवरकी परिक्रमा शुरू हुअी। गोमा तक अुत्तरमें जाकर हमने मुड़कर दक्षिणका रास्ता लिया। अुतार-चढ़ाव तो होता ही है। घड़ीभरमें रास्ता सरोवरके पास आ जाता, घड़ीभरमें दूर चला जाता। अैसा लगता था कि दाअीं तरफकी पहाड़ियोंको अिस बातका दुःख हो रहा है कि वे सरोवर तक नहाने नहीं आ सकतीं।

थोड़ेसे आगे गये और हमने देखा कि दो अढ़ाअी वर्ष पहले (सन् १९४८ में) अेक ज्वालामुखीने अुबलकर सरोवर तक आनेका प्रयत्न किया था। अुबलते हुअे लावाका रेला अितनी दूरसे और अितने जोरसे आया कि अुसका अेक बड़ा राक्षसी जत्था सरोवरमें अुतर पड़ा। सरोवरका पानी जल गया। अुसने हाहाकार किया। आखिरकार लावाको सरोवरका अेक खासा बड़ा टुकड़ा मूल तालाबसे अलग करके ही संतोष मानना पड़ा। कोयलेकी तरह काले चमकते हुअे लावाके अिस जत्थेको देखकर जी घबरा गया। सुलगते हुअे

रसकी लहरें अेकके बाद अेक आ रही थीं। सूखनेसे पहले अुसमें सलवटें पड़ती थीं। किसी किसी जगह यह रस गोल चक्कर काटता और जहां तहां फट जाता। अब ठण्डा हुआ यह सारा दृश्य भयानक और विषाद अुत्पन्न करनेवाला था। पेड़, पत्ते, सादी मिट्टी या पत्थर कुछ भी नहीं दीखता था। सब जगह काला स्याह लावा और अुसमें से जाता हुआ हमारा रास्ता था।

हम विषण्ण मनसे आगे बढ़े। वहां अैसा ही परन्तु दूसरी तरहका दृश्य देखनेको मिला। सन् १९३८ अीस्वीमें अेक और लावेका रेला कीवूमें नहाने आया था। अिसका विस्तार भी पहलेकी तरह फैला हुआ था। परन्तु १२ सालकी धूप, बरसात और हवासे अुसका चूरा हो गया था। अुसके अूपर जगह जगह मिट्टीने अपना राज्य जमा लिया था। और मिट्टी आअी अिसलिअे बच्चे वनस्पतिने अुसके अूपर अपनी हरी हरी ध्वजायें फहराअीं। मनमें विचार आया — मरण और विनाश चाहे जितने भीषण और दुर्धर हों, परन्तु जीवन अुसके अूपर विजयी होता ही है। विनाश अुत्पाती परन्तु क्षणजीवी है, जब कि जीवन सौम्य-सनातन है।

सरोवरकी शोभा देखकर चाहे जितने तृप्त हुअे हों परन्तु अुससे पेट नहीं भरता। अिसलिअे कालेहेमें हमने खाया-पीया और आगे चले। शामको साढ़े छः बजे हम गंधर्व नगरी जैसे अेक शहरमें आ पहुंचे। अुसका पुराना नाम बुकाफू था। आजकल अुसे कॉस्टरमन-वील कहते हैं।

३३

बच्चा शहर और प्रवाही कन्या

महात्मा गांधीजीने अेक जगह लिखा है कि आकाशके तारे जहां हैं वहां भयंकर गर्मी है। वहां सभी चीजें पिघलकर द्रवरूप ही नहीं वायुरूप हो जाती हैं। हजारों डिग्रियोंकी अुनकी गर्मीकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। परन्तु अिन्हीं तारोंका प्रकाश जब करोड़ों मीलोंकी सफर करके हमारे पास आता है, तब कितनी शीतलता प्रदान करता है! अैसे ही आश्चर्य हमारी पृथ्वी पर भी जहां तहां फैले हुअे हैं। अफ्रीकाके सभी सरोवर और फटी हुअी दरारें भयानक ज्वाला-मुखीके आभारी हैं। कीवूका सरोवर समुद्रकी सतहसे ४८२९ फीट अूंचा है। अितना अूंचा सरोवर दुनियामें दूसरा नहीं है। अूपर कहे अनुसार ज्वालामुखियोंकी अिस सरोवरके साथ खास दोस्ती है। वे देर-सवेर अिसमें नहाने अुतरते हैं।

प्राचीन कालमें — किसीको यह पता नहीं कि कब — अिसी तरह कोअी ज्वालामुखी दौड़ आया होगा। अुसने कीवू सरोवरके दक्षिणमें अेक बड़ी पहाड़ी सरोवरमें घुसेड़ दी है। अुस पहाड़ी पर वनस्पतिने अपनी बस्ती बसाअी। अुसके बाद मनुष्यको अुनके बीच जाकर रहनेका सूझा। अिस तरह बुकाफूका गांव पैदा हुआ। अितना रमणीय स्थान गोरोंकी नजरसे कैसे बचता? बढ़िया पानी, स्वास्थ्यप्रद हवा, रमणीय दृश्य और सुविधापूर्ण बन्दरगाह — यह सब देखकर अुन्होंने यहां कॉस्टर-मन-बीलकी स्थापना की। मध्य अफ्रीकामें अितना छोटा और अितना सुन्दर दूसरा शहर शायद ही हो। अफ्रीकामें हम सबसे अधिक पश्चिममें अिसी स्थान पर पहुंचे होंगे। यह नगरी लगभग २८ रेखांश पर स्थित है।

हम अेक अच्छेसे अच्छे यानी महंगेसे महंगे होटलमें जाकर रहे। हमारे देशके लोगोंमें से जान-पहचानवाले यहां कोअी नहीं थे। होटलमें जाकर हमने समझाया कि हम मांस नहीं खाते, मुर्गे नहीं खाते, मछली नहीं खाते, अंडे भी नहीं खाते और चरबी भी हमें नहीं चलेगी। शराबको तो हम छू भी नहीं सकते। अगर अभक्ष्य भक्षणसे बचना हो तो अितनी बातें बताये बिना छुटकारा नहीं होता। हमारी सेवाके लिअे तत्पर और चेहरे व कपड़ोंसे अत्यन्त गंभीर व्यक्ति हमारी यह बात सुनकर भौंचक्का ही हो गया। महंगेसे महंगे होटलका खर्च देकर ये लोग अेक रात रहने आये हैं और कहते हैं कि ये-ये चीजें खायंगे नहीं, तो अिनको खाना क्या है? शराब? वह भी अिन लोगोंको पीनी नहीं है! अुसे लगा होगा कि यह सारा दल पागलखानेसे भागकर यहां आ गया है। अुसने हमारे मि० शहाणेसे पूछा, "ये सब चीजें आप क्यों नहीं खाते? किसीको भी ये माफिक नहीं आतीं?" शहाणेने कहा कि, "हमारे धर्मके अनुसार ये चीजें नहीं खाअी जा सकतीं।" बेचारा शहाणे! हमारे कारणसे अुसे भी यह परहेज रखना पड़ा! यह कहकर मैंने कमी पूरी की कि, "मैं पनीर भी नहीं खाअूंगा।" शहाणे बोला, "मैं तो खाअूंगा।" होटलवालेको लगा कि अिन लोगोंका यह धर्म कैसा? वह मनमें चिढ़ा। परन्तु कुछ न कुछ खाना दिये बगैर छुटकारा भी नहीं था। और हम अुगाही करने बैठे हुअे पठानकी तरह मेजके आसपास जमकर बैठ गये। अुठनेका नाम भी नहीं लेते थे। कड़ाकेकी भूख और खानेके कष्टसे निपटनेके लिअे हममें से कुछ लोग विनोद करके हंसने लगे। वह ज्यादा चिढ़ा। खाली सोडा या ऑरेन्ज स्क्वेश लें, तो भी रुपये दो रुपये देने पड़ें।

खैर, हमने ज्यों त्यों करके खाया और थकावट मिटानेको अपने कमरोंमें चले गये। नहाने-सोने वगैराकी सब सुविधायें शाही थीं। हमारे खयालसे खानेकी सहूलियतसे नहानेका सुभीता ज्यादा महत्त्वका

था। मनुष्य जब अपने बूतेसे अधिक खर्च करता है, तब अिन सुविधाओंका अधिकसे अधिक अुपयोग करके क्षणभरके लिअे अुसके जीमें यह मान लेनेको आता है कि 'मैं बादशाह हूं।' अरेबियन नाअिट्स वाले अबूहसनकी मनोदशा समझनेके लिअे यह अनुभव काफी था।

सुबह जल्दी अुठकर सरोज और मैं सैर करनेको निकले। हमारे साथी निद्रानन्द लूट रहे थे। शरद पंड्याको भी अुठाये बिना हम चुपचाप बाहर निकल गये और सारे टापूका चक्कर लगा आये। नीचे पानीके किनारे तक गये तो वहां कुछ अफ्रीकी छोटीसी नावमें आ रहे थे। वे हमारी ओर आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। अुनकी कल्पना यह थी कि जिन्हें गरीबीका दुर्दैव भुगतना पड़ता है, वे ही अितने जल्दी अुठ सकते हैं। अूंचे अूंचे पेड़ोंके बीच घूमते घूमते हम अेक पुराने गिरजे या महलके पास पहुंच गये। अेक कोनेमें रास्तेके अेक तरफ अेक खंभे पर माता मरियमका छोटासा देवस्थान था। परम भागवत बालब्रह्मचारी अीसाकी माता मरियमको हमने प्रणाम किया और पासकी बड़ी बड़ी सीढ़ियोंसे अुतरकर फिर सरोवरके पास गये।

मैंने सरोजसे कहा कि, "मध्य रात्रिके बाद यहां थोड़ासा भूकंप हुआ होगा। मैं नींदसे चौंककर जागा था। पहले अैसा लगा कि कोअी मोटर गुजरी होगी।" सरोजने कहा, "अपने कमरेमें मुझे भी अैसा ही अनुभव हुआ।" यह धक्का हमारे कुंभकर्णकी जातिवाले साथियोंकी नींद भंग न कर सका। अिसलिअे अुनसे हमारे अनुभवका समर्थन प्राप्त न हो सका।

सुबहके समय आसपास सब जगह घूमकर हमने अनेक स्थान देखे और आगे बढ़े।

कीवू तालाबकी लम्बाअी ६२ मील है। जब कि अुसके दक्षिणमें स्थित टांगानिका सरोवरकी लम्बाअी ४५० मील है। दोनोंकी अूंचाअीमें

भी अेक हजार तीन सौ फुटका अंतर है। और कुदरतकी खूबी यह है कि अेक सुन्दर नदी कीवूके दक्षिणसे निकलकर टांगानिका सरोवरसे अुत्तरी सिरे पर जाकर मिलती है। अिस छोटी नदीको लगभग अस्सी मीलके अन्दर तेरह सौ फुट नीचे अुतरना पड़ता है। अुसका प्रवाह कितना वेगवान होना चाहिये? अिस रुझीजी नदीका अुद्गम हमारे होटलसे बहुत दूर नहीं था, परन्तु वहां तक जानेके लिअे अेक बहुत बड़ा चक्कर काटनेकी जरूरत पड़ती थी।

कीवूके किनारेसे रास्ता निकालकर जहां रुझीजी छलांग मारती है, अुसी जगह पर अेक अूंचा पुल है। हम वहां गये। नदीका अुद्गम सबसे पवित्र स्थान होता है। कितनी अुत्सुकतासे हम अुसका दर्शन करने गये! परंतु हमारा अुत्साह क्षण भरमें विषादमें बदल गया। अेक सुन्दर चमकती हुअी पुष्ट गाय अुस पुल परसे जा रही होगी। सामनेसे कोअी बड़ी लॉरी आअी होगी। अुसने जान बचानेके लिअे पुलकी बाजूकी तरफ जानेकी कोशिश की। वह पुलकी किनार थी। वापस लौटे तो कुचली जाय। आगे बढ़े तो अुतनी अूंचाअीसे पानीमें कूदना ही पड़े। भगवान् जाने अुस जानवरको क्या सूझी। अुसने छलांग मारकर अपनी तकदीर आजमानेका विचार किया होगा। 'या तो बच जाअूंगी या नीचेके पानीमें फंसे हुअे पत्थरोंसे टकराकर चूर चूर हो जाअूंगी।' बेचारी गायके भाग्यमें दोनोंमें से अेक भी अन्त नहीं था। अुसने छलांग मारी तो सही, किन्तु अिसमें पुलकी किनारके लोहेकी दो बड़ी पटरियोंके बीच अुसका पिछला पैर फंस गया। वह पिछले अेक पैरसे वहां लटकती ही रह गअी। अिस स्थितिमें अुसने कितनी वेदना सहन की और वह कब मर गअी, सो कौन जाने? हम गये तब वह गाय पुलकी अूंचाअीसे नीचेकी नदीकी तरफ मुंह करके अेक पांवसे निश्चेष्ट लटक रही थी। किसी भी जानवरकी अैसी दशा देखकर हृदय विदीर्ण हो जाय, फिर वह तो अेक गाय थी। अुसे देखकर कितना बुरा लगा! हम पुल पर गये। नजदीकसे देखा

कि पैर कैसे फंसा है। गाय मर गअी थी, अिसलिअे अुसकी मदद करनेके लिअे चार आदमियोंको जमा करनेका सवाल ही न था। हमने पुलको दोनों सिरोंसे और नीचेकी नदीको ठीक बीचसे देखा। अुत्सवके दिन हम अैसे विषादके साथ लौटे, मानो सूतक आ गया हो।

अब हमारी यात्रा अिसी रुङ्गोजी नदीकी दिशामें अुसके अुद्गमसे अुसके मुख तक की थी। किनारे किनारे जानेकी बात थी ही नहीं। परंतु नदीके दाअीं ओरके छोटे बड़े अूबड़-खाबड़ पहाड़ोंके बीचसे जो जोखम-भरा रास्ता तैयार किया गया था अुसी रास्तेसे हम अुतरे। अकेला अुतरना ही न था। अनेक बार चढ़ते, अनेक बार अुतरते। कअी बार जान मुट्ठीमें लेकर विचार करते कि, 'अरे! अब क्या होगा?' अिस तरह करते करते हम अुबोराके रास्ते चले। बीच बीचमें रुङ्गोजीके दर्शन होते तब दार्जिलिंग कालिंपोंगकी तरफकी तिस्ता नदीकी याद आती थी। अैसे रास्ते पर श्री कमलनयनकी सारथ्य कलाकी अुत्तम परीक्षा होती थी। सचमुच वह अेक होशियार सारथी है।

अिस रास्तेमें कुछ भाग अितना तंग है कि दो मोटरें अेक दूसरीको पार करके नहीं जा सकतीं। अिसलिअे वहां 'वन वे ट्रैफिक' (अेकतरफा यातायात) का प्रबंध है। कुछ मोटरोंको अुत्तरसे दक्षिण जाने देते हैं और वे सिरे पर पहुंच जायं, तब दक्षिणकी मोटरोंको अुत्तरकी तरफ जाने देते हैं। कितनी मोटरें छूटी हैं और कहां तक आअी हैं, अिसकी खबर दोनों सिरों पर पहुंचानेके लिअे यहां टेलीफोनकी सुविधा भी नहीं है। अिसलिअे जंगलके लोगोंको बिठलाकर अुनकी पद्धतिसे ही समाचार पहुंचाये जाते हैं। अनुकूल स्थानों पर लोहेके बड़े बड़े डब्बे या पीपे रखकर अुन पर नगाड़ेकी तरह आवाज की जाती है। यह आवाज कुछ मील तक पहुंचती है। वहांसे अिसी तरहका समाचारोंका आदान-प्रदान होता है। और अिस जंगली ढंग पर सुधरी हुअी मोटरों और अुनके मुसाफिरोंको सलामत रखा जाता है। अिस प्रकार पहाड़ अुतर जानेके बाद सीधी भूमि आअी। वहां

बाअीं ओर नदीके किनारे अेक छोटीसी रेलवे जाती देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। रुझीजी नदी पहाड़से निकलनेके बाद जिस घाटीमें प्रवेश करती है, वहांकी जमीनकी पैदावारको यह रेलवे लुवुंगी स्टेशनसे चढ़ाकर अुवीरा ले जाती है। और वहां जहाज पर चढ़ाकर किगोमा, आल्बर्ट-वील या ठेठ दक्षिणमें कासंगा तक ले जाते हैं। किगोमासे अेक रेलवे ठेठ दारेस्सलामके बन्दरगाह तक जाती है। हमारे लोगोंके लिअे यह रेलवे बहुत सहायक है, यह मैं पहले ही लिख चुका हूं।

पहाड़ परसे अुतरते अुतरते जब टांगानिका सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे, तब अिस ओर आये हुअे बरटन और स्पीक जैसे यात्रियोंको जैसा आनन्द हुआ होगा, लगभग वैसा ही आनंद हमें हुआ। हमने माना था कि अुवीरा तक पहुंचनेके बाद ही अुसुंबरा तक जाया जा सकेगा। मगर साथके नकशोंने हमारा भ्रम मिटा दिया। अुवीराका बन्दरगाह दो अेक मील दूर रहा होगा कि अितनेमें अेक रास्ता बाअीं ओर फटा। अुसने हमें अुसुंबरा तक पहुंचानेका भार सिर पर लिया — सिर पर क्या, छाती पर लिया। यह रास्ता टांगानिका सरोवरके अुत्तर किनारे पर जाता था और सरोवरकी सतहसे बहुत अूंचा तो था ही नहीं। सरोवरका पानी चार छः फुट चढ़ जाय तो यह रास्ता डूब ही जाय।

अेक दो छोटे प्रवाह पुलकी मददसे लांघनेके बाद रुझीजी नदीका बड़ा पुल आया। सबेरे जिस सरो-जा नदीके अुद्‌गमकी तरफके विषादमय दर्शन किये थे, अुसी नदीको यहां सरो-गामिनी होती देखकर मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। पानी भी नाचता कूदता दौड़ता था और टांगानिका सरोवर प्रसन्न और शांत-वदन होकर अुसका स्वागत कर रहा था। सरोवर-सुता और सरोवर-कान्ता अिस रुझीजी नदीको कैसे भुलाया जा सकता है ?

थोड़े ही समयमें हम अुसुंबरा जा पहुंचे।

अुसुम्बरा और अुसके बाद

हम शामको अुसुम्बरा पहुंचे। रुआन्डा-अुरुन्डीके सफरमें हमारा यह सबसे सिरेका यानी दक्षिणका स्थान था। अुसुम्बराका निमंत्रण लगभग अेक महीने पहले दारेस्सलाममें ही मिल गया था। अगर केवल अुसुम्बरा ही जानेकी बात होती तो रास्ता आसान था। दारेस्सलामसे किगोमा ट्रेन द्वारा और वहांसे जहाज द्वारा अुसुम्बरा। हमारे लोग जब बम्बअीसे आते हैं तब कहते हैं कि अुसुम्बरा भले ही दूर हो परंतु जानेकी झंझट कम है। बम्बअी जहाजमें बैठे सो दारेस्सलाम अुतर गये। वहांसे रेल पकड़ी और किगोमा अुतर गये। फिर जहाजमें बैठे और घर आ गये। परंतु हमें कम्पालासे अुसुम्बरा तकका मुल्क देखना था। हमारे लिअे पहुंचना महत्त्वकी बात नहीं थी। आनन्द तो जाने और देखनेका ही था।

यह शहर अेक पहाड़ीकी तलहटीमें अति दीर्घ सरोवरके किनारे बसा हुआ है। चूंकि यह सरोवर प्राग्-अैतिहासिक कालकी अेक दरारसे बना है, अिसलिअे अिसकी गहराअी दूसरे किसी भी सरोवरसे बढ़कर है। अेक जगह तो अिसकी गहराअी ३१९० फुट है। भूगर्भ-शास्त्री कहते हैं कि अिस सरोवरका पृष्ठ भाग आजकी अपेक्षा हजार-सवा हजार फुट अधिक अूंचा था अर्थात् कीवू सरोवर और टांगानिका सरोवरके पृष्ठ भागोंमें ज्यादा फर्क नहीं था।

यह सरोवर जैसे अुत्तरमें रुझीजीसे पानी लेता है, वैसे दक्षिणमें लुकुगा नदीको वह पानी देता भी है।

अुसुम्बरामें हम डेढ़ दिन रहे। हमारे यजमान श्री जूठाभाअी वेलजीकी पुत्रवधू प्रतिभा जब छोटी थी तब कराचीमें हमसे मिली थी। हिन्दुस्तानके अेक सिरे पर जिस लड़कीको हमने अपनी स्वाक्षरी

(ओटोग्राफ) दी थी, अुसीको अुसुम्वरा जैसे दूरके स्थान पर दुवारा नये सिरेसे स्वाक्षरी देते वक्त आनन्दके साथ आश्चर्य भी हुआ। वादमें मैंने देखा कि अिस जूठाभाअी वेलजीकी लड़कीने ही जंगवारके मणिभाअी मूलजी वेलजीकी पत्नीके रूपमें हमारा आतिथ्य किया था। अिस प्रकारके संवंधोंके कारण अिस घरमें प्रवेश करते ही हम घरके जैसे हो गये। रातको मिलने आनेवाले लोगोंके साथ ही सारा वक्त पूरा हो गया। अिस शहरमें नीचेकी आवादी और अूपरकी आवादी, अिस प्रकारका भेद है। गोरे सव अूपरकी वस्तीमें रहते हैं। हमारे लोग सरोवरके किनारे नीचेकी वस्तीमें रहनेमें सुविधा समझते हैं। और वेचारे अफ्रीकी लोगोंकी झोंपड़ियां तो पासकी अेक पहाड़ी पर अिधर अुधर फैली हुअी दिखाअी देती हैं।

सवेरे अुठकर हमारा पहला काम तालावके किनारे वैठ कर प्रार्थना करना था। वन्दरगाह जरा दूर था। हमारे साथ प्रतिभा, सुलभा, कमला वगैरा घरकी महिलाअें प्रार्थनामें शरीक हुअीं थीं। अुन्होंने प्रार्थनाके अन्तमें जो भजन गाया, अुसमें निराशाके विषादमय स्वर अितने ज्यादा थे कि मुझे अैसा महसूस हुआ मानो अफ्रीकाकी तमाम कौमें अिकट्ठी होकर अपने पिछले सौ दो सौ वरसके अनुभवोंका निचोड़ यहां अुंड़ेल रही हैं। अपनी संतोष और सादगीवाली संस्कृतिसे निकलकर पश्चिमी प्रगतिशील परंतु अुत्पात-परम्परावाली सभ्यताकी जवरन दीक्षा लेनेमें अुन्हें कितना कष्ट अुठाना पड़ता है, मानो यही वे हमारे सामने पेश कर रही थीं।

जूठाभाअीके यहां निरंजन भट्ट नामक अेक शिक्षक हमसे मिले। वे अकसर दारेस्सलाममें रहते हैं। अफ्रीकाके वारेमें अुन्होंने वहुत साहित्य पढ़ा है। वड़े अध्ययनशील हैं। वहुत जानते हैं और अपने पासकी जानकारी व्यवस्थित ढंगसे पेश भी कर सकते हैं। यह दुर्भाग्यकी वात है कि अैसे लोग हमारी भाषाओंमें यात्राका साहित्य नहीं वढ़ाते और अिस महाद्वीपकी आदिवासी जातियोंका जीवनक्रम हमें नहीं समझाते। अैसे

लोगोंकी कद्र करनेकी वात तो दूर रही, कुछ गृहस्थाश्रमी लोग अिनका अिकट्ठा किया हुआ साहित्य भी खो वैठते हैं!

हम यहांकी पाठशाला देखने गये। हमारे लोगोंकी शिक्षाके प्रश्नोंकी वहां कुछ चर्चा की। हमारे लोग वर्तमान परिस्थिति समझकर और भविष्यके कालप्रवाहकी दिशा पहचानकर योजनापूर्वक जीवनक्रम नहीं वनाते। जो कुछ पुराना है, वह—भला और वुरा सव कुछ कायम रखनेका प्रयत्न करते हैं। अिसमें भी सिद्धांत—प्रेम कम होता है। जो रूढ़ि पड़ गअी है अुसे वनाये रखना और अैसा करनेमें जो कष्ट अुठाने पड़ें सो अुठाते रहना, परंतु परिवर्तनका पुरुषार्थ जहां तक हो सके न करना, यह हमारे लोगोंका स्वभाव है। परिस्थितिके मजवूर करने पर कुछ फेर-वदल करते हैं जरूर, परंतु मौका हाथसे निकल जानेके वाद ही सव कुछ सूझता है। अिसलिअे अुससे फायदा नहीं अुठा सकते।

जूठाभाअीने समाजमें होनेवाले परिवर्तनका वर्णन अेक ही वाक्यमें कर दिया। अुन्होंने कहा कि, "पुराने जमानेमें हमारे लोग वहुत जल्दी और कदम-कदम पर अपवित्र हो जाते थे। अव नहीं होते।"

लोगोंको धर्मकी परवाह हो तो वह पाठशालामें वोली जानेवाली प्रार्थनामें ही दिखाअी देती है। अिससे हिन्दू-मुसलमान वगैरा कौमी झगड़े पैदा होते हैं। मुसलमान पाठशालाओंमें अगर कोअी हमारे वच्चोंको कुरान सुनाये तो हम नाराज होते हैं। परंतु हमारी पाठशालाओंमें मुसलमान वालकोंको हम अपनी प्रार्थना सिखाते हैं और अिन वालकोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती तो अिसके लिअे आनन्द प्रगट करते हैं। मुसलमानोंमें भी यही दोष दिखाअी देता है। अीश्वर-भक्ति और सदाचार, ये दो मुख्य चीजें सभी धर्मोंमें समान रूपसे होती हैं। परंतु हमारे खयालमें यह वस्तु गौण है। हमें अपने चौखटे और अपने लेवलकी परवाह होती है। हमारे लोगोंमें यह दोष पहले अितना अधिक नहीं था। ज्यों ज्यों राजनैतिक जाग्रति वढ़ी, त्यों त्यों अैसे झगड़े वढ़ते गये।

भिन्न जाति, भिन्न धर्म और भिन्न वंशके लोगोंके साथ घुलमिल जानेकी आवश्यकताके बारेमें यहांके लोगोंके साथ मैंने बहुत बातें कीं। अफ्रीकाके मूल निवासियोंका मूलधर्म कैसा था, अुस पर अिस्लामका क्या असर हुआ और मिशनरी लोगोंने अीसाअी धर्मके साथ कैसी संस्कृति फैलाअी है, अुसकी भी चर्चा की।

दोपहरको बाजारमें जाकर कुछ चित्र और बेल्जियन कांगो सम्बन्धी अेक सुन्दर फ्रेंच पुस्तक खरीद ली। सार्वजनिक बागमें जाकर चिम्पाजी जैसे बन्दर, मोर जैसे दिखाअी देनेवाले विचित्र प्राणी और मगर वगैरा देखे। पहाड़ पर जाकर शहर और सरोवर दोनोंकी शोभा देखी। शामको पाकोदास होटल नामक युरोपियन होटलमें अेक बड़ी पार्टीका प्रबंध किया गया था। प्रांतीय कमिश्नर वगैरा गोरे अधिकारियोंको आमंत्रित किया गया था। अरब और खोजे भी थे। न थे तो सिर्फ अफ्रीकी। अफ्रीकियोंको अैसे सामाजिक व्यवहारमें शरीक करनेकी हमने बहुतसी बातें कीं परंतु सफल नहीं हुअे।

यहांके हमारे लोगोंको गोरे अधिकारियोंके साथ मिलने जुलनेका ज्यादा अभ्यास दिखाअी नहीं दिया। अलबत्ता, जूठाभाअीकी सरकारमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। अरब तटस्थ थे। गोरे अफसर केवल फ्रेंच जानते थे। अंग्रेजी नहींके बराबर जानते थे और अिस बारेमें मनमें डर रखते थे कि विदेशसे आये हुअे ये प्रतिष्ठित अतिथि हमारे विषयमें क्या लिखेंगे?

रातको पाठशालामें अेक सभा हुअी। अुसमें बहुतसे मुसलमान आये थे। बहनें भी बहुत आअी थीं। मैंने अिस बारेमें विस्तारपूर्वक कहा कि हम सब अेशियाअी हैं और हमें मिलजुलकर अेक होना सीखना चाहिये। प्रश्नोत्तरके अन्तमें मुसलमानभाअी खुश हुअे दिखाअी दिये।

किसेनीसे अुसुम्बरा तक हमारे लोगोंको अेक ही सवाल चिंतित करता जान पड़ा। यहांकी सरकार हमारे लोगोंको यहांसे निकाल देना चाहती है। जिसे फ्रेंच आती हो अुसीको स्थायी निवासका प्रमाण-पत्र मिल सकता है, वगैरा अनेक कष्ट हैं। कहीं कहीं हमारे लोगोंको अेक जगह लम्बे समय तक नहीं रहने देते। यहांसे अुठो और दूसरी जगह जाकर बसो, अिस तरहके हुक्म निकलते रहते हैं। अिसलिअे लोगोंकी अच्छे मकान बनानेकी हिम्मत नहीं होती।

अंग्रेज लोग तरह तरहके विचित्र कानून घड़कर हमारे लोगोंको खूब तंग करते हैं। यहांकी सरकार यह कानूनी बुद्धि तो काममें नहीं लेती, परंतु अधिकारी मनमाने हुक्म जारी करके अुनका अमल करते हैं। शराबके प्रति अफसरोंकी कमजोरी और रिश्वतकी सम्भावना वगैरा बहुतसी बातें सुननेमें आती थीं। हममें से कुछ स्पष्टवक्ता लोग हमारे लोगोंके दोषोंकी भी खुलकर बातें करते थे। सचमुच सब तरहके लोगोंसे मिलकर दुनिया बनती है। यहांके प्रान्तके गवर्नरने जब देखा कि रुआन्डा-अुरुन्डीके बारेमें मुझे आवश्यक जानकारी मिल नहीं रही, तो अुन्होंने बड़ी आस्थाके साथ श्री जूठाभाअीके मार्फत मुझे अेक खास पुस्तक 'मोनोग्राफी अेग्रीकोल द्यु रुआन्डा-अुरुन्डी' भेजी। मुझे फ्रेंच आती होती तो मैं अुसका बहुत अुपयोग करता। अुसमें नकशे, चित्र और आंकड़े भरपूर हैं। मैंने देखा कि अिस अिलाकेमें बड़े बड़े होटलोंमें पार्टियां देनेसे हमारे लोगोंकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजीने माननीय गोखलेके लिअे जिन अनेक भोजोंका प्रबंध किया था, अुनका महत्त्व मैं अपने अफ्रीका आनेके बाद ही समझ सका।

हमने १३ जुलाअीको प्रातःकाल अुसुम्बरा छोड़ा और अेक नया ही रास्ता लेकर अस्ट्रीडा, कबगये और रुहेंगेरी आदि सुन्दरसे सुंदर प्रदेशोंमें होकर वापस कबाले पहुंचे। अुसके आनन्दका यहां अुल्लेख किये बगैर अिस यात्रासे विदा नहीं ली जा सकती।

सवेरे जल्दी यानी साढ़े छः बजे हम रवाना हुअे। यहांकी शोभा कुछ अलौकिक ही थी। सरकारी विभागने यहांके रास्तोंकी तरफ खास ध्यान दिया है। पहाड़की पगदंडीसे जब रास्ता जाता है, तब अेक तरफ पहाड़ और दूसरी ओर घाटी, अैसी हालतमें गाड़ियों और मोटरोंके घाटीमें गिर जानेका भय रहता है। बरसात होने पर रास्तेकी मिट्टी बह जानेसे बड़ा छेद पड़ जाता है। यह जोखिम सबसे बड़ी है। घाटीकी तरफ अूंची दीवारें बना देनेका रिवाज होता है, परंतु सैकड़ों मील तक दीवार बनानेका खर्च कैसे किया जा सकता है? बीच बीचमें पत्थर जमा देनेसे भी सुरक्षितता नहीं रहती, और अगर दीवारके नीचेकी मिट्टी बह जाय तो दीवारकी सलामती भी नहीं रहती। अिन सब मुश्किलोंका अेक अच्छा अुपाय ढूंढ निकाला गया है। सीधे अूंचे अुग सकनेवाले चीड़ जैसे पेड़ घाटीकी ओर पास पास लगा दिये जायं तो शोभा भी बढ़े और जड़ें मिट्टीको अिस तरह पकड़ लें कि रास्ता सदाके लिअे सुरक्षित हो जाय।

रास्ता मोड़ खाते खाते अितना अूंचा चढ़ गया कि बड़े बड़े पहाड़ छोटी पहाड़ियोंकी तरह घाटियोंमें छिपते हुअे दिखाअी देने लगे। अिधर भी पहाड़ोंके अुतार पर खेती होती है। घाटियोंमें बहनेवाले पानीका भी ये लोग अधिकसे अधिक अुपयोग करते हैं।

यहांके सफरमें अेक बात देखकर हमें ग्लानि हुअी। रास्ते परसे कोअी भी अफ्रीकी जाता होगा, तो मोटरमें बैठे हुअे लोगोंको सलाम जरूर करेगा। हमारे जैसे मुसाफिर, सज्जनता हो तो, सलामके बदलेमें सलाम करेंगे। कुछ लोग अफ्रीकियोंके प्रति तुच्छताकी नजर डालकर आगे चले जाते हैं। अिस रिवाजकी तहमें जो अितिहास है वह समझने लायक है।

पश्चिमके लोग व्यक्तिके अधिकारों और अुसकी स्वतंत्रताका ज्यादा खयाल रखते हैं। हमारे लोग नम्रतामें ही संस्कारिताकी निशानी

देखते हैं। अिसलिअे कोअी अनजान आदमी सामने दिखाअी दे, तो अुसे भगवानकी तरफसे आया हुआ अेक फरिश्ता समझकर अुसे नमस्कार करेंगे। और अगर कोअी घरमें अतिथिके रूपमें आ जाय, तो अिस वृत्तिसे कि अुसने हम पर अनुग्रह किया है धन्यता दिखाकर अुसकी सेवा करेंगे। अिसी किस्मकी भलमनसाहत अिन अफ्रीकी लोगोंमें होगी। अंग्रेज लोग जहां जाते हैं अपनी धाक जमानेकी कोशिश करते हैं। कोअी अिन्हें 'साहव' न कहे तो अुसे मारते हैं। जो सलाम न करे अुसे 'फसादी' ठहरा देते हैं। धाक जमानेके लिअे पेटके बल भी चलाते हैं। जो सलाम पहले संस्कारिताकी निशानी थी, वह अब गुलामीका चिन्ह बन गअी। आगे चलकर जब स्वाभिमानकी भावना बढ़ी, तब लोगोंने अिस प्रकार सलाम करना छोड़ दिया।

हमारे देशमें कुछ सज्जन अंग्रेज लोगोंको यह सलामकी प्रथा अच्छी नहीं लगती थी। कर्नाटकमें अेक कलेक्टर अपने बंगलेसे रोज शामको पैदल घूमने निकलता और अपने मनचाहे रास्ते पर घूम आता। थोड़े दिन बाद अुसने वह रास्ता छोड़ दिया और अेक कम सुन्दर रास्तेसे जाने लगा। अुसके अेक अंग्रेज दोस्तने रास्ता बदलनेका कारण पूछा। अुसने कहा, "पुराने रास्तेसे जाने पर बीचमें फलां रायवहादुरका घर आता है। मेरा समय जानकर वह रोज बिला नागा अुसी समय रास्ते पर आकर खड़ा रहता है। मुझे देखते ही जमीन तक झुककर सलाम करता है और खुद धन्य हुआ हो अैसा मुंह बनाकर वापस जाता है। रोजकी अिस कवायदसे मैं तंग आ गया हूं। अिसलिअे मैंने वह रास्ता ही छोड़ दिया!"

दोपहर तक हम आस्ट्रीडा पहुंचे। वहां खाया और आगे न्योंजा होकर कबगये तक पहुंचे। यहां मिशनरी लोगोंका अेक बड़ा केन्द्र है। कबगयेसे हमने बड़ा रास्ता दाहिनी तरफ छोड़ दिया और कच्चे रास्तेसे रुहेंगेरीकी तरफ मुड़े। यह रास्ता जितना रमणीय था अुतना ही जोखिमभरा भी था।

रुईंगेरीमें पोपटभाअी नामके अेक दुकानदार रहते थे। अुनके यहां हमने थोड़ा आराम किया, खाया, और आगे चले। अिन भाअीके यहां कितनी ही साहित्यिक कितावें देखीं। अुन्होंने वहुतसी पढ़ी भी थीं। अुनसे मालूम हुआ कि अुन्होंने अनेक अफ्रीकी लोगोंको अपनी दुकान पर वैठाकर शिक्षा दी है और विश्वास जम जाने पर अपनी दुकानकी शाखायें खोलकर वहां अुनको वैठा दिया है। कुछ वेतन और कुछ आने मुनाफा — अिस शर्त पर ये शाखा-दुकानें अच्छी चलती हैं।

यहांसे थोड़ी दूर पर हम सोडावाटरका झरना देखने गये। टूटे हुअे हौज जैसा यह स्थान था। अुवलते हुअे पानीमें से वुदवुदे अुठते हों अैसा पानी विलकुल ठंडा था। हमने प्याले भर भरकर पानी पीया। मुझे डर था कि अुस पानीमें दूसरे क्षार होंगे, जिससे स्वाद विचित्र लगेगा। थोड़ा पीते ही मुंहसे खुशीका यह अुद्गार निकला कि अिससे अच्छा सोडावाटर कहीं पीया हो, अैसा याद नहीं पड़ता।

यहांसे आगे जाने पर तीन वड़े सुप्त ज्वालामुखी अपने रूपहले शिखर अूंचे करके श्रेणीवद्ध खड़े दिखाअी दिये। अेकका नाम मुहावुरा, दूसरेका सेविनियो और तीसरेका गहिंगा। शाम हुअी, अंधेरा होने लगा और ये तीनों ज्वालामुखी भयानक राक्षस जैसे दिखाअी देने लगे। हमें अेककी तलहटीमें होकर ही जाना था। ठीक याद नहीं है, परन्तु वह मुहावुरा होगा। अुसे वाअीं तरफ छोड़कर हम आगे वढ़े। अव तो मोटरकी लाअिट दिखाती थी अुतना ही रास्ता दिखाअी देता था। सारा प्रदेश अितना भयानक था कि डाका डालनेवाले डाकू भी यहां आना पसन्द नहीं करेंगे।

अंतमें हमने कस्टमकी सीमा पार की। अुस कच्छी भाअीका नकशा अनेक धन्यवादके साथ वापस दिया। हमारी घड़ियोंको चावुक लगाकर अेक घण्टे आगे दौड़ाया और मोटरोंको दाहिनी तरफ रखनेका नियम भुलाकर वाअीं तरफ किया और जैसे तैसे वाकीका रास्ता काटकर

साढ़े नौं, या दस बजे कवालेके होटलमें अिकट्ठे हो गये। वहांकी मली बाअीने हमारे लिअे अच्छा खाना बनाकर रखा था। विस्तर भी तैयार कर रखे थे। अितने लम्बे सफरके अंतमें अितनी अच्छी सुविधायें मिलनेके बाद नींदमें स्वप्न भी आनेकी हिम्मत कैसे करते? मुर्दे भी हमसे अीर्ष्या करें, अितनी गहरी नींदमें हम सोये।

३५

कबालेसे कंपाला

जिस रास्तेसे गये हों अुसी रास्तेसे वापस लौटने पर शोभा कम नहीं होती। हरअेक दृश्य अुल्टी दिशासे देखनेको मिलता है, अिसलिअे नयेकी तरह ही लगता है। आगे क्या क्या आनेवाला है, अिसका खयाल रहनेके कारण नवीनता चाहे न हो, परन्तु अुत्सुकता मरी हुअी नहीं होती। अिसलिअे रसकी दृष्टिसे यह प्रवास जरा भी घटिया नहीं होता। फिर भी मन तो कहता ही रहता है कि 'यह सब तो अेक बार हो चुका है।' और अिससे ध्यानकी कमानी ढीली हो ही जाती है।

रुआण्डा-अुरुण्डीवाली अिस अंतिम यात्रामें श्रीमती यमुनाताअी शहाणे हमारे साथ थीं। अिन्हें तरह तरहके सवाल छेड़नेमें मजा आता था। महाराष्ट्रकी सामाजिक परिस्थिति संबंधी श्री मोहनरावके और मेरे विचार मिलते रहे हैं। अिसलिअे हम थोड़ेसे अनुभवोंका आदान-प्रदान करनेके सिवाय अधिक चर्चा नहीं कर सकते। यमुनाताअी ठहरीं विद्वान पतिकी बहुश्रुत पत्नी। कअी लोगोंकी कअी रायें पेश करके अुनके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करने और चर्चा द्वारा नअी नअी जीवनदृष्टि पैदा करनेका अुन्हें बड़ा शौक है। अिसलिअे चर्चा खूब चलती। ब्राह्मण जातिके गुण-दोष, अुसका हुआ पतन और

अिस जातिके अुद्धारकी योजनाअें आदि वहुतसे प्रश्नोंकी चर्चा होती। रास्ता काटनेके लिअे सवसे अुपयोगी अिलाज चर्चा ही है। ग्यारह वजे कवाले छोड़कर दो वजे हम म्वरारा पहुंचे। वहां हमारे मेजवान श्री छगनभाअी ठक्करने हमसे ठहर जानेके लिअे वहुत अनुरोध किया,परन्तु हमने जानेका ही आग्रह रखा। अितनेमें हमारे साथ सारी यात्रा वफादारीके साथ करनेवाली मोटरने अैलान कर दिया कि, "मेरे हाथ पैर अव नहीं चलते।" हालत अैसी हो गअी जैसे सारी लड़ाअी लड़ चुकनेके वाद आखिरी दिन सेनापतिका घोड़ा घायल हो जाय।

म्वरारा अैसा कोअी वड़ा शहर नहीं है कि जहां मोटरको कारखानेमें भेजकर तुरन्त ठीक करा लिया जाय। पहियेके पासका अेक क्लिप ही टूट गया था। स्थानीय कारीगरने कहा कि मोटर अढ़ाअी घण्टेमें तैयार हो जायगी। अढ़ाअी घण्टेके अन्तमें देखा कि अुसने हमारा काम हाथमें ही नहीं लिया था! जिसका आरम्भ ही नहीं हुआ अुसका अन्त कव होगा, अिस प्रश्नका जवाव कोअी वेदान्ती भी नहीं दे सकता। अिस सम्वन्धकी तरह तरहकी विडम्वनाओंका वर्णन करनेसे क्या लाभ? श्री कमलनयनका रसोअिया गोपी वीमार पड़ गया। अुसे चक्कर आये और कुछ न सूझा तो किसीने अुसे व्रांडी पिला दी। अुसे पीछे छोड़कर कमलनयन आगे जानेको तैयार होते, परन्तु शहाणेने अैसा नहीं करने दिया। वहुतसी चर्चाके अन्तमें हमने तय किया कि जो अेक मोटर अव भी सेवा करनेको तैयार है अुसे लेकर कुछ लोग आगे जायं। कमलनयन, यमुनाताअी, शरद पंड्या और गोपी, अिन चार आदमियोंको साथ लेकर शाह वन्धु अपनी मोटरमें रवाना हुअे। और हम अपनी वीमार मोटरके अच्छी हो जानेकी राह देखते रहे।

फिर तो हमने स्थानीय पाठशालाके व्यवस्थापकोंमें मतभेद कैसे शुरू हुआ, अुससे दो अलग अलग पाठशालायें कैसे वनीं आदि सव वातें विस्तारपूर्वक सुनीं। लिंडीसे हम अैसे किस्से

सुनते आ रहे थे। सवाल अेक ही हो तो भी स्थानीय तफसीलोंमें नवीनता होती ही है। अफ्रीकामें अिस्लामका स्थान क्या है, अिस बारेमें मैंने लम्बा विवेचन किया। फिर भी मोटर अच्छी होती ही नहीं थी। सवेरे नाश्ता करके जानेको तैयार होनेवाले हम लोग ज्यों त्यों करके रातके साढ़े आठ बजे चले। परन्तु वह भी अपनी मोटरमें नहीं। हमारे साथ दिनभर भागदौड़ करके थके हुअे छगनभाअीकी मोटरमें। वह अगर ठीक होती तो हम कभीके म्वारारासे निकल गये होते। हमारा यह आग्रह देखकर कि किसी भी जोखिम पर रात-बसेरा टालना ही चाहिये, छगनभाअीने अपनी मोटर तैयार की। अुसे तैयार होनेमें भी देर तो लगी ही। म्वारारासे बाहर निकले। दाअीं तरफ पहाड़में भारी आग लगी हुअी थी। अुसका प्रकाश हमारे रास्ते तक आया था। हमारी मोटर बड़ी बहादुरीसे तीस मील तक चली और फिर अटक गअी। अुसे खयाल हुआ होगा कि अेक बीमार मेहमान मोटरको घरमें छोड़कर मेरा अिस तरह जाना अनुचित है।

अुसका पंचर ठीक करनेके लिअे हमने जैक ढूंढ़ा। हमारे परोपकारी शोफरने बीमार मेहमान मोटरकी सेवामें अुसे पीछे रह जाने दिया था! अब क्या हो? सारी रात जंगलमें बितानेके सिवाय कोअी चारा नहीं था। किसीने कहा कि यहांके जंगलमें शेर तो होते ही हैं। रातको अेकाधसे भेंट हो जाय तो आश्चर्य नहीं। शेरकी मुलाकातके हम आदी हो गये थे। मोटरके खिड़की दरवाजे बन्द करके हम बैठ सकते थे। परन्तु सारी रात मोटरमें बैठे बैठे हाथ पैर रह जायं, अिसका क्या किया जाय?

बहुत अिन्तजार करनेके बाद सामनेकी तरफसे अेक मोटर आअी। अुन लोगोंको अेक खास वक्त तक कवाले पहुंचना था। हमारी प्रार्थना वे स्वीकार नहीं कर सकते थे। हमने कहा, 'अच्छा तो जाअिये। जो कुछ होना होगा, हो जायगा।' अिस अंतिम वचनका अुन लोगों पर असर पड़ा। अिस बातका भी खयाल आया कि हम कौन हैं।

हमारी मोटरका लंगड़ाता हुआ पैर जैककी मददसे अुठाकर अुसकी जगह दूसरा पहिया बिठाया। परन्तु हमारा शोफर कहने लगा, 'अभी ६० मीलका सफर है। मेरी हिम्मत नहीं कि मैं आपको सहीसलामत आगे ले जा सकूंगा।' हमारे सामने अेक समस्या खड़ी हो गअी। वापस लौटें तो मोटर अच्छी तरह चलेगी ही, अिसका क्या भरोसा? वह कोअी जानवर नहीं थी कि घरका रास्ता देखकर अुमंगमें आ जाय। फिर भी हमने हिसाब लगाया कि ६० मीलकी जोखिमसे ३० मीलकी जोखिम कम है। हम लौट गये। अितनेमें हमारी अपनी मोटर भी अच्छी होकर आ पहुंची। अब मसाका जानेमें आपत्ति नहीं थी। परन्तु सभी सारथी हिम्मत हार गये थे। हमने दूसरा ही हिसाब लगाया। वापस जाते हैं तो वहांके गृहपतिको ११ बजेके पहले ही जगाना पड़ेगा। मसाका जाते हैं तो पिछली रात दो, ढाअी या तीन बजे वहांके गृहपतिको अचानक जगाना पड़ेगा। अिस हिसाबसे वापस जानेमें ही कम हिंसा थी। हम वापस लौट गये। जाकर सोनेमें बारह बज गये। यह सारा दिन हमें बड़ा महंगा पड़ा।

दूसरे दिन मसाका जानेके लिअे हमें भाअी हसनअली और भाअी रजबअलीका साथ मिल गया, क्योंकि हम अुन्हींकी मोटरमें जा सके। अिनमें से हसनअलीभाअी बम्बअीके पास घोलवड़-बोर्डीके स्कूलमें पढ़े हुअे थे। यह साबित करनेके लिअे कि वे राष्ट्रीय वृत्तिवाले हैं, अुन्होंने जोर देकर कहा कि, "मैं बोर्डी स्कूलका विद्यार्थी हूं।" अुनसे म्वराारा स्कूलका विभाजन कैसे हुआ, अिसका दूसरा पक्ष सुना।

मसाका पहुंचते ही हमने कंपाला फोन करनेका प्रयत्न किया परन्तु अुसमें सफल न हुअे। अितनेमें वहांसे कमलनयनका फोन आया कि हम मरच्युसन फॉल्स देखने जा रहे हैं। ज्यादा लोगोंके लिअे सुविधा नहीं हो सकती। आपके लिअे मोटर भेज रहे हैं।

अब अिस मोटरके लिअे हमें ठहरना ही पड़ा। हमने विचार किया, "बैठेसे बेगार भली! मसाकाके लोगोंकी हमेशाकी शिकायत

है कि जितने नेता, मेहमान और साहसी यात्री अिधर आते हैं, वे सब मसाका भोजनके लिअे ही ठहरते हैं। जबानका दूसरा अुपयोग देते ही नहीं हैं।" हमने भी जाते हुअे अैसा ही किया था। कमलनयनकी मोटर म्वरारासे जब हमने आगे भेजी, तब आशा रखी थी कि कमलनयन मसाकामें डेढ़ दो घण्टेका भाषण देकर लोगोंको सन्तुष्ट करेंगे। परन्तु अुन्होंने हमारा हवाला देकर कम्पालाका रास्ता पकड़ लिया था। अिसलिअे मसाकाका अुलहना दूर करनेका फर्ज मेरे सिर आ पड़ा। गांवके जमा होनेमें देर नहीं लगी। श्री अमृतलालभाअी असामान्य होशियार आदमी हैं। केवल मसाकाके ही नहीं परन्तु आसपासके सारे अिलाकेके लोग अुनकी रायको आदरपूर्वक मानते हैं। ३ बजे सिनेमा-हॉलमें सभा हुअी। "हम सब अेशियाअी हैं। हममें अेकता होनी चाहिये। गांधी-शिक्षा द्वारा हमें अफ्रीकी लोगोंकी सेवा करनी चाहिये।" अित्यादि बातें मैंने विस्तारसे समझाअीं। अुन लोगोंको मेरा भाषण पसन्द आया। मुसलमान अधिक प्रसन्न हुअे। अुनमें अेक अलीभक्त कोअी अिस्माअिली भाअी थे। अुन्होंने अलीमाहात्म्यके बारेमें थोड़ासा भाषण दिया।

खीमजीभाअी और व्रजलालभाअीके भाअी हीराचन्द हमारे लिअे कंपालासे मोटर ले आये। मोटरकी दुर्घटनाके कल हम अितने आदी हो गये थे कि अिस नअी मोटरमें कंपाला तककी ८२ मीलकी यात्रा बेखटके पूरी की, अिसका हमें आश्चर्य हुआ। यह कहें कि अपेक्षाभंग हुआ तो भी हर्ज नहीं। कम्पाला जाकर छोटाभाअी पटेलके यहां भोजन किया और रातको नानजीभाअीके यहां आराम किया।

लंबी यात्रा पूरी करनेका संतोष लेकर सोना था, परन्तु वह हमारे भाग्यमें न था। यह समाचार मिलनेसे दिल गंभीर हो गया कि श्री आर० अेस० शाहकी बहनकी छोटी लड़कीने कुनैनकी बहुतसी गोलियां खा लीं और डॉक्टरी अिलाज होनेसे पहले ही अुसका देहान्त हो गया। वर्धा, सेवाग्राममें हमारे आर्यनायकम्के लड़केका अैसा ही

किस्सा याद आया और मन अुस तरफ दौड़ गया। और अिस विचारसे कि मरनेके लिअे कैसे सादा कारण भी काफी होते हैं और गफलतें कअी बार कितनी महंगी पड़ती हैं, लम्बे समय तक नींद न आअी।

रविवारका दिन पुराना कर्जा चुकाने और पुराने संकल्प पूरे करनेके लिअे विताना था। छोटाभाअी और छोटूभाअी दोनोंको साथ लेकर हम अुस मस्जिदको देख आये। वह मस्जिद दूरसे ही वड़ी अच्छी लगती थी। अूपर चढ़नेके वाद आसपासका प्रदेश दूर दूर तक देखनेको भी मिला। वह मस्जिद दिखानेके लिअे मेजर दीन हमारे साथ आनेवाले थे, परन्तु अुनकी तंदुरुस्ती अच्छी न होनेसे हमीं अुनसे मिलने गये। अुनकी सज्जनता, संस्कारिता और मिलनसारी तीनों मामूलीसे ज्यादा थीं।

दोपहरको जॉर्ज सली नामक अेक अफ्रीकी युवक हमसे मिलने आये। अुनके साथ अुनके वड़े भाअी और पिता भी थे। भारत सरकारकी तरफसे अुन्हें छात्रवृत्ति मिली है। दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी पत्नीको भी हिन्दुस्तान ले जानेका अुनका विचार था।

रुआण्डा-अुरुण्डीकी सारी यात्रामें अपनी मोटर लेकर सेवाभावसे हमारे साथ घूमनेवाले शाह वन्धुओंके यहां हम भोजन करने गये। घरके लोगोंसे मिलकर हमें वड़ा आनन्द हुआ। यह परिवार लम्वा-चौड़ा है। सव मिलाकर वावनकी संख्या है। अितने लोग मिलजुलकर रहते हैं, अिसकी तहमें कितनी अधिक संस्कारिता और कुशलता होनी चाहिये! श्री खीमजीभाअीने गैंडेका अेक वड़ा सींग मुझे भेंट किया। मैं अुसे अपने साथ न ला सका। वादमें अुसके लानेके लिअे सारी व्यवस्था करनी पड़ी थी।

कंपालाके महाराष्ट्र मंडलसे मुझे कभीसे मिल लेना चाहिये था। परन्तु यह गफलतमें रह गया था। महाराष्ट्र मंडलका कार्यक्रम वहुत ही मजेदार था। संगीत तो अुसमें था ही। श्री गोंवळेकरसे हमने वेल्जियमके वारेमें कुछ जानकारी प्राप्त की। मेरे भाषणके वाद थोड़ेसे

प्रश्नोत्तर हुअे। अुसमें हिन्दुस्तानके ही सवाल पूछे गये थे। "भाषावार प्रान्त रचना होगी तब बम्बअीका क्या होगा?" यह था अेक सवाल। और दूसरा यह कि "हिन्दुस्तानके राजनैतिक आन्दोलनमें महाराष्ट्रका स्थान कहां है?" दोनों सवालोंकी तहमें शुद्ध जिज्ञासा और हितेच्छा थी, अिसलिअे मैंने भी विस्तारसे जवाब देकर अुन लोगोंकी चिन्ता दूर कर दी।

कंपालामें जिन अेक भाअीसे मिलना रह गया था, वे थे श्री घीरूभाअी मारफतिया। वे भारतसे हाल ही में लौटे थे। अपनी लड़की आशाकी शिक्षाके लिअे काफी परिश्रम कर रहे हैं। यहांके सार्वजनिक जीवनमें भी अुनका हाथ है। वे हमारे साथ लुगासी तक आये। रास्तेमें गांधीस्मारक कॉलेजके बारेमें हमने बहुतसी चर्चा की। श्री घीरूभाअी मारफतिया चाहें तो कॉलेजकी योजनामें बड़े मददगार हो सकते हैं।

३६

मांग कर ली हुआी मीठी कैद

दो मासकी अद्भुत यात्रा पूरी करके हमने अितने अधिक संस्कार जुटा लिये थे कि अुनका संग्रह न करें तो वे बादलोंकी तरह अुड़ जायंगे, यह डर मनमें घर कर बैठा। रुआण्डा-अुरुण्डी जानेसे पहले ही मैंने छोटूभाअीसे कहा था कि अफ्रीका छोड़नेसे पहले ही यात्राका वर्णन न लिख डालूंगा, तो हिन्दुस्तानमें जानेके बाद लिखना नहीं होगा। वहां जाते ही वहांके कामोंसे और चिन्ताओंसे घिर जाअूंगा। मुझे किसी अैसे अेकान्त स्थान पर बन्द रहने दीजिये, जहां आरामसे कुछ लिख सकूं। छोटूभाअीने यह जिम्मेदारी सिर पर ले ली और अुन्होंने तय किया कि मैं श्री नानजी सेठके लुगासीके भवनमें आठ दिन बिताअूं।

अितनेमें श्री अप्पासाहबने अेतराज किया : "यह न भूल जाअिये कि नैरोबीमें कमिश्नरका दफ्तर नये बने हुअे मकानमें जानेवाला है, अुसका प्रवेश-समारोह आपके हाथों होगा। हम आपको नैरोबीमें भी शांति दे सकेंगे।" सदाकी भांति अिन दोनों मेजबानोंने 'त्वयार्धम् मयार्धम्' का सिद्धान्त लगाकर समझौता कर लिया। यह निश्चय हुआ कि चार दिन लुगासी रहकर हम नैरोबी जायें। अिस निर्णयके अनुसार हम कंपालासे लुगासी पहुंचे। कमलनयनने मरच्युसनसे लौटकर नैरोबीका रास्ता लिया। चि० सरोजिनी, मैं, शरद पंड्या और हमारा हिन्दी करमुद्रण-यंत्र — अितने लुगासी रह गये। वहां जाते ही श्री आनंदजीभाअीने हम पर अधिकार कर लिया। हमारी रहने-सहनेकी सब सुविधा कर दी और हमें किसी भी समय कोअी मिलने न आये, अिसकी चौकीदारी अपने हाथमें ले ली। फिर भी कंपालासे या और कहींसे कोअी न कोअी मिलने आते ही। अुनके लिअे आनंदजीभाअीने खानेका समय खुला रख दिया। हम अितनी 'कैद' में रहे, अिसीलिअे काफी लिख सके।

लुगासी स्थान ही अैसा है कि अेक बार देखनेके बाद मन पर अुसका चित्र जम ही जाता है। ककीरा और लुगासीकी सुन्दर जोड़ी है। मैंने यह नहीं पूछा कि अिन दोनोंमें किसने किसका अनुकरण किया है। लुगासीकी पहाड़ी पर दो मकान हैं। अेक पुराना, जो पुराना भी है और सादी सुविधाओंवाला है। दूसरा नया अैश-आराम वाला है। पहला मकान पुरुषार्थी मनुष्यकी सादी अभिरुचिवाला है। दूसरा मकान धनी पिताके भाग्यशाली लड़कोंके रहने लायक है। हमने छोटे (अलबत्ता, कदमें छोटे) मकानमें रहकर अेकाग्रतासे लिखना पसन्द किया। रोज सुबह और शाम हम आसपासके दृश्यका — सूर्योदय सूर्यास्तका सौंदर्य देखकर और दोनों संध्याओंके सूर्यनारायणका अुपस्थान करते हुअे पक्षियोंका गान सुनकर, हृदयको अुसकी खुराक देते और बाकीका सारा समय लिखनेमें बिताते।

पहला दिन अेक दो पत्र लिखनेमें, वर्णनके अध्याय बनानेमें और प्रस्तावना लिखनेमें गये। रातको खानेके बाद शिक्षकों-विद्यार्थियोंके साथ थोड़ीसी बातचीत हुअी। 'गुजराती पाठशालामें अफ्रीकी विद्यार्थी आपकी भाषा सीखने आयें, तो आप अुन्हें लेनेको तैयार होंगे या नहीं?' मैंने यह सवाल पूछा। मुझे अिस बारेमें विद्यार्थियोंकी राय जाननी थी। शिक्षकोंसे यह सवाल पूछनेका कोअी अर्थ न था, क्योंकि अिस कारखानेकी पाठशालाकी सारी व्यवस्था मैनेजरके ही हाथमें होती है। भाअी जाजल यहांके जनरल मैनेजर हैं। अुन्होंने परिस्थितिके सम्बन्धमें बड़ी छान-बीन की। मुझे जो कुछ कहना था सो सब मैंने चर्चा द्वारा कह दिया।

श्री छोटाभाअी कंपालासे तात्याका अेक पत्र लेकर आये। अुन्हें यह भी जानना था कि हम नैरोबी कब पहुंचेंगे और अुनका तैयार किया हुआ आगेका कार्यक्रम हमें मंजूर है या नहीं। अपने स्वभावके अनुसार मैंने अुनका कार्यक्रम मंजूर कर लिया, क्योंकि कामकी दृष्टिसे वह ठीक था। अिसका अेक परिणाम यह हुआ कि मुझे मरच्युसन फॉल्स देखने जानेका मौका छोड़ना पड़ा और विक्टोरिया सरोवरके किनारेका मशहूर बन्दरगाह किसूमू देखनेकी अिच्छा भी दबानी पड़ी।

श्री नानजीभाअीने अपने कारखानेमें जगह जगहसे लोगोंको लाकर बसाया है। अिनमें से अेक महाराष्ट्री भाअी श्री भोमे हैं। ये असलमें फल्टन और सताराकी तरफके हैं। शकरके मामलेमें निष्णात हैं। यहां अुन्होंने तीन साल तक काम किया है। लड़का घरका काम संभालने लायक हो गया है, अिसलिअे ये निवृत्त होकर गुजारे लायक लेकर राष्ट्रसेवा करना चाहते हैं। अुनकी मैंने यह खासियत देखी कि सिद्धान्त या व्यक्तिगत सम्बन्ध कायम रखनेमें व्यावहारिक नुकसान हो जाय तो अुन्हें अिसका जरा भी पछतावा नहीं होगा। अुनकी मातृभक्ति देखकर मुझे अुनके प्रति विशेष आकर्षण हुआ।

अुसी रात कमलनयन और शहाणे दम्पती मरच्युसन फॉल्सकी यात्रा पूरी करके मोटरके रास्ते नैरोबी जानेके लिअे अिधर आये। रातको लुगासी आनेके बाद कच्चे रास्ते पर कीचड़में फंसकर खूब परेशान हुअे। दूसरे दिन सवेरे अिसीकी बातें मजाकका विषय बन गअीं।

तीसरे दिन किसूमूसे वहांके लोगोंका लम्बा तार आया कि 'हमारे यहां जरूर आअिये।' मसाकाका बदला चुकानेका निश्चय करके मैंने यह काम कमलनयनको सौंप दिया और किसूमूके लोगोंको अेक मीठा पत्र लिखकर माफी मांग ली। कमलनयन व्याख्यानमें हारनेवाले हैं ही नहीं और विनोदके फव्वारे हमेशा अुनके पास मौजूद ही रहते हैं। अुन्होंने जाते ही कह दिया कि, "महादेव खुद न आ सके, अिसलिअे अुनका नांदिया आया है।" अपना ही मजाक अुड़ाकर अुन्होंने जो वातावरण पैदा कर दिया, अुससे वे लोगोंमें मान्य बन गये। अेक बार अपना ही मजाक अुड़ा लिया कि यह औजार औरों पर आजमानेकी तो छूट मिल ही जाती है!

कमलनयनके साथ लुगासीमें ही हमने तय कर लिया कि मुझे भी मिस्र न जाते हुअे अदिस-अबाबा तक जाकर जीबूटी और अदनके रास्ते हिन्दुस्तान लौट जाना चाहिये।

मेरा मिस्र जानेका अिरादा छोड़ देने पर बहुतोंको आश्चर्य हुआ। खर्चकी कठिनाअी भी नहीं थी। वह नानजी सेठकी तरफसे आसानीसे मिल जाता। परन्तु अितने दिन साथ सफर करके आखिरी वक्तमें कमलनयनको छोड़कर आगे चला जाना मुझे पसन्द नहीं आया। और अिससे भी अधिक या मुख्य विचार यह था कि मिस्रकी संस्कृति दूसरी है। वहांके सवाल अलग हैं। वहांके पिरामिड देखेंगे, काहिराका अद्भुत संग्रहालय देखेंगे और अल-अजहरकी युनिवर्सिटी देखेंगे, तो अितने अधिक भिन्न और विविध संस्कार मन पर होंगे कि पूर्व अफ्रीकाके संस्कार दब जायंगे। मुझे अैसा नहीं होने देना था।

हिन्दुस्तानका पूर्व अफ्रीकाके साथ जिस किस्मका सम्बन्ध है वैसा मिस्रके साथ नहीं। पूर्व अफ्रीकामें सेवाकी पुकार थी। मिस्रमें संस्कार-समृद्धि और अद्भुत परम्पराओंका आकर्षण था। नील नदीका जीवनचरित्र पढ़े विना, मिस्रकी मिश्रित संस्कृतिके वारेमें ज्ञान ताजा किये विना और मिस्रमें नैपोलियनसे लेकर पश्चिमके अनेक लोगोंने जो पुरुषार्थ फैलाया है, अुसकी जानकारी प्राप्त किये विना जाना मुझे जरा जल्दवाजीका कदम मालूम हुआ। अीसाअी धर्मके प्रारंभके दिनोंमें मिस्रने अिस धर्मको जो आश्रय दिया, अुसका अितिहास भी फिरसे याद करने लायक था ही। मैं नहीं जानता यह सव कव कर सकूंगा और मिस्र कव जाअूंगा। और जव जाअूंगा तव यह सारी तैयारी करनेका वक्त मिलेगा या नहीं, अिस वारेमें भी मुझे शंका है। हमारे भाग्यमें जितना होता है अुतना ही हमसे वनता है और अुसी मात्रामें हमें लाभ मिलता है। मेरा यह विश्वास दैववादसे अुत्पन्न नहीं हुआ, परन्तु जीवन-परिचयसे अुत्पन्न हुआ है — जिसे लोग कर्मका सिद्धान्त कहते हैं।

अुसी दिन अेक सज्जन और सेवापरायण वृद्ध व्यक्तिका परिचय हुआ। डॉक्टर हण्टर अपनी युवावस्थामें कर्णाटकमें हमारे वेलगांवकी तरफ रह चुके थे। अुनके पिता भी वहीं थे। वेलगांवके पास जिस हिन्डलगा जेलमें मैं रहा था, अुसीके गांवमें अुन्होंने अेक कुष्ठाश्रम चलाया था। हमारे वेलगांवकी तरफके डॉक्टर हण्टर यहां अफ्रीका कैसे आये और कव आये, यह मैंने अुनसे नहीं पूछा। अुन्होंने कहा हो तो याद नहीं। आज अुनकी अुम्र ७२ वरसकी है। थोड़े ही वर्ष हुअे अुनकी पत्नी और अुनका लड़का पूर्व अफ्रीकामें ही गुजर गये। अव वे अकेले ही हैं। नानजी सेठ अुन्हें खर्चके लायक देते हैं, परन्तु वे यह रकम पेन्शनके रूपमें न लेकर लुगासीके कारखानेमें मजदूरोंकी स्वास्थ्य-सेवा करके सन्तोष मानते हैं। जव मैंने यह कहा कि "अितनी अुम्रमें आप काम करते हैं यह आश्चर्य-कारक है", तो अुस वृद्धने विलकुल मुग्ध

भावसे कहा : "After all it is better to wear away than to rust away." (जंग लगनेसे घिस जाना अच्छा हैं।)

अैसे सत्पुरुषको श्री आनन्दजी मेरे पास ले आये, अिसके लिअे मने अुन्हें धन्यवाद दिया। अफ्रीकासे स्वदेश लौट आनेके बाद खबर मिली कि वे डॉक्टर हण्टर जहां अुनकी पत्नी और लड़का गया है वहीं पहुंच गये हैं। परन्तु कितनी सुगन्ध पीछे छोड़ गये!

सारे दिन लिखनेके बाद विनोदके रूपमें आनन्दजीभाअीसे पूर्व अफ्रीकाके अेमिग्रेशन कानूनकी बहुतसी पेचीदगियां जान लीं। रातको लुगासीकी संस्थाकी तरफसे रिक्रियेशन क्लबमें थोड़ेसे प्रश्नोत्तर हुअे।

अंतिम दिन कम्पालासे श्री काकूभाअी और रमाकान्त आये। अुनके साथ अनेक बातें हुअीं। २१ जुलाअीको हम लुगासी छोड़कर कंपाला गये और अेन्टेबे होकर ४ बजे वायुमार्गसे नैरोबी पहुंच गये।

परन्तु कम्पाला हमें आसानीसे छोड़नेवाला नहीं था। खीमजीभाअी कहने लगे कि "आप मेरे भाअीके यहां भोजन कर चुके हैं। मेरा घर आपने कहां देखा है?" अिसलिअे २१ तारीखको हमने अुनके यहां नाश्ता किया। सर्विस स्टोर्समें जाकर कंपालावाले सब भाअियोंसे मिले। वे सब अब घरके लोगों जैसे हो गये थे। श्री शाह, काकूभाअी, रामजीभाअी लद्धा — सबने कम्पालाकी यादगारके तौर पर कअी फोटो दिये। रामजीभाअी तो अितने प्रेमी कि अेन्टेबे जाकर जब तक हमने विमानमें प्रवेश न किया, तब तक अुन्होंने तरह तरहके फोटो देना जारी ही रखा। कोअी खास शब्द काममें लिये बिना आतिथ्य और स्नेह दिखानेकी अुनकी कला सचमुच अनोखी है। अुन्होंने हमें बिलकुल अपना ही बना लिया।

अिन सब मित्रोंके साथ हम अेन्टेबे जानेके लिअे रवाना हुअे। १९ मीलका रास्ता था। हमारा विमान ११ बजकर २० मिनट पर

चला और १ बजकर १० मिनट पर नैरोबी पहुंचा। अिस बार हमने विशाल विक्टोरिया सरोवरका अंतिम दर्शन किया। अुसके भीतर दिखाअी देनेवाले अेक अेक टापू पर कल्पनासे घर बनाकर अुनमें काफी रहे। सरोवर परसे दौड़ते हुअे बादलोंके साथ बुजुर्ग बनकर बातें कीं, क्योंकि हम अुनसे भी अूंचाअी पर थे। फिर केनियाकी असंख्य पहाड़ियां देखीं। गोरे और अफ्रीकी लोग अुन पहाड़ियोंका किस प्रकार सेवन करते हैं, यह ध्यानपूर्वक देखा। आखिरी समय हमारा विमान खूब हिला। विमान जब अिस तरह हिलता है, तब मुझे वह अधिक सजीव मालूम होता है। और अुसके साथ मेरी कल्पना भी हिलने लगती है। नहीं तो सारा प्रवास अलोना ही होता है। मुसाफिरोंको सोने न देनेके लिअे ही विमान थोड़ेसे अूपर नीचे दचके लगाये तो अिससे क्या होता है?

नैरोबी अुतरते ही तात्या अिनामदार हमसे मिले और अपने घर ले गये।

३७

अुत्कट और समस्त

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्राके निचोड़के तौर पर नैरोबीमें हमने ११ दिन बिताये। अिन दिनोंमें जितना सोचा अुतना लिखा नहीं गया। परन्तु ग्यारहों दिन अनुभव, संस्कार, जानकारी, परिचय और सेवाकी दृष्टिसे पूरी तरह भरे थे। अिन ग्यारह दिनोंमें यात्राके सभी तत्त्व अेकत्र हो गये थे। जमीनकी रचनाका अध्ययन, प्रपात जैसे प्राकृतिक दृश्योंका दर्शन, वन्य श्वापदोंकी मुलाकात, गांवोंके दर्शन, अफ्रीकी नेताओंसे भेंट, देहातमें अुनके बनाये हुअे समृद्धिशाली घर, अफ्रीकी जनता, अुसके नृत्य, अुसकी महत्त्वाकांक्षाअें, हमारी संस्थाअें, हिन्दू-

मुस्लिम प्रश्न और राजनैतिक विष्टियां, हिन्दुस्तान जानेके बाद करनेके कामोंका अन्दाज, संस्कृतिके अध्ययन और प्रचारके लिअे शिक्षा सम्बन्धी और धर्मप्रचारके काम, महाराष्ट्रियोंके मीठे परिचय, अुनके पुरुषार्थका परिचय, मिशनरियोंकी चलाअी हुअी संस्थाअें और अुनकी तहमें अुनकी गहरी नीति, आगाखां और आर्यसमाज दोनोंके शिक्षा सम्बन्धी आन्दोलन, अफ्रीकियोंके लिअे साहित्य निर्माणका प्रारंभ, खादी और चरखेका प्रचार और नये मिले हुअे मित्रोंके साथ प्रेमका वार्तालाप — सभी चीजें अिन ११ दिनोंमें अुत्कटतासे अिकट्ठी हुअी थीं। मेरा अब भी खयाल है कि अिन ग्यारह दिनोंमें मैं अेक वर्ष जितना जिया होअूंगा।

शामको थियोसॉफिकल लॉजमें निमंत्रण था। धन कमाने और जीवनके मजे लूटनेसे कुछ अधिक विचार करनेवाले लोग अिकट्ठे होते हैं तब अच्छा तो लगता ही है। मोम्बासामें श्री मास्टर, दारेस्सलाममें जयंतीलाल द्वारकादास शाह और नैरोबीमें श्री शिवाभाअी अमीन और पारसीभाअी बहेरामजी जैसे लोगोंने सात्विक आध्यात्मिक वातावरण अुत्पन्न करने और रखनेका अच्छा प्रयत्न कर रखा है। आम तौर पर पाया जाता है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवनके शोरगुलमें अैसे लोग केन्द्रमें नहीं होते, परन्तु ये सब प्रवृत्तिकी किनार पर लग जाते हैं और लोगोंकी सत्प्रवृत्तियोंका संगठन करके धार्मिक सुगंध फैलाते हैं। जिस प्रदेशमें हमारे लोगोंने बड़े बड़े हाअीस्कूल बनाये हैं, अस्पताल और टाअुनहाल खड़े किये हैं और जातिवार बड़े बड़े हॉल भी बनवा दिये हैं, अितना ही नहीं परन्तु मंदिर और गुरुद्वारे भी स्थापित कर दिये हैं, अुस प्रदेशमें थियोसॉफिकल सोसायटीका अपना अेक भी मकान नहीं, यह चीज ध्यान खींचे बगैर नहीं रहती। अिस प्रवृत्तिमें तेज ही नहीं या वह अति सात्विक है? यह मध्यमवर्गके गरीब लोगोंकी सात्विक प्रवृत्ति होती है। अिसमें शक नहीं कि अिन लोगोंको अैसी जगह हृदयका आश्वासन

मिलता है। और चारित्र्यका अच्छासा आदर्श मन पर जमानेमें भी ये स्थान अपयोगी ही हैं। असाधारण स्वार्थत्याग, जातीय आत्मोत्सर्ग या रजोगुणी वैभव,— अिनमें से अेकका भी संसर्ग न होनेसे अिस प्रवृत्तिका विकास नहीं होता, यह मैं मानता हूं।

अेक छोटेसे मकानमें कुछ लोग जमा हुअे थे। अुन सबका परिचय सुनकर अुनके प्रति मनमें सद्भाव जम गया। अिसलिअे मैंने यहां बड़ी अुत्कटतासे बातें कीं। सत्य, सर्वधर्म-समभाव, सब धर्मोंका लघुतम भाज्य (L.C.M.) और महत्तम भाजक (G.C.M.) निकालनेके बारेमें और जप तथा प्रार्थनाके बारेमें भी तफसीलसे बातें कीं। मनको तैयार करनेमें जो गूढ़ शक्तियां ('ऑकल्ट पावर्स') प्रगट होती हैं, वे स्वाभाविक होने पर भी अुनके पीछे पड़नेके खतरेके बारेमें भी मैंने अिशारा किया। मैंने ये खतरे बताये कि अिन शक्तियोंके पीछे पड़नेसे मनमें विकृति आती है, समतुला नहीं रहती और ध्येयसे हम हट जाते हैं। रातको श्री ठाकुरके यहां भोज था, तब पता नहीं कैसे मेस्मेरिजम और अैसे ही अन्य विषयोंकी चर्चा चल पड़ी थी।

पूर्व अफ्रीकाका सारा सफर पूरा करके हमने नैरोबीमें दस दिन बिताये यह अेक तरहसे अच्छा ही हुआ। दो अढ़ाअी महीनेके प्रवासके बाद नैरोबीकी अनेक अफ्रीकी पाठशालाअें देख लीं — कुछ सरकार अथवा मिशनरियोंकी चलाअी हुअी और कुछ दूसरी अफ्रीकी नेताओंकी अपने ही पुरुषार्थसे चलाअी हुअी। दोनों तरहके स्कूलोंकी विशेषतायें अलग अलग थीं। ये संस्थायें देखनेके बाद अिसकी काफी कल्पना हो गअी कि अफ्रीकी लोगोंका भावी किस प्रकार बन रहा है। अिस तरह ये दस दिन अढ़ाअी महीनेकी सारी यात्राका संक्षिप्त संस्करणकी तरह थे, क्योंकि अढ़ाअी महीनेमें जितनी विविधता अनुभव की गअी थी अुस सबका प्रतिनिधित्व अिन दस दिनोंमें सामने आया था। अुदाहरणके लिअे, अफ्रीकाके वन्य पशुओंका दर्शन लीजिये। हम लगातार दो दिन अभयारण्यमें हो आये। अब तो वह सारा प्रदेश

और अुसके भीतरके स्वतंत्र प्राणी परिचित जैसे प्रतीत होते थे। और वहांके दीर्घग्रीव जिराफ तो मानो हमें खास तौर पर पहचानते हों, अिस प्रकार हमारी मोटरके सामने फोटोके पोजके लिअे आकर खड़े रहते। श्री जशभाअीको यह अुत्सुकता थी कि हम अफ्रीका आकर नैरोबीके सिंहदर्शनसे वंचित न रह जायें।

अेक बार शामको गये तब अिसका निश्चित पता लगने पर भी कि सिंह कहां है वनराजसे हमारी भेंट नहीं हो सकी। अुनके रहस्य मंत्रियोंने हमसे कहा कि, "महाराजके यहां आज अच्छी दावत हुअी है, अिसलिअे कहीं आरामसे सो रहे हैं। आज आपको दर्शन नहीं होंगे।" हम घण्टों तक खूब भटकते रहे। परन्तु महाराजके दर्शन किसीको नहीं हुअे सो नहीं हुअे। दूसरे असंख्य पशुओंको हमने अुनकी प्राकृतिक अवस्थामें देखा होगा, परन्तु मुख्य मुलाकातके अभावमें मनमें ग्लानि ही रही।

दूसरे दिन सवेरे अिसका बदला मिल गया। हम बहुत जल्दी आकर अभयारण्यमें पहुंच गये। अेक अस्कारीके साथ अिन्तजाम कर रखा था। ये अस्कारी लोग दुपाये मनुष्य तो जरूर होते हैं, परन्तु पशुओंकी रीतिनीति वगैरा सब बातें खूब जानते हैं और जहां हमारी नजर न पहुंचे वहां वे अचूक किसी भी पशुको ढूंढ़ निकालते हैं। फर्क अितना ही है कि हवा किस तरफकी है, अिसका ज्ञान पशु नथने फुलाकर कर लेते हैं और ये लोग थोड़ीसी मिट्टी अुड़ाकर यह ज्ञान कर लेते हैं। हमारा अस्कारी दस पांच मीलकी दौड़में ही हमें सिंहकी दो रानियोंके सामने ले गया। सूखे हुअे घासमें पीली चमड़ीवाले शेर आसानीसे नजर नहीं आते, परन्तु अेक बार आनेके बाद आप अुन्हें नजरसे हटा हो नहीं सकते। सिंह प्राणी, खासकर मादा, दीखनेमें असाधारण नहीं होती, परन्तु अुसकी चालढाल देखनेके बाद तुरन्त विश्वास हो जाता है कि यह राजवंशी प्राणी है।

मोटर लेकर हम काफी नजदीक चले गये। दोनों रानियोंने हमारी तरफ जरा नजर डालीं और 'होगा कोअी मानव प्राणी' अिस लापरवाहीसे नजर फिरा लीं। अेक क्षणके लिअे भी हमारा विचार करने लायक महत्त्व अुन्हें न लगा। दोनों रानियां अेक ही फोटोमें आ सकें, अिसके लिअे हम अपनी मोटर दूसरी ओर ले गये। वहां हमारी अिस धृष्टताके प्रति तिरस्कार दिखानेके लिअे अेक रानीने हमारी तरफ देखकर अेक जमाही ली। अिन्सानकी हैसियतसे अैसा अपमान सहन करना किसे अच्छा लगता? परंतु अभयारण्यमें यह सब सहन करनेके सिवाय हम और कर भी क्या सकते? हम जहां थे वहांसे आगे नहीं जाया जा सकता था, अिसलिअे वापस लौटकर अर्ध चन्द्राकार रास्ता निकालकर हम अुसी सिंहनीको दूसरी तरफसे देखने पहुंचे। हमें बार बार अिस तरह पास आते देखकर अुस सिंहनीको न आश्चर्य हुआ, न सताये जानेका क्रोध आया। अुसके खयालमें हमारा कोअी महत्त्व ही नहीं था। अेक सिंहनी धीरे धीरे वहांसे चली गअी और दूसरी झाड़ी होकर सो गअी! अिस प्रकार अुनके आगे अपनी प्रतिष्ठा खोकर हम वापस आ गये। सिंहकी भयानकताके बारेमें कितनी सारी कहानियां पढ़ी थीं और अजायबघरोंके पिंजरोंमें बन्दी हुअे सिंहोंको मनुष्यों पर क्रुद्ध होते देखा था। परंतु यहां तो अिन प्राणियोंकी अुदासीनता और बेपरवाही ही देखनेमें आअी। अिसका विचार करते करते हम दस-बीस मील दौड़कर जंगलके दूसरे सिरे पर पहुंचे। वहां अचानक लम्बे लम्बे बालोंवाला अेक सिंह दिखाअी दिया। अुठकर जा रहा था। 'ठहर, ठहर' हमने बहुतेरा कहा, परंतु अुसे कहीं समय पर जाना होगा। वह चला ही गया। परंतु जो दो चार पल हम अुसे देख सके, अुसीसे अुसकी तसवीर हमारे मन पर पूरी तरह अंकित हो गअी। 'यह सारा राज्य मेरा ही है', अिस स्वाभाविक दबदबेके साथ सिंह जब लम्बे लम्बे डग भरते हैं, तब अुनके बारेमें आदर पैदा हुअे बिना नहीं रहता।

मैंने कहा, 'सिंह कुछ बूढ़ा मालूम होता है'।

अिस पर चर्चा हुआी। 'आपने कैसे जाना?' साथी पूछने लगे। जशभाअीने भी मेरे साथ मतभेद प्रगट किया। अन्तमें अुन्होंने अस्कारीसे अुसकी भाषामें पूछा। जवाब मिला कि 'बात सही है। सिंह बूढ़ा है। हम बीस वर्षसे देख रहे हैं। वह यहीं रहता है। पहले जितना अुत्साही अब नहीं है।' सबने मुझसे पूछा, 'आपको कैसे पता चला?' मैंने कहा कि, 'जानवर जवान होते हैं तब अुनके बालों पर तेलकी-सी चमक होती है। वे जब बूढ़े हो जाते हैं, तो अुनके बाल सूखे हुअे घासकी तरह बेचमक हो जाते हैं। अिस सिंहके बालोंकी चमक घटती दिखाअी दी। अिसके सिवाय अिस सिंहके गलेके पासकी अयालके कुछ बाल मैंने गिरे हुअे देखे। अिसलिअे अनुमान लगाया कि अिस सिंहका बुढ़ापा शुरू हो गया है।' अुस दिन हम कृतार्थ होकर लौटे। राजा और रानी दोनोंसे मुलाकात हो गअी। फिर भी लौटते समय जरखोंके बड़े झुण्डसे भेंट कर ली। चित्राश्व, बुद्दू और अिसी तरहके कितने ही जानवर दिखाअी दें, तो भी अब वहां ध्यान कैसे जमे? हमारी अिस तृप्ति पर आशीर्वादकी मुहर लगानेको किलिमांजारोने हमें अन्तिम दर्शन दिये।

जिन्हें राजनैतिक माना जा सकता है, अैसी तीन प्रवृत्तियोंका यहां अुल्लेख कर देना चाहिये। २३ जुलाअीको श्री अप्पासाहबका दफ्तर अुसके लिअे खास तौर पर बनाये हुअे मकानमें पहुंच गया। पंजाबी ठेकेदार श्री मंगतने नैरोबीके दो मुख्य रास्तोंके कोने पर अेक भव्य मकान बनाकर अुसकी अूपरकी सारी मंजिल अप्पासाहबके लिगेशनके लिअे किराये पर दे दी है। अिस मकानका नाम 'अिंडिया आफिस' रखा गया है। अिस मकानका अुद्घाटन मेरे हाथसे हुआ। १९ तारीखको होनेवाला था सो २३ को हुआ। अिसलिअे संगमरमरकी लिखावटमें तारीखकी गड़बड़ी रह ही गयी। अिस शुभ अवसरके लिअे लोग दूर दूरसे आये थे। भारत स्वतंत्र हो गया, अिसीलिअे

यहांके हिन्दुस्तानियोंको अेक कमिश्नर मिले। और वे भी अप्पासाहव जैसे! अिसलिअे लोग बेहद खुश थे। अेक आदमीने प्रासंगिक कविता सुनाअी। श्री मंगतका, अप्पासाहवका और मेरा अिस तरह तीन भापण हुअे। अिस अवसरका लाभ अुठाकर मैंने अप्पासाहवके वारेमें, अुनके प्रकाशन मंत्री (अिन्फर्मेशन ऑफिसर) श्री शहाणेके वारेमें और अुनके निजी मंत्री श्री तात्यासाहव अिनामदारके वारेमें थोड़ासा कहा। रातको श्री मंगतके यहां ही भोजन किया। अिन भाअीकी होशियारी अनेक क्षेत्रोंमें काम कर रही है।

दूसरे दिन यहांके अमेरिकन कौन्सल जनरल मि० ग्रॉयके यहां हम दोपहरको भोजन करने गये। हल्की हल्की वातोंमें और हंसी-मजाकमें हरअेक मनुष्यका रुख पहचानने और आवश्यक जानकारी निकलवा लेनेकी कलामें ये लोग कुशल होते हैं। हिन्दुस्तानके लोग धर्मचर्चासे खिलते हैं और योगके वारेमें अुन्हें आस्था होती है अित्यादि भारतीयोंकी ख्याति अमरीका तक पहुंच गअी है। अिसलिअे अमरीकी लोग हमारे साथकी वातचीतमें अैसे विपय जरूर लाते हैं। परंतु मुझे लगा कि मि० ग्रॉयको अिन विपयोंमें सचमुच ही दिलचस्पी होगी। अफ्रीकियोंकी सेवा करनेवाले मिशनरियोंके वारेमें, कम्युनिस्ट लोगोंके वारेमें और स्वीडनके वारेमें तरह-तरहकी वातें हुअीं। हम मांसादि नहीं खाते, अिसलिअे हमारे वास्ते रोचक निरामिष आहार तैयार करानेकी तरफ मि० ग्रॉयने काफी ध्यान दिया था। सामाजिक समानताके असरके कारण अमरीकी लोग अंग्रेजोंसे अधिक मिलनसार होते हैं। अेक वार जव हम नैरोवीमें नहीं थे, तव मि० ग्रॉयने हमारे शरद पण्ड्याको अपने यहां नाश्तेके लिअे वुलाया था और अुनके साथ भी योग, प्राणायाम और सूर्य नमस्कारके वारेमें वहुत वातें की थीं।

तीसरा राजनैतिक प्रसंग २९ तारीखको आया। श्री कुरेशी नामके पंजावके अेक पाकिस्तानी भाअी अुस दिन मिलने आये। ताजा

ही कराचीसे वापस लौटे थे। किसी समयके शिक्षक, अब राजनैतिक बातोंमें प्रमुख भाग लेते हैं। अुन्होंने पूर्व अफ्रीकामें हिन्दू-मुस्लिम झगड़े संबंधी सारा अितिहास अपनी दृष्टिसे विस्तारपूर्वक बताया। अुनकी बड़ी शिक़ायत आर्यसमाजियोंके खिलाफ थी। झगड़ा अुन्होंने शुरू किया। मना करने पर मानते नहीं थे। अिसलिअे मुसलमानोंने 'ऑब्ज़रवर' नामक अखबार निकाला। अुन्होंने भी अुतना ही बिगाड़ा। कुरेशी खुद तटस्थ रहे। फिर निवृत्त हो गये — वगैरा प्रारंभिक हालात अुन्होंने बताये। आगे चलकर संबंध कैसे बिगड़ते गये और अुन्होंने समझौता करनेके लिअे क्या क्या निष्फल प्रयत्न किये, यह भी कहा। अन्तमें अुन्होंने मुसलमानोंके लिअे अलग निर्वाचक मंडल तैयार करनेकी सरकारसे मांग की। 'आप गांधीजीके आदमी, तटस्थ और देवता-पुरुष हैं। आप बीचमें पड़कर हिन्दुओंको समझायें तो हमारा झगड़ा निपट जाय।' वगैरा अुन्होंने बहुतसी बातें कीं। मैंने अुनसे पूछा कि, "अप्पासाहबसे तो आप मिले ही होंगे। वे भी हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे पच रहे हैं। अुन्होंने आपसे क्या कहा?" "अप्पासाहब तो अुच्च कोटिकी ('हायर लेवल'की) बातें करते हैं। मुझे तो तुरंत समझौता चाहिये।" मैंने अुनसे कहा कि "सच्ची और स्थायी अेकता 'हायर लेवल' पर ही होगी। दूसरी तरह कामचलाअू दोस्ती नहीं हो सकती सो बात नहीं। स्वार्थी लोग भी कभी बार संघर्षके बाद सहयोग करते ही हैं। परंतु अुसके लिअे दूसरे लोग चाहिये। मैं गांधीजीका आदमी हूं। सर्वधर्मी हूं। केवल हिन्दुओंका नेतृत्व मुझसे नहीं होगा। पूर्व अफ्रीकामें हिन्दुओं और मुसलमानोंके हितोंमें कोअी भी फर्क नहीं। कुछ बेच खानेकी भी बात नहीं।"

फिर मैं आगे बढ़ा, "मुझे अेक अत्यंत व्यावहारिक अुपाय सूझता है। हिन्दुस्तानसे आये हुअे हम हिन्दू-मुसलमान सब यहांकी सरकारसे लड़-लड़ कर यहांके राजकाजमें आखिरकार कितने स्थान जुटा सकते हैं? अंग्रेजोंकी सत्ता और अफ्रीकियोंकी संख्या दोनोंके आगे हमारी बिसात ही

क्या ? हमारे पास जब अैसी छाप है ही नहीं कि हम यहांकी राज्यव्यवस्था पर असर डाल सकें, तो हम आपसमें खींचातानी करनेके बजाय यह क्यों न तय कर लें कि हिन्दुस्तानी लोगोंके लिअे जितनी सीटें (जगहें) मिलें, अुनके लिअे हम अच्छे अफ्रीकी लोगोंको ही चुनकर भेज दें ? अैसा करके हम अफ्रीकी लोगोंको साबित कर देंगे कि अुन पर हमारा विश्वास है, अुनके हाथोंमें हम अपनेको सुरक्षित मानते हैं और वे अपने देशमें हमें जैसे रखें वैसे रहनेको हम तैयार हैं। हम यहांकी धारासभामें अपने ही आदमी भेजेंगे, तो हम दरियामें खशखशकी तरह गुम हो जायंगे। अिस पर भी आपसमें लड़े, तो दुनियामें हंसीके पात्र बनेंगे। अिसके बजाय अफ्रीकियोंको ही हम अपने प्रतिनिधि बना लेंगे, तो सभी अफ्रीकी मत (वोट) हमारे लिअे अनुकूल हो जायंगे। अपने मत देकर अुनके बदलेमें अफ्रीकी मत प्राप्त कर लेना कोअी बुरा सौदा नहीं।

"मैं यह नहीं कहता कि हम धारासभामें जायं ही नहीं। अगर अफ्रीकी लोग अपने प्रतिनिधिके रूपमें हनमें से किसीको चुनें, तो अुस चीजका हम जरूर स्वागत करें। दक्षिण अफ्रीकामें कानूनकी रूसे काफरों और हिन्दुस्तानियों दोनोंको अपने प्रतिनिधिके तौर पर गोरोंको ही चुनना पड़ता है। अिसके बजाय अगर अफ्रीकी लोग स्वेच्छासे हममें से किसीको सेवाके कारण चुन लें, तो यह नया ही अुदाहरण बनेगा।"

मेरी बात भाअी कुरेशीके गले नहीं अुतरी। आजकी स्थितिमें किसीके भी गले नहीं अुतरेगी, यह मैं जानता हूं। क्योंकि अिसके लिअे अुच्च भूमिकावाली कल्पनाशक्तिकी जरूरत है।

अुसके बाद हिन्दुस्तानकी स्थितिके बारेमें बातें हुअीं। अुन्होंने कहा कि, "हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक हो जाय, यह तो आप जरूर चाहेंगे।" मैंने कहा, "नहीं। हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक राज्य हो या न हो, अुसकी मुझे परवाह नहीं। मुझे अेकदिली चाहिये। भारत और पाकिस्तानके अेक राज्य बननेके लिअे मैं प्रयत्न नहीं करूंगा। अितना ही नहीं, परंतु अैसी प्रार्थना भी नहीं करता। जो अेक बार दे दिया सो दे दिया।

अब अगर पाकिस्तानके मुसलमान ही अेकताका विचार करें और अैसा सुझाव मेरे सामने लायें, तो ही अिस दिशामें मेरा दिमाग काम करेगा। अेकता रखनेके लिअे हम लोगोंने बहुत प्रयत्न किये। वे आपने माने नहीं। अब प्रयत्न करेंगे तो आप कहेंगे कि देखिये, ये लोग पाकिस्तानकी हस्तीके दुश्मन हैं। और आपको अैसी शंका रहेगी तो दिलकी अेकता नहीं होगी।"

भाअी कुरेशीके विदा लेकर जानेसे पहले केनियाकी किकूयू जातिके दो अफ्रीकी नेता — श्री जोमो केन्याटा और श्री पीटर कोयनांगे मुझसे मिलने आये। मैंने अुनसे हमारे बीच हुअे संवादका सार कहा। मेरा सुझाव स्वीकार हो या न हो, परंतु मुझे अिसका अेक नमूना पेश करनेका संतोष मिला कि तीन महान जातियोंके बीच सम्मानपूर्वक अेकता करनी हो तो किस दिशामें प्रयत्न करना चाहिये। मैंने अपना यह विचार नैरोबीके कअी नेताओंके सामने रखा। और आज तो अितना ही कह सकता हूं कि मैंने अुन्हें विचार करनेमें लगा दिया।

अिसके बाद जोमो केन्याटा और पीटर कोयनांगेके साथ बहुत बातें हुअीं, परंतु वे सब खास तौर पर शिक्षा और रचनात्मक कार्योंके विषयमें थीं। मैंने अुन्हें अपना चरखा चलाकर दिखाया और अुन्हें भेंट कर दिया। काममें न लेनेके कारण वह जरा भारी चलता था। श्रीमती ताअी अिनामदारने अुसे हलका कर देनेका काम अपने जिम्मे ले लिया। समाज-सेवाके कार्यमें (१) कष्ट-निवारणका काम और (२) समाज-निर्माणका रचनात्मक काम अिन दोनोंके बीच गांधीजी जो भेद बताते हैं अुसकी भी बात मैंने की।

अफ्रीकामें 'अिन्डिपेन्डेन्ट अफ्रीकन्स' नामक अेक आन्दोलन चल रहा है। अिसे चलानेवाले लोग अफ्रीकी ओीसाअी होते हैं। गोरे मिशनरियोंके प्रति कृतज्ञता रखते हुअे भी अुनके विरुद्ध अिन लोगोंकी अेक शिकायत होती है। वे अुन्हें कहते हैं, "हम सब ओीसाअी जरूर हैं, परंतु जब तक हमारे प्रति होनेवाले दो अन्याय आप दूर नहीं

करा सकेंगे, तब तक हम अेक जगह बैठकर प्रार्थना कैसे कर सकते हैं ?

"अेक तो यह कि चमड़ीके रंगके कारण सफेद और कालेका जो वर्गभेद आपके लोग करते हैं अुसे दूर करा दीजिये; और दूसरा यह कि हमारी सर्वोत्तम अुपजाअू और ठंडी आबहवावाली जमीन गोरे हजम कर बैठे हैं वह हमें वापस दिलाअिये। अितना प्रायश्चित्त कीजिये, तभी हम साथ साथ प्रार्थना कर सकेंगे।"

अफ्रीकाकी भूमिके पुत्रोंके हृदयका यह रुदन गोरे क्यों नहीं समझते होंगे? अन्यायकी बुनियाद पर खड़ी की गअी अुनकी सभ्यता और संस्कृति कहां तक कल्याणकारी सिद्ध होगी? जब जब गोरोंसे मिलनेका मुझे मौका मिला, तभी मैंने अुनसे यह अनुरोध अवश्य किया कि 'हिन्दुस्तानमें अुच्च वर्णके लोगोंने आप जैसी ही जो भूलें की थीं और जिनके बुरे फल हम भोग रहे हैं, अुनका अितिहास आप देखिये और अुससे कुछ सबक लीजिये।'

अप्पासाहबके साथ सारी यात्राका सांस्कृतिक परिणाम जोड़नेके लिअे मैंने अेक दिन बिताया। हमारी चिन्ताके तीन चार विषय थे। अफ्रीकामें क्या क्या करना चाहिये, अिस सिलसिलेमें; और हिन्दुस्तानमें क्या क्या होना चाहिये, अिस विषयमें।

छात्रवृत्तियां लेकर जो अफ्रीकी विद्यार्थी हिन्दुस्तान जाते हैं, अुन्हें अच्छी तरह रास्ता दिखाकर यहांके अच्छेसे अच्छे परिवारोंमें रहनेका अवसर दिलाना, अुन्हें हमारी संस्कृतिका परिचय करानेके प्रसंगोंका प्रबंध करना, रचनात्मक कार्यका स्वरूप और अुसके भीतर जो दृष्टि है अुसे समझानेके लिअे अुन्हें हमारी संस्थाओंमें घुमाना, और हमारे लोगोंको अफ्रीकाकी स्थितिसे वाकिफ करना वगैरा बहुतसी बातें अिसमें आ गअीं। अफ्रीकामें कॉलेज खोलनेकी बात सबसे मुख्य थी। अुसके हरअेक पहलू पर हमने चर्चा की।

हमने यह भी सोचा कि अिस देशमें हम अपनी तरफसे आश्रम खोलने न बैठ जायं। हमारे आश्रम देखकर आये हुअे अफ्रीकी लोग अपने देशके अनुकूल पड़नेवाली आश्रम जैसी संस्थाअें खोलें, यही ठीक है। हमें अितनेसे संतोष कर लेना चाहिये कि गांधीजीके विचार और अुनके कार्यक्रम आदि सब बातें यहांके नेता और महत्त्वाकांक्षी युवक जान लें। फिर यह तो यही लोग खुद निश्चय और अमल करें कि यहांके लोगोंको लाभ पहुंचानेके लिअे क्या क्या करना चाहिये। बाहरसे लादी हुअी चीज बोझ बन जाती है। भीतरसे पैदा हुअी चीज ही प्राणदायक होती है। अफ्रीकी लोगोंकी भाषामें साहित्य पैदा करनेके बारेमें भी हमारा यही दृष्टिकोण होना चाहिये। जैसे अंग्रेजी पढ़ाअी द्वारा अफ्रीकियोंको युरोपियन संस्कृतिका परिचय होता है, वैसे ही अेशियाअी संस्कृतिके बारेमें भी अिन्हें ज्ञान होना चाहिये। अभी वह ज्ञान अंग्रेजी द्वारा ही हो सकता है। हमारे देशकी थोड़ीसी अच्छी पुस्तकोंका स्वाहिलीमें अनुवाद करा कर अिन लोगोंको अिस चीजका स्वाद चखायें। अिसके बाद अिच्छा हो तो ये लोग भले ही हिन्दी वगैरा भाषाअें सीखें। किसी दिन ये संस्कृत भी सीखेंगे। अभी तो अुनके पास हिन्दी और गुजराती भाषा सीख लेनेकी स्वाभाविक सुविधा है। हम अपनी भाषाका खास तौर पर प्रचार करने न निकलें। परंतु जिन लोगोंको सीखना हो अुन्हें सिखानेकी तैयारी हमारी संस्थाओंको रखनी चाहिये। हमारे लोग यहां जो अिंडियन अेसोसियेशन चला रहे हैं, अुसे बदल कर अेशियन अेसोसियेशन कर दिया जाय, तो हिन्दुस्तान-पाकिस्तानका अलगाव यहां न रहेगा। अरबस्तानके लोग भी हमारेमें शरीक हो सकते हैं। गोआके लोगोंको भी हम खुशीसे ले सकते हैं और कोअी अेकाध चीनी होगा तो वह भी संस्थाके बिना नहीं रहेगा। अफ्रीकाकी परिस्थिति अच्छी तरह जान लेनेके लिअे और अपनी सेवाशक्ति बढ़ानेके लिअे हमारे लोगोंका अेक बड़ा सेक्रेटेरियट यहां होना चाहिये। अुसमें सब प्रकारकी पुस्तकें, मासिकपत्र,

रिपोर्टें, जनगणनाके विवरण वगैरा सब कुछ रखा जाय और यहांकी तीनों जातियों सम्बन्धी सवालोंका गहरा अध्ययन करनेवाले कुछ निष्णात तैयार किये जायं।

हमने अिसकी भी चर्चा की कि पीटर कोयनांगेके हाथों चलनेवाली अनेक पाठशालाओंमें बुनियादी शिक्षा कैसे जारी की जा सकती है। हमारी अिस चर्चामें से क्या क्या अमलमें आता है, यह तो भगवान् जाने। हमारे देशकी कार्यशक्ति बढ़नी चाहिये और कोअी काम करना चाहता हो तो अुसका विरोध करनेके बजाय अुसे भरसक मदद देनेकी नीति सब धारण कर लें, तो ही हमारा देश दूसरे देशोंकी पंक्तिमें खड़ा रह सकेगा और विदेशोंमें वहांके लोगोंकी सेवा करनेमें समर्थ होगा।

२३ जुलाअीको डॉ० कारमन नामक अेक बड़े मशहूर डॉक्टर मिलने आये। क्लोरोफार्म आदि दवाअें सफल ढंगसे देनेमें अिस आदमीकी ख्याति विशेष है। अुनके साथ अढ़ाअी घंटे बातें हुअी। युद्धविरोधी शांतिवाद, साम्यवाद, गरीबोंको होनेवाली तकलीफ, अंग्रेजोंका अफ्रीकामें मिशन वगैरा अनेक विषयों पर हमने चर्चा की। आदमी बहुत ही सज्जन हैं, परंतु बाअिबलके अक्षरार्थसे चिपटे रहनेवाले। अीसाअी लोगोंकी जो अेक यह भविष्यवाणी है कि अीसा मसीह फिर अिस दुनियामें आयेंगे और सारी पृथ्वीके राजा बनकर सर्वत्र शांति और बंधुता फैलायेंगे, अिसमें अुनका बड़ा विश्वास है। चर्चामें अपनी दृष्टि क्षणभरके लिअे भी अलग रखनेकी अुनकी तैयारी नहीं थी।

अिसी दिन अेक महाराष्ट्र परिवारके साथ भोजन करने गया। वहां भी लोगोंने भाषाका प्रश्न छेड़ा। हिन्दीके बजाय मैं गुजरातीका अितना पुरस्कार क्यों करता हूं, अिस बारेमें मुझसे पूछा गया। मैंने दुबारा समझाया कि हिन्दीका प्रचार तो मैं करता ही हूं। परंतु यहांके हिन्दुस्तानियोंमें ८० फीसदी लोगोंकी जन्म-भाषा गुजराती है।

अुसी भाषाके द्वारा यहांका विविधधर्मी सामाजिक जीवन वगैर झगड़ेके विकसित किया जा सकता है।

अनेक मिशनों द्वारा मिलकर अफ्रीकियोंके लिअे चलनेवाला अेक अलायन्स हाअीस्कूल हम देख आये। अिसे सरकारकी तरफसे सहायता मिलती है। हर विद्यार्थी पर साठ पाअुण्ड वार्षिक खर्च आता है। अिसमें सब कुछ आ जाता है। अिस स्कूलकी खसूसियत यह थी कि यहांके विद्यार्थी अंग्रेजी संगीत तो सीखते ही थे, परंतु अुन्होंने शुद्ध अफ्रीकी संगीतके कुछ राग शामिल करके अैसा सुन्दर संगीत तैयार किया है कि अुसमें युरोपीय संगीतकी सारी भव्यता आ गअी है और फिर भी वह अफ्रीकी गूढ़ भाव अच्छी तरहसे व्यक्त कर सकता है। दो संस्कृतियोंके समन्वयका यह असर देखकर मुझे मदुराका तिरुमल नाअीकका राजमहल याद आ गया, जिसमें हिन्दू, अिस्लामी और अीसाअी तीनों स्थापत्योंका अच्छा मेल हुआ है। स्वाभिमान और आत्मीयता नष्ट किये बिना जब अेक संस्कृति दूसरी संस्कृति पर असर डालती है, तभी अैसे सुंदर परिणाम पैदा होते हैं। अैसे अनोखे प्रयोग करनेके लिअे मैंने अिन अफ्रीकी गायकोंकी प्रशंसा की और अिस प्रयोगको अुत्साहके साथ आगे बढ़ानेका सुझाव दिया।

अुसी रातको अिंडियन जिमखानेमें भोज था। यहां जातिपांति और धर्मके भेदके बिना लोग सदस्य बनते हैं और जिमखाना ही होनेके कारण अैशआराम करते हैं। हर जगह जातीय संगठनोंसे घबराये हुअे हम यहां खुश हुअे और खुलकर बोले। कमलनयनका यहांका भाषण विनोदपूर्ण आलोचनाका था। वह सभीको पसंद आया।

दूसरे दिन हम जीन स्कूल देख आये। केबेटेवाली सरकारी संस्थासे अिसका संबंध है। प्रिंसिपल मि० अेस्क्विथ अफ्रीकी लोगोंके प्रति सद्भाव रखते हैं। अफ्रीकी जीवनका अुन्होंने गहरा अध्ययन किया है। हमने संस्थाकी सारी व्यवस्था देखी। बहुत कम संस्थाओंमें अितनी सुन्दर व्यवस्था और अितनी सुविधाअें होती हैं। अपनी ही मोटरबस रखकर विद्यार्थियोंको अनेक प्रवृत्तियां बताने ले जाते हैं। अिस संस्थाकी

विशेषता यह है कि अफ्रीकी लोगोंके नेता, अुनकी पत्नियां और अुनके बालक यहां शिक्षा पाते हैं — कुटुम्बीजनसे अलग हुअे बिना यहां शिक्षा पाते हैं, अिसलिअे यहां होनेवाला जीवन-परिवर्तन सदाके लिअे टिकता है। प्रिंसिपल अेस्क्विथ धुरंधर विद्वान और समाजशास्त्रके विद्यार्थी होनेके कारण अुनके साथ चर्चा करनेमें बड़ा आनंद आया। अफ्रीकी भाषाओंके विकासके बारेमें और अंग्रेजीके बजाय स्वाहिलीके जरिये कब पढ़ाया जा सकता है, अिस बारेमें बहुतसी बातें हुअीं।

युरोपियन लोगों द्वारा संचालित अैसी संस्थाअें देखनेके बाद यह विचार मनमें आये बिना नहीं रहता कि हमारे लोग अपने ही बालकोंके लिअे भी अैसी व्यवस्था क्यों नहीं करते।

आर्यसमाजी लोगोंका शिक्षा संबंधी अुत्साह प्रशंसनीय होता है। आगाखानी संस्थाओंमें कअी जगह युरोपियन शिक्षकों और व्यवस्थापकोंको रखा जाता है। और अिससे कुछ व्यवस्था, टीमटाम और दक्षता आ ही जाती है। फिर भी कहना पड़ता है कि भारतीय संस्थाओंके व्यवस्थापकोंकी दृष्टि संकुचित और अुनका हस्तक्षेप बाधक होनेके कारण जितनी होनी चाहिये अुतनी प्रगति नहीं होती। शिक्षक जब जब दिल खोलकर बातें करते हैं, तब सारी परिस्थिति ध्यानमें आती है। और फिर यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि 'हमीं अपनी शिक्षाके शत्रु हैं।'

आर्यसमाजका रवैया कैसा होना चाहिये, अिस बारेमें आर्यकन्या पाठशालामें खास बातें कीं। क्योंकि वहांके शिक्षक और व्यवस्थापक अैसे थे, जो अिस सारी वस्तुको ग्रहण कर सकते थे। अुसी दिन हम स्थानिक आगाखानी कन्या पाठशालामें गये। लड़कियोंने हमारे देखते देखते कुछ सुन्दर वानगियां तैयार कीं और हमें खिलाअीं। ड्रिल, कवायद, संगीत वगैरा सारे काम और वर्ग विस्तारपूर्वक बताये। और खूबी यह कि अुन्होंने हममें से किसीसे भाषण देनेका आग्रह नहीं किया! यहांकी मॉण्टेसोरी पद्धतिवाली छोटीसी शिशुशाला बड़ी आकर्षक थी।

नैरोबीके जिस महाराष्ट्र मण्डलके मकानकी नींव मैंने रखी थी, अुसकी अिमारत अब लगभग पूरी होने आयी। यह यहांके महाराष्ट्रियोंकी कार्यकुशलताकी अच्छी निशानी थी।

अुसी स्थानके पीछे श्री शिवाभाअी अमीन रहते थे। मुझे अुनसे फुरसतसे मिलना था, क्योंकि पूर्व अफ्रीकाकी तरफ मेरा ध्यान पहले पहल खींचनेवाले वही थे। शुरूके दिनोंमें हमारे लोगोंका पथप्रदर्शन करनेका काम और अुनके पक्षमें अखबारोंमें लिखनेका काम शिवाभाअीने ही किया था। तारीख २७ को अुनके यहां खानेका निमंत्रण स्वीकार किया। हमें बहुतसी बातें करनी थीं, परंतु दोनों स्वभावसे ठहरे हिन्दू। अेक युरोपियन महिला अुनके घर पर मेहमान बनकर आअी हुअी थीं। वे बीमारीकी कमजोरी अुतार रही थीं। हमने अुन्हींके साथ बातें करनेमें वक्त बिता दिया। अुनके कुशल शिक्षाशास्त्री और मानसशास्त्रज्ञ होनेके कारण बातें जम गअीं और हमें जो आपसमें विचार-विनिमय करना था सो रह ही गया। अुन्होंने हमें अितनी चेतावनी दी कि पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके मनमें शिक्षाका महत्त्व जम तो गया है, परंतु अभी अिस मुल्कमें आर्थिक मंदी है। साधारण आदमी खुले हाथों रुपया नहीं दे सकता।

जैसे विक्टोरिया सरोवरके किनारे पर स्थित किसुमु देखना रह ही गया, अुसी प्रकार हमें डर था कि रिफ्ट वेलीमें स्थित नकुरु भी रह जायगा। परंतु हमारा हवाअी जहाज हमें पहली अगस्तसे पहले नहीं ले जा सकता था। अिसलिअे आखिरी दिनोंमें २९ जुलाअीको हम तात्याके साथ नकुरु हो आये। कोअी मनुष्य अफ्रीका जाय और यह रिफ्ट वेली न देखे, तो कहा जायगा कि अुसने बहुत कुछ खो दिया। नैरोबीसे हम दो अढ़ाअी हजार फुट अुतर कर रिफ्ट वेलीमें पहुंचे। अेक बार नीचे अुतरनेके बाद सारा रास्ता सीधा सपाट है। अितनी बड़ी लम्बी-चौड़ी घाटीमें सुंदरसे सुंदर रास्तेसे गुजरना ही अेक आनंदका विषय था। आसपासकी पहाड़ियोंके सिर पर अनेक ज्वालामुख — द्रोण थे। ज्वालामुख पहचाननेकी

कला हमारे हाथमें — या असलमें आंखोंमें — आ गअी थी। रास्तेमें अेकके बाद अेक हमने तीन सरोवर देखे — नैवाशा, गिलगिल और नकुरु। चमकते हुअे पानीका प्रसन्नवदन किसी भी मनुष्यको (और पशुपक्षियोंको भी) अवश्य प्रसन्न करता है। सपाट भूमि पर स्थित ये सरोवर देखते-देखते अपना संकोच भी कर सकते हैं और विस्तार भी कर सकते हैं। जब संकोच करते हैं तब अुनका खुला हुआ पेंदा अध्ययन करनेवालोंके लिअे बड़ा आकर्षक होता है। लोभी मनुष्य वहांसे तरह-तरहके क्षार भी ले सकता है। नैवाशाके बारेमें दूसरी आकर्षक बात यह थी कि अफ्रीका और युरोपके बीच आने-जानेवाले समुद्री विमान यहींसे रवाना होते हैं।

समुद्री विमान जमीन पर पैर नहीं रखते। अिस तालाब जैसे पानीके विस्तार ही अुनके लिअे अड्डेका काम देते हैं। पानीमें तैरते-तैरते पंख फड़ फड़ाकर अुड़ जानेवाले बतख, बगुले और हंस या राजहंसकी जातिके ये समुद्री विमान देखनेमें बड़ा मजा आता है। चढ़ते हैं तब नहाकर निकले हुअे प्राणियोंकी तरह पानीके रेले नीचे छोड़ते हैं। परंतु जब अूपरसे आकर पानी पर अुतरते हैं, तब शांत पानीको अैसा बिलौते हैं कि मछलियोंको खयाल होता होगा कि यह क्या आफत आ गअी?

नकुरुमें हम श्री मगनलाल ठाकरके यहां पहुंचे। वक्त थोड़ा होने पर भी हमें दो जगह थोड़ा-थोड़ा खाना ही पड़ा। सिक्ख गुरुद्वारेमें सभा की गअी। अुसमें थोड़ेसे गोअन भाअी भी थे। अुनका नाम आगे करके लोगोंने मुझसे अंग्रेजी भाषणकी मांग की। मैं पहले हिन्दीमें बोला, बादमें अंग्रेजीमें। सब जगहोंकी तरह यहां भी हमारे लोगोंमें दो दल हैं। खसूसियत अितनी ही थी कि जिन्होंने अिन दलोंके लिअे अद्यतन नाम रखे हैं — अेक पूंजीपतियोंका दल और दूसरा मजदूरोंका दल। मैं नहीं मानता कि पूंजीपति दलमें सभी लक्षाधीश हैं! मजदूर दलमें थोड़े भी अगर हाथसे काम करते होंगे तो मैं अुन्हें बधाअी दूंगा।

वापस घर पहुंचनेमें रातके पौने नौ बज गये। फिर भी श्री गुलाबभाअी देसाअी और ललिताबहनका आतिथ्य स्वीकार करना बाक़ी ही था। खाते-खाते भगिनी समाजके बारेमें थोड़ी-सी बातें कीं। श्री कुरेशीके साथ हुअी चर्चाका सार डॉ० अडालजासे कहा। और अुन्होंने भी कहा कि आपका सुझाव अत्यंत व्यावहारिक होने पर भी मुझे आशा नहीं कि अुस पर आज अमल हो सकता है।

श्री तात्या अिनामदार और अुनके कुटुम्बके साथ हम अितने दिन रहे, परंतु अुनके साथ अेकाध दिन फुरसतसे बितानेकी भूख रह ही गअी थी। अिसलिअे सार्वजनिक कामोंसे पूरी तरह छुट्टी लेकर रविवारके दिन हम "चौदह प्रपातों"वाली जगह गोठ करने चल दिये। विनयकुमार (भाअू) हमारे साथ नहीं आ सके। तात्याके कुटुम्बके बाकी सब लोगोंके साथ हम रवाना हुअे। श्री सूर्यकान्त पटेल और अुनकी पत्नी भारती भी साथ थीं। घरसे बयालीस मील दूर यह स्थान है। थीकासे चौदह मील है। वहींकी अेक नदी यहां पालके अर्धचन्द्रमें चौदह धारोंसे गिरती है और आसपासके प्रदेशके लोगोंको विनोद करनेका आमंत्रण देती है। थीका और चनिया — ये दो नदियां अितनी छोटी हैं कि हमारे यहां अुन्हें नदीका नाम शायद ही कोअी दे। चौदह प्रपातोंके स्थान पर हमें बहुत शांति मिली। हम नीचे अुतरे, अूपर चढ़े, अनेक पालें रौंदी, फोटो लिये, पेटभर खाया, बे-सिर-पैरकी बातें कीं और वहां नहीं रहा जा सकता था अिसीलिअे अन्तमें लौट आये।

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जो चीज मुझे सबसे आकर्षक और महत्त्वपूर्ण लगी, वह थी पीटर कोयनांगेके घरमें अुनके पिता और दूसरे कुटुंबियोंकी मुलाकात और गिथुंगुरी तथा अन्य अेक स्थान पर पीटरकी तरफसे खोली हुअी पाठशालाओंका अवलोकन। गिथुंगुरीका अवलोकन केवल अेक पाठशालाका अवलोकन नहीं था। परन्तु अफ्रीकी समाजके समस्त जीवनका, अुसके भूत, वर्तमान और भविष्यका अेक शुद्ध दर्शन था। श्री पीटर कोयनांगे, अुनके वृद्ध पिता, अुनके साथी

लोकनेता जोमो केन्याटा और दूसरे वहुतसे अफ्रीकी वृद्ध और युवक यहां अिकट्ठे हुअे थे। अनेक पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके विशाल समूहके वीच हमने तरह-तरहके अफ्रीकी नृत्य देखे। हरअेक जातिके छात्र अपने अलग-अलग नृत्य दिखायें, चाहे जव अलग हो जायं, अव्यवस्थित रूपमें घूमते फिरते वातें करने लग जायं और देखते देखते किसी कप्तानके हुक्मके विना सुन्दर रचनामें गुंथ जायं। कुछ विद्यार्थी किकूयू जातिके थे। कुछ कुंवा जातिके थे। वाकी जातियोंकी संख्या कम थी। अिन सव नर्तकोंने अपनी प्राचीन संस्कृतिकी प्रणालीके अनुसार चित्र-विचित्र पोशाकें पहन रखी थीं। तरह तरहकी वूंदोंसे मुंह रंगे थे। घुटनोंसे टिनके डव्वोंमें कंकर डालकर वनाये हुअे घुंघरू वंधे हुअे थे। ठेका लगाकर नाचते तव घुंघरूका मन पर वड़ा असर होता था। अिस सारे नाचका नशा अितना चढ़ा कि हम सव अपने-अपने आसन छोड़कर अुनके वीच जा खड़े हुअे। तात्याकी अुषा और लता स्त्रियोंके वीचमें शरीक होकर खुद भी नाचने लगीं!

आखिरी नाच वृद्धाओंका था। नियमानुसार जिनकी ६० वरससे कम अुमर हो, वे अिसमें सम्मिलित नहीं हो सकती थीं। अिन सव वहनोंने पुराने ढंगकी रंगविरंगी पोशाकें पहनी थीं। तरह-तरहकी पींछियां वांधी थीं। अुस्तरेसे सिर साफ करके तेल लगाकर चमकदार वनाये थे। गलेके हार छाती पर ही नहीं परन्तु पीठ पर भी लटक रहे थे। कमर पर आगे और पीछे कोलोवसके चमड़े वांधे थे। यह नृत्य प्रार्थना-नृत्य था। वृद्धाओंके नृत्यका अेक नियम यह था कि वे किसी भी तरह नाचें, परन्तु पैरका अंगूठा जमीनसे लगा ही रहना चाहिये। (मुझे तुरन्त याद आया कि हमारे यहांके सितार वजानेवाले खानदानी लोग हाथका अंगूठा सितारसे लगा हुआ ही रखते हैं।) अेक वृद्धाकी अुम्र नव्वे सालसे ज्यादा थी। परन्तु नाचनेमें अुसका अुत्साह जरा भी कम नहीं था। अिन लोगोंका अेक नियम वड़ा मजेदार लगा। अगर किसी लड़कीकी किसी बूढ़ेसे शादी हुअी हो,

तो अुसकी अुम्र कम होने पर भी अुसे अिस वृद्धाओंके नृत्यमें भाग लेनेकी प्रतिष्ठा मिलती है! नृत्यमें भाग लेनेवाली बुढ़ियाओंमें अैसी 'वृद्ध युवती' है या नहीं, यह हमने नहीं पूछा। हमींको लगा कि अैसा पूछना असभ्यता होगी।

अिन तमाम राष्ट्रीय नृत्योंके अन्तमें दो वृक्ष लगानेकी धर्मविधि हुअी। अुस विधिका हमारे मन पर गहरा असर हुआ। खुले मैदानमें छोटे-छोटे पत्थर जमाकर अेक तरफ अफ्रीका महाद्वीपकी अेक मोटी आकृति बनाअी गअी थी और थोड़े अन्तर पर अुचित दिशामें अैसे ही पत्थरोंसे हिन्दुस्तानका नकशा खींचा गया था। हिन्दुस्तानसे आये हुअे दो मेहमानोंके हाथों अिन दो आकृतियोंके भीतर दो धर्मवृक्ष ('सेरिमोनियल ट्रीज़') बोये जानेवाले थे। यह सारी कल्पना देखकर मैं गद्गद हो गया। अफ्रीकाकी आकृतिमें पेड़ बोनेका काम मेरे हिस्से आया। हिन्दुस्तानके नकशेमें कमलनयनका । अफ्रीकाके नेताओंने कहा कि, "दोनों देशोंके बीच सौहार्द्र और शांति रहे, अिसके ये दो वृक्ष द्योतक हैं। हम अिन वृक्षोंको अुत्साह और लगनसे बढ़ायेंगे, क्योंकि ये वृक्ष महात्मा गांधीके साथ रहे हुअे लोगोंके हाथसे बोये जा रहे हैं।" यह विधि पूरी होनेके बाद मैं जो कुछ बोला, अुसके अेक-अेक वाक्यका अनुवाद स्वयं श्री जोमो केन्याटाने किया। अपनी जातिमें वे बड़े वक्ता माने जाते हैं। अुन्होंने हमारी बातें थोड़ा विस्तार करके लोगोंको समझायीं। अपनी पसन्दका वाक्य आता, तो वृद्धायें अपने गाल बजाकर 'हुलुलू' शब्द करतीं। जो लोग पूर्वी भारतमें घूमे हों, अुन्हें 'हुलुलू' जय ध्वनिके बारेमें विस्तारसे कहनेकी जरूरत नहीं। मैंने अन्तमें जब अुन वृद्धाओंसे हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके बीचकी हार्दिक अेकताके लिअे अुनके आशीर्वादकी याचना की, तब अुन्होंने बहुत ही अुत्साहसे मिनिट दो मिनिट चलनेवाला लम्बा 'हुलुलू' शब्द किया। यह प्रसंग कभी भी नहीं भुलाया जा सकता।

अिसी स्थान पर कमलनयनने अपने भाषणके अन्तमें 'जय अफ्रीका' का नया जयघोष शुरू किया, जिसे वहांके जवान-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, सबने अुत्साहके साथ अपना लिया। यह जयघोष अिस महाद्वीपमें चल पड़े, तो वह गांधीजीके विश्वप्रेमी अहिंसा धर्मका प्रतीक होगा।

गियुगुरीके अिस अनुभवसे हम अितने अधिक प्रभावित हुअे कि हमने श्री पीटर कोयनांगेसे अुनकी कोअी और पाठशाला चलती हुअी देखनेकी मांग की। तदनुसार हम २७ ता० को रवाना हुअे। पीटर खुद हमें साथ ले गये। यहां लड़के-लड़की साथ पढ़ते हैं। कुल मिलाकर १०३० विद्यार्थी पढ़ते थे। हमने कअी कक्षाओंमें जाकर अुनका काम देखा। यहां भी सभी विद्यार्थियोंके अक्षर अच्छे थे। व्याख्यान सुननेके लिअे जब विद्यार्थियोंको सामने बैठाया गया, तब मैंने मांग की कि जो लड़कियां पीछे बैठी हैं, वे सामने आ जायं। अवश्य ही यह बात लड़कियोंको खूब पसन्द आअी। जो लड़के पुराने ढंगके कपड़े पहनकर नाच रहे थे, वे भी तुरन्त शर्ट और हाफपेन्ट पहनकर और सिरके बाल ठीक करके सामने आकर खड़े हो गये; और अंग्रेजीमें जवाब देने लगे तब मुझे अिस बातका खयाल आया कि अिन लोगोंने दो युगोंके बीचका अन्तर कितना जल्दी काट दिया है। बढ़अीके कामकी कक्षा चलानेवाले भाअीका परिचय कराते हुअे श्री पीटरने कहा कि, 'ये भाअी हमारे बढ़अी भी हैं, राज भी हैं, और धर्मोपदेशक ('प्रीस्ट') भी हैं।' मेहनत-मजदूरी करनेवाले अिस पादरीको देखकर मुझे सेन्ट पॉलका स्मरण हो आया।

अिस स्थान पर अफ्रीकी लोगोंको संबोधन करके मैंने कहा कि 'अन्न, वस्त्र और घर मनुष्यकी मुख्य आवश्यकताओंमें से अन्न और घरके मामलेमें आप स्वावलम्बी हैं। जब आप अपने कमाये हुअे वल्कल और चमड़े पहनकर फिरते थे, तब आप स्वावलम्बी यानी सुधरे हुअे थे। आज अच्छीसे अच्छी रूअी पैदा करके भी आप कपड़ेके

मामलेमें परावलम्बी हैं, यह दयाजनक स्थिति है। आप जिस दिन चरखा चलाकर हाथके करघेसे कपड़ा तैयार कर लेंगे, अुस दिन स्वावलम्बी हो जायेंगे। अैसा हो जायगा तो हम अपने देशका अेक बड़ा ग्राहक जरूर खो बैठेंगे। परन्तु अपंग पड़ोसीसे व्यापार करके बनवान् बननेके बजाय स्वावलम्बी और समर्थ पड़ोसीके साथ दोस्ती पैदा करना दोनोंके लिअे श्रेयस्कर है।' अपने पासका चरखा अुन्हें दे देनकी बात मैंने यहीं की, जिसका महत्त्व पीटर कोयनांगेने विद्यार्थियों और शिक्षकोंको विस्तारपूर्वक समझाया।

श्री पीटर अपनी ये दो और अैसी दूसरी बहुतसी पाठशालायें किसी सरकारी मददके बगैर चला रहे हैं। अुनकी कार्यपद्धतिका नमूना नीचे लिखे किस्सेसे ध्यानमें आ जायगा।

अेक जगह भाअी पीटर पाठशालाके लिअे चन्दा कर रहे थे। वहां अुपस्थित अेक देहाती बुढ़ियाके पास देनेको कुछ नहीं था। अिसलिअे अुसने आगे आकर अनाजकी अेक फली चन्देमें दी। पीटरने अुसकी अिस भावनाका गौरव मानकर वहीं अुस फलीको नीलाम किया। (बापूजीकी यह कला अिस देशमें भी पैदा हो गअी!) नीलाममें अेक भाअीने अच्छी रकम देकर वह फली खरीद ली! परन्तु खूबी तो अुसके बादकी है। श्री पीटरने अिस रकमकी रसीद दी तो अुस भाअीके नाम पर नहीं, परन्तु बुढ़ियाके नाम पर! और सभामें ही अुन्होंने अुससे कहा कि, 'अब तुम्हें हमारी संस्थाका हिसाब जब चाहो आकर देखनेका अधिकार है।'

यहांसे हम श्री जोमो केन्याटाका घर देखने गये। अुनके पास बहुत जमीन है। पास ही अुनके ससुरकी भी जमीन है। कोलोबस नामक अेक किस्मके काले और लम्बे बालोंवाले बन्दर होते हैं। अुसके कमाये हुअे चमड़े घरमें जमीन पर बिछे हुअे थे। अुनमें से अेक बढ़िया चमड़ा अुन्होंने मुझे भेंट किया। अेक बार अिस प्रदेशमें अफ्रीकी लोगोंने क्रोधमें आकर दो युरोपियनों और पुलिसवालोंको मारा था।

जिसका बड़ा काण्ड हो गया था। अुसी स्थान पर लोगोंके लगाये हुअे दो वृक्ष हमें बताये गये।

अफ्रीकी लोगोंके साथ अिस प्रकारकी दोस्ती और माननीय माथूके यहां अफ्रीकी युवकोंके साथ हुअी मुलाकात मेरे खयालसे पूर्व अफ्रीकाकी यात्राकी अधिकसे अधिक हार्दिक आनन्द देनेवाली घटनायें हैं। किलिमांजारोकी गोदमें मुखिया पेट्रोके यहां गये थे, वह प्रसंग भी मैं अुतने ही महत्त्वका मानता हूं।

नैरोबीके दस दिनके अनुभवोंकी कितनी ही बातें मैंने जानबूझकर छोड़ दी हैं। भाअी जाल द्वारा हमारे सम्मानमें दिया गया बे-शराब खाना, 'फ्रेण्ड्स सर्कल' (मित्र-मंडल) में हुआ वार्तालाप, श्रीमान् और श्रीमती कौलके यहां चखी हुअी काश्मीरी वानगियां, अरुशावाले नरसी-भाअीके साथ हुअी चर्चायें वगैरा अनेक मीठे प्रसंग मैंने छोड़ दिये हैं। अलबत्ता, भाअी जालके दिये हुअे भोजके समयके नृत्योंकी सुन्दर कलाके बारेमें बहुत कुछ लिखा जा सकता है। जानेका दिन ज्यों-ज्यों नजदीक आने लगा, त्यों-त्यों हमें अैसा ही लगने लगा कि मानो वह सजाका दिन आ रहा है। किसी दिन यमुना-ताअीका गांधी अलबम देखा करता, तो किसी दिन तात्याके कुटुंबीजनोंके साथ कांगोके तोते किसुकुके साथ फोटो खिचवाता, किसी दिन सूर्यकान्त और अुनके डॉक्टर भाअीके साथ तरह तरहकी बातें करता। भाअी बहेरामजीके साथ अुनका समाजसेवाका काम देख आता, अदीस-अबाबाकी ठंडसे डरकर थोड़े गर्म कपड़े खरीद लेता, अिस तरह करते करते जानेका दिन अनिवार्य रूपमें आ ही गया। मन अुदास हो गया, खुशमिजाज अप्पासाहब भी गमगीन दिखाअी देने लगे। अिस प्रकार जुलाअी महीना विदा लेकर चला गया और पहली अगस्त अुदय हुअी।

जिस हवाअी अड्डेके नजदीक रेडियो पर मैं अेक भाषण दे आया था, अुसीसे हमें रवाना होना था। सवेरे जल्दी अुठकर हम तैयार हुअे। हमें कल्पना नहीं थी कि हवाअी अड्डे पर अितने अधिक

लोग जमा होंगे। सिर्फ नैरोबीके ही नहीं परन्तु कम्पालाके भी कुछ भाअी अचानक आ पहुंचे थे। हरअेक यात्रीके भाग्यमें विदाअीकी घटनायें होती ही हैं। नये स्थान पर नये मित्र और नये अनुभव मिलनेकी अुत्सुकतामें विदाअीका दुःख अिन्सान भूल जाता है। आज अैसा नहीं हुआ।

जब हम पहले पहल नैरोबी पहुंचे थे, तब हिन्दुस्तानसे आये हुअे मेहमानके तौर पर हमारे सम्मानमें बहुत लोग स्टेशन पर जमा हुअे थे। आज जब हम नैरोबी छोड़कर जा रहे थे, तब अुससे भी अधिक लोग हवाअी अड्डे पर अेकत्रित हुअे। परन्तु आदर करनेकी भावनासे नहीं बल्कि प्रेमके आकर्षणसे। कितने ही लोग हमारे स्थायी मित्र जैसे बन गये थे। कितने ही कुटुंबोंमें हम स्वजन सदृश हो गये थे। सवेरे ७ से ८ बजे तकका सारा समय विदाअीकी बातें करने और अलग-अलग टोलियोंके फोटो लेनेमें ही हमने बिताया। कअी लोगोंने प्रेमके चिन्हस्वरूप हमें फूल और फोटो दिये; परन्तु अडालजा दम्पतीने मुझे 'दी अकिकूयू' नामक कीमती पुस्तक भेंट की। पीटर कोय-नांगे, जोमो केन्याटा वगैरा पूर्व अफ्रीकाके नेता अिसी किकूयू वंशके हैं। कैथोलिक मिशनरियोंकी तरफसे लिखी गअी अिस पुस्तकमें अिस जातिका जीवन सुन्दर रूपमें प्रतिबिंबित हुआ है और चित्र अितने ज्यादा हैं कि सारा जीवन प्रत्यक्ष होते देर नहीं लगती। अिन लोगोंके घरोंमें जाकर हमने जो कुछ आंखों देखा, अुसका असर सबसे ज्यादा था। अुनकी पाठशालाओं और अुनके म्यूज़ियमोंमें हम जो देख सके, वह अुसमें मूल्यवान वृद्धि थी; और अुसमें जो कुछ कमी रह गअी होगी, वह अिस पुस्तक द्वारा पूरी हो जाती थी। हमारी यात्राकी सफलता चाहनेके लिअे अिससे अधिक सुन्दर भेंट क्या हो सकती थी?

'पुनरागमनायच' कहकर भारी हृदयके साथ हमने पूर्व अफ्रीकासे विदा ली।